हैक

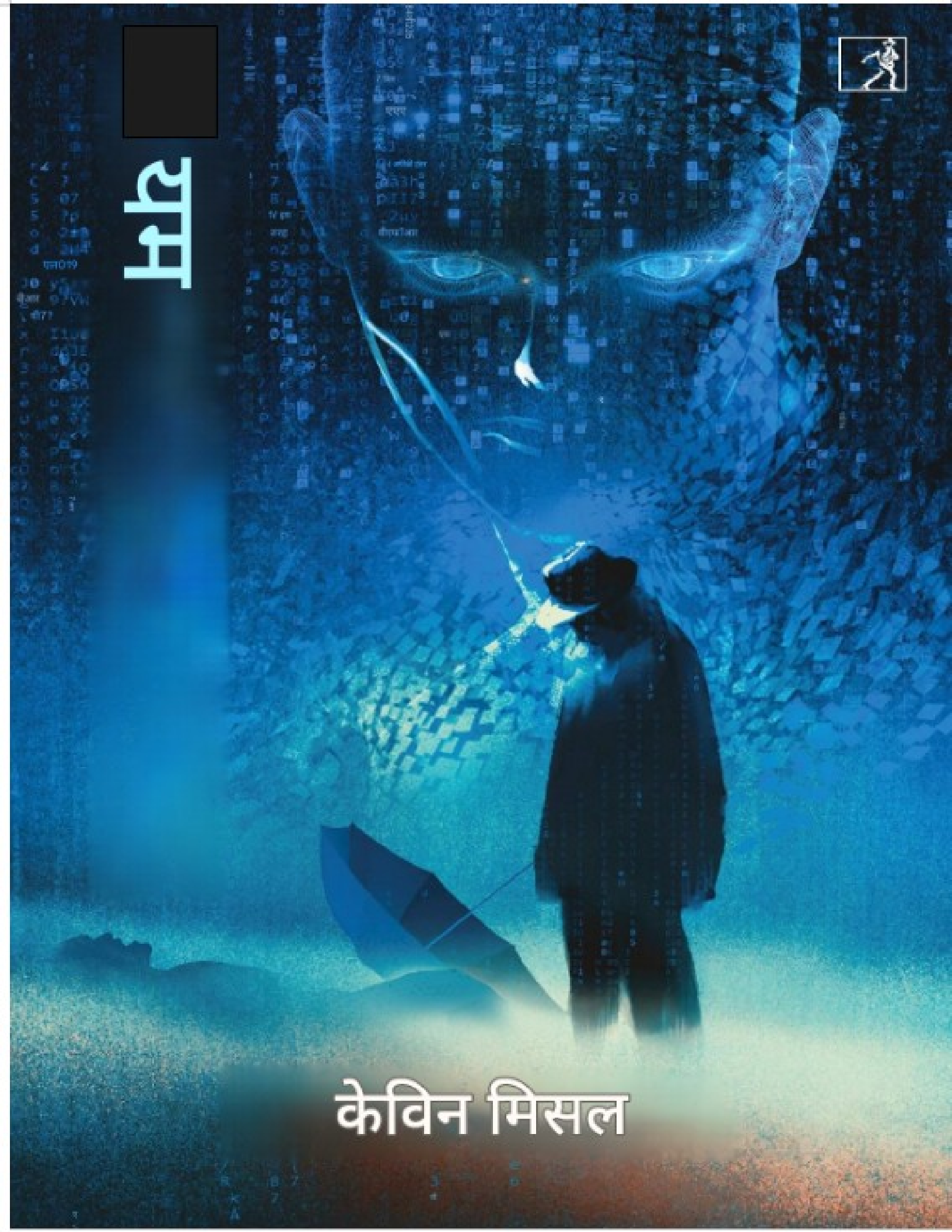

केविन मिसल

Table of Contents

अध्याय एक
अध्याय दो
अध्याय तीन
चौथा अध्याय
अध्याय पाँच
अध्याय छह
अध्याय सात
अध्याय आठ
अध्याय नौ
अध्याय दस
अध्याय ग्यारह
अध्याय बारह
अध्याय तेरह
अध्याय चौदह
अध्याय पंद्रह
अध्याय सोलह
अध्याय सत्रह
अध्याय अठारह
अध्याय उन्नीस
अध्याय बीस
अध्याय इक्कीस
अध्याय बाईस
अध्याय तेईस
अध्याय चौबीस
अध्याय पच्चीस
अध्याय छब्बीस
अध्याय सत्ताईस

अध्याय अट्ठाईस
अध्याय उनतीस
अध्याय तीस
अध्याय इकत्तीस
अध्याय बत्तीस
अध्याय तैंतीस
अध्याय चौंतीस
अध्याय पैंतीस
अध्याय छत्तीस
अध्याय सैंतीस
अध्याय अड़तीस
अध्याय उनतीस
अध्याय चालीस
अध्याय इकतालीस
अध्याय बयालीस
अध्याय तैंतालीस
अध्याय चौवालीस
अध्याय पैंतालीस
अध्याय छियालीस
अध्याय सैंतालीस
अध्याय अड़तालीस
अध्याय उनतालीस
अध्याय पचास
अध्याय इक्यावन
अध्याय बावन
अध्याय तिरपन
अध्याय चौवन
अध्याय पचपन
अध्याय छप्पन

अध्याय सत्तावन
अध्याय अट्ठावन
अध्याय उनसठ
अध्याय साठ
अध्याय इकसठ
अध्याय बासठ
अध्याय तिरसठ
अध्याय चौंसठ
अध्याय छियासठ
अध्याय सड़सठ
अध्याय अड़सठ
अध्याय उनसठ
अध्याय सत्तर
अध्याय इकहत्तर
अध्याय बहत्तर
अध्याय तिहत्तर
अध्याय चौहत्तर
अध्याय पचहत्तर
अध्याय छिहत्तर
अध्याय अठहत्तर
अध्याय उनहत्तर
अध्याय अस्सी
अध्याय इक्यासी
अध्याय बयासी
अध्याय तिरासी
अध्याय चौरासी
अध्याय पचासी
अध्याय छियासी
अध्याय सत्तासी

अध्याय अस्सी आठ
अध्याय नवासी
अध्याय नब्बे

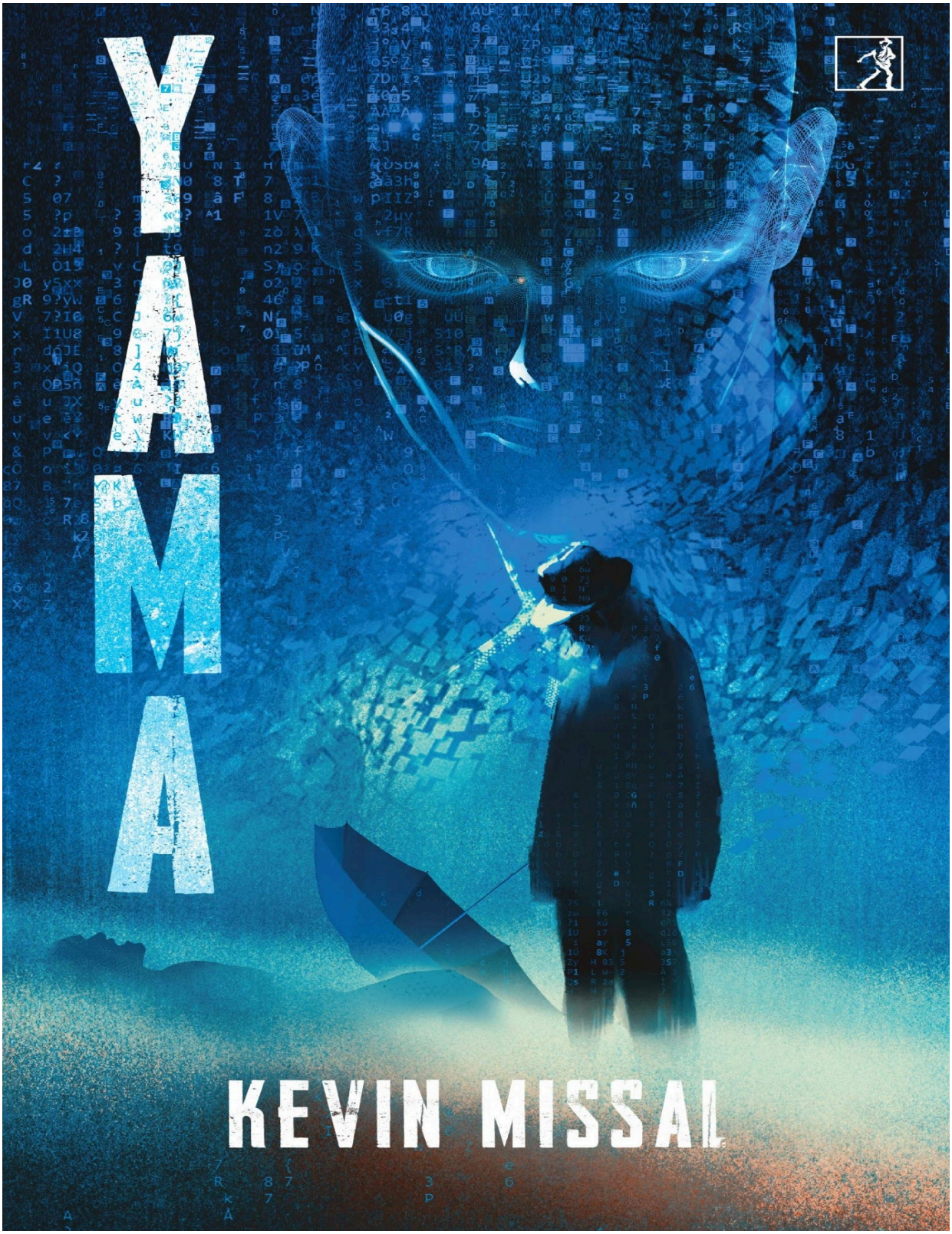
YAMA
KEVIN MISSAL

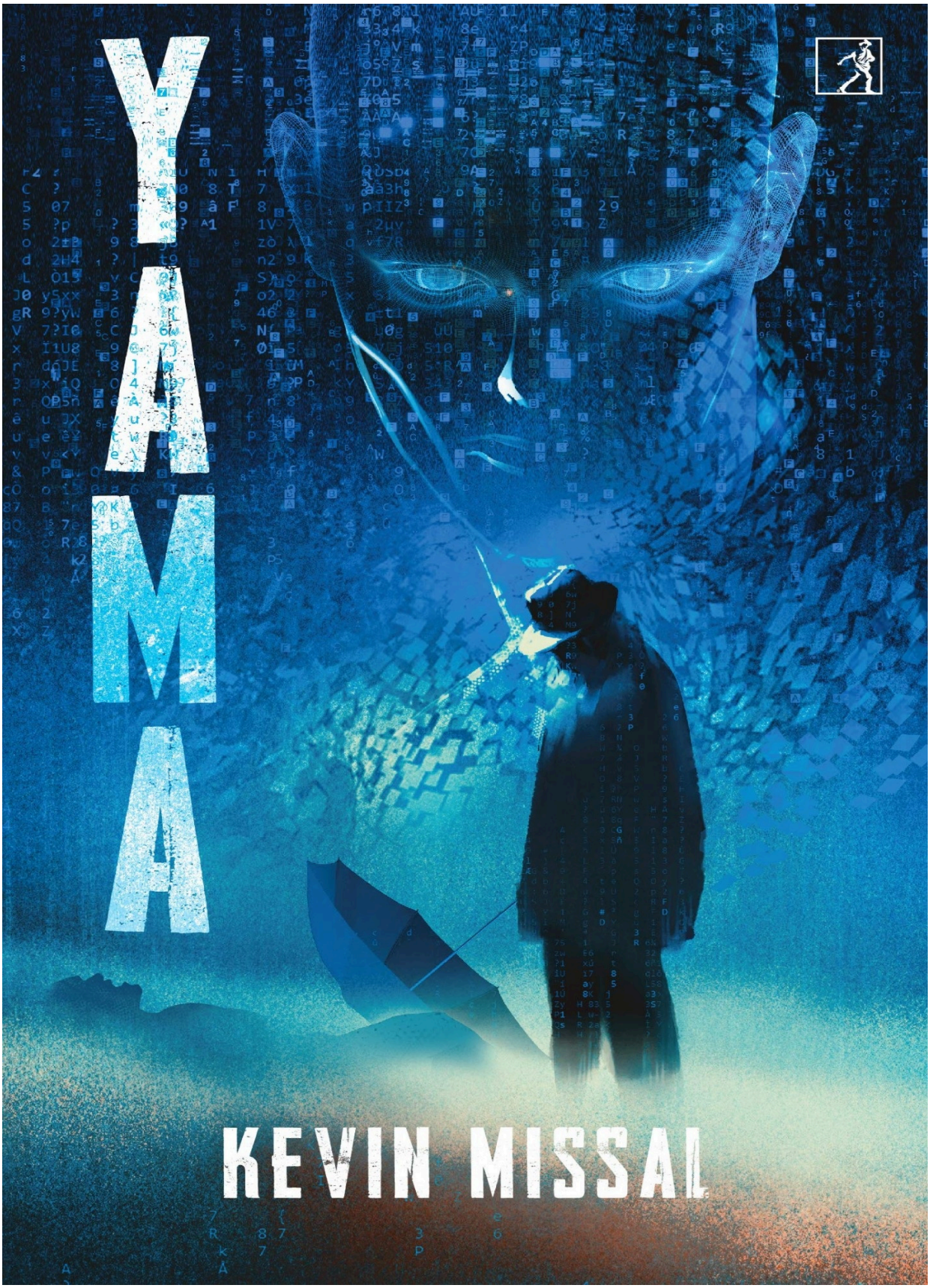
YAMA
KEVIN MISSAL

यम

यम

द्वारा लिखित

केविन मिसल

अधपकी फलियाँ साहित्य

ई-मेल:publish.halfbakedbeans@gmail.com
पहली बार हाफ बेक्ड बीन्स द्वारा 2016 में प्रकाशित।
कॉपीराइट © केविन मिसल
इस पुस्तक के सभी पात्र काल्पनिक हैं। किसी भी प्रकार की समानता महज़ संयोग है। सर्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशकों की पूर्व लिखित अनुमति के बिना इस प्रकाशन का कोई भी भाग पुनरुत्पादित, किसी पुनर्प्राप्ति प्रणाली में संग्रहीत या किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्य किसी भी प्रकार से प्रसारित नहीं किया जा सकता है।

पावती

भले ही कवर पर लेखक का नाम देखकर ऐसा लगे, लेकिन उपन्यास वास्तव में कभी एक व्यक्ति की रचना नहीं होता। आप यह भी कह सकते हैं कि "केविन मिसल" एक छद्म नाम है, क्योंकि मैं तो केवल एक लेखक हूँ, लेकिन कुछ महत्वपूर्ण लोग हैं जिन्होंने इस लेखक पर विश्वास किया, उसे प्रेरित किया और उसका समर्थन किया।

मैं उनमें से कुछ लोगों का नाम लेना चाहूंगा। शुरुआत अपने पिता से करनी चाहिए। वे मेरे सच्चे अनुयायी थे। उनका नाम लेस्ली ओजित मिसल है। जब मैं बारह साल का था, तब मैं ऐसी रचनाएँ लिखता था जिन्हें अब मैं बिल्कुल बेकार मानता हूँ, और उन्हें देता था। वे उन्हें पढ़ते और उनकी आलोचना करते थे। तब भी यह समझ में नहीं आता था और अब भी नहीं आएगा, लेकिन उन्हीं आलोचनाओं ने लेखन में मेरी नींव रखी। उन्होंने मुझ पर निरंतर विश्वास किया, पुस्तक लेखन में मेरी मदद की, मेरे विचारों को सुना और मेरे साथ मिलकर उसका प्रचार किया। संक्षेप में, उनके बिना मैं आज यहाँ किसी पुस्तक के लिए आभार व्यक्त करने के लिए नहीं बैठा होता और शायद इंजीनियरिंग या चिकित्सा की पढ़ाई कर रहा होता। या शायद जैसा कि मैं सोशल मीडिया पर कहता हूँ, बेरोजगार होता।

दूसरी शख्सियत हैं ज्योत्सना मिसल, जो मेरी मां हैं। वैसे तो उन्हें पढ़ने का शौक नहीं था, लेकिन जब उन्होंने मेरी पहली किताब पढ़ी, तो उन्हें वह वाकई बहुत अच्छी लगी। चौदह साल के उस बच्चे के लिए यह एक तरह से खुद को शाबाशी देने जैसा था। और उनका सबसे बड़ा योगदान शायद यही है कि वे मुझे लिखने या जो कुछ भी मैं चाहूं करने देती हैं। और इसी वजह से मैं एक लेखिका बनी।

तीसरी शख्स एक नई शख्सियत हैं। उनका नाम सुचिस्मिता पांडा है। वह कॉलेज में मेरी सीनियर हैं। वही मेरे शुरुआती विचारों की समीक्षा करती हैं। उन्होंने मुझे इतना प्रेरित किया है कि मैं शब्दों में उनका आभार व्यक्त नहीं कर सकती, इसलिए मैं अपने कार्यों से आभार व्यक्त करती हूं। मैं एक मशीन की तरह हूं जो हर आधे घंटे में नए-नए विचार पैदा करती है और मुझे किसी को बताने की तीव्र इच्छा होती है। वह हमेशा मौजूद रहती हैं और ध्यान से सुनती हैं। मैं कभी नहीं चाहूंगी कि वह कभी कहें, "मैं अब और नहीं सुन सकती।" लेकिन क्योंकि वह बहुत प्यारी हैं, इसलिए शायद वह कभी मेरे सामने ऐसा नहीं कहेंगी। उम्मीद है ऐसा न हो!

और अंत में, मैं चेतन सोनी और हाफ बेक्ड बीन्स की टीम को मुझ पर विश्वास करने और इस कॉलेज के छात्र को मौका देने के लिए धन्यवाद देना चाहता हूँ। मैं बुकबेकर्स को भी धन्यवाद देना चाहता हूँ, जिन्होंने इस पुस्तक का संपादन किया। मैं अपने परिवार, रिश्तेदारों और कॉलेज और स्कूल के दोस्तों, विशेष रूप से केन कामेई को प्रचार में मदद करने के लिए धन्यवाद देना चाहता हूँ। गगन, तलवीन और तनवीर को भी प्रचार में सहयोग देने के लिए धन्यवाद, और कई अन्य लोगों को भी। आप सब जानते हैं कि आप कौन हैं। मैं अपने पसंदीदा लेखकों को धन्यवाद देना चाहता हूँ। उनके बिना मुझे प्रेरणा नहीं मिलती।
अंत में, मैं यह पुस्तक उन सभी महत्वाकांक्षी लेखकों को समर्पित करना चाहता हूँ जो पन्नों पर लिखते-लिखते शब्दों को अर्थ देने का प्रयास कर रहे हैं। अगर मैं यह कर सकता हूँ, तो आप भी कर सकते हैं।

अध्याय एक

सींगों वाला आदमी छाया में खड़ा था।

उसकी त्वचा कोयले जैसी थी, मानो रंगी हुई हो, और उसकी आँखें धधकती लाल थीं। उसने एक हेलमेट पहन रखा था, जिसके दोनों सिरों पर दो-दो सींग लगे थे, जो शैतान के मुकुट के आकार के थे।

दक्ष गलगोटिया को समझ नहीं आ रहा था कि वह कहाँ है। ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी कालकोठरी या भूमिगत गुफा में हो, जहाँ उसके हाथ दीवार के दोनों सिरों से बंधे हों। उसे ज़्यादातर घटनाएँ याद नहीं थीं, सिवाय उसके सिर पर लगी उस ज़ोरदार चोट के जिसने उसे बेहोश कर दिया था।

जैसे ही उसे होश आया, उसने सींगों वाले आदमी को देखा और उसने अपने सबसे बुरे सपनों में भी ऐसा कुछ नहीं देखा था।

वह व्यक्ति लंबा और दुबला-पतला था, उसके हाथ लंबे और उंगलियां पतली थीं, जिन पर दांतेदार नाखून निकले हुए थे। लोहे की जाली वाली एक छोटी खिड़की से छनकर आती चांदनी में उसकी काली त्वचा चमक रही थी।

दीवारों पर आग में बलि दिए जा रहे एक व्यक्ति के लंबे और जीवंत चित्र बने थे, जबकि अन्य चित्रों में एक विशाल लाल चमड़ी वाले व्यक्ति द्वारा लोगों को कुचले जाने का चित्रण था। इन सभी चित्रों में किसी न किसी प्रकार की चाक से बनी आकृति थी और न जाने कितनी दीवारें इस तरह की कलाकृतियों से ढकी हुई थीं।

दक्ष पूरी तरह होश में था और इसी बात का फायदा उठाते हुए उसने रस्सियों को जितनी जल्दी और ताकत से हो सके खींचा, लेकिन व्यर्थ। रस्सियाँ दीवारों और ज़मीन से कसकर बंधी हुई थीं, जिससे उसके पास उस आकृति को सीधे देखने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा था।

“तुम मेरे साथ ऐसा क्यों कर रहे हो?” वह रोते हुए बोला।

सींगों वाले आदमी ने कोई जवाब नहीं दिया। बल्कि, वह भारी साँस लेते हुए बस अपनी उंगलियों को हवा में नचाता रहा और कराहता रहा।

“मेरे पास बहुत पैसा है। ले लो। यह सब तुम्हारा है। बस ले लो।” उसकी आँखों से चुभते आँसू बहने लगे। वह एक पुरुष था और उसके लिए रोना मुश्किल था, लेकिन

यहाँ, एक धुंधली, खामोश आकृति के सामने असहाय खड़ा होकर उसे अपने जीवन में की गई सभी गलतियों का एहसास हो गया।
उसके सामने उसके अपराधों, बूढ़े लोगों और घरों की तस्वीरें कौंध गईं। वह एक रियल एस्टेट कारोबारी था और गुड़गांव में कई घरों का मालिक था, जिन्हें वह बूढ़े लोगों को किराए पर देता था, खासकर सत्तर साल से ऊपर के उन लोगों को जिन्हें उनके वंशजों ने बेदखल कर दिया था। वह उन्हें कम किराए पर फ्लैट किराए पर दे देता था, उन्हें कागजी कार्रवाई की उलझन में डाले बिना ही लुभा लेता था और एक साल बाद किराया बढ़ा देता था, जिससे वे अपने बटुए और बैंक खातों को लेकर परेशान हो जाते थे। अपने नए, सुसज्जित अपार्टमेंट में आराम से रहने के बाद, उनके पास नए किराए पर सहमत होने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचता था। वह ऐसा इसलिए करता था क्योंकि वे कमजोर और आसानी से बहकावे में आने वाले थे। वह इन बूढ़े लोगों से अपना गुजारा करता था, हालांकि इससे उसे रात में बुरे सपने आते थे। वह अक्सर अपने अंतरात्मा की गहराइयों में भटकता रहता था, अपने किए में कुछ नैतिकता खोजने की कोशिश करता रहता था।
जब वह अपने चारों ओर बनी चाक की आकृतियों को घूर रहा था, तो उसे वे सभी बातें याद आ गईं—एक आकृति में शैतान जैसी आकृति एक आदमी को कड़ाही में जला रही थी, और दूसरी में एक आदमी के गले में फंदा लटका हुआ था, जो एक जलती हुई आग के ऊपर एक शाखा से बंधा हुआ था। ये सभी आकृतियाँ अलग-अलग रंगों के चाक से बनी थीं और सभी आकृतियों में लाल रंग काफी गहरा और भयावह था।
यह खून है।
उसके सीने में ऐसा खौफ सा छा गया मानो किसी ने उसके अंदर छेद कर दिया हो, उसमें चाकू घुसा दिया हो और किनारों को काटकर एक बड़ा सा छेद बना दिया हो।
“कृपा करके।” उसे अपने पसीने और आंसुओं की बूँदें महसूस हो रही थीं, “मैं...आप... आप कौन हैं?” उसे यह भी नहीं पता था कि उस आकृति से क्या पूछे।
सींगों वाला आदमी आगे आया, जिससे उसकी काली त्वचा और आँखें दिखाई देने लगीं, जो इतनी लाल थीं कि उनमें उसका अपना खून प्रतिबिंबित हो रहा था। उसके दाँत पीले और बिना दांतों के थे और उसने लाल और पीले रंग का कपड़ा अपनी कमर पर लपेटा हुआ था। उसके हेलमेट पर लगे लंबे और नुकीले सींगों को देखकर दक्ष भयभीत हो गया।

“यम ,” उसने गुर्राते हुए कहा।
यम ?
बेशक, वह यम को जानता था। वह मृत्यु का देवता या न्याय का देवता था, जो अपने भैंस पर सवार होकर आता था और अपने साथ ले जाने वाले फंदे से बंधे मृत व्यक्ति की आत्मा को ले जाता था। उसके पास एक लाठी भी होती थी, फिर भी यह व्यक्ति, जो खुद को देवता कहता था, उसके पास एक भी हथियार नहीं था।
लेकिन उसे उनकी जरूरत नहीं है।
“मैं कहाँ हूँ...मैं कहाँ हूँ?” वह घबराकर बोला।
“नरक, नरक,” उसने हर शब्द पर जोर देते हुए उत्तर दिया।
“तुम मेरे साथ क्या करने वाले हो?” उसने दांत पीसते हुए कहा, जवाब की उम्मीद में।
दक्ष जानता था कि इस स्थिति में रोने और गिड़गिड़ाने के बजाय उसे अधिक शांत और समझदारी भरा दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।
“कुछ नहीं,” यम ने कहा।
“कुछ नहीं? तो फिर तुम क्या चाहते हो? हर कोई कुछ न कुछ चाहता है। तुम क्या चाहते हो?”
यम ने अपना सिर हिलाया और अपने सूखे होंठों को खोलकर अपनी खून जैसी लाल जीभ दिखाई।
“न्याय,” उन्होंने शांत भाव से कहा।

अध्याय दो

मैंने तपस्व गांधी नाम से ज्यादा मूर्खतापूर्ण बात कभी नहीं सुनी।

वो मेरे मनोचिकित्सक हैं, दुबली खोपड़ी और मुंडा सिर वाले आदमी। मुझे नहीं पता कि वो कुर्सी पर पीछे झुककर अपने हाथ में रखे पैड पर क्या लिखते हैं। मैं अक्सर सोचता हूँ कि ये मनोचिकित्सक क्या लिखते होंगे। क्या वे दिन भर हमारी बकवास और शिकायतें सुनते-सुनते कुछ न कुछ चित्र बनाते रहते हैं?

लेकिन, मैं बस अपना ध्यान भटका रहा हूँ। उसने मुझसे एक सवाल पूछा था।

“हां, मैं सपने देखता हूं,” मैंने जवाब दिया।

वह ऊपर देखता है। मेरी रोज़ाना की शिकायतों से वह थका हुआ नहीं लगता। मैं हर पंद्रह दिन में, कभी-कभी दस या पाँच दिन में भी, उसके पास आता हूँ जब मैं बहुत परेशान होता हूँ, हालाँकि हम ज़्यादातर मेरे माता-पिता और मेरे सेना जीवन के बारे में ही बात करते हैं। ये बुरे सपने हैं। मैं कहूँगा कि कभी-कभी वे यादें हकीकत में बदल जाती हैं, और मैं उन्हें अपने सामने बिल्कुल करीब से देखता हूँ, मानो वे मुझे छू रही हों।

"आप किसके सपने देखते हैं?"

“अपने सेना के दिनों के बारे में,” मैंने गले में अटकी हुई आवाज़ में जवाब दिया। क्या अब मैं अपने अतीत के बारे में बात करने से डर रही हूँ, जबकि मैंने पहले भी कई बार ऐसा किया है?

"सेना में बिताए उन दिनों के बारे में आप क्या सोचते हैं?"

मैं अपनी कुर्सी पर धंसकर बैठ गया और अपनी उंगलियों को अपने गहरे रंग के खुले कॉलर वाले सूट की पतलून पर आपस में फंसा लिया। "आप जानते हैं कि मैं क्या सोच रहा हूँ, डॉक्टर।"

“मुझे फिर से बताइए।” वह कमरे के दूसरे छोर पर, अपनी डेस्क के पीछे बैठे हैं। यह फिल्मों जैसा नहीं है, जहाँ मरीज़ के पास आरामदायक सोफ़ा या छोटा सा बिस्तर होता है, जहाँ वह लेटकर बातें कर सकता है। असलियत में, यह एक रोशन कमरे में रखी आरामकुर्सी है, जिसकी दीवारें डॉ. तपस्व गांधी की उपलब्धियों से सजी हैं।

"मैं नब्बे के दशक में प्रोबेशन पर एक ब्लैक कैट कमांडो था और श्रीनगर में तैनात था।"

“कितने साल?”

“चार,” मैंने कहा।
वह कुछ-कुछ लिखता रहता है।
“वहाँ आपको क्या अनुभव हुआ?”
“खून-खराबा, युद्ध, उग्रवादी, विद्रोह,” मैंने माथे से पसीना पोंछते हुए जवाब दिया। गर्मी नहीं है। एसी तो है, लेकिन उसका मुझ पर कोई असर नहीं पड़ रहा।
"क्या तुमने वहां किसी को मारा?"
मैंने आंखें घुमाईं। "यह किस तरह का सवाल है?"
तपस्व ने ज़रा भी बेचैनी नहीं दिखाई। उनके चेहरे पर कोई भाव नहीं था, उन्होंने पैड को मेज पर रख दिया। "यह एक महत्वपूर्ण प्रकार का प्रश्न है।"
“आपकी जानकारी के लिए बता दूं, मैंने हत्या की है। मैंने चार लोगों की हत्या की है।”
“क्या हुआ था?”
मैं अपनी आँखें बंद कर लेता हूँ। आखिर हुआ क्या था? उस समय मेरा नाम कबीर था। कश्मीरियों के साथ घुलना-मिलना ज़रूरी था, इसलिए हमें उनकी संस्कृति के अनुसार नाम चुनने पड़ते थे। मेरे हाथ में बंदूक थी और जांघों पर पिस्तौल रखी थी। तीन आतंकवादी उसी दिन मारे गए, लेकिन चौथा भाग गया। वह एक छोटी सी झोपड़ी की ओर भागा, जहाँ मैं एके-47 लेकर उसके पीछे गया। मैंने पहले उसके पैर में गोली मारी और जब वह उठने की कोशिश कर रहा था, मैंने झोपड़ी में किसी भी तरह के बम या हथियार की तलाश की, लेकिन झोपड़ी में एक महिला और उसकी बेटी के अलावा कोई नहीं था। शायद वे उसके परिवार वाले थे और वे कोने में छिपकर सिसक रहे थे और एक-दूसरे को पकड़े हुए थे।
मैंने वही किया जो मुझे करना था। मैंने उसे घसीटकर बाहर निकाला, उसकी मोटी जैकेट के कॉलर खींचे और यह सुनिश्चित किया कि हम परिवार की नज़रों से ओझल हो जाएँ। मैंने उसे बर्फ पर पटक दिया और अपनी बंदूक उसके सिर के ऊपर तान दी। वह मुझसे कह रहा था कि वह उग्रवादी नहीं है, लेकिन मैं जानता था कि वह था। मैंने उसे खेतों में देखा था। मैंने वही किया जो मुझे करना था, उसके परिवार की परवाह किए बिना। मैंने उसके सिर में गोली मार दी और मोटी बर्फ पर खून का एक गहरा धब्बा बन गया। मैंने रेडियो पर बात की और अपने साथियों को आदेश दिया कि वे मेरे बताए गए स्थान पर आएं, शव को उठाएं और परिवार से पूछताछ करें। जब मैं शव के

साथ वहाँ इंतज़ार कर रहा था, मेरी नज़र डरी हुई पत्नी और बेटी पर पड़ी, जो दरवाजे के पास खड़ी अपने नुकसान पर रो रही थीं।
क्या तुम उस मौत के सपने देखते हो?
मैं आजकल उनके सपने देख रहा हूँ।
"आपको उनके बारे में पहले सपने क्यों नहीं आए?"
मैं आह भरता हूँ। “मुझे नहीं पता। शायद उस समय कमांडो होने और कमांडो की ज़िंदगी जीने ने मुझे मौत के इतना करीब ला दिया था कि किसी को मारने का ख्याल ही मुझे परेशान नहीं करता था। मुझे परवाह नहीं थी। मैं वापस जाता, थोड़ी शराब पीता, दूसरे फौजियों के साथ मज़ाक करता और दिन का काम खत्म कर देता। लेकिन आज जब मैं अपने हाथ देखता हूँ, तो मुझे उन पर खून दिखाई देता है।”
“अब तो तुम बहुत परेशान हो रहे हो। क्या तुम्हें पुरानी यादें ताजा हो रही हैं?”
मैं भौंहें चढ़ाता हूँ। "मैंने यही तो कहा था, है ना?" मैं अपनी उंगलियों से मेज पर थपथपाता हूँ। "मेरे पास क्या है?"
वह अपनी भौंहें ऊपर उठाता है। "क्या?"
मैंने व्यंग्यपूर्वक कहा, "मुझे कुछ तो है ही, है ना? कोई मानसिक समस्या, जैसे पोस्ट ट्रॉमेटिक स्ट्रेस वगैरह?"
"अपने परिवार के बारे में मुझे बताओ।"
मैं पीछे झुक जाती हूँ, मेरी उंगलियाँ सुन्न हो जाती हैं और अचानक मेरे होंठ सूख जाते हैं। मुझे यह लड़का पसंद नहीं है। कभी पसंद नहीं आया। फिर भी मैं उसके पास लौट आती हूँ। मुझे लगता है कि उसके सवाल पूछने के तरीके ने मुझे फंसा लिया है। उसकी शिकारी निगाहों ने मेरी आत्मा को जकड़ लिया है और अब वह उसे एक बैले डांसर की तरह घुमा रहा है।
"आपने मुझसे यह सवाल पहले कभी नहीं पूछा।"
“अच्छा,” वह कहता है, “अब मैं आपसे पूछता हूँ।”
"क्यों?"
"क्योंकि मुझे लगता है कि आपकी समस्याएं आपके वर्तमान निजी जीवन से ही उत्पन्न हो रही होंगी।"
"क्या तुम्हारा मतलब है कि मेरी निजी जिंदगी उन सभी यादों को ताजा कर रही है?" मैं बेचैनी से हिलने लगी, उसे खूब खरी-खोटी सुनाने को तैयार थी, तभी उसने शांत भाव

से अपने माथे पर उंगली फेरते हुए विचारमग्न मुद्रा में मेरा ध्यान अपनी ओर खींच लिया।
"हम तभी जान सकते हैं जब आप मुझे बताएं।"
मेरी एक पत्नी है। मेरी एक बेटी है और मेरा एक बेटा है।
"श्री राजपूत, आप और अधिक स्पष्ट जानकारी दे सकते हैं।"
मैं अपनी जीभ से अपने गाल के अंदरूनी हिस्से को सहलाता हूँ, उसकी खुरदरी त्वचा को महसूस करता हूँ, और खुद को उन लोगों के बारे में बताने के लिए तैयार करता हूँ जिनके साथ मुझे खुश रहना चाहिए। “मेरी एक पत्नी है। उसका नाम रुत्वी राजपूत है। वह गृहिणी है। और वह सिज़ोफ्रेनिया से पीड़ित है।”
क्या वह कोई दवा ले रही है?
"ज्यादातर नींद की गोलियां, स्किज़ोपेन।"
"जब आप वहां नहीं होते हैं, तो उसकी देखभाल कौन करता है?"
“नौकरानी, मीना।”
"उसे एक हफ्ते में कितनी बार दौरा पड़ता है?"
"उसके दौरे तीन से छह दिनों तक चलते हैं।"
"जब उसे दौरा पड़ता है तो आप क्या करते हैं?"
मैं उसे नींद की गोलियां देता हूँ।
वह क्या सोचती है?
“मृत्यु,” मैंने उत्तर दिया। “वह कहती है कि उसे मृत्यु की आवाज सुनाई देती है।”
क्या आप उस पर विश्वास करते हैं?
मैंने अपनी नाक फुलाकर जवाब देने में अनिच्छा जताई। उन्होंने अपने सवाल जारी रखे। "आपकी बेटी के बारे में क्या?"
“वो बहुत नखरे वाली है। हम इस हफ्ते उसकी शादी उसके पसंद के लड़के से करवाने जा रहे हैं।”
"क्या आपको उसका चुनाव पसंद आया?"
मैं भौंहें चढ़ाकर कंधे उचका देती हूँ। पूछताछ के दौरान मैं काफी देर से यही कर रही थी। "मुझे वह परेशान करने वाला लगता है, लेकिन अगर उसने मेरी बेटी को नुकसान पहुँचाया, तो मैं उसकी हड्डियों और खून पर नाच कर ही दूँगी।"
उसने आह भरी।

“क्या आप अपनी बेटी से प्यार करते हैं?”
मुझे अपना पूरा परिवार बहुत प्यारा है।
उसका नाम क्या है?
“तारा।”
“यह एक अच्छा नाम है,” वह मुस्कुराते हुए कहता है।
मैंने उसे पहली बार मुस्कुराते हुए देखा है।
"आपका पुत्र कैसा है?"
“सारंग—वैसे वो... उह, वो एक अच्छा लड़का है। वो कॉलेज के पहले साल में है। वो नशे में नहीं पड़ता। मुझे ऐसी बातें ढूंढने में महारत हासिल है। उस पर दोस्तों का कोई दबाव भी नहीं है, और वो पढ़ाई में भी अच्छा है।”
लेकिन आपको उससे किसी तरह की समस्या है?
मैंने अपने होंठ सिकोड़ लिए। मुझे लगता है तपस्व भावों को पढ़ने में बहुत माहिर है।
"वह दादागिरी करता है।"
"कौन?"
"सब लोग।"
"और क्या आपने इस बारे में उससे बात की है?"
“हां। वह कहता है कि इससे कोई नुकसान नहीं है। लेकिन मुझे नहीं पता कि वह असल में क्या कर रहा है।”
तपस्वा सिर हिलाता है।
“तुम्हारी नौकरी का क्या हाल है? हमने पिछली बैठक में इस बारे में बात की थी,” वह अपनी डायरी खोलने लगता है, जो चमड़े की जिल्द और धातु के पट्टे से बंधी है, और उसमें लिखे नोट्स पलटने लगता है। जब उसे आखिरकार डायरी मिल जाती है, तो वह अपने चेहरे पर हल्की सी विजयी मुस्कान लिए उसे दो बार थपथपाता है। “तुम अपने दोस्त गगन के लिए काम कर रहे थे, है ना?”
"हां, वह भी एक फौजी था। वह उस चीज का मालिक है।"
"और आप पैंथर्स नामक एक जांच और सुरक्षा एजेंसी में काम कर रहे थे।"
“यह एक बड़ी फर्म है। मैं उनके कई वरिष्ठ कर्मचारियों में से एक हूं, जो विशेष मामलों की देखरेख करते हैं।”
"पैंथर्स किस चीज़ में विशेषज्ञता रखते हैं?"

“हम उचित मूल्य पर चौबीसों घंटे सर्वश्रेष्ठ सेवा प्रदान करते हैं। हम मुख्य रूप से कंपनियों को सेवाएं देते हैं और उनकी पहचान सत्यापित करने, लापता व्यक्तियों की तलाश करने आदि में सहायता करते हैं। हम उन्हें अपने सुरक्षाकर्मी और कैमरे और माइक्रोफ़ोन जैसे उपकरण भी उपलब्ध कराते हैं। यह एक बड़ी कंपनी है और मैं इसका एक छोटा सा हिस्सा हूं।”
क्या आप निजी तौर पर सेवाएं देते हैं?
"केवल हाई-प्रोफाइल वाले। यानी अमीर लोग, जबकि निचले स्तर के जांचकर्ता कम खर्चीले लोगों की सेवा करते हैं।"
“क्या आपको भी रोमांचक अनुभव करने का मौका मिलता है?” चेहरे पर हल्की सी मुस्कान आ जाती है। लगता है आज मेरा भाग्य अच्छा है।
मैं हंसता हूँ। मुझे अपना काम पसंद था और उसके बारे में बात करना भी अच्छा लगता था। सबसे पहले तो, गगन तुफिर मेरे अच्छे दोस्त थे, इसलिए मुझे चेयरमैन से जुड़ी कोई बड़ी समस्या नहीं सुलझानी पड़ती थी। फिर, मुझे अच्छी तनख्वाह मिलती थी और तलाक, वफादारी परीक्षण जैसे कुछ दिलचस्प मामले मिलते थे, साथ ही मुनाफे में पचास प्रतिशत हिस्सा भी मिलता था। भला इसमें नापसंद करने जैसी क्या बात थी?
“तुम्हारे सेना के दिनों की बात पर वापस आते हुए...” वह शुरू करता है, जिससे मेरा दिमाग उन भयानक सपनों की खाई में वापस चला जाता है, और मैं धैर्यपूर्वक उसकी बात सुनता हूँ, “तुमने किसे मारा... क्या तुम्हें लगता है, उम, कि वह निर्दोष था?”
“वह युद्ध क्षेत्र में था। मैंने वहीं से उसका पीछा किया।”
लेकिन क्या वह युद्ध क्षेत्र किसी बाजार में नहीं था? वहां तो बहुत सारे नागरिक होंगे ही।
"गोलीबारी के समय नहीं।"
"तो, जब आपने आतंकवादी के परिवार से पूछा, तो उन्होंने क्या कहा?"
मैंने एक बड़ा सा घूंट निगल लिया। "उन्होंने कहा कि वह निर्दोष था..." मैं यह बर्दाश्त नहीं कर सकती थी; मैं वहाँ बैठकर यह बकवास नहीं सुन सकती थी। "यहाँ आप क्या कहना चाह रहे हैं?"
मैं किसी भी तरह का संकेत नहीं दे रहा हूं।
“सुनो, मुझे चार आतंकवादियों को मार गिराने के लिए वीरता पुरस्कार मिला। क्या तुम सुन रहे हो? वे आतंकवादी थे। वे पागल लोग थे जो अपने हिसाब से सही की रक्षा करने पर तुले हुए थे। मैं वहाँ का हीरो था।”

मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है।
मैं झटके से उठ खड़ा हुआ और बोला, "तो फिर आप यहाँ क्या कहना चाह रहे हैं?"
"मेरा मानना है कि आप अवचेतन रूप से सोचते हैं कि आपने एक निर्दोष व्यक्ति की हत्या कर दी है और इसीलिए आपको बुरे सपने आते हैं।"
मैं दांत भींचते हुए बोली, "मुझे आपको कितना देना होगा?" मेरे मन में उसे गालियां देने का बहुत मन कर रहा था, लेकिन मैंने उसे मुट्ठी भर गालियां दीं, उसे पंद्रह सौ रुपये दिए और वहां से जाने का फैसला किया।
मैं न्यू राजिंदर नगर स्थित उनके बड़े बंगले के तहखाने में बने उस छोटे से कमरे से गुस्से में बाहर निकल गया। लोग कहते थे कि वह सबसे अच्छे थे और इतने अमीर थे कि दूसरों से भी यह कहलवाने के लिए पैसे लेते थे कि वह सबसे अच्छे हैं। मैं सीढ़ियाँ चढ़कर बाहर निकला। अपनी शेवरले क्रूज़ में बैठा और गाड़ी चलाकर चला गया। मैंने रियर व्यू मिरर में देखा तो मुझे दाढ़ी वाला एक आदमी टोपी पहने हुए दिखाई दिया, जिसकी जैकेट पर खून के छींटे पड़े हुए थे, वह पीछे की सीट पर आराम से बैठते हुए मेरी तरफ मुस्कुरा रहा था।

अध्याय तीन

जब मैं घर पहुंचा, तो सबसे पहले मैंने देखा कि मुझे एक पत्र मिला है।
मुझे कभी चिट्ठियाँ नहीं मिलतीं। हम तकनीक के युग में जी रहे हैं और चिट्ठियाँ तो मेरी उम्मीदों की आखिरी किरण हैं, इसलिए मैंने उसे अनदेखा कर दिया और अपने दफ्तर की फाइल दराज में रख दिया। मेरा दफ्तर मेरे अपार्टमेंट में ही था, सिर्फ मेरी पत्नी रुत्वी के लिए, ताकि मैं उसकी और अपने काम की एक साथ देखभाल कर सकूँ। मेरा बेटा कॉलेज और सिविल सेवा परीक्षा की ट्यूशन के कारण अक्सर शाम सात बजे तक घर से बाहर रहता है, वहीं मेरी बेटी भी अपनी टैक्स फर्म में काम करती है, जिसका मतलब है कि मुझे अपने क्लाइंट के साथ अकेले समय बिताने का मौका मिलता है, हालाँकि मैं अपने ज्यादातर क्लाइंट से फोन पर ही बात करता हूँ। बाकी क्लाइंट से मैं ईमेल वगैरह के जरिए बात करता हूँ। गगन को मेरे घर से काम करने से कोई आपत्ति नहीं थी क्योंकि उसे काम के नतीजे चाहिए थे और जब तक मैं उसे नतीजे देता रहता, उसे इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता था कि मैं कहाँ से काम करता हूँ।
मैंने अपने भतीजे वर्धन को दिल्ली टाइम्स में क्रॉसवर्ड हल करते देखा, उसके पैर डेस्क पर रखे हुए थे। वह पैंथर्स टीम का हिस्सा नहीं था। वह बस एक इंटर्न था, अगर इधर-उधर ऊंघने और कागज़ के हवाई जहाज़ बनाने को इंटर्नशिप कहते हैं तो। वह सेंट स्टीफंस कॉलेज के तीसरे साल में पढ़ता था, मेरी बहन का बेटा था और बहुत ही शरारती था। लेकिन मुझे उसे नौकरी देनी पड़ी क्योंकि वह बहुत बुद्धिमान, ज्ञानी था और मेरा भतीजा भी था। उसने किसी भी काम में मेरी मदद नहीं की थी, क्योंकि ज़्यादातर कामों में बस कंप्यूटर पर कुछ नंबर और नाम क्लिक करने होते थे। तकनीक ने वाकई कई मामलों की जांच में मेरी मदद की थी।
मैंने उसे थोड़ा गैर-पेशेवर होने के लिए डांटा, क्योंकि उसने जल्दी से अपनी मुद्रा ठीक की और कागज़ को अपनी डेस्क पर रख दिया जो मेरी डेस्क के ठीक सामने थी। फिर मैं रुत्वी के कमरे में उसका हालचाल पूछने गई। वह खर्राटे ले रही थी और मुझे यह जानकर खुशी हुई कि वह ठीक है। जब कोई व्यक्ति श्रवण संबंधी सिज़ोफ्रेनिया के दौरों से पीड़ित हो, तो नींद सबसे अच्छी दवा होती है क्योंकि यह नसों को शांत करती है और व्यक्ति तरोताज़ा होकर उठता है।

मैं वापस उस दफ्तर में जाता हूँ जो असल में एक बड़ा स्टोर रूम है। वहाँ अलमारियों में किताबें रखी हैं, दीवार पर मेरे दादा और परदादा के चित्र लगे हैं, दो डेस्क, चार कुर्सियाँ, दो कंप्यूटर और एक लैपटॉप है, फर्श पर संगमरमर की टाइलें लगी हैं, छत काफी ऊँची है और कोने में एक मनी प्लांट भी है।
"क्या चल रहा है?"
एक ग्राहक आ रहा है।
"आपने फोन पर ही इस मामले को क्यों नहीं सुलझा लिया?"
वर्धन अपना नुकीला जबड़ा आगे निकालते हुए कहता है, "मैंने कोशिश की, लेकिन उसने आपसे व्यक्तिगत रूप से मिलने पर जोर दिया। उसने कहा कि वह गगन को व्यक्तिगत रूप से जानती है और उसने आपकी सिफारिश की है।"
मिलने-जुलने और बात करने की चाहत में उलझने वाले इन निजी मामलों से तंग आ गया हूँ! मेरे पास समय नहीं था। खैर, सच कहूँ तो, समय तो था, लेकिन मैंने उसे बहुराष्ट्रीय कंपनियों के सौदों, सुरक्षा प्रबंधन, चोरी की जाँच, साख, संपत्ति सत्यापन या यहाँ तक कि कानूनी सेवाओं पर खर्च करना बेहतर समझा। इससे पैसा, दबदबा और संपर्क बढ़ते हैं। लेकिन गगन को लगता है कि मैं निजी मामलों में माहिर हूँ, तलाकशुदा महिलाओं को उनके पति की संपत्ति पर दावा दिलाने में मदद करता हूँ, और न जाने क्या-क्या।
आपने पूरे दिन क्या किया?
“हैक हो गया,” वह मुस्कुराते हुए कहता है। जी हाँ, और वह एक प्रतिभाशाली एथिकल हैकर है, हालाँकि एक बार दिल्ली पुलिस ने उसे पकड़ लिया था और उसे जमानत पर रिहा होना पड़ा था। उसके बाद, उसके माता-पिता ने उसके घर पर वाईफाई प्रतिबंधित कर दिया था।
“तुमने क्या हैक किया?” मैं जाकर अपनी डेस्क के पीछे बैठ गया और उन मामलों के फोल्डरों को देखने लगा जिनकी मुझे अभी जांच करनी थी। मुझे अक्सर समीक्षा के लिए मामले मिलते हैं ताकि मैं यह तय कर सकूं कि किसे पदोन्नति मिलेगी और किसे नहीं।
"एक महंगा गेम मुफ्त में," वह मुस्कुराते हुए कहता है।
मैंने फाइलों से नज़रें हटाते हुए अपने कंधे उचकाए और उसकी आँखों में देखते हुए जम गई। "फोन करने वाली महिला कौन थी?"

“एक मशहूर हस्ती,” वह अपनी येलो पेज पैड पलटते हुए कहता है, “किसी जाने-माने रियल एस्टेट एजेंट की पत्नी।”
“लोकप्रिय रियल एस्टेट एजेंट?”
“ओह हाँ, दक्ष गलगोटिया।”

चौथा अध्याय

श्रीमती गलगोटिया बैठक में आती हैं और कमरे में हर तरफ ऐसे देखती हैं मानो किसी भी तरह की गंदगी या कीटाणु की तलाश कर रही हों। मेरी नौकरानी मीना को देखकर उनकी भौंहें तन जाती हैं, जिसके आगे निकले हुए दांत हैं और उसने बहुरंगी साड़ी पहनी है, जो श्रीमती गलगोटिया की साड़ी से बिल्कुल अलग है, जबकि श्रीमती गलगोटिया ने हाथीदांत और क्रिस्टल से सजी साड़ी पहनी है। वह सोफे की ओर बढ़ती हैं और अपने भारी नितंबों को उस पर रखते हुए चमड़े को दबाती हैं और मीना को पानी का गिलास लाने का आदेश देती हैं। उनके शरीर से उत्तम इत्र की खुशबू आ रही है और उन्होंने अपने महंगे डोल्से एंड गब्बाना के चश्मे पहने हैं।

लेकिन मैंने उसकी आंखों के कोने से देखा कि वह ऐसा फैशन के लिए नहीं, बल्कि अपनी आंखों के नीचे के काले घेरों को छिपाने के लिए कर रही थी। वह महिला कई दिनों से सोई नहीं थी।

वर्धन दीवार से टेक लगाकर हाथ में डायरी लिए खड़ा है। वह हमेशा अपने साथ डायरी रखता है, चाहे वह कितना भी तकनीकी जानकार क्यों न हो, और अपने फोन पर निर्भर नहीं रहता जो जब चाहे बंद हो जाता है। शायद यह आदत उसे अपनी माँ से मिली है, जो बचपन में छोटी-छोटी पर्चियाँ बनाकर रखती थीं।

श्रीमती गलगोटिया अपने परिधानों, मेकअप और खूबसूरती से गुंथे बालों में बेहद आकर्षक लग रही हैं। कोई भी उन्हें आसानी से "अमीर खानदान की बहू" कह सकता है।

“मैं, उह, मैं इरावन राजपूत हूँ और ये मेरे सचिव, वर्धन सिप्पी हैं,” मैंने कहा और देखा कि सचिव के रूप में परिचय दिए जाने पर वर्धन ने भौंहें चढ़ा लीं।

वह वर्धन की तरफ देखती तक नहीं। उसकी गाढ़ी और लाल लिपस्टिक मेरे कमरे की रोशनी में चमक रही थी और उसके कुछ बाल उसके मोटे चेहरे पर बिखरे हुए थे। वह खूबसूरत नहीं थी, लेकिन खूबसूरत दिखने की कोशिश कर रही थी।

वह कुछ देर तक दीवारों को घूरती रहती है, फिर बोलती है, "क्या मैं सिगरेट पी सकती हूँ?"

मैं उसे ऐसा करने की इजाज़त नहीं देती, लेकिन उसने मेरी अनुमति का इंतज़ार किए बिना ज़ारा के बैग से पुदीने की सिगरेट का पैकेट निकाला। उसने एक सिगरेट जलाई

और बोली, "मैंने अपनी पीए को गाड़ी में इंतज़ार करने को कहा था।" मुझे नहीं पता उसने मुझे ऐसा क्यों कहा, लेकिन उस महिला के पास पीए भी थी? हे भगवान! "मुझे लगता है कि आप भी अपनी असिस्टेंट को बाहर इंतज़ार करने के लिए कह सकती हैं।"
“चिंता मत करो, वह मेरे मामलों पर काम करता है। असल में, इसके पीछे का तकनीकी विशेषज्ञ वही है।”
मुझे उनकी काबिलियत पर कोई शक नहीं है, लेकिन उनकी मौजूदगी से मुझे असहज महसूस होता है।
उसे बातें कहने का तरीका आता था। मेरे पास उसे टालने के अलावा कोई चारा नहीं था। वह कंधे उचकाकर स्टोर रूम की ओर चला जाता है, लेकिन मुझे पता है कि वह छुपकर हमारी बातें सुन रहा होगा।
"क्या अब हम बात कर सकते हैं?"
मुझे बताया गया है कि आप व्यभिचार और वफादारी के मामलों में माहिर हैं।
मुझे अक्सर यही झेलना पड़ता है। मैं हर काम में माहिर हूँ—पेटेंट की जाँच करना, लोगों का पीछा करना, नौकरी से पहले और बाद की योग्यताओं की जाँच करना वगैरह। लेकिन मुझे रिश्तों में बहुत दिक्कत आती है।
"क्या आप चाहती हैं कि मैं यह जांच करूं कि आपका पति आपको धोखा दे रहा है या नहीं?"
वह अपने मुंह से सिगरेट निकालती है और उसे अपने ठीक सामने मेज पर रखी ऐशट्रे में डाल देती है और कहती है, "तुम्हें ऐसा क्यों लगता है कि वह मुझे धोखा दे रहा है?"
“तुम्हारी आँखों के नीचे काले घेरे हैं। तुम चिंतित हो। और तुमने मुझसे व्यभिचार के बारे में पूछा था, तो तुम्हें पता ही है - तर्क ही है।” मेरे चेहरे पर एक चालाक मुस्कान फैल गई।
मैंने आपसे इसलिए पूछा क्योंकि मैं जानना चाहता हूं कि आप लापता व्यक्तियों के मामलों को सुलझाने में कितने अच्छे हैं?
मैं अपनी आँखें सिकोड़ लेता हूँ, हैरानी से उन्हें छोटा कर लेता हूँ। मैंने गुमशुदा लोगों के मामलों में ज़्यादा काम नहीं किया; असल में, मैंने पूरी तरह से जाँच करने के बजाय सिर्फ़ सहायता की थी। "तुम्हारा क्या मतलब है?"
“मेरे पति लापता हैं, श्री राजपूत, और मैं चाहती हूं कि आप उन्हें ढूंढें।”

अध्याय पाँच

"कब से?"

“तीन दिन हो गए हैं,” वह मेज पर राख बिखेरते हुए कहती है। श्रीमती गलगोटिया स्पष्ट रूप से साफ-सुथरी इंसान नहीं हैं, चाहे वह बाहर से ऐसा दिखाने की कितनी भी कोशिश करें। “वह बाहर नहीं जाते। वह रियल एस्टेट एजेंट हैं। वह गांव में रहते हैं; बल्कि शहर में ही रहते हैं, सिवाय उन पार्टियों के जिनमें वह जाते हैं।”

"क्या आपको यकीन है कि वह लापता है?"

“उन्होंने अपने फोन नहीं लिए। उनके सहायक को उनके ठिकाने का कोई पता नहीं है और उनके ग्राहक उनके जवाब का इंतजार कर रहे हैं। और वह उन्हें कभी इंतजार नहीं करवाते।”

पुलिस क्या कहती है?

“मैंने उनसे संपर्क नहीं किया है,” वह स्पष्ट रूप से जवाब देती है।

"क्यों?"

"क्योंकि उसने मुझे ऐसा कहा था।"

“दक्ष ने आपको कहा था कि उसके लापता होने पर पुलिस से संपर्क न करें?”

“यह बातचीत बहुत पहले हुई थी। मैं उसकी हर बात को गंभीरता से लेता हूँ। उसने कहा था कि अगर कभी वह गायब हो जाए, तो इसका कारण यह होगा कि उसके प्रतिद्वंद्वियों या दुश्मनों ने उसे पकड़ लिया है और वह नहीं चाहता कि पुलिस उसके राज़ उजागर करे।”

मैंने भौंहें चढ़ाते हुए वह मुश्किल सवाल पूछा। "क्या वह गैरकानूनी काम कर रहा था?"

"उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि उनके किरायेदार किसी दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर न करें, इसलिए, आप कह सकते हैं कि यह एक तरह से अवैध है।"

"लेकिन वे ऐसे घर में क्यों जाएंगे जहां उन्हें किसी दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर नहीं करने पड़ते?"

“क्योंकि वे हताश हैं और घर सस्ते और इतने खूबसूरत हैं कि वे औपचारिकताओं की परवाह नहीं करते। एक साल बाद, वह उन्हें बढ़ी हुई कीमतों वाला दस्तावेज़ देता है और उनके पास हस्ताक्षर करके उसे पैसे देने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचता।”

पैसा कमाने का यह एक चालाक तरीका था। और साथ ही साथ एक बेरहम तरीका भी। उसे डर था कि पुलिस उसे ऐसे लोगों का फायदा उठाते हुए पकड़ लेगी और उसे अपना कारोबार बंद करना पड़ेगा और जेल जाना पड़ेगा। यही वजह थी कि वह वर्धान को कमरे में नहीं चाहती थी। वह नहीं चाहती थी कि कारोबार की छोटी-मोटी कमियों के बारे में बहुत से लोगों को पता चले। मेरे और ग्राहक के बीच गोपनीयता का समझौता था, जबकि वर्धान एक इंटर्न होने के नाते ऐसा नहीं करता था। वह जो चाहे फैला सकता था।
इसलिए, मैंने एक निजी एजेंसी में आने का फैसला किया।
"अच्छा ऐसा है।"
“तुम्हारी दरें गगन ने तय कर दी हैं।” वह अपने बैग से एक सफेद पार्सल निकालती है और उसे राख के ठीक बगल में मेज पर रख देती है। “यह अग्रिम भुगतान है। बाकी आधी रकम मैं अपने पति के आने पर दूंगी।”
“क्या आपको पता है कि मैं उसे कहाँ ढूंढ सकता हूँ? कोई अंदाज़ा है?” मैंने भौंहें चढ़ाते हुए पूछा। “क्या आपको उसके प्रतिद्वंद्वियों के बारे में कुछ पता है या ऐसी कोई जानकारी जिससे मुझे कोई सुराग मिल सके?”
मुझे उसके कारोबार में ज्यादा दिलचस्पी नहीं थी।
मैं सोच-विचार करते हुए अपने गाल के अंदरूनी हिस्से पर जीभ फेरती हूँ और दूसरे विकल्प के बारे में सोचने लगती हूँ। “मैं उसकी फाइलें देखना चाहती हूँ। आप उन्हें हार्ड ड्राइव या किसी और फॉर्मेट में मुझे दे सकते हैं। मुझे एक ऐसे व्यक्ति की ज़रूरत है जो उसे पेशेवर तौर पर बहुत अच्छी तरह जानता हो।”
मैं प्रितिका को आपके पास भेज दूंगी।
“प्रीतिका?”
“उनकी पीए,” वह भौंहें चढ़ाकर कहती है। साफ था कि वह उसे पसंद नहीं करती थी। “वह आपको जो भी चाहिए, ले आएगी। मैं उसे पता और आपका नंबर दे दूंगी। वह आपसे जल्द ही मिलेगी क्योंकि वह मुझसे कहीं ज्यादा उनके लिए चिंतित है और वह इसे जल्द से जल्द शुरू करना चाहती है।” वह तीखे लहजे में कहती है और फिर खड़ी हो जाती है।
वह बिना कुछ कहे कमरे से बाहर चली जाती है, लेकिन राख और पैसे वहीं छोड़ जाती है।

अध्याय छह

"वह एक कमीनी है," वर्धन कमरे में प्रवेश करते हुए कहता है, उसकी डायरी उसकी हल्के नीले रंग की, ऊपर की ओर मुड़ी हुई कमीज से चिपकी हुई है।

मैंने उसे झट से कहा, "अपनी भाषा पर नियंत्रण रखो।"

वह आह भरता है। "वह क्या चाहती थी?"

गोपनीयता की चिंता के बावजूद मैं उसे सब कुछ बता देता हूँ। मैं वर्धन से इसे छुपा नहीं सका क्योंकि मुझे इस मामले में उसकी मदद चाहिए थी। “मैं चाहता हूँ कि तुम इस दक्ष गलगोटिया के बारे में हर संभव जानकारी जुटाओ। मैं कोई कसर नहीं छोड़ना चाहता। ठीक है?”

“जी हां, बॉस,” वह मुस्कुराते हुए बोला। “मतलब मुझे हैकिंग करनी पड़ेगी, है ना?”

वह जानता था कि मैं उससे क्या चाहती हूँ, लेकिन मैं उसे बताना नहीं चाहती थी। मैंने बस कंधे उचकाए और कमरे से निकलकर अपने ऑफिस में चली गई, जहाँ मैंने फ़ोल्डरों को देखा और आराम से अपनी कुर्सी पर बैठ गई, यह सोचते हुए कि आगे क्या करना है। वर्धन अपने लैपटॉप पर काम कर रहा था, बटन दबा रहा था, कीबोर्ड, हार्ड ड्राइव, कुछ पेन ड्राइव, सीडी और न जाने क्या-क्या लगा रहा था। थोड़ी देर इधर-उधर पलटने के बाद, उसने कहा-

"बुजुर्ग लोग उससे खुश नहीं हैं।"

“तुम्हारा क्या मतलब है?” मैं उसके पास गया, तभी उसने अपना लैपटॉप घुमाकर मुझे एक समाचार लेख दिखाया जिसमें एक बुजुर्ग दंपति अपने नए फ्लैट की तलाश के अनुभव के बारे में बता रहे थे और यह भी कि कैसे उनकी मुलाकात दक्ष गलगोटिया से हुई, जिसने उन्हें धोखा दिया। “वह बूढ़ों पर हमला करता है।”

“सबसे आसान तरीका,” वह कहते हैं, “पचहत्तर प्रतिशत ऐसे परिवार हैं जहाँ दादा-दादी को उनके घरों से निकाल दिया जाता है। वे बेबस होते हैं। उन्हें ये घर मिल जाते हैं। उन्हें कागजी कार्रवाई की परवाह नहीं होती और बस! इसी तरह उनकी कमाई शुरू हो जाती है।”

"यह क्या है?"

“दबी हुई खबर,” वह जवाब देता है। “लगता है हमारे आदमी के प्रिंट मीडिया में संपर्क हैं।”

“वो काफी प्रभावशाली है,” मैंने सिर हिलाते हुए कहा। “ज़रूर उसके किसी ग्राहक के छोटे बच्चे बदला ले रहे होंगे। क्या वो इसके अलावा कुछ और भी करता है? मतलब, वो अपनी सारी कमाई सिर्फ इसी से तो नहीं कर सकता, है ना?”
वह इधर-उधर बटन दबाता है और आखिरकार उसे दक्ष के खिलाफ एक ई-मैगज़ीन में छपा नफ़रत भरा लेख मिल जाता है। उसे थोड़ा पढ़ने के बाद वर्धन कहता है, “वह खराब घर भी बेचता है। ऐसा नहीं है कि वह हमेशा बूढ़ों के साथ ही खेलता है। वह युवाओं को सुंदर घर दिखाता है और जब वे कागज़ात पर हस्ताक्षर करते हैं, तो उन्हें असलियत पता चलती है—लीकेज, बिजली की समस्याएँ, टाइलों पर दरारें जो कालीन के नीचे छिपी होती हैं, और भी बहुत कुछ। और उनका तीन साल का किरायेदारी समझौता होता है, जिसका मतलब है कि वे पीछे नहीं हट सकते और उस पर मुकदमा भी नहीं कर सकते क्योंकि उसके पास बेहतरीन वकील हैं। असल में, वह ऐसे खराब घर बेचता है जिनकी कोई कीमत नहीं होती, लेकिन वह उन्हें थोड़ा-बहुत ठीक करके ऊँची कीमतों पर बेच देता है।”
उसके पास कुल कितने फ्लैट हैं?
“सिर्फ गुड़गांव में, उभरते हुए लोग।”
उसके बहुत सारे दुश्मन होंगे।
“हां,” वर्धन ने अपने चश्मे को ऊपर करते हुए कहा। “और उनमें से कई लोग उसका एक हिस्सा पाना चाहेंगे।”
मैं अपने छोटे बालों पर उंगलियां फेरता हूं। मेरे बाल कभी लंबे नहीं रहे, क्योंकि अगर लंबे होते तो मेरे गंजेपन के धब्बे दिखने लगते, क्योंकि मेरे बाल घुंघराले और चिपचिपे हैं। मेरी दाढ़ी भी है, बल्कि कहें तो हल्की दाढ़ी, और एक घनी मूंछ। मुझे हमेशा से चेहरे के बाल पसंद रहे हैं।
"क्या किसी व्यक्ति के उसके खिलाफ चुनाव लड़ने या किसी परिवार द्वारा उस पर मुकदमा करने की कोई खबर है?"
वह कुछ बटन दबाता है और अपना सिर हिलाता है। "नहीं।"
जिसने भी उसे बंदी बनाया है, उसके मन में ज़रूर कोई पुरानी दुश्मनी होगी। वर्धन को सारी जानकारी भेजने का आदेश देने के बाद मैं अपने कार्यालय जाता हूँ। मुझे मेल पर जानकारी मिलती है, जिसे मैं खोलकर ध्यान से पढ़ता हूँ। कीवर्ड लिखने के लिए मैं

पेन ढूंढने लगता हूँ, तभी दराज खोलता हूँ और सुबह मिले मेल के ठीक बगल में एक पेन मिल जाता है।
मैंने पत्र खोला और उसे पढ़ा, लेकिन उसमें कुछ शब्दों के अलावा कुछ भी नहीं लिखा था।
उसके पाप का दंड और उसके पाप का दंड ढूंढो।
समय: 24 घंटे।
नाम: दक्ष गलगोटिया।

अध्याय सात

दक्ष की नींद पंजों की चीख सुनकर खुली और उसने अपने सामने उस भयानक प्राणी यम को खड़ा देखा। उसके हाथ-पैर सूखे खून से सने हुए थे और वह प्यासा-भूखा था, मानो उसके पेट में शेर दहाड़ रहे हों। उसे तीन घूंट पानी और एक रोटी दी गई, जिसे यम ने उसके मुंह में ठूंस दिया ताकि वह भूख से न मर जाए।

वह मुझे जिंदा चाहता है।

यह विचार कुछ घंटे पहले आया था, और अब फिर से आ गया है। यह पागल मुझसे क्या चाहता है? वह पूछना चाहता था, लेकिन उसका जवाब केवल "न्याय" निकला और उसके पास अपने किए पर विचार करने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा।

उसे महसूस हो रहा था कि प्यास और भूख से उसका शरीर कमजोर होता जा रहा है। और हर रात, जब भी यम राज अंतिम दर्शन के लिए आते, वे दक्ष के पास आकर उसके पूरे शरीर पर कोड़े मारते। फटी हुई कमीज से उसके शरीर पर पड़े लंबे और गहरे निशान उसे साफ दिखाई दे रहे थे।

और अब भी, वह अपने चाबुक के साथ वहीं मौजूद था। दक्ष ने उबलते हुए गुस्से को किसी तरह दबा लिया और बख्शने की भीख मांगी, लेकिन सींगों वाले उस आदमी ने उसकी बात नहीं सुनी। उसने चाबुक से एक बार फिर उसकी छाती पर वार किया, जिससे उसकी हड्डियों और मांसपेशियों में तेज दर्द फैल गया। एक और वार से दर्द के बाद सुन्नपन छा गया। और वह रुका ही नहीं। वह तब तक वार करता रहा जब तक कि उसके घावों से फिर से खून बहने लगा।

“क्यों!” वह चिल्लाया।

"न्याय।"

न्याय।

अध्याय आठ

मुझे उस पत्र की याद अब तक नहीं आई थी। ये अजीब और रहस्यम य है। मुझे दक्ष गलगोटिया के बारे में एक पत्र मिला और उनकी पत्नी के बारे में भी। क्या ये गगन की कोई सोची-समझी साजिश है, जिसमें वो मेरी काबिलियत परखना चाहता है? लेकिन उसने पहले कभी ऐसा नहीं किया था। ये तो बिल्कुल नया है। ये ज़रूर कोई मज़ाक होगा और मैं इसके बारे में ज़्यादा सोच रहा हूँ।

मैंने रुत्वी को देर से सोते देखा। कल रात हमने उसकी सेहत और उसके भ्रमों के बारे में बात की थी। जब से उसे सिज़ोफ्रेनिया का पता चला है, तब से वह बस इसी बारे में बात करती रहती है। उसके मन में मौत का डर छाया रहता है। वह कहती है कि उसे चमकती हुई आकृतियाँ नहीं दिखतीं, लेकिन कुछ आवाज़ें सुनाई देती हैं।

“वह कहता है कि अगर मैं खुदकुशी नहीं करूंगा, तो वह तुम सबको मार डालेगा।”

“मौत मुझे छू नहीं सकती और मैं उसे तुममें से किसी को भी छूने नहीं दूंगा,” मैंने जवाब दिया।

उसे यकीन नहीं था और मैं उसे दोष नहीं देती। तीन साल बीत चुके हैं और उसने किसी साक्षात व्यक्ति की बजाय उस अनजान आवाज पर विश्वास किया था।

मैं बॉक्सर और सफेद बनियान पहने चाय पीता हूँ और शीशे के सामने खुद को निहारता हूँ। मेरा पेट थोड़ा निकल आया है। मेरी बांहें अब पहले जैसी मजबूत नहीं रहीं और पिंडली भी कमजोर हो गई हैं। अब तो मुझे आसानी से पीटा जा सकता है। पहले मैं लड़ाई-झगड़े के लिए तरसता था, लेकिन अब उनसे भागता हूँ। समय सब कुछ बदल देता है। मैं नहाने और मूंछें संवारने के बाद अपना रोज़ का ग्रे सूट पहनकर तैयार होता हूँ। वर्धन अपनी रोज़ की कमीज़ और पैंट में लैपटॉप बैग लिए आता है। वह दफ्तर में बैठ जाता है और मैं प्रितिका का इंतज़ार करता हूँ।

उसने सुबह-सुबह मुझे फोन करके मिलने का अनुरोध किया था। मैं मान गया। वह अपने साथ फाइलें और ढेर सारे राज़ लेकर आई होगी। जब वह ऐसा कर रही थी, मुझे दक्ष के गायब होने के पीछे के कारण के बारे में सोचने का समय मिल गया। इसे प्रतिद्वंद्वी या शत्रु की दुश्मनी कहना काफी नहीं था; मुझे लगता है कि मुझे इससे कहीं ज़्यादा गहराई से सोचना होगा। उसने पिछले कई सालों में बहुत से किरायेदारों को नाराज़ किया था, बच निकलता था और फिर नए ग्राहक लाकर वही काम दोहराता था।

लेकिन क्या होगा अगर यह उनमें से किसी किरायेदार की वजह से न हो? क्या होगा अगर यह सिर्फ़ इतना ही न हो? कमांडो के रूप में हमारे प्रशिक्षण के दौरान, हमें सिर्फ़ शारीरिक रूप से ही नहीं, बल्कि मानसिक रूप से भी तैयार किया गया था। उन्होंने हमें सिखाया था कि जो आप देखते हैं उसके कई आयम हो सकते हैं। देखकर आप उनमें से सिर्फ़ एक को ही छू पाते हैं।
क्या होगा अगर मामला किसी बड़े सरगना से जुड़ा हो—माफिया, दलाल और ड्रग्स? क्या होगा अगर यह किसी सीरियल किडनैपर का काम हो? लेकिन भारत में, खासकर दिल्ली में, ऐसा बहुत कम होता है। यहाँ महिलाओं को अगवा किया जाता है, पुरुषों को नहीं। हमारे यहाँ के बदमाश इसी तरह काम करते थे। अगर मामला किसी महिला का नहीं है, तो वो उनका काम नहीं है।
दो बार दस्तक देने के बाद दरवाजा खोलते ही मैंने ये सारे विचार एक तरफ रख दिए। मेरे सामने घुटने तक की स्कर्ट, धारीदार कमीज और टील रंग का कोट पहने खड़ी वह लड़की हल्की सी मुस्कान लिए खड़ी थी। वह दुबली-पतली, छोटी कद-काठी की थी, उसकी आंखों पर चश्मा लगा था, रंग गोरा था और होंठ पतले थे।
“मैं प्रितिका टोकस हूं,” वह कहती हैं।
"अंदर आएं।"
वह नीचे झुककर उन दो बक्सों को उठाती है जिन्हें मैं देख नहीं पाया था। मैं तुरंत उसकी मदद करता हूँ और दोनों बक्से लेकर उन्हें लिविंग रूम की मेज पर रख देता हूँ। मैं उससे पानी माँगता हूँ, वह सिर हिला देती है। मैं वर्धन को बुलाता हूँ, और जैसे ही मैं बुलाता हूँ, मैं देखता हूँ कि वर्धन और प्रीतिका एक-दूसरे को हैरानी भरी नजरों से देखते हैं, फिर वर्धन वहाँ से चला जाता है।
“मुझे कुछ काम है,” वह कहता है और चला जाता है।
हैरानी की बात तो यह है कि उसके पास कभी काम नहीं होता। वह सोफे पर थोड़ी असहज होकर हिलती है, फिर मेरी तरफ देखती है। मैं उससे वर्धन के बारे में और उस अजीब सी बातचीत के बारे में पूछना चाहता था, लेकिन मैंने अपना इरादा बदल दिया। आखिर मुझे पेशेवर रवैया अपनाना ही तो है।
तो, आप श्री गलगोटिया के सहायक हैं?
“वह इकलौता ही था। उसके आसपास कभी ज्यादा लोग नहीं होते थे।”

मैंने फाइलों पर नज़र डाली। वे सभी भूरे रंग के बक्से में रंग-बिरंगे फोल्डरों में रखी हुई थीं। हर फाइल को खोलकर देखने और फिर उसे वापस बक्से में डालने के ख्याल से ही मुझे डर लग रहा था। जब कोई फील्ड वर्क न हो, तो जांच-पड़ताल करना सबसे उबाऊ काम होता है। और जाहिर है, अभी कोई फील्ड वर्क नहीं था।
"क्या आप मुझे उनके बारे में कुछ बता सकते हैं?"
वह ऐसे व्यवहार करती है मानो मैंने उससे कोई अजीब सवाल पूछा हो। "क्या श्रीमती गलगोटिया ने आपको नहीं बताया?"
दरअसल, उसने मुझे बोलने का मौका तक नहीं दिया।
“हां, उसने किया। मैं तुमसे भी जानना चाहता हूं।”
“वह एक नेक इंसान थे, थोड़े मजाकिया और बहादुर भी। वह सचमुच बहुत बहादुर थे। उन्होंने कराटे में ब्लैक बेल्ट हासिल की थी। यह उनका एक शौक था, एक तरह का टाइमपास। उन्हें ताकतवर और चालाक होना पसंद था, क्योंकि उन्हें लगता था कि उन पर कभी भी हमला हो सकता है।”
तो, क्या उसे पहले से ही अंदाजा था कि उसके साथ कुछ हो सकता है?
"कौन नहीं चाहता, है ना?"
वह सही कह रही है। मुझे अब भी ऐसा लगता है, मानो मेरे अतीत की कोई परछाई आकर सब कुछ बर्बाद कर देगी।
"क्या आपने उसे फोन पर झगड़ते हुए देखा या क्या आपको कुछ और पता है जिससे मुझे मदद मिल सकती है?"
वह गहरी सांस छोड़ते हुए सिर हिलाती है। "मुझे नहीं पता कि मुझे आपको बताना चाहिए या नहीं।"
“इससे मुझे मदद मिल सकती है,” मैंने जोर देकर कहा।
वह झुककर बोली, “वह त्रिपाठी परिवार से बातचीत कर रहा था। दरअसल, श्री त्रिपाठी भारतीय सेना में जनरल थे, इसलिए जब श्री गलगोटिया ने वही किया जो वह अक्सर करते हैं, तो श्री त्रिपाठी को भनक लग गई और उन्होंने उसे जान से मारने की धमकी दे दी।”
श्री त्रिपाठी की उम्र कितनी है?
“उनकी उम्र साठ वर्ष के आसपास है।”
"कब की बात है ये?"

“उसके गायब होने से ठीक पहले,” उसने अपने घुटनों पर हाथ रखते हुए अपनी लंबी स्कर्ट को नीचे खींचते हुए कहा, मानो वह खुद को बचाने की कोशिश कर रही हो, “और बातचीत खत्म होने के बाद उसने कुछ अपशब्द कहे। दरअसल, श्री गलगोटिया धार्मिक व्यक्ति नहीं थे। बल्कि वे नास्तिक थे और श्री त्रिपाठी ईश्वर में, जीवन और मृत्यु में विश्वास करते थे और सबकी पूजा करते थे। श्री गलगोटिया ने चिल्लाते हुए उनके धर्म के बारे में अपशब्द कहे और बताया कि वे ऋग्वैदिक देवताओं की पूजा करते हैं वगैरह।”
हैं? यह तो अजीब है।
“धन्यवाद, प्रितिका,” मैंने बक्सों की ओर एक नज़र डाली, “क्या आप मुझे बता सकती हैं कि इनमें से श्री त्रिपाठी की फाइल कौन सी है?”
मुझे खेद है, मुझे नहीं पता।
आपने इसे हार्ड ड्राइव में क्यों नहीं डाला?
“श्री गलगोटिया को तकनीकी चीजों से डर लगता था। उनका मानना था कि अगर हम ऐसा करेंगे तो रोबोट जीत जाएंगे।” चेहरे पर एक हल्की सी मुस्कान फिर से आ जाती है।
मैंने उससे हाथ मिलाया और विनम्रता से अलविदा कहा, तभी वह एकदम रुक गई।
"तुम्हें मेरी मदद नहीं चाहिए?" उसने पूछा।
"मैं, उह, असल में नहीं।"
“मैं आपकी फाइलों को व्यवस्थित करने में आपकी मदद कर सकता हूँ। मैं इसमें बहुत तेज़ हूँ। उन्होंने मुझे इसलिए काम पर रखा है क्योंकि मैं काम जल्दी कर लेता हूँ।”
“आपको चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। आपको परेशान होने की ज़रूरत नहीं है, प्रितिका। हम पता लगा लेंगे, श्री गलगोटिया।”
“लेकिन...” जब मैंने अलविदा कहा और दरवाज़ा बंद किया तो उसकी आवाज़ धीमी पड़ गई। मैं नहीं चाहता था कि कोई लड़की मेरे साथ पूरे दिन काम करे। असल में, मेरे पास हर फ़ाइल को देखने का समय भी नहीं था, इसलिए मैंने उसे वर्धान को सौंप दिया।
मैंने पूछा, "तुम्हारा और उस पीए का क्या चक्कर है?"

वह अपनी मेज पर बिखरी फाइलों से नज़रें उठाकर कहता है, "हम पहले एक-दूसरे को डेट करते थे।"
वर्धन मुझसे कभी भी अपनी डेटिंग लाइफ के बारे में बात नहीं करता था, शायद इसलिए कि उसे लगता था कि मैं उसकी मां को बता दूंगी, लेकिन मुझे मां और बेटे के झगड़ों में दखल देने की कोई इच्छा नहीं थी।
"यह एक सुखद संयोग था।"
"बहुत भाग्यशाली।"
"तुम्हें लगता है कि उसे पता था कि तुम यहाँ काम करते हो इसलिए वह आई?"
वह एक सनकी लड़की है।
वह अच्छी लगती है।
“दूसरे लोगों के लिए तो ऐसा ही था— पर वो मुझे हद से ज़्यादा परेशान करती थी, हमेशा मुझे फोन करके पूछती रहती थी, ‘बाबू, सो रहे हो क्या?’ या ‘बाबू, आई लव यू’। बात हद से ज़्यादा बढ़ गई थी। मुझे थोड़ी तसल्ली चाहिए थी। मुझे अकेले समय बिताना था। मैं अब और बर्दाश्त नहीं कर सकता था। और मैं कभी भी रिश्तों में बंधने वाला इंसान नहीं था, इसलिए मैंने उससे रिश्ता तोड़ दिया। उसने रोते हुए कहा कि मैंने उसका दिल तोड़ दिया वगैरह-वगैरह, लेकिन बात खत्म हो चुकी थी।”
मैंने पूछा, "अगर आपको पता था कि आप रिश्ते निभाने वाले इंसान नहीं हैं, तो आप रिश्ते में क्यों थे?"
वह खांसता है, अपनी भौंहें चढ़ाता है और काम पर लौट जाता है। उसके पास इसका कोई जवाब नहीं था और न ही कभी होगा। जाहिर तौर पर वर्धन एक बेफिक्र इंसान था और प्रतिबद्धता से डरता था।
"क्या आपको कुछ मिला?"
“मैंने किया। श्री त्रिपाठी का दिमाग थोड़ा खराब है।”
"के रूप में?"
पढ़ते हुए वह एक फाइल दिखाते हैं, “तो, हमारा लड़का, गलगोटिया, अपने हर ग्राहक का बैकग्राउंड चेक करता था। पता चला कि श्री त्रिपाठी एक कट्टरपंथी हिंदू हैं क्योंकि सत्तर के दशक में एक पाकिस्तानी सैनिक ने उन पर गोली चलाई थी। गोली उन्हें लगी नहीं और उनकी पसलियों के पास मामूली घाव हो गया। उनका मानना था कि यम राज ने उन्हें बचाया, क्योंकि उनका कहना था कि यम राज उनकी आत्मा नहीं चाहते

थे, क्योंकि उन्हें यहाँ बड़े काम करने थे।" वह मुझे मेडिकल रिपोर्ट देते हैं, "गलगोटिया ग्राहक के बारे में सब कुछ जानने के लिए बहुत सख्त था, शायद उनकी कमजोरियों का फायदा उठाने के लिए, इसलिए वह अपने पास मौजूद हर स्रोत से उनके बारे में लगभग सब कुछ पता लगाता था।"
"यम ?" मैंने अपनी आँखें सिकोड़ीं। "मृत्यु के देवता?"
और न्याय। वह पापियों को दंडित करता है।
मैंने मुझे मिला हुआ लिफाफा निकाला और उसे खोलकर दोबारा पढ़ा: उसके पाप के लिए नरक और उसके नरक के लिए पाप ढूंढो।
"मुझे यह मिल गया।"
वह इसे पढ़ता है और उसकी आँखें चौड़ी हो जाती हैं। "अरे यार। तुमने मुझे यह पहले क्यों नहीं दिखाया?"
"मुझे लगा ये कोई मज़ाक है, लेकिन अब जब आपने बताया तो बात समझ में आ रही है। श्री त्रिपाठी खुद को यम राज समझते हैं। वो एक जनरल हैं। उस आदमी को पकड़ने के लिए उनके पास सैन्य रणनीति है। मैंने साठ साल के भी सेना के जवान देखे हैं, एकदम तंदुरुस्त। उन्हें लगता है कि दक्ष गलगोटिया को ठगी और गरीबों से पैसे लेने के गुनाहों की सज़ा देकर वो न्याय कर रहे हैं। अब बात समझ में आ रही है।" मैंने कई बेतुकी पहेलियों को जोड़कर एक बेमेल नतीजा निकाल लिया था।
और इसमें चौबीस घंटे लिखा है... इसका मतलब है...
मुझे लगता है कि आपका मतलब यही है...
"हाँ, है ना?" वह उत्साह से अपने होंठ चबाता है। "लेकिन उसने तुम्हें वह क्यों भेजा? और 'नरक' से उसका क्या मतलब है? उसका उस बात से क्या तात्पर्य था?"
"हमें उससे पूछकर ही इसका पता लगाना होगा।"
"क्या आप पुलिस को बुलाएंगे?"
"हमारे पास कोई सबूत नहीं है।" हम अपने संदेह के आधार पर उनसे संपर्क कर सकते थे, लेकिन मैं ऐसा नहीं करना चाहता था। जैसे ही मैं मुठभेड़ की सभी संभावनाओं के बारे में सोचने लगा, मेरे अंदर एड्रेनालाईन तेज़ी से बढ़ने लगा और मुझे वह संभावना सबसे अच्छी लगी जिसमें मैं त्रिपाठी के सिर में गोली मारकर न्याय करता। "हमें अकेले ही जाना होगा।"
"मैं आ रहा हूँ, मैं कार में ही रहूँगा, वादा करता हूँ," वह गिड़गिड़ाता है।

मैं सिर हिलाते हुए डेस्क के बगल में रखी अलमारी की ओर बढ़ता हूँ। मैं एक पीले चमड़े का डिब्बा निकालता हूँ। मैं उसे खोलता हूँ और उसमें से एक छोटी पिस्तौल निकालता हूँ। यह भारी है लेकिन शक्तिशाली है। जैसे ही मैं बंदूक को हाथ में लेता हूँ, मेरे अंदर ऊर्जा और शक्ति का अहसास होता है। डिब्बे में एक होल्स्टर भी है जिसे मैं अपनी बेल्ट पर लगा लेता हूँ। मैं पिस्तौल में छह गोलियाँ भरता हूँ और उसे होल्स्टर में रख देता हूँ, साथ ही हथियार को अपने कोट से छिपा लेता हूँ।
क्या हमारे पास कोई पता है?
“हाँ, हमारे पास है। यह उसके फ्लैट का पता है जहाँ वह गलगोटिया का किराएदार है। मुझे पक्का नहीं पता कि वह अभी वहाँ रह रहा है या नहीं।” वह अपनी डायरी में लिखता है। “हमारे पास उसका नंबर भी है।”
"ट्रूकॉलर ऐप से जांच करें।"
उसने ऐप में नंबर डायल किया और स्क्रीन चमकने लगी। उसने ऊपर देखा और मूर्खतापूर्ण मुस्कान बिखेरी। "नंबर गुड़गांव में लोकेशन दिखा रहा है।"
मैंने सिर हिलाया और अपनी घड़ी देखी। उसमें 3 बज रहे थे। "मुझे कल शाम चार बजे चिट्ठी मिली थी।"
"वह दक्ष के साथ जो भी करने वाला है, वह एक घंटे के भीतर ही कर देगा।"
एक घंटा।
एक घंटा।

अध्याय नौ

मैं पागलों की तरह गाड़ी चलाता हूँ, ट्रैफिक के बीच से टेढ़े-मेढ़े रास्ते से निकलता हूँ और गुड़गांव जाते समय सभी ट्रैफिक लाइटें पार कर जाता हूँ।

“क्या आपने त्रिपाठी को फोन किया था?”

“मैंने किया,” वर्धन आह भरते हुए कहता है। “वह चुन नहीं रहा है।”

"धत् तेरे की!" मैंने गुस्से में अपनी मुट्ठियाँ स्टीयरिंग व्हील पर पटकीं।

हमें पुलिस को बुलाना चाहिए।

मैंने अचानक दाईं ओर मोड़ लिया जिससे वर्धन मेरी तरफ लुढ़क गया और मेरी गोद में गिर पड़ा। असहजता से उसने खुद को संभाला और सीट बेल्ट लगा ली।

मैंने तुम्हें पहले ही चेतावनी दे दी थी। मैंने आँख मारी।

वह कहता है, "हमें पुलिस को बुलाना चाहिए।"

"जब तक हमें यकीन न हो जाए, तब तक नहीं।"

"लेकिन..."

मैंने वर्धन की तरफ एक नज़र डाली। “हमारे पास हरियाणा पुलिस से संपर्क करने का समय नहीं है। जब तक हम उन्हें समझाने की कोशिश करेंगे, तब तक दक्ष की मौत हो चुकी होगी।”

“मृत?” उसकी आवाज़ कांपने लगती है। “मुझे मृत लोग पसंद नहीं हैं। मुझे खून से नफरत है।”

और मुझे यह बहुत पसंद है।

“क्या आपको सच में लगता है कि त्रिपाठी दक्ष की हत्या कर रहा है?”

“उन्होंने हमें समय और यहां तक कि नाम भी बता दिया है। यह संयोग इतना विचित्र है कि इसे महज संयोग नहीं कहा जा सकता।”

लेकिन उन्होंने कुछ अजीबोगरीब भी लिखा।

हमें खुद उनसे इस बारे में पूछना होगा।

मैं गाड़ियों के बगल से गुज़रता हूँ, बाल-बाल बचता हूँ। इसी दौरान, मैं एक गाड़ी के पिछले बम्पर से टकरा जाता हूँ, जिससे ड्राइवर चौंक जाता है और हम पर गंदी गालियाँ बरसाने लगता है। लेकिन मेरे पास रुककर माफ़ी मांगने का समय नहीं है। हमारे पास कितना समय है?

वह अपनी डायनासोर वाली घड़ी को देखता है, जिसे वह किसी कारणवश भाग्यशाली मानता है। "तुम्हें यह पसंद नहीं आएगी।"
“बोल दो।” मैंने कार को निर्वाण कॉलोनी की लंबी, चौड़ी गलियों में मोड़ दिया, जो अपने आप में एक छोटा शहर था। गुड़गांव इसी तरह बसा हुआ था और उसमें कई शहरों के भीतर कई शहर थे।
“यह...उह...हमारे पास पाँच मिनट हैं।”
घर कितनी दूर है?
"दस मिनट की दूरी पर।"

अध्याय दस

उसने वह आवाज़ सुनी। यह गरजते इंजनों की आवाज़ थी। वह खुद पर मुस्कुराया। वह यहाँ था। आखिरकार वह यहाँ पहुँच ही गया था। हालाँकि, उसने अपने सामान्य कपड़े नहीं पहने थे। उसने काला कुर्ता और ढीली जींस पहनी हुई थी। उसने अपने शरीर पर रंग नहीं लगाया था और न ही अपना मुकुट। सब कुछ ज़मीन के नीचे सुरक्षित रखा हुआ था।

दरवाजे की घंटी बजने का इंतज़ार करते हुए वह सोफे पर उंगलियां थपथपा रहा था। आने वाले पैकेज को देखकर उसके होंठों पर हल्की सी मुस्कान आ गई। और वाकई, पैकेज तो आना ही था। यह एक सफेद पार्सल में था, साफ-सुथरा स्टेपल और टेप से बंधा हुआ। बिल्कुल उसी तरह जैसे उसने उसे भेजा था।

वह कांच की मेज की चमक में अपनी परछाई को घूर रहा था। वह देख सकता था कि बिना कपड़ों के वह कितना कमजोर था। वह अकेला और हताश लग रहा था। वह अपने असली रूप में लौटना चाहता था। हाँ। यही उसका असली रूप था। वह अब जो था, उसके आसपास के लोगों के अनुसार उसका असली रूप, उसके लिए असली नहीं था। यह उसका मुखौटा था, लेकिन रंग, मुकुट और हथियार सब उसके और उसकी आत्मा का हिस्सा थे, जो उसकी चेतना के सागर में विलीन थे। यही असली था। उसकी यह चमकदार, सफेद त्वचा, हड्डियों का ढांचा, भरे हुए होंठ, सलीके से कटे नाखून, सब कुछ बहुत ही मानवीय और मानवीय था।

और वह इंसान तो बिल्कुल नहीं था। वह एक देवता था, न्याय का देवता।

दरवाजे की घंटी बजी और उसकी मुस्कान और चौड़ी हो गई।

अध्याय ग्यारह

मैंने दोबारा घंटी बजाई और अपार्टमेंट को ध्यान से देखने के लिए थोड़ा पीछे हट गया। यह एक बंगला था जो तीन हिस्सों में बंटा हुआ था और हर मंजिल पर जाने के लिए एक बाहरी सीढ़ी थी। त्रिपाठी का अपार्टमेंट तीसरी मंजिल पर था, जो हमेशा की तरह साधारण दिख रहा था।

क्या उनकी कोई श्रीमती त्रिपाठी हैं?

"हाँ।"

“तो फिर वो ये कैसे करता है?” मैंने पूछा।

वर्धन ने कंधे उचका दिए। "मुझे लगता है कि वह ऐसा तब करता है जब वह सो रही होती है।"

मैं उसे जवाब देने ही वाला था कि तभी दरवाजा खुला और मैंने एक झुर्रियों वाली बूढ़ी औरत को अपनी नाइटी पहने हुए देखा, जो अपने हाई पावर वाले चश्मे से हमारी तरफ घूर रही थी, जिससे उसकी आंखें दोगुनी बड़ी लग रही थीं।

“जी?” वह कमजोर आवाज में कहती है। “देरी के लिए क्षमा चाहती हूँ। आप जानते हैं, इसमें समय लगता है।”

“हेलो मैम।” मैंने तुरंत मुस्कुराते हुए अपनी हैरानी छुपाई। “क्या हम श्री त्रिपाठी से बात कर सकते हैं?”

"हाँ, हाँ, वह सो रहा है, काम किस बारे में है, नौजवान?"

मैं यहां दक्ष गलगोटिया के बारे में बात करने आया हूं। वह कुछ दिनों से लापता हैं।

“ओह,” वह चीखती है और मुझे और वर्धान को अंदर आने देती है। “वह अच्छा आदमी नहीं था, लेकिन... उम... मुझे नहीं लगता कि आपको पता होगा।”

मुझे नहीं पता क्या?

तब मुझे समझ आया कि उसने मुझे अपने अपार्टमेंट में क्यों आने दिया। कमरे के एक कोने में एक छोटा सा टेलीविजन था जिस पर समाचार चल रहा था।

“यह अभी-अभी, कुछ मिनट पहले ही सामने आया है।” मैं टीवी से चिपकी हुई थी और मन ही मन बुदबुदा रही थी, नहीं, नहीं, नहीं, तभी वह रुक गई। “वह अच्छा आदमी नहीं था, लेकिन शैतान को भी ऐसी नियति नहीं भोगनी चाहिए...”

टीवी पर तस्वीरें उभरती देख और वर्धन के हांफने की आवाज़ सुनकर मैं उसके शब्दों को ठीक से समझ नहीं पाई। तस्वीर भयावह या डरावनी नहीं थी, लेकिन जो खबर पढ़ी जा रही थी, उससे मेरे रोंगटे खड़े हो गए।

“दो बच्चे गुड़गांव के एंबियंस मॉल के बाहर क्रिकेट खेलते हुए एक शव के पास पहुँचे। हमारी रिपोर्टर स्वाति कौशिक अपने कैमरामैन के साथ सबसे पहले वहाँ पहुँचीं। शव के दृश्य सबसे पहले हमें ही मिले।” इसके बाद एक दृश्य दिखाया जाता है जिसमें हिलता हुआ कैमरा कूड़ेदान में पड़े एक शव को पुलिस की फॉरेंसिक टीम द्वारा बाहर निकालते हुए दिखाता है। अचानक एक पुलिसकर्मी कैमरे के सामने आता है और कैमरामैन को धक्का देकर गालियाँ देने लगता है। महिला वापस आती है और कहती है, “अंदरूनी सूत्रों के अनुसार यह शव दक्ष गलगोटिया का है। उनकी मृत्यु के कारणों की अभी पुष्टि नहीं हुई है...”

अध्याय बारह

दरवाजा खोलते ही सामने छड़ी लिए खड़े, सलीकेदार बृजेश खन्ना खड़े नज़र आए। बृजेश को कोई शारीरिक परेशानी या शारीरिक अक्षमता नहीं थी; उन्हें बस अपनी छड़ी बहुत पसंद थी, जिसके ऊपरी सिरे पर बाघ का चेहरा बना हुआ था। बृजेश की चोटी थी और उन्होंने गोल, भूरे रंग के चश्मे पहने हुए थे। उनका चेहरा देखने में भले ही आकर्षक न हो, लेकिन उनकी मुस्कान मनमोहक और चंचल थी।

"नमस्ते।"

वह छह फुट आठ इंच लंबे, कुर्ता पहने एक सख्त और खूंखार दिखने वाले व्यक्ति के सामने खड़ा था। वह हमेशा अपने साथ सुरक्षाकर्मी रखता था, अपनी जान के डर से। बृजेश एक सुरक्षित व्यक्ति था। हालांकि वह कई ऐसे काम करता था जिन पर अधिकारियों की नज़र में आपत्ति हो सकती थी, लेकिन वह यह सुनिश्चित करता था कि वह उन्हें शालीनता से करे और कभी-कभार ही क्रूरता का सहारा ले।

“मुझे आपका अपार्टमेंट हमेशा से पसंद था।” उसने जगह का जायज़ा लिया। “क्या यह आपके पास है?” बृजेश ने पूछा।

वह आदमी मेज के पास गया, पैकेट उठाया और उसे देते हुए बोला, "यह रहा।"

उसने उसे अपने हाथ में पकड़ रखा था और उसे इधर-उधर से ऐसे देख रहा था मानो वह अपनी एक्स-रे जैसी आंखों से उसकी जांच कर रहा हो, फिर उसने उसे अपने गार्ड को ले जाने के लिए सौंप दिया।

“तुम्हें क्या चाहिए?” उसने पूछा।

"हमेशा की तरह, हथियार," उसने मुस्कुराते हुए कहा, "लेकिन बहुत बड़े वाले।"

"क्या तुम्हें वो हिरण के सींग पसंद आए जो मैंने तुम्हें दिए थे?"

बेशक, मैंने उससे एक मुकुट बनाया।

उसने सहमति में सिर हिलाया।

आपने उसका क्या किया?

“मैं इसे अपने बेडरूम में रखता हूँ,” उस आदमी ने आँखें सिकोड़ लीं। बृजेश इतनी मामूली चीज़ के बारे में इतना उत्सुक क्यों था, जो उसने कुछ समय पहले ही दी थी?

“जी हां।” उन्होंने अपनी छड़ी थपथपाते हुए कहा, “मैं आपसे कभी नहीं पूछता कि आप क्या करते हैं, महोदय।” उन्होंने विनम्रता से कहना शुरू किया, “या आपको मेरा

सामान कहां से मिलता है। मैं आपका बहुत आभारी हूं। आप मेरे सबसे बड़े आपूर्तिकर्ता हैं; इसीलिए मैं स्वयं आपसे मिलने आया हूं, अपने मित्रों को नहीं भेजा। मुझे लगा था कि सामान के बदले आपको कुछ चीजें, हथियार और अन्य चीजें चाहिए। मुझे हिरण के सींगों का महत्व समझ में नहीं आया, जिन्हें मुझे विदेश से मंगवाना पड़ा और विशेष रूप से आपके लिए निर्यात करना पड़ा, क्योंकि आप मेरे इतने बड़े आपूर्तिकर्ता हैं।"
"आप पूछ रहे हैं कि मुझे इसकी ज़रूरत क्यों थी?"
"बिल्कुल,"
मुझे यह पसंद है। यह कांटेदार और दांतेदार है, लेकिन सुंदर है।
"हम्म।" उन्होंने सिर हिलाया, "हाँ, बिल्कुल।" उन्होंने हाथ उठाकर पीछे हटने का इशारा किया और गुड़गांव स्थित अपने बंगले की ओर भागे, जहाँ उनका अधिकांश कारोबार चलता था। "आपसे दोबारा मिलकर बहुत खुशी हुई। आशा है जल्द ही फिर मुलाकात होगी। आपको जो भी जरूरत हो, मुझसे संपर्क करें।"
उस आदमी ने अपने ताकतवर हाथों को हिलाया। बृजेश एक मजबूत इंसान था और वह किसी भी व्यक्ति की पकड़ और पकड़ से उसका अंदाज़ा लगा सकता था। लेकिन उसकी एक कमजोरी थी। वह सिर्फ एक ही धंधा करता था, और वह भी पूरी लगन से। उसके बंगले के अंदर उसका अपना क्लिनिक था, जहाँ उसके सर्जन लोगों की किडनी निकालकर काला बाजार में बेचते थे। गुड़गांव में अंग तस्करी का धंधा खूब चलता था, खासकर बृजेश खन्ना द्वारा की जाने वाली तस्करी का। समाज के निचले तबके में बृजेश इस बात के लिए बदनाम था कि अगर पीड़ित अंग निकालने से मना कर देते थे, तो वह उन्हें नशीली दवा दे देता था, और फिर उन्हें जबरन सर्जरी करवाकर सड़क पर छोड़ देता था और धमकी देता था कि अगर उन्होंने किसी को इसके बारे में बताया तो उन्हें मार दिया जाएगा। हरियाणा पुलिस को बृजेश के खिलाफ कभी कोई ठोस सबूत नहीं मिला, क्योंकि आधे इंस्पेक्टर उसके करीबी दोस्त थे।
और जब वह कुर्ता पहने अपने गार्ड के साथ पैकेज लेकर निकला, तो बृजेश को जरा भी अंदाजा नहीं था कि वह दक्ष गलगोटिया के गुर्दे ले जा रहा है।

अध्याय तेरह

अगले दिन मुझे एक कॉल आता है।

“श्री राजपूत?”

ये श्रीमती गलगोटिया हैं। उनकी तीखी, चिड़चिड़ी आवाज़ आसानी से पहचानी जा सकती है। हे भगवान, ये बातचीत तो बहुत बुरी होने वाली है।

मैंने प्रितिका के माध्यम से पैसे भेज दिए हैं। आपकी सेवाओं के लिए धन्यवाद।

और बस इतना ही। मैं फोन को कानों से लगाए इंतज़ार करता रहा और लगातार 'हैलो' कहता रहा, तभी उसने फोन काट दिया। ये सब कितनी जल्दी हो गया, मैंने अपने फोन की खाली स्क्रीन को देखते हुए आह भरी। मैं उसकी और उसके पति की मदद नहीं कर पाया। मुझे निराशा से ज़्यादा अपराधबोध महसूस हुआ। ये एक घने बादल की तरह मंडरा रहा था।

श्री त्रिपाठी महज़ हमारी बनाई हुई एक छलावी चाल थे। उनकी कोई भूमिका नहीं थी। वे सारा दिन अपने घर में बैठे रहे, श्रीमती त्रिपाठी उनकी गवाह थीं। मैंने हाथ में चिट्ठी लिए समाचार देखे, यह समझने की कोशिश कर रही थी कि मुझसे कहाँ गलती हुई। मेरे पास मौका था। मेरे पास नाम था। मेरे पास समय था। और मैं उन्हें बचा नहीं सकी। लेकिन मुझे इतना असहाय महसूस कराने में इस तरह का क्रूर आनंद किसे मिल रहा था?

उसके पाप को नरक में और उसके पाप को नरक में भेजो। इसका क्या मतलब था? पूरे पत्र में यही एक गूढ़ संदेश था।

मुझे लगता है, अब मेरे दोस्त, एसएचओ इंस्पेक्टर पटेल से बात करने का समय आ गया है। वो मेरे बचपन के दोस्त हैं, हम चैल में साथ पले-बढ़े, जहाँ मेरा हॉस्टल था। हालाँकि वो दिल्ली के थाने के इंचार्ज थे, फिर भी बातें इधर-उधर फैलती रहती हैं, बहुत से लोगों को पता चल जाता है। मुझे आज भी हमारी एक बातचीत याद है, जिसमें उन्होंने मुझे बताया था कि आजकल समाज कैसे चलता है। जब उनका प्रमोशन हुआ और उन्हें ये पद मिला, तो उनके अधिकार क्षेत्र के आसपास के लोग, जिन्हें किसी न किसी काम में उनकी मदद चाहिए होती थी, उनके पास आते और उनसे पूछते।

“मैंने उनसे कहा, मैं उनकी मदद करूँगा और अंदाज़ा लगाओ उन्होंने क्या किया? उन्होंने मुझे रिश्वत दे दी! छी!” हाथ में पेय लिए वह हँस पड़ा। “इरावन, आजकल हर

कोई सोचता है कि रिश्वत ही सब कुछ है, जैसे गारंटी। मैंने उस आदमी से कहा, मुझे रिश्वत नहीं चाहिए। मैं फिर भी काम करूँगा। मतलब, यह कोई बड़ी बात नहीं थी, बस इधर-उधर थोड़ी-बहुत जाँच-पड़ताल थी, लेकिन उसने मुझे रिश्वत लेने के लिए इस तरह ज़ोर दिया जैसे कि मैं किसी तरह से इसका हकदार हूँ। लोग इस देश में रिश्वतखोरी को खत्म करना चाहते हैं, लेकिन जब बात अपने फायदे की आती है, तो वे हमेशा वापस उसी रास्ते पर आ जाते हैं। यह याद रखना।"
मैं उसका नंबर डायल करता हूं और घंटी बजने का इंतजार करता हूं।
"हेलो?" उनका 'हेलो' कुछ उदासीन और दूरी भरा सा लगा। लगता है वो व्यस्त हैं।
"अरे, क्या तुम खाली हो?"
"इरावन, हाय। मैं वास्तव में नहीं हूँ। क्या कुछ गड़बड़ है?"
"मुझे आपसे बात करनी है..."
वह बीच में ही टोक देता है।
"क्यों न हम रात के खाने पर बात करें? मैं अपने परिवार को भी साथ लाऊंगा। काफी समय हो गया है।"
"ज़रूर," मैं मुस्कुराई। मुझे डिनर प्लान करना बिल्कुल पसंद नहीं है, लेकिन मुझे इस आदमी से जानकारी चाहिए थी। "आज?"
"कल," वह कहता है और फोन काट देता है।
हे भगवान! आजकल लोग फोन क्यों काट देते हैं?

अध्याय चौदह

ज़ोरावर पटेल की एक पत्नी थी, जिनसे वे संतान प्राप्ति के लिए बहुत प्रयास कर रहे थे। वे चालीस वर्ष के थे और चिकित्सा परीक्षणों में विश्वास नहीं करते थे, उनका मानना था कि इन सबका कोई फायदा नहीं है; जो होना है वो होकर रहेगा। रात के खाने से पहले, रुत्वी उनकी पत्नी से बातें कर रही थी, जबकि सारंग अपने फोन में व्यस्त था और तारा अपने मंगेतर से बात कर रही थी, जिसे मैंने तारा के बार-बार आग्रह करने पर अनिच्छा से बुलाया था। वह कद में छोटा और लगभग चुप रहने वाला था, उसकी ठुड्डी दोहरी थी। वह बदसूरत था और मैं यह सोचे बिना नहीं रह सकी कि मेरी इतनी सुंदर बेटी ऐसे साधारण और बदसूरत आदमी पर क्यों फिदा हो गई।

लेकिन अभी मेरे पास इस बात पर शोक मनाने का समय नहीं था। मैं अपनी बालकनी की ओर चल पड़ा, जहाँ धुंध भरे आकाश में तारे खूबसूरती से टिमटिमा रहे थे। रात में लाखों फुसफुसाहटें गूँज रही थीं और मैं उनमें से एक को भी नहीं सुन पा रहा था, तभी एक लंबा, मूंछों वाला, बिखरे बालों वाला आदमी मेरे सामने खड़ा हो गया, जिसके हाथों में स्कॉच का गिलास और उंगलियों में सिगरेट लटक रही थी।

“तुम बात करना चाहते थे?” ज़ोरावर पूछता है।

मैं दूसरों को सुनाई न देने के लिए बालकनी के दरवाजे बंद कर लेता हूँ। "मैंने सुना कि दक्ष के साथ क्या हुआ।"

“बेशर्म कमीना,” वह भौंहें चढ़ाते हुए कहता है, “तुम क्यों पूछ रहे हो?”

मैं उसके लापता होने के मामले की जांच कर रहा था।

“हाँ, तो अंदाज़ा लगाओ क्या हुआ? हमें उसके बारे में बहुत सारी गंदी बातें पता चलीं। वह बेहद घिनौना आदमी था, और सिर्फ़ अपने धंधे में ही नहीं। वह बच्चों को बहला-फुसलाकर उनके साथ गलत काम करता था, एक बाल यौन शोषण करने वाला और नीच इंसान।”

क्या आप इस मामले पर काम कर रहे हैं?

"हममें से अधिकांश, जैसा कि आप जानते हैं, थाने के अधिकारियों को उप थाने के अधिकारी के अधीन हरियाणा पुलिस की सहायता के लिए बुलाया गया था।"

मुझे आश्चर्य है कि उसे किसने मारा।

सिगरेट का कश लेते हुए वह व्यंग्य करता है, "जिस किसी ने भी यह किया, वह उससे नफरत करता था। यह व्यक्तिगत मामला था।"
“हाँ?”
“हाँ। उसके मुँह पर पट्टी बंधी थी, उसे बांधा गया था और कोड़ों से पीटा गया था। मेरा मतलब है, सीआईडी को उसके शरीर पर तरह-तरह के खरोंच और निशान मिले। और नशे की हालत देखकर उन्होंने कहा कि उसके शरीर में नमक का स्तर कम था...”
उसे खाना नहीं खिलाया गया था...
“और उसे पानी भी नहीं दिया गया,” वह आह भरते हुए कहता है, “उसे एक तरह से यातना दी गई थी।”
"आपके विचार से यह कौन कर सकता है?"
वह फिर से गहरी सांस लेता है। “लोग कहते हैं कि ये अंडरवर्ल्ड है। ये लोग पैसे निकालने के लिए लोगों को यातना देने में माहिर हैं। हम उसके रिकॉर्ड की जांच कर रहे हैं, उससे जुड़े सुराग ढूंढ रहे हैं। ये तो तर्कसंगत हिस्सा है।”
“इसमें अतार्किक क्या है?”
“क्या आपने साइको यादव के बारे में सुना है?”
“हां।” रघु यादव दिल्ली के निचले तबके में घूमने वाला एक कुख्यात सीरियल किलर था, जो लोगों को पीट-पीटकर मार डालने के बाद उनके अंग खा जाता था।
“एक नरभक्षी, आप जानते हैं। हमने उसे पाँच साल पहले पकड़ा था, एक लंबा अभियान चला था। सबूतों की कमी के कारण वह एक बार भाग निकला था, लेकिन आखिरकार हमने उसे पकड़ ही लिया। वह तिहाड़ जेल में उम्रकैद की सजा काट रहा था। पता चला कि कुछ दिन पहले दंगा हुआ था और वह भाग निकला। हे भगवान, गृह मंत्रालय इस मामले में पागल हो रहा है।”
“इसका दक्ष से क्या संबंध है?”
"साइको यादव को गुर्दों से विशेष लगाव था और दक्ष गलगोटिया का शव बिना गुर्दों के पाया गया था।"

अध्याय पंद्रह

मैं दफ्तर में बैठी अपने गाल के अंदरूनी हिस्से पर जीभ फिरा रही थी, तभी वर्धन ने मुझसे पूछा- “तुम पुलिस के पास क्यों नहीं जाती? मतलब, इस आदमी ने तुम्हें एक समय सीमा और एक नाम दिया है। वह तुम्हारे साथ खेल रहा है। पुलिस के पास जाकर तुम उसे दोबारा ऐसा करने से रोक सकती हो।”

"यह डाक मेरे घर भेजी गई थी," मैंने उसे वह लिफाफा दिखाया जिसे मैं अपने जेब में एक दोषी बोझ की तरह लिए घूम रहा था।

“वो आदमी जानता है कि मैं कहाँ रहती हूँ, और इसका मतलब है कि मेरा परिवार खतरे में है, और मैं यही नहीं चाहती, इसलिए मुझे उसकी बात माननी पड़ेगी। साथ ही, अगर मैं उन्हें कहीं और ले जाने की कोशिश करूँगी, तो मुझसे सवालों की बौछार हो जाएगी। उन्हें ऐसे स्पष्टीकरण चाहिए होंगे जो मैं नहीं दे पाऊँगी, और अगर मैं उनसे कहूँ... नहीं... जितने कम लोग जानें उतना अच्छा। मुझे उनके सामने सामान्य व्यवहार करना होगा और साथ ही उस पागल के इशारों पर चलना होगा।”

"कब तक कब तक?"

"आइए उनके अगले पत्र का इंतजार करें।"

"आप मेरे साथ मजाक कर रहे हैं।"

“मैं नहीं।” मैं खड़ा हो जाता हूँ और उसे सुलेख में लिखे हुए साफ-सुथरे कागज को दिखाता हूँ। “इसका कुछ अर्थ है—उसके पाप का नरक और उसके नरक का पाप ढूँढ़ना। वह चाहता है कि हम उसे ढूँढ़ें। और शायद, अगर मैंने उसे ढूँढ़ लिया होता, तो मैं दक्ष गलगोतिया को बचा पाता।”

तो आपका मतलब है कि ‘नरक’ और ‘पाप’ का कोई अर्थ होता है?

“जांच कर देखो, गूगल पर सर्च करो। हमारे पास कितने नरक हैं?” मैंने पूछा।

वह सर्वर पर बटन दबाता है। “नरक की विभिन्न अवधारणाओं से संबंधित बहुत सारी पौराणिक कथाएँ प्रचलित हैं, विशेषकर ईसाई धर्म में। दांते के इन्फर्नो में कहा गया है कि नौ नरक थे और अंत में शैतान है। प्रत्येक नरक में एक निश्चित पापी के लिए एक निश्चित दंड निर्धारित था।”

"ओह, यह बात समझ में आती है, उस नरक को देखो जहाँ लोगों को बांधकर भूखा रखा जाता है।"

उसने माउस क्लिक किया और पैराग्राफ ज़ूम आउट किए। बगल में तस्वीरों के साथ एक निबंध भी था। "ऐसा तो कहीं नहीं।"
"धत् तेरे की!" मैंने गुस्से में मेज पर हाथ मारा, जिससे उसे लैपटॉप को गिरने से बचाने के लिए उसे हवा में ऊपर उठाना पड़ा।
“शांत रहो भाई,” वर्धन कहते हैं।
मैं शांत नहीं रह सकता। मैंने एक आदमी को मरने दिया। जब सौ लोग मरते हैं, जिनकी मौत आपके बस में नहीं होती, तो आपको कुछ महसूस नहीं होता। लेकिन जब आपको पता होता है कि कौन मरने वाला है और कितने घंटों में, तो यह आपकी आत्मा को झकझोर देता है। यह बेबसी का भयानक अनुभव है और यह बहुत कष्टदायक है।
“क्या आपको लगता है कि इसके पीछे साइको यादव का हाथ है?”
अखबारों में लिखा था कि वह अशिक्षित है, ठीक से हिंदी भी नहीं बोल पाता और जाट है। मुझे शक है कि वह मुझसे बात भी कर पाएगा, लिखना तो दूर की बात है।
लेकिन हमारा एक फरार अपराधी भाग रहा है।
"यह हमारी समस्या नहीं है।"
वह कांपते हुए इशारे से हमेशा की तरह अपना जबड़ा आगे निकालते हुए कहता है, "दिल्ली की हालत और भी बदतर हो गई है। मुझे लगता है कि मुझे अपना सामान पैक करके कुछ समय के लिए मनाली चले जाना चाहिए। मेरे दोस्त भी वहीं जा रहे हैं, इसलिए वे भी एक अतिरिक्त प्रेरणा हैं।"
वह जो कुछ भी कहता है, मैं उसे नजरअंदाज कर देता हूँ।
“नरक और पापों के बारे में जो कुछ भी मिल सके, खोजो। मुझे हर वो चीज़ चाहिए जो तुम मेरे लिए ला सको, हर पौराणिक कथा और हर संस्कृति। मुझे जानना है कि यह आदमी क्या चाहता है। हम उसे तभी ढूंढ सकते हैं जब हम उसका साथ दें। अगर वह हमसे दोबारा संपर्क करने की कोशिश करता है, तो हमें उसके लिए तैयार रहना होगा।”

अध्याय सोलह

शव मिलने से ठीक एक घंटे पहले स्वाति कौशिक को एक फोन आया था। फोन साधारण था। आवाज अजीब सी, धातु जैसी थी, मानो स्पीकर पर कोई घिसट रही हो। और वो शब्द आज भी उनकी यादों में गूंज रहे हैं।

“हैलो, श्रीमती वर्मा,” आवाज ने कहा था।

“कौन बोल रहा है?” परिवार के सदस्यों के अलावा किसी को भी उसके ‘श्रीमती’ होने के बारे में कुछ नहीं पता था और उसने परिवार के सभी नंबर अपने फोन में सेव कर रखे थे। यह कॉल एक +17 नंबर से आई थी।

“मेरी पहचान का कोई महत्व नहीं होना चाहिए। आपको यह समझना होगा कि अधिकारियों से पहले ही आपके पास एक शव को विशेष रूप से देखने के लिए सिर्फ एक घंटा होता है।”

"क्या?"

वह तेज़ी से बोल रहा था। “तुम्हारे पास उसे ढूंढने के लिए एक घंटा है। मैंने तुम्हें उसकी जानकारी मैसेज कर दी है। हम जल्द ही बात करेंगे। तब तक, मज़े करो, ठीक है?”

और फोन कट गया।

लाश? विशेष?

बातचीत के बाद उसे एक संदेश मिला जिसमें एक स्थान के निर्देशांक दिए गए थे, जो संभवतः गुड़गांव में था। वह सालों से इस खबर को पाने के लिए संघर्ष कर रही थी। उसके बॉस, श्री महाजन, उसे नौकरी के लिए अपनी योग्यता साबित करने या न्यूज़ चैनल छोड़ने के लिए परेशान कर रहे थे। वे उसे अयोग्य मानते थे, और वह वास्तव में अयोग्य थी। उसने अपने स्कूल और कॉलेज के शुरुआती वर्षों में बहुत संघर्ष किया, मुश्किल से पास हुई और पत्रकारिता में उसकी स्नातक की डिग्री भी एक बड़ा धोखा थी, जहाँ उसका चयन महज़ भाग्य के आधार पर हुआ था। वह खुद को अच्छी पत्रकार नहीं मानती थी, लेकिन वह जानती थी कि उसके अंदर एक प्रतिभा थी जिसे वह निखारने में असफल रही थी। उसे अपने बॉस को एक अच्छी खबर देनी ही थी ताकि वह पत्रकार के रूप में अपना काम जारी रख सके।

यह उसका मौका था। क्या यह कोई साजिश थी? मुझे नहीं पता। लेकिन इस दुनिया में बिना कुछ जोखिम उठाए कौन सफल हुआ है?
वह और उसका दोस्त और कैमरामैन अकरम, जानकारी जुटाने के लिए दौड़ पड़े थे। जो भी था, वह सही था। वह वहाँ सबसे पहले पहुँची थी। उसने जो फुटेज रिकॉर्ड किया, वह चैनल को सौंप दिया गया, जहाँ उसके बॉस श्री महाजन ने ताली बजाई और उसने अपने कसे हुए दाँतों को छुपाते हुए मुस्कुरा दी।
इन सब बातों ने उसे एक बात पर यकीन दिला दिया था। जिसने भी उसे चुना, वो उसे अच्छी तरह जानता था। उसके पति की कैंसर से मौत हुए तीन साल हो चुके थे। तीन साल। उसे खोने का दर्द उतना बड़ा नहीं था जितना कि उसकी मजबूरी में हुई अरेंज मैरिज। उसने अपनी वैवाहिक स्थिति बदल ली थी, कुछ बुरे लोगों से भी डेट किया था और इसके बारे में सिर्फ उसके करीबी परिवार वालों को ही पता था, जो शादी में आए थे। बाकी सब बस हवा में फैली गंदगी और एक नीरसता का साया था।
वह जानता था। और शायद, वह समझता था कि वह कहाँ थी और अब कैसी है। उसने मेरी मदद क्यों की?
लेकिन यह महत्वपूर्ण नहीं था, महत्वपूर्ण तो यह था कि...
क्या वह मेरी दोबारा मदद करेगा?

अध्याय सत्रह

वर्धन को अपने तथाकथित चाचा, इरावन राजपूत के छोटे-मोटे काम करना बिल्कुल पसंद नहीं था। उसकी माँ हमेशा उनके बारे में बातें करती रहती थी, और बताती थी कि वे कितने साहसी थे। दस साल की उम्र में उन्होंने दूसरे दस साल के बच्चों के साथ मिलकर एक भूत बंगले की यात्रा का नेतृत्व किया था। यह वाकई दिलचस्प लग रहा था और इन्हीं छोटी-छोटी कहानियों ने वर्धन को उनके साथ इंटर्नशिप करने के लिए प्रेरित किया। उसे लगा कि परिवार का सदस्य होने के नाते उस पर काम का दबाव भी कम होगा। लेकिन ऐसा बिल्कुल नहीं हुआ। अनुभव बेहद खराब रहा।

और खासकर यह काम, जिसमें उसे प्रितिका से मिलना था।

प्रितिका कोई बुरी इंसान नहीं थी। इतना समय बीत चुका था कि वह भूल ही गया था कि उनका ब्रेकअप कैसे हुआ था। शायद स्कूल में हुआ था। जी हाँ, वे स्कूल में साथ पढ़ते थे। वह उसकी सीनियर थी और कुछ समय तक उनका रिश्ता चला, फिर प्रितिका कुछ ज़्यादा ही भावुक और रोमांटिक हो गई। उसे थोड़ी आज़ादी चाहिए थी। उसने प्रितिका को यह बात बताई भी थी। और फिर उनके बीच एक झगड़ा हुआ जो लगभग बारह दिन और बारह रातों तक चला, और जब प्रितिका इतना रोई कि एक बाल्टी भर जाए, तब जाकर वह आखिरकार उससे छुटकारा पा सका।

अब उसने उसे कॉफी शॉप में खड़ी देखा, लंबी स्कर्ट, गुंथी हुई बालों की चोटी और बिल्ली के आकार के चश्मे पहने बैठी हुई। वह एक आदर्श सहायक लग रही थी, एकदम शांत, जो बॉस की सारी बकवास सुनती थी और एक शब्द भी नहीं बोलती थी। तब भी वह आज्ञाकारी थी, लेकिन थोड़ी ज्यादा रोने वाली।

वह सीपी में स्थित स्टारबक्स में दाखिल हुआ, जो हमेशा लोगों से खचाखच भरा रहता है। उसे किसी तरह बैठने की जगह मिल गई थी और वह एक कोने में कांच की खिड़की के सामने बैठ गई। जब उसने उसे देखा, तो वह उठ खड़ी हुई और बोली, "हाय।"

“हे,” उसने कहा, लेकिन खड़ा ही रहा। काम सीधा-सादा था। उसे इधर-उधर रुककर बातें करने की ज़रूरत नहीं थी। “क्या मुझे चेक मिल सकता है?”

उसने अपने छोटे से पर्स से चेक निकालकर उसे दे दिया, लेकिन जैसे ही वह हिलने लगा, उसने अपनी तीखी आवाज में कहा, "लेकिन...लेकिन...माफ़ कीजिए?"

वह वापस चला गया। "क्या?"
"देखो, मुझे पता है कि यह तुम्हारे लिए अजीब है और मेरे लिए भी अजीब है।"
“तुम्हारा क्या मतलब है?” उसने पूछा, यह सुनिश्चित करते हुए कि उसकी आवाज़ में घबराहट न झलक रही हो।
“मैं तुमसे आगे बढ़ चुकी हूँ और मैं ये सिर्फ इसलिए कह रही हूँ क्योंकि मैं नहीं चाहती कि तुम मुझे और नज़रअंदाज़ करो। ये पूरी तरह से पेशेवर मामला है, तो क्या हम मेरे दिवंगत बॉस के बारे में बात कर सकते हैं?”
वह वाकई सच्ची थी, यह उसकी गंभीर आंखों में साफ दिख रहा था।
"आप क्या जानना चाहते हैं?"
“क्या हुआ?” यही उसका सवाल था। “एक पल पहले वो गायब था और अगले ही पल पुलिस ने उसे मृत पाया?”
"लोग कहते हैं कि यह माफिया का काम है या किसी भागे हुए अपराधी का।"
उसकी सांस इतनी फूल गई कि उसे सांस लेने के लिए पंप निकालना पड़ा। क्या उसे अस्थमा है? “नहीं। यह असंभव है! मैं अपने बॉस को जानती हूँ। वह ऐसा कभी नहीं करेगा।”
“वह एक बाल यौन शोषण करने वाला था,” उसने सिर्फ यह साबित करने के लिए कहा कि वह सही था और उसके पूर्व नियोक्ता के नाम पर लगाए जा रहे आरोपों की लंबी सूची को बल देने के लिए। लड़कियों के साथ हमेशा से ही यह अहंकार की लड़ाई रही है।
“आपको यह जानकारी कहां से मिल रही है?”
"पुलिस से।"
“उन्होंने इसे अभी तक क्यों नहीं जारी किया?”
“पीड़ित या बच्चों के परिवार वाले अपने बच्चों का नाम उजागर नहीं करना चाहते। और श्रीमती गलगोटिया भी ऐसा नहीं चाहतीं, इसलिए यह मामला गुप्त रखा गया है।”
“हे भगवान! वो तो कितने अच्छे इंसान लगते थे!” उसने गहरी साँस लेते हुए कहा, “और कुछ है क्या? सुनो, मुझे पता है कि वो दुनिया के सबसे अच्छे इंसान नहीं थे, लेकिन मैं कातिल को ढूँढना चाहती हूँ। जिसने भी ये किया है, चाहे निजी दुश्मनी हो या किसी सनकी का काम, मैं पता लगाना चाहती हूँ। और सिर्फ़ उनकी मौत की वजह से नहीं, बल्कि इसलिए भी कि किसी और को भी चोट पहुँच सकती है।”

वर्धन ने अपनी भौंहें उठाईं। उसे याद था कि वह बहुत ही प्रतिभाशाली थी। वह हमेशा मौजूद रहती थी, संकाय के लिए कड़ी मेहनत करती थी और हेड गर्ल बनने के लिए जी-तोड़ मेहनत कर रही थी। उसे उसकी मदद की ज़रूरत थी क्योंकि तीन हाथों का काम दो हाथों से बेहतर होता है।
उसने उसे बताना शुरू किया कि क्या हुआ था और कैसे हुआ था, लिफाफे के बारे में और फिर अन्य बातों के बारे में, इससे पहले कि वह हांफने लगी और वर्धन को उसे शांत करना पड़ा।
“तुम ये बात किसी को मत बताना, खासकर मेरे चाचा को। वो पहले मुझे मार डालेंगे और फिर तुम्हारे पास आएंगे।”
वह रुक गई और मौन स्वर में अपने आप से कुछ बुदबुदाने लगी।
"नरक और पापों के बारे में जानने के लिए हमें बहुत शोध करने की आवश्यकता है।"
मुझे पता है। मैंने इंटरनेट पर खोजबीन की है, लेकिन मेरा लैपटॉप बेकार है।
उसने पीछे से अपना आईपैड निकाला और इधर-उधर स्क्रॉल करने लगी। "स्टारबक्स में वाई-फाई है ना?"
“हाँ।”
वह वाई-फाई का पासवर्ड लेने के लिए कैशियर के पास गई और फिर उस पर काम करने लगी।
"तो, असल में, मेरे बेचारे बॉस को मुंह बंद करके कोड़े मारे गए। उन्होंने उनकी मौत का ब्यौरा नहीं दिया।"
वे ऐसा कभी नहीं करते।
उसने पैड को छुआ और उस पर कुछ लिखा। "यह बहुत अजीब है।"
"क्या?"
"अजीबोगरीब चीजें हमारे जीवन का अभिन्न अंग हैं, फिर भी हम उनके बारे में कभी सोचते नहीं हैं। हमें उनके बारे में ज्यादा पता भी नहीं है।"
"अजीब है।"
“क्या आपको लगता है...” उसने संदेह भरे स्वर में अपना सिर उठाया, “...क्या आपको लगता है कि हत्यारा चाहता है कि हमें नरक के बारे में पता चले?”
"जैसे ज्ञान प्राप्त करना?"
"हां, ताकि हमें मृत्यु के बाद के जीवन की वास्तविकता याद रहे।"

“कुछ कहा नहीं जा सकता।” उसने सिर हिलाया, हालाँकि उसे यह सिद्धांत बहुत ही अविश्वसनीय लगा। उसका सिद्धांत, और जो सिद्धांत उसने अपने तक ही सीमित रखा था, वह यह था कि यह आदमी, चाहे जो भी हो, हत्यारा हो या न हो, यह सब मजे के लिए कर रहा था। उसे इसमें मजा आता था। उसे लोगों को अपनी मर्जी के मुताबिक नाचते देखना अच्छा लगता था। वह जानता था कि धीरे-धीरे तार जुड़ते जाएंगे और लोग एक टीम बनाकर उसकी पहेलियों को सुलझाने में जुट जाएंगे और कठपुतलियों की तरह नाचेंगे। वह बस यही समझता था। इसके अलावा कुछ और हो ही नहीं सकता।
“नरक शब्द हेले से लिया गया है। हर संस्कृति, हर पौराणिक कथा का एक अधिपति होता है, जैसे कि वह जो उसे मजबूती से थामे रखता है। ग्रीक पौराणिक कथाओं में, नरक को टार्टारस के नाम से जाना जाता है...” उसने तस्वीर को ज़ूम करके दिखाया, “और इसे हेड्स नियंत्रित करता है।”
“हाँ। मैंने पर्सी जैक्सन पढ़ी है।” वर्धन मुस्कुराया। “बचपन में यह मेरी पसंदीदा किताब थी। लेकिन मुझे नहीं लगता कि कोई भारत आने के लिए इतना दीवाना होगा कि उसे यूनानियों में दिलचस्पी हो।”
मेसोपोटामिया की पौराणिक कथाओं में नेरगल हैं। नॉर्स पौराणिक कथाओं में हेल एक ऐसी हस्ती हैं जो हेल ग्रह पर शासन करती हैं। मिस्र की पौराणिक कथाओं में ओसिरिस हैं।
मुझे पापों के बारे में और अधिक बताओ।
“पाप वे बुरे कर्म हैं जो हम करते हैं, और हर पाप की सज़ा होती है।” उसने अपना आईपैड दिखाया जिस पर एक आदमी को ज़िंदा दफ़नाते हुए की तस्वीर काले-सफेद रंग में दिख रही थी। “यह हत्यारा सोचता है कि वह न्याय कर रहा है।”
"हम वह जानते हैं।"
“उसने दक्ष को पापी समझा होगा।”
“क्या हत्यारा कोई सतर्कता समूह का सदस्य है?” वह भौंहें चढ़ाकर बोला, क्योंकि उसने भारत में गुलाबी साड़ियों वाले उस गिरोह के अलावा, जो महिलाओं के साथ भेदभाव करने वालों पर हमला करता है, किसी भी सतर्कता समूह के बारे में ज्यादा नहीं सुना था। “क्या सतर्कता समूह के सदस्यों को अच्छा नहीं माना जाता?”

“कॉमिक्स में तो वे शानदार लगते हैं, लेकिन असल ज़िंदगी में नहीं।” उसने सिर हिलाते हुए आखिर में एक बेहद बनावटी राक्षस दिखाया जिसका सिर चौड़ा, चेहरा हरा, आँखें काली और जीभ होठों से लटकी हुई थी। “हर पौराणिक कथा की तरह, हमारे यहाँ भी एक ऐसा ही राक्षस है। उसका नाम यम है।”
"मुझे पता है।"
“उसके पास बहुत सारे यम दूत भी हैं, जो उसके दूत हैं।” उसने दूसरे पन्ने पलटे।
“उसके नरक को नरक के नाम से जाना जाता है।”
“हाँ, मुझे याद है।” उसने आँखें घुमाईं। उसकी माँ हमेशा कहती थी कि अगर वह दूध नहीं पिएगा, तो एक यम दूत आएगा और उसे उठाकर लाल भूमि में ले जाएगा। यह एक डरावनी धारणा थी, क्योंकि वह यम दूतों के सपने देखता था। उसने तो यहाँ तक खोजबीन भी की थी कि यम दूत कैसे दिखते हैं और यह देखकर वह डर गया था।
“तुम्हें और क्या पता है?” उसने पूछा।
वह रुक गई, और उसे पता ही नहीं चला कि क्या हुआ। उसने ऊपर देखा, उसका शरीर जम गया था, उसकी आँखें स्थिर थीं, उसका मुँह खुला लेकिन केवल हवा निकली। वह काँप रही थी जब उसने अपना आईपैड उठाया और दीवार पर चारों ओर रस्सियों से लटके एक आदमी की तस्वीर दिखाई, जो भूखा-प्यासा था, प्यासा था, और उसे नीले रंग के राक्षस कोड़े मार रहे थे।

अध्याय अठारह

उसके पाप के लिए नरक और उसके नरक के लिए पाप ढूंढो

रोहन खान

24 घंटे

एक और पत्र आया है। सारंग ने मुझे पत्र दिया और फिर ऊबते हुए अपने कमरे में जाकर अपने एक दोस्त से बात करने लगा, तब मैंने उसे खोला। मुझे रुत्वी बहुत दिनों बाद नाश्ता बनाते हुए मिली। मुझे उसके हाथ का बना खाना कभी-कभार ही खाने को मिलता है और मैं रविवार को चुनती हूँ, क्योंकि उस दिन उसके एपिसोड आने की संभावना सबसे कम होती है।

वर्धन को प्रितिका से मिलने का काम सौंपा गया था। और जब मैंने उससे बात की, तब मुझे यह मेल मिला। उसके पाप का दंड और उसके पाप का दंड ढूंढो। लेकिन इससे भी ज़्यादा महत्वपूर्ण बात पीड़ित का नाम था।

रोहन खान को कौन नहीं जानता था?

वह अस्सी और नब्बे के दशक के बॉलीवुड के लोकप्रिय अभिनेता थे। वह मेरे पसंदीदा अभिनेताओं में से एक नहीं थे, लेकिन फिर भी मुझे वह पसंद थे। वह एक व्यावसायिक अभिनेता थे और उस समय कई मशहूर हस्तियों के साथ उनका मेलजोल था। इससे भी बुरी बात यह थी कि प्रसिद्धि की सीढ़ियाँ चढ़ते समय उनका नाम मुंबई के डॉन मसूद इकबाल से जोड़ा गया था, वे अक्सर साथ में लंच करते थे। रोहन, जिनके पिता एक प्रतिभाशाली लेखक थे, नब्बे के दशक में जल्द ही एक प्रमुख फिल्म स्टार बन गए, लेकिन उनके जीवन में कई विवाद भी जुड़े, जिनमें दो तलाक भी शामिल थे। एक बार तो उन्होंने शराब पीकर एक शराबी को पीट दिया था। फिर, उन्हें अपने घर में अवैध राइफलें रखने के आरोप में पकड़ा गया, जिसके लिए उन्हें सात साल की जेल हुई और जेल से बाहर आने के बाद, उन्हें एक अभयारण्य में संरक्षित जानवरों को मारते हुए पकड़ा गया। हालांकि इसके लिए उन्हें जेल नहीं हुई, लेकिन उन पर भारी जुर्माना लगाया गया। लेकिन इससे भी वह नहीं रुके। उन्होंने जानवरों को मारना और उनका शिकार करना जारी रखा। अब, वह एक असफल अभिनेता थे और अपना सारा पैसा खर्च कर चुके थे, इसलिए जीवन यापन के लिए संघर्ष कर रहे थे।

और मुझे उनसे मिलने जाना पड़ा।

मेरे पास चौबीस थे।
मेरी बेटी तारा अचानक कहीं से आ गई और मैं उठ खड़ा हुआ। "पापा, मुझे आपसे बात करनी है।"
धत् तेरे की।
"क्या?"
“पिताजी, हमें मेरी शादी के बारे में गंभीरता से बात करनी चाहिए,” उसने चश्मा पहने और भौंहें चढ़ाते हुए मेरी तरफ देखते हुए कहा। वह बिल्कुल अपनी माँ जैसी दिखती थी। “आपने उसे पसंद तो कर लिया था, लेकिन अब आप इस रिश्ते को आगे नहीं बढ़ा रहे हैं। आप उसके माता-पिता से कब मिलेंगे? शादी की तारीख कब तय करेंगे?”
मुझे वो भी करना पड़ा। मैंने उससे पहले वादा किया था लेकिन भूल गया था। “हम करेंगे। अभी पापा को कुछ काम से जाना है।”
“आज रविवार है। मैं भी घर पर ही हूँ,” उसने दांत पीसते हुए कहा।
उसे यह बात समझ नहीं आई कि मुझे जाकर एक जान बचानी थी और मैं उसे यह बात नहीं बता सकता था।
“अगर आप घर पर नहीं रुकेंगे, पापा, तो मैं भी जा रही हूँ। मुझे कबीर से मिलना था, लेकिन मैंने अपना इरादा बदल दिया क्योंकि आप भी कहीं बाहर नहीं जा रहे थे।”
सारंग अपने कमरे से फोन हाथ में लिए बाहर आता है, जबकि मीना अपने चमकते हुए आगे निकले दांतों के साथ कोने में खड़ी है और रुत्वी रसोई से देख रही है।
मैं अपना आपा नहीं खो सकता था। आज नहीं। "ठीक है, तारा बेबी, मैं वादा करता हूँ कि मैं जल्दी घर लौट आऊँगा और हम आज जाकर उसके माता-पिता से बात करेंगे, ठीक है?"
वह ऊपर देखती है और सिर हिलाती है, फिर अपने कमरे में चली जाती है और अपने पीछे दरवाजा जोर से बंद कर देती है।

अध्याय उन्नीस

मैं अपनी कार में बैठा, इंजन स्टार्ट किया और गाड़ी को चलने दिया। मैंने गगन को फोन किया। मैं हमेशा किसी के बारे में जानने के लिए फोन करता हूँ और इस समय, केवल मुझे ही पता था कि रोहन खान दिल्ली स्थित अपने घर में शांति से बैठा है।

"नमस्ते?"

“इरावन!”

“क्या आप खाली हैं? मुझे आपकी मदद चाहिए।”

“इरावन, तुमने गलगोटिया मामले को पूरी तरह बिगाड़ दिया,” उसकी आवाज़ सख्त थी। वह आमतौर पर ऐसा नहीं होता। “यह ठीक नहीं था। यह एक बड़ा मामला था और मैंने इसे तुम्हें सौंपा था। मैंने तुम्हें एक हाई-प्रोफाइल गुमशुदा मामले की ज़िम्मेदारी दी थी और तुमने इसे बर्बाद कर दिया।” और अगर तुम चुप नहीं रहोगे, तो मैं किसी की जान नहीं बचा पाऊंगा, बेवकूफ!

"क्या अब मैं आपसे कुछ पूछ सकता हूँ?"

कुछ देर का विराम होता है।

"क्या?"

मुझे रोहन खान के बारे में सब कुछ जानना है और मैं उसके ठिकाने और स्थान के बारे में जानना चाहता हूं।

"क्यों?"

"एक निजी ग्राहक चाहता है कि मैं उसकी खैरियत जान लूँ।"

“निजी? आप कब से निजी ग्राहकों को संभाल रहे हैं? हम तो सार्वजनिक कार्य करते हैं और आपके अधिकांश काम मेरे माध्यम से ही आते हैं। आप निजी काम नहीं करते।”

"वह एक अच्छा उदाहरण है, हाई प्रोफाइल है, व्यापार के लिए वास्तव में मददगार साबित हो सकता है," मैंने तुरंत झूठ बोलते हुए कहा।

“उफ़,” वह आह भरते हुए कहता है, “कुछ मिलने पर मैं आपको फ़ोन करूँगा। अभी मुझे कुछ चीज़ें देखनी हैं। मिलते ही मैं आपको फ़ोन करूँगा।”

“इसे अभी के अभी ले आओ!” मैं चिल्लाता हूँ।

“शांत हो जाओ भाई। थोड़ा समय लगता है। मेरा एक जांचकर्ता मामले की छानबीन कर रहा है। वह तुम्हें फाइल डाक से भेज देगा। अभी देख लो।”

क्या उसका कोई पता है?
“इसमें उस आदमी का पसंदीदा रंग भी है,” वह जवाब देता है।
मैंने अपना जीमेल खोला और ईमेल के साथ भेजी गई अटैचमेंट को डाउनलोड किया।
“आपको उसकी जानकारी कहाँ से मिली?”
“इधर-उधर से सामाजिक सुरक्षा चेक वगैरह मिल रहे थे। दिल्ली पुलिस को मुझसे कुछ मदद चाहिए थी, इसलिए मैंने छानबीन और पूछताछ के बाद यह जानकारी निकाली।”
"दिल्ली पुलिस उसके बारे में क्यों जानना चाहेगी?"
"वह बॉलीवुड के सबसे लोकप्रिय सेलिब्रिटी नहीं हैं।"
मैंने उसके पते पर नजर डाली। "क्या वह अभी भी अपने दक्षिण दिल्ली वाले बंगले में रह रहा है?"
"जहां तक मुझे याद है, वह काफी समय से वहीं रह रहा था। जरूरत पड़ने पर वह विदेश यात्रा करता है, अन्यथा वह घर पर ही रहता है और कभी-कभार एस्कॉर्ट्स को बुलाता है।"
"धन्यवाद।"
उसके कुछ और कहने से पहले ही मैंने फोन काट दिया। मैं सड़कों पर तेज़ी से गाड़ी चला रहा था, ट्रैफिक को चीरता हुआ। मुझे पता था कि देर-सवेर मुझे पागलों की तरह गाड़ी चलाने के लिए चालान मिल ही जाएगा। दक्षिण दिल्ली पहुँचने से पहले मैंने वर्धन को फोन करके हालचाल नहीं पूछा और जैसे ही मैंने एक हाथ स्टीयरिंग व्हील पर रखते हुए फोन को पकड़ने की कोशिश की, वह मुझसे गिर गया।
धत् तेरे की।
वसंत कुंज में विशाल लॉन, फव्वारों और सफेद रंग के अग्रभाग वाले बंगले के बड़े से गेट तक पहुँचने तक मैं फोन नहीं उठाता। मैं सोचता हूँ कि रोहन खान को इतना पैसा कहाँ से मिलता है, जबकि वह अब न तो अभिनय कर रहे हैं और न ही कुछ प्रोड्यूस कर रहे हैं। क्या यह अंडरवर्ल्ड से आता है? क्या वह अब भी उनसे संपर्क में हैं?
गार्ड ने मुझे रोका और मुझसे सवाल पूछे, जिसके जवाब में मैंने कहा कि मैं एक निजी जासूस हूं।
“साहब व्यस्त हैं,”
उसे बताओ कि यह महत्वपूर्ण है।

गार्ड आह भरता है और अंदर फोन करके मेरे आने की सूचना देने के लिए अपने केबिन की ओर बढ़ता है, फिर गेट खोलकर मुझे अंदर आने देता है। मुझे आश्चर्य होता है कि रोहन खान ने सिर्फ मेरे नाम पर मुझे अंदर आने दिया, लेकिन शायद प्राइवेट जासूस होने की वजह से ऐसा हुआ। भारत में प्राइवेट जासूस बहुत कम हैं और उन्हें अक्सर बुरी खबरों से जोड़ा जाता है। एक तरह से यह बात सच भी थी, क्योंकि मेरे पास भी बुरी खबर थी।

मैं दरवाजे पर पहुंचा और एक नौकर ने मुझे घर में प्रवेश करने दिया। मैंने खुद को संगमरमर के फर्श वाले एक ऊंचे हॉल में पाया, जिसकी छत ऊंची थी, रोशनी शानदार थी और सजावट अद्भुत थी। उसने मुझे फर्श पर बिछी बाघ की खाल के सामने सोफे पर बैठा दिया। मैंने अपना फोन निकाला और वर्धन का नंबर डायल किया, लेकिन लगातार व्यस्त आ रहा था।

“श्री राजपूत?”

मैं तुरंत खड़ा हो गया और रोहन खान का अभिवादन किया। उनके आसपास पहले की तरह कोई सुरक्षाकर्मी नहीं थे। उन्होंने खाकी शॉर्ट्स और ढीली कमीज पहनी हुई थी और वे अपने सफ़ेद-काले बालों में उंगलियां फेरते रहे।

“मैंने सुना है कि आप एक जांचकर्ता हैं। क्या मैं जान सकता हूँ कि क्या हुआ है?”

इतने सारे विवादों से घिरे होने के बावजूद, उनमें वाकई काफी परिष्कार था।

क्या मुझे उसे बताना चाहिए या नहीं? अगर मैं बता दूं, तो क्या मेरा परिवार सुरक्षित रहेगा? मुझे नहीं पता था। और शायद कभी पता भी न चले। ये विचार धीरे-धीरे मेरे दिमाग में एक पहेली की तरह मंडराने लगे और मुझे अचानक इस मुलाकात पर पछतावा होने लगा। मेरे पास उसके नाम और समय लिखे कागज के टुकड़े के अलावा कोई सबूत भी नहीं था। क्या पता ये कोई मज़ाक हो? क्या पता वो पहले हुई मौत महज़ एक संयोग हो?

लेकिन जब वह मेरे जवाब का इंतजार कर रहा है तो मैं इस बारे में क्यों सोच रही हूँ?

मैं आपसे बस यह पूछना चाहता था कि क्या आप पैंथर्स की सेवाओं का उपयोग करना चाहेंगे। यह एक जांच और सुरक्षा फर्म है...

उसने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं और मैं समझ गया कि अब मेरी खैर नहीं। लेकिन मुझे यह भी पता था कि अगर मैंने उसे चेतावनी दी, तो हालात और भी बिगड़ सकते हैं।

"क्या आप यहाँ सिर्फ अपनी कंपनी बेचने आए हैं?"

"यही वह है जो हम करते हैं।"
वह अपनी नाक फुलाता है, लेकिन उसकी आवाज़ शांत रहती है। मुझे एहसास होता है कि वह अपने दिनों में कितना आकर्षक था, क्योंकि उसके चेहरे पर अभी भी उसकी खूबसूरती की झलक दिखती है। "क्या मैं अपने मनोचिकित्सक से मिलने जाऊं? मुझे देर हो रही है। आपकी सेवाओं के लिए धन्यवाद, लेकिन मुझे उनकी ज़रूरत नहीं है। मेरे पास सुरक्षा है। बहुत-बहुत धन्यवाद।"
मैं मुस्कुराता हूँ और फिर चला जाता हूँ। क्या मुझे इतनी दूर आने का पछतावा है? मुझे नहीं पता। लेकिन मैं किसी की मौत का फैसला सिर्फ एक कागज़ के टुकड़े के आधार पर नहीं कर सकता। मैं ऐसा नहीं कर सकता, भले ही खुद को भविष्यवक्ता कहने वाला हत्यारा एक बार सही साबित हुआ हो।
अब मेरे मन में जो सवाल उठ रहा है वह यह है कि क्या मैं चाहता हूं कि वह दो बार सही साबित हो?

अध्याय बीस

रोहन खान भागा। वह जितनी दूर और जितनी तेज़ी से भाग सकता था भागा। उसे नहीं पता था कि वह कहाँ है, सिवाय उस घने कोहरे से ढके जंगल के, जो उसे एक अंधकारमय खाई में ले आया था। यह विस्मृति थी। वह नहीं जानता था कि वह किससे भाग रहा है, सिवाय एक आकृति के—एक आदमी जो काले रंग से रंगा हुआ था और जिसके सिर पर हिरण के सींग हेलमेट की तरह चिपके हुए थे।

उसके कानों और दिमाग में इतना खून दौड़ रहा था कि वह ठीक से समझ ही नहीं पा रहा था कि यह सब शुरू कैसे हुआ। वह खाना खाकर लौटा, थोड़ी देर सोया और करीब दस बजे जॉगिंग के लिए निकला। तभी उसके सिर पर चोट लगी। उसके बाद सींगों वाली एक आकृति उस पर पानी छिड़कने लगी। उसने ऊपर देखा, हाथ मरोड़े और बोला, "कृपया मुझे छोड़ दो, प्लीज़।"

उस आकृति ने कुछ नहीं कहा। उसकी त्वचा उसकी धधकती लाल आँखों से चमक रही थी, मानो माणिक की तरह दमक रही हो। उसने उसे जंगल में भागने का इशारा किया। और जब उसने गिड़गिड़ाकर रोना शुरू किया, तो उसे राइफल की धमकी देकर दूर धकेल दिया गया। उसने उस राइफल को देखा। वह उस राइफल को जानता था।

यह उसका था।

वह इससे शिकार किया करता था, खरगोश, मोर, हाथी वगैरह मारता था। उसने ये सब अफ्रीका में किया। वह काफी समय से अपने पिता के लिए ये काम करता आ रहा था, जो नवाब और एक प्रसिद्ध कवि थे, जिनके पास खानदानी पैसा भी था, और उसके लगभग सभी पूर्वजों को जानवरों का शिकार करने और उन्हें खाने का शौक था। वह जानवरों को मनोरंजन के लिए मरते हुए देखकर बड़ा हुआ था और उसका पहला शिकार एक बाघ था। उसे अपनी जीप में बैठकर ही उसे गोली मारनी पड़ी। गोली सीधे सिर में लगी। बाद में उसने उसका कालीन बनाया। वह उस जानवर के दयनीय चेहरे और उस समय खुद को मिली शक्ति को कभी नहीं भूल सका। ये संघर्ष था, ये दृढ़ संकल्प था। उसने महसूस किया था कि जो सबसे मजबूत होता है वही जीवित रहता है और वह इस बात पर विश्वास करता था, लेकिन गैर सरकारी संगठनों और सरकार द्वारा शिकार पर लगाए गए प्रतिबंधों के कारण उसे ये काम छुपकर करना पड़ता था।

उसने एक गहरी साँस ली, आँखें बंद कीं और दौड़ना शुरू कर दिया। और तब से वह लगातार दौड़ता ही रहा। अब, जब उसने पीछे मुड़कर देखा और पाया कि कोई उसका पीछा नहीं कर रहा है, तो वह साँस लेने के लिए रुक गया। उसने आसपास का जायज़ा लिया और महसूस किया कि वह कंटीली झाड़ियों के ऊपर खड़ा है और चारों ओर ऊँचे-ऊँचे घने पेड़ों की छाया है।

वह संजयवन में था। उसने जगह देख ली थी, लेकिन इससे पहले कि वह निकलने का रास्ता ढूंढ पाता, गोलियों की आवाज गूंज उठी। आवाज से उसके होश उड़ गए और डर के मारे वह फिर से भागने लगा। पचास साल की उम्र के हिसाब से वह काफी चुस्त-दुरुस्त था। वह इस बात का पूरा ध्यान रखता था। लेकिन आज का दिन बेहद दर्दनाक था और अगर वह इस भयानक खेल से बच भी गया, तो वह यह सुनिश्चित करेगा कि इस काले चमड़ी वाले मूर्ख को उसकी दूसरी राइफल से, जो उसने चुराई नहीं थी, गोलियों का अच्छा-खासा स्वाद चखना पड़े।

लेकिन जैसे ही उसने अपना सिर घुमाया, उसने देखा कि सींगों वाले शैतान के सिर वाला काला आकृति उसके ऊपर था और राइफल उसके सिर पर ताने खड़ा था। एक तेज़ चटकने की आवाज़ आई और उसके बाद उसे अपने सीने में धीरे-धीरे असहनीय दर्द महसूस होने लगा। उसने नीचे देखा तो पाया कि उसकी छाती में एक गहरा घाव है जिससे गाढ़ा लाल खून रिसने लगा है।

अध्याय इक्कीस

जब रोहन खान जमीन पर गिर पड़ा और छटपटाने लगा, तो उस शैतानी आकृति ने हंसते हुए कहा। वह उसके पास गया और उसके ठीक हुए हिस्से पर लात मारी और राइफल के बट से उसे कुरेदने लगा। जब रोहन नहीं हिला, तो उसने उसके सिर के पास बंदूक से क्लिक किया।

“क्या...क्या...” रोहन अस्पष्ट रूप से बुदबुदा रहा था। “तुम मेरे साथ ऐसा क्यों कर रहे हो?”

"दौड़ना।"

“क-क्या?”

“भागो!” शैतान चिल्लाया।

जब रोहन नहीं उठा और बेहोश होने ही वाला था, तो उस आदमी ने उसकी टी-शर्ट पकड़ी, उसके कंधों से फाड़कर उसके घाव पर लपेट दी ताकि खून बहना बंद हो जाए। उसने उसे जबरदस्ती उठाया और फिर से दौड़ने को कहा। रोहन ने अपना एक हाथ पसलियों के पास वाले घाव पर रखा और लंगड़ाते हुए दौड़ने लगा, लेकिन उसकी गति धीमी थी।

खोपड़ी वाला हेलमेट पहने वह आदमी धीरे-धीरे पेड़ों के बीच से गुज़रता हुआ रोहन खान पर निशाना साधने से पहले आगे बढ़ा। उसे संजयवन पसंद था। वह जगह शांत, रहस्यम य और बहुत विशाल व घना जंगल थी।

और फिर उसने गोली चलाई। निशाना चूक गया। उसने दोबारा गोली चलाई। फिर से निशाना चूक गया, लेकिन आखिरी गोली निशाने पर लगी। वह सीधे रोहन खान के सिर में जा लगी, खून चारों ओर फैल गया और वह जमीन पर गिर पड़ा, मानो धरती उसके सारे पापों को अपने साथ ले जाए और उन्हें निगल ले।

अध्याय बाईस

मैं जब जागा तो देखा कि रुत्वी दीवार को खाली निगाहों से घूर रही थी।
आज सोमवार है और आम तौर पर मुझे गाल पर चुंबन मिलता था। यह इस बात का पक्का संकेत था कि वह ठीक है। या तो चुंबन मिलता था या कमरे में टीवी चालू हो जाता था और कोई धारावाहिक चल रहा होता था, साथ ही वह केले के चिप्स खा रही होती थी। लेकिन अगर इनमें से कुछ भी नहीं है, तो समझ लो कि कुछ गड़बड़ है।
मैं दीवार से टिककर खड़ी हो जाती हूँ, मेरा आधा शरीर अभी भी बिस्तर की ओर झुका हुआ है। मैं उसे पुकारती हूँ, पर वह सुनती नहीं। उसका चेहरा भावहीन है। मानो वह बहरी हो गई हो। यह तो हमेशा की तरह है। मुझे कभी पता नहीं चला कि वह कहाँ जाती है और उस अर्धचेतना की अवस्था में किससे मिलती है, जब वह अपने पति की आवाज़ भी साफ़ नहीं सुन पाती। मैं उसके माथे को छूकर सहलाती हूँ, तभी वह बेजान ढंग से मेरा हाथ हटा देती है, बिस्तर पर झुक जाती है और खुद को कंबल में लपेट लेती है।
मैं आह भरते हुए दराज में रखी दवाइयों की थैली लेने जाती हूँ। मैं उसे बाहर निकालती हूँ और उसमें लोनाज़ेप नाम की नींद की गोली ढूँढ़ती हूँ। जब मुझे गोली मिल जाती है, तो मैं उसे पानी के गिलास के साथ दे देती हूँ। वह गोली नहीं लेती, तो मैं उस पर चिल्लाती हूँ और ज़बरदस्ती उसके गले में गोलियाँ डाल देती हूँ, यह सुनिश्चित करने के लिए कि उसने कहीं गोली अपनी जीभ के नीचे तो नहीं छिपाई है, मैं उसका मुँह भी जाँचती हूँ।
फिर मैंने स्नान किया और कपड़े पहनते समय मुझे दरवाजे की घंटी सुनाई दी। मैं तुरंत दरवाजे की ओर भागा और जैसे ही मैंने दरवाजा खोला, मैंने देखा कि वर्धन बड़ी-बड़ी आँखों से मुझे घूर रहा है।
अंदर आते हुए वह चिल्लाया, "तुम्हारे फोन में क्या खराबी है? मैं कल से तुम्हें फोन करने की कोशिश कर रहा हूँ।"
“मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ। नेटवर्क एकदम बेकार था। क्या हुआ?”
मुझे प्रितिका से ठीक से बात करने का मौका मिला।
"और?"
"उसे नरक और पाप के बारे में कुछ ऐसा मिला है जो आपको पसंद नहीं आएगा।"

मुझे तुरंत रोहन खान और कल की चिट्ठी याद आ गई। चौबीस घंटे बीत चुके हैं। लेकिन मैंने उसे इसके बारे में तब बताने का फैसला किया जब वह मुझे जो चाहे दिखा देगा। साथ ही, मुझे यह भी समझ नहीं आ रहा था कि यह महज़ संयोग था, कोई मज़ाक या कुछ और। मेरे मन में कहीं न कहीं यह बात थी कि मेरे साथ कोई चाल चली जा रही है।

वर्धन मेरे सामने अपना लैपटॉप खोलता है और एक ऐसे पृष्ठ पर क्लिक करता है जिस पर एक व्यक्ति की तस्वीर है जिसे रस्सी से बांधा गया है, भूखा रखा गया है और कोड़ों से पीटा जा रहा है। और उसे कोड़े मारने वाला प्राणी गहरे रंग का है और उसकी खोपड़ी से सींग निकले हुए हैं।

“वो प्राणी। वो यम राज हैं,” वो कहता है। “और चाचा जी, वो दक्ष गलगोतिया हैं। आपके दोस्त ने यही कहा था ना? कि दक्ष को कहीं लटकाकर कोड़ों से पीट-पीटकर मार डाला गया था।”

लेकिन आप कहना क्या चाह रहे हैं?

“यह आदमी जो भी हो, खुद को मृत्यु और न्याय का देवता यम समझता है। हालांकि, इस मामले में हम सही थे, लेकिन यह श्री त्रिपाठी नहीं थे। और यह आदमी न्याय कर रहा है। देखिए, हिंदू पौराणिक कथाओं में हर पापी के लिए अलग नरक होता था। उदाहरण के लिए, एक बलात्कारी या ब्राह्मण परिवार के हत्यारे के लिए अलग-अलग नरक होते थे और हर नरक में पापी के लिए एक विशेष दंड होता था।”

“नरक कितने प्रकार के होते हैं?”

“अग्नि पुराण में चार नरकों का उल्लेख है। मनुस्मृति में इक्कीस नरक हैं। और भगवत गीता में अट्ठाईस नरक हैं। तो, जब यम कहता है कि उसके पाप का नरक और उसके नरक का पाप खोजो, तो इसका मतलब है कि वह चाहता है कि तुम नरक खोजो, और नरक खोजने के लिए तुम्हें पाप खोजना होगा।” वह एक और दस्तावेज़ खोलता है जिसमें नरक शब्द लिखा है और उसके सामने उसका विवरण है।

“प्रितिका की मदद से, मैंने सभी धर्मग्रंथों से नरक के सभी रूपों को एक जगह इकट्ठा किया है। इसके लिए हमें ब्रिटिश काउंसिल से संपर्क करना पड़ा क्योंकि इंटरनेट पर सारी जानकारी उपलब्ध नहीं थी। हर नरक में एक पाप धुल रहा है और आपको उस नरक को खोजना होगा, लेकिन उस नरक को खोजने के लिए आपको पापी के पाप को जानना होगा। क्या आप समझ रहे हैं?”

मुझे कुछ मिल रहा है।
उदाहरण के लिए, दक्ष गलगोतिया तामिस्र वंश का था। जो लोग दूसरों की संपत्ति, पत्नी और बच्चों को हड़प लेते हैं, उनके लिए यह नरक है। देखा जाए तो, दक्ष गलगोतिया एक धूर्त व्यक्ति था, जो कानूनी तरीके से धन चुराता था। और वह बाल यौन शोषण का भी दोषी था। इसी कारण यम ने उसका वध किया। वह तामिस्र वंश का था।
आपने मुझे यह बात पहले क्यों नहीं बताई?
मुझे तुरंत वह पत्र याद आ गया और मेरी अंतरात्मा की आवाजें मेरे सामने चकनाचूर होने लगीं। मैं गलत थी। मैं बहुत बड़ी मूर्ख थी। और इससे मुझे और भी ज्यादा अपराधबोध हुआ, जब मैंने तमिल समाचार चैनल देखा जहाँ एक समाचार रिपोर्टर रोहन के बारे में कुछ बोल रहा था। भाषा स्पष्ट नहीं थी और मैं कुछ ही शब्द समझ पाई।
“रोहन खान...संजयवन में मृत पाए गए।”

अध्याय तेईस

आपने मुझे क्यों नहीं बताया?

“मुझे नहीं पता था कि तुम्हें इसके बारे में पता चल जाएगा।” मैंने अपने बचाव में कहा। मैं गलत थी और मैं अपना बचाव कर रही थी। “अगर प्रितिका न होती तो तुम ऊंघ रहे होते।”

इसका उस पर वैसा असर नहीं हुआ जैसा मैंने सोचा था। बल्कि, उसने बस अपनी नाक फुलाई, नीचे देखा और कहा, "तुम उस आदमी से मिले थे और तुम्हारे पास उसे बचाने की शक्ति थी, लेकिन तुमने नहीं बचाया।"

“मुझे संदेह होने लगा...मुझे लगा कि यह सच नहीं है। मुझे लगा कि गलगोटिया की हत्या एक संयोग थी।”

“खैर, तुम गलत थी, साफ तौर पर। अगर वो नेटवर्क काम करता, तो आज हमारे हाथ में लाश नहीं होती। अब हमारे हाथों पर खून लगा है। प्रितिका, तुम्हारे और मेरे हाथों पर खून लगा है। और ये आदमी इसका खूब मज़ा ले रहा है। ये एक खेल है, समझ नहीं आ रहा? ये खेल खेल रहा है और हम उसके खेल हैं, जिसमें वो हमें इधर-उधर फेंक रहा है। उसे मजा आ रहा है, उसे लग रहा है कि वो हम पर हावी है। वो चाहता है कि हम दो लोगों की हत्या न रोक पाने के लिए खुद को कोसें और वो जानता है कि हम पुलिस के पास नहीं जा सकते क्योंकि हमारे परिवारों की सुरक्षा दांव पर लगी है।”

मैंने आह भरी। वह सही था। मैं कभी यह स्वीकार नहीं करती, लेकिन वर्धन एक शानदार आलसी था। वह बेशक आलसी था, लेकिन जब उसका दिमाग काम करने लगता है, तो वह किसी भी काम को बेहतरीन तरीके से करने वाला व्यक्ति बन जाता है।

मैंने पूछा, “अब हमें क्या करना चाहिए?”

“उसकी नरक जैसी स्थिति का पता लगाओ।” वह अपने लैपटॉप स्क्रीन पर दस्तावेज़ खोलता है। “तुम रोहन खान के घर गए थे, है ना? तुम्हें उसके बारे में क्या मिला? कुछ भी जो उसकी नरक जैसी स्थिति और उसके पाप से मेल खाता हो, यहाँ तक कि अगर जरूरत पड़े तो उसकी पृष्ठभूमि के बारे में भी बताओ।”

“वह... उम... माफिया से जुड़ा हुआ था और उसके कई अफेयर थे।”

वह स्क्रीन की ओर देखता है और अपना सिर हिलाता है। "कुछ नहीं। और कुछ?"

"हां, उसे जानवरों का शिकार करने का शौक था। जब भारत सरकार ने उसके साथ बुरा बर्ताव किया, तो वह कुछ जानवरों को मारने के लिए विदेश जाया करता था।"
“जानवरों का शिकार?” सूची पर नज़र डालते हुए उन्होंने अपनी आँखें सिकोड़ीं। मैं इंतज़ार करता रहा और मेरी बेचैनी बढ़ने लगी, तभी आखिरकार उन्होंने कहा, “ये रही सूची।”
वह मुझे दिखाता है।
प्राणारोध—जानवरों की अंधाधुंध हत्या। यम राज इस पापी के साथ तीरंदाजी खेल रहे हैं।
“हे भगवान!” अविश्वास से देखते हुए मैंने अपना हाथ अपने मुंह पर रख लिया। एक समय के मशहूर अभिनेता को मैंने इतनी दयनीय मौत मरने के लिए मजबूर कर दिया, जबकि मैं उसके बहुत करीब थी, बस कुछ इंच की दूरी पर, और मैं उससे कुछ कह सकती थी।
“आपको इंस्पेक्टर पटेल से बात करनी चाहिए, वो आपके एसएचओ दोस्त हैं। उन्हें पता होना चाहिए कि उनकी मौत कैसे हुई, क्योंकि खबरों में इसका ब्यौरा नहीं दिया जा रहा है। और अगर उनकी मौत उसी तरह हुई है जैसा यहां बताया जा रहा है, तो हमारे हाथ एक मनोरोगी का लगा है जिसके बारे में हम कुछ नहीं कर सकते।”

अध्याय चौबीस

मैंने घंटी बजने दी। मेरी धड़कन धीरे-धीरे, अनियम ित रूप से रुकने लगी, तभी आखिरकार उसने फोन उठाया और अपनी कर्कश आवाज में कहा।

"नमस्ते?"

“मैं हूं, इरावान।”

“हां, आप मेरी संपर्क सूची में हैं।” वह चिंतित है और उसकी आवाज़ तनावग्रस्त और कसी हुई है। पांच दिनों के भीतर दो शव मिलने से पुलिस सचमुच पागल हो रही होगी।

“क्या हुआ?”

मैंने रोहन खान के साथ जो हुआ, वह सुना।

"मुझे यह मत बताना कि तुम भी उसकी जांच कर रहे थे, क्योंकि तब मुझे तुम्हें भी उनसे जुड़े होने के आरोप में पूछताछ के लिए बुलाना पड़ेगा।"

मैं मुस्कुराता हूँ, लेकिन वह हंसने के मूड में नहीं है। "तुम कहाँ हो?"

“थाना,”

“उसके साथ क्या हुआ?”

“आप यह क्यों जानना चाहते हैं? मेरे दोस्त को यह बताना मेरे लिए गैर-पेशेवर होगा।”

“रोहन खान मेरे पसंदीदा अभिनेता थे,” मैंने झूठ बोला। मैंने उनकी आधी फिल्में भी नहीं देखीं। लेकिन मैं उन्हें जानती थी और यह भी कि वे अपने समय में बहुत लोकप्रिय थे। “मैं सचमुच खुद को किसी तरह से इस मामले से मुक्ति दिलाना चाहती हूँ।”

वह आहें भरता है, कराहता है और अंत में बोलता है। “वह संजयवन में मिला था। यह खबर हर जगह फैली हुई है, जो कि बिल्कुल सामान्य बात है। उसने जूते पहने हुए थे, लेकिन देखकर लगता है कि वह काफी दौड़ा था। उसे उसकी अपनी ही राइफल से गोली मारी गई थी, इसलिए हम अनुमान लगा रहे हैं कि वह बंदूकधारी से बचने के लिए जंगल में भाग रहा था, तभी उसे दो गोलियां लगीं। हमें लगता है कि यह आवेश में किया गया अपराध है। पशु अधिकार कार्यकर्ता भी बहुत गुस्से में हैं क्योंकि उन्हें पता चला है कि वह अपने घर के तहखाने में गैंडे की खाल और अन्य जानवरों की खालें रखता था। उसे बिना किसी छूट के लगभग दस साल की जेल हो सकती थी।”

मैंने धन्यवाद कहा और फोन रख दिया। मैंने इसे स्पीकर पर रखा था ताकि वर्धन भी मेरे साथ सुन सके और जब हमने एक-दूसरे को देखा, तो हमें एहसास हुआ कि अब

मृत्यु के देवता को खोजने का समय आ गया है।

अध्याय पच्चीस

मृत्यु का यह देवता ही अकेला ऐसा नहीं है जिसने मेरे जीवन में मुसीबतें खड़ी की हैं। मुझे और भी कई समस्याओं की चिंता है, जैसे मेरी बीमार पत्नी, मेरी चिड़चिड़ी बेटी और मेरा बदतमीज़ बेटा। लेकिन फिलहाल मैं इन सब बातों पर ध्यान नहीं देना चाहता।

हम नरक और यम के बारे में और अधिक शोध करते हैं; हम विवरणों को प्रिंट करते हैं और विभिन्न नरकों और उनके विवरणों का एक कोलाज बनाकर कार्यालय की दीवार पर टांग देते हैं, ताकि यह आसानी से उपलब्ध हो सके। फिर, हम वह करते हैं जो हमें पहले करना चाहिए था - हम लिफाफों और पत्र का अध्ययन करते हैं, उनकी उत्पत्ति के किसी भी सुराग की सावधानीपूर्वक जांच करते हैं।

“वह चाहता है कि हम उस नरक को खोजें। उसने कुछ तो दिया होगा – कोई नंबर या पता जहाँ मैं उससे संपर्क कर सकूँ और उसे बता सकूँ।”

"आप उस बारे में सही हैं।"

हम दोनों का अध्ययन करते हैं और पाते हैं कि इस विषय पर कुछ भी नहीं है।

"क्या वह हमसे जवाब चाहता भी है?"

मैंने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। मैं कोई वैज्ञानिक तो नहीं था, लेकिन कुछ तो आजमाना चाहता था। मैंने कमरे की सारी बत्तियाँ बंद कर दीं, जिससे कमरा एकदम अंधेरा हो गया। मैंने प्रकाश उत्सर्जित करने वाले सभी कंप्यूटर और इलेक्ट्रॉनिक उपकरण भी बंद कर दिए। फिर, मैंने अपना फोन निकाला और उसकी टॉर्च चालू कर दी।

"आप क्या कर रहे हो?"

“पुराने दिनों में मैं और मेरे लड़के ऐसा किया करते थे,” मैंने जवाब दिया।

मैं पूरे पन्ने पर रोशनी डालकर कुछ ढूंढती हूँ और फिर उसे पलट देती हूँ जहाँ हल्के भूरे रंग में एक सेल नंबर लिखा हुआ है। वर्धन के आश्चर्य से चीखने पर मैं अपनी आँखें सिकोड़ लेती हूँ।

"आप उसे कैसे जानते हैं?"

“यह विज्ञान है। हत्यारे ने नींबू और पानी की मदद से अदृश्य स्याही बनाई। आप पानी और नींबू के मिश्रण में डूबी हुई रुई से लिखकर अपने संदेश को अदृश्य बना सकते हैं।

नींबू एक कार्बनिक पदार्थ है जो गर्म करने पर ऑक्सीकृत होकर भूरा हो जाता है, लेकिन पानी में डुबोने पर इसका रंग बदल जाता है।”
वह अपना संपर्क क्यों छिपाना चाहेगा?
वह हमारी बुद्धिमत्ता की परीक्षा ले रहा है।
मुझे पता है मुझे क्या करना है। मैं वर्धान को लाइट जलाने का आदेश देता हूँ, जबकि मैं नंबर डायल करता हूँ। और ऐसा करते हुए, मैं उसे ट्रूकॉलर पर नंबर चेक करने के लिए कहता हूँ।
“यह अवरुद्ध है।”
"क्या भारत में भी ब्लॉक किए गए नंबरों को प्राप्त किया जा सकता है?"
“आप इसे बाजार से खरीद सकते हैं। यह लगभग पांच लाख रुपये में मिल जाता है।”
“धिक्कार है।” मैं कुछ देर तक उस नंबर को देखता रहा। और मेरे मन में एक अंतर्मन उठा कि मुझे अभी पुलिस से संपर्क करना चाहिए। उनके पास अत्याधुनिक उपकरण होंगे। वे आसानी से कॉल ट्रेस करके उसे पकड़ सकते हैं। लेकिन फिर, उसने खुद ही ऐसा किया होगा। यह व्यक्तिगत मामला था।
मैंने हरे बटन को दबाया और एक-दो बार घंटी बजी, फिर एक आवाज आई:
"नमस्ते?"

अध्याय छब्बीस

मैं जानना चाहता हूँ, “तुम कौन हो?”
कुछ देर की खामोशी और गहरी साँसें सुनाई देती हैं, फिर ज़ोरदार हँसी शुरू हो जाती है। हँसी कर्कश और दमदार है। ऐसा लगता है जैसे वह आदमी अपनी आवाज़ पर ज़ोर डाल रहा हो, अपने गले को चोट पहुँचा रहा हो, जिससे उसकी आवाज़ और कर्कश और धातु जैसी हो गई हो। वह मुझे डराना चाहता था।
"आखिरकार आपको पहेली मिल ही गई, है ना?"
"आप कौन हैं?"
मैं देख रही हूँ कि वर्धन मुझे घूर रहा है। मैंने उसे इतना तनावग्रस्त कभी नहीं देखा। ओह, इससे भी बुरा, मैंने खुद को इतना तनावग्रस्त कभी नहीं देखा। मैंने अपनी उंगलियों को मुट्ठी में भींच लिया है और चुपचाप दांत पीस रही हूँ।
आपको मुझे जानने की जरूरत नहीं है। वास्तव में, आप मुझे पहले से ही जानते हैं। पूरी दुनिया मुझे जानती है।
“यम ,” मैं धीरे से कहता हूँ।
“अरे वाह, तुमने भी यही अंदाज़ा लगाया! बहुत बढ़िया। लेकिन मुझे थोड़ी निराशा हुई है, क्योंकि तुमने दो लोगों को तब तक बलि का बकरा बनने दिया जब तक तुम्हें मेरे किए का मतलब और मेरी पहचान समझ नहीं आ गई। उम्मीद है तुम तीसरे को नहीं छोड़ोगे।”
"आप ऐसा क्यों कर रहे हो?"
“अरे, अरे, अरे। मुझसे सही सवाल पूछो।”
मैं आंखें सिकोड़कर, नाटकीय ढंग से कमरे में मुड़ती हूँ और वर्धन की निगाहों से बचने के लिए अपने पैर पटकती हूँ। "सही सवाल क्या है?"
“यह सही सवाल नहीं है। मुझसे सही सवाल पूछिए।”
मैं सोचता हुआ इंतजार करता हूँ। "अब तुम किसे मारने वाले हो?"
“अब सस्पेंस खत्म करने की पूरी कोशिश करूंगा,” वह हंसते हुए कहते हैं। “आपको जल्द ही मेरा पत्र मिलेगा। और हां, यह वाला पत्र थोड़ा मुश्किल होगा।”
“तुम यूं ही लोगों को मारते नहीं रह सकते। तुम पागल हो।”

उन्हें कोई आपत्ति नहीं हुई। उन्हें पता था कि मैं उन्हें गुस्सा दिलाने की कोशिश कर रहा हूँ। वे चालाक थे और यही मेरे लिए और भी बुरा था। "कल जब आपने और आपके छोटे भतीजे ने एक-दूसरे से संपर्क करने की कोशिश की, लेकिन कोई संपर्क नहीं कर पाया, तो क्या आपको मज़ा नहीं आया?"
अरे नहीं।
“क्या यह मजेदार नहीं था?”
“ये तो तुमने किया!” मैंने गुस्से से कहा। “तुमने ये कैसे किया? क्या तुम हैकर हो?”
या फिर मैं ही एक हैकर हो सकता हूँ, जो किसी हैकर को जानता हो। कौन जाने? क्या आपके दिमाग में बन रहे रहस्य के इस बादल में मज़ा नहीं आ रहा? क्या आप इस ध्यान का आनंद नहीं ले रहे हैं?
"मैं क्यों?"
“आह! और यही सही सवाल है!” वह हंसता है। “आखिरकार आपको सही सवाल मिल ही गया। लाखों लोगों में से सिर्फ आप ही क्यों? सिर्फ आप ही क्यों? हम्फ। मुझे नहीं पता और काश मुझे पता होता। शायद, मैं आपको पसंद करता हूँ। शायद, मैं आपकी बेटी तारा को पसंद करता हूँ। कितनी प्यारी बच्ची है। मैं उसे हर दिन कबीर से मिलते हुए देखता हूँ, वह कितना सुंदर है। वाकई शानदार आदमी है! मुझे यह भी अच्छा लगता है कि आपकी पत्नी रुत्वी इतनी बीमार हैं। उनकी क्या हालत है? मैंने सुना है कि उनकी तबीयत ठीक नहीं है। आपको पता है, आपने एक काम में अच्छा किया। आपने पुलिस को यह जानकारी दिखाकर मूर्खता नहीं की, वरना आपको मूर्ख समझा जाता और मरे हुए लोगों के नाम रखने के जुर्म में जेल हो जाती।”
मैंने ऐसा नहीं सोचा था। मैं अपने परिवार की सुरक्षा के बारे में सोच रहा था, लेकिन मैं हमारी न्यायिक प्रणाली की तकनीकी बारीकियों को भूल गया था।
“अब जब मामला सुलझ गया है, तो उम्मीद है आप अपने बेटे का भी अच्छे से ख्याल रखेंगे। मैंने सुना है कि वो कुछ बेहद दिलचस्प मुसीबत में फंस गया है। आपको मेरा तोहफा जल्द ही मिल जाएगा,” ये कहकर वो फोन रख देता है।
मैंने उसे दोबारा कॉल करने का फैसला किया, लेकिन शायद उसने मुझे ब्लॉक लिस्ट में डाल दिया था क्योंकि अब नंबर अनरीचेबल दिखा रहा था। मैंने फोन फेंक दिया, तभी वर्धन ने मेरा हाथ पकड़कर मुझे शांत किया।

“वह मेरे पूरे परिवार के बारे में जानता है, उन्हें पता है कि वे क्या करते हैं और कैसे हैं। अगर मैं उसके साथ नहीं चलता, तो वह उन्हें बर्बाद कर सकता है, और सिर्फ उन्हें ही नहीं, बल्कि मुझे भी उनके साथ।” वर्धन भय से हांफता है।
“उसने तुम्हें अपने जाल में फंसा लिया है।”
"वह मेरे बेटे के बारे में बात कर रहा है और कह रहा है कि उसमें कुछ गड़बड़ है।"
मैं तुरंत अपने कॉन्टैक्ट्स में उसका नंबर ढूंढने लगती हूँ, तभी मुझे एक लैंडलाइन नंबर से कॉल आता है। मुझे सहज रूप से महसूस होता है कि यह मेरे लिए बुरी खबर है। मैं कॉल उठा लेती हूँ।
“ये कौन है?” एक महिला पूछती है।
“मैं... उह, मैं इरावन राजपूत हूँ।”
“सारंग राजपूत के पिता?”
“जी हां,” मैंने आह भरते हुए कहा, “क्या बात है, महोदया?”
"कॉलेज के प्रधानाचार्य आज दोपहर दो बजे आपके बेटे के व्यवहार के संबंध में आपसे मिलना चाहते हैं।"

अध्याय सत्ताईस

मैं कॉलेज के लिए गाड़ी चलाकर निकल जाती हूँ, और वर्धन को दफ्तर में कागजी कार्रवाई संभालने के लिए छोड़ देती हूँ। सारंग ने क्या किया है? कॉलेज की पार्किंग में गाड़ी खड़ी करते हुए मुझे चिंता होने लगती है। मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं है, लेकिन मुझे पता है कि अगर उसे निलंबित कर दिया गया, तो वह बड़ी मुसीबत में पड़ जाएगा। सवाल यह है कि कातिल को कैसे पता चला कि सारंग मुसीबत में है? क्या उसने उसका पीछा किया? क्या वह उसके कॉलेज का साथी था? क्या वह उसका सबसे अच्छा दोस्त था? लेकिन फिर, इससे यह बात स्पष्ट नहीं होती कि वह मेरे पीछे क्यों पड़ा था।
और जैसे ही मैं पथरीले गलियारों से गुज़रता हूँ, मुझे तीन आकृतियाँ मेरा पीछा करती हुई नज़र आती हैं—एक जैकेट में, एक खाकी पैंट में और एक सूट में। उन सभी के शरीर पर निशान हैं।
मैं कमरे के बाहर इंतज़ार कर रहा था, सभी छात्र मेरी लंबी कद-काठी को घूर रहे थे। चपरासी ने दरवाज़ा खोला और जैसे ही मैं अंदर गया, सबसे पहले मेरी नज़र इस बात

पर पड़ी कि पूरी तरह से वातानुकूलित कमरा कलाकृतियों और चित्रों से भरा हुआ था। कमरा अच्छी तरह से सजा हुआ था और अलमारियों पर कई पुरस्कार रखे हुए थे। मेरी उपस्थिति से बेखबर प्रधानाचार्य पृथ्वी किसी और से बात करने में व्यस्त थे। उस व्यक्ति के जाने के बाद, उन्होंने मेरी ओर देखा। कलम बंद करने से पहले एक नीरस सन्नाटा छा गया।
“बैठ जाओ,” वह कहता है, और उसका लहजा बिल्कुल शुद्ध है। “तुम सारंग के पिता हो?”
“जी हां।” मैंने कुर्सी पर बैठते हुए सिर हिलाया। “क्या समस्या है, महोदय?”
मैंने उसकी सफेद रंग की फ्रेंच दाढ़ी, उसके आधे गंजे सिर और बिना फ्रेम वाले चश्मे के पीछे छिपी उसकी धूसर आंखों पर ध्यान दिया।
“आपके बेटे को कक्षा में एक बच्चे को अपमानित करते हुए पकड़ा गया। कक्षा खाली थी और वह छात्र पढ़ाई कर रहा था। जाहिर है, आपके बेटे को उस लड़के को चिढ़ाने और ताना मारने में मज़ा आ रहा था, और अगर हमारे एक शिक्षक ने हस्तक्षेप न किया होता तो वह हिंसक हो जाता। लड़का भावनात्मक रूप से आहत है। मुझे यह मानना बहुत मुश्किल लगता है कि इस जैसे प्रतिष्ठित संस्थान से जुड़ा कोई व्यक्ति इस तरह के व्यवहार के लिए कोई बहाना ढूंढ सकता है।”
उनकी आवाज़ में गुस्सा नहीं झलक रहा था, लेकिन उनके शब्द धाराप्रवाह और सशक्त थे। "अब मैं आपसे पूछता हूँ, हमें सारंग के बारे में क्या करना चाहिए?"
“मुझे खेद है, महोदय। मैं वादा करता हूँ कि मैं उसे बेहतर शिष्टाचार सिखाऊँगा। वह उस लड़के से माफी मांगेगा जिसे उसने परेशान किया। मैं आपसे वादा करता हूँ।”
“शिक्षकों के बहुत समझाने-बुझाने के बाद उसने माफी मांग ली। उसने एक पत्र भी लिखा।” उसके होठों पर एक हल्की, धूर्त मुस्कान तैर रही थी। “लेकिन फिर भी, मैं उसे कॉलेज से निकाल रहा हूँ।”
“किस आधार पर?”
उसने लड़के को धमकाया जरूर था, लेकिन हिंसा नहीं की थी। उसने नियम ों का पालन किया था और लड़के से माफी भी मांगी थी। उसे कुछ दिनों के लिए निलंबित किया जा सकता था, लेकिन निष्कासन का मतलब मामले को और भी गंभीर बनाना होगा।
“उसने ऐसा नहीं किया...”

“डीयू ने लोगों से शपथपत्र पर हस्ताक्षर करवाए हैं कि वे रैगिंग नहीं करेंगे, फिर भी रैगिंग हो रही है। एक लड़का खून से लथपथ और नशे में धुत पाया गया क्योंकि उसके वरिष्ठों को लगा कि उसे शराब से नहलाना मज़ेदार होगा। ऐसी दुर्भावना अब बर्दाश्त नहीं की जा सकती,” प्रधानाचार्य ने कड़े शब्दों में कहा।
“क्या आप सारंग को सबक सिखाना चाहते हैं? उसे बलि का बकरा मत बनाइए, महोदय।” मेरी आवाज़ में चिंता और आशा दोनों झलक रही थी। “वह एक अच्छा लड़का है, उसका भविष्य उज्ज्वल है।”
“उसके पास एक जरूर होगा। लेकिन यहाँ नहीं।”
“तुम क्या चाहते हो?” मैंने दांत पीसते हुए कहा। मुझे उसकी बात माननी ही पड़ी।
“तुम्हें कुछ तो चाहिए होगा। क्या है?”
वह अपनी घूमने वाली कुर्सी पर पीछे की ओर झुक जाता है। "आप मुझे हमारी सरकार समझ रहे हैं, श्री राजपूत।"
“यौन उत्पीड़न का मामला चल रहा है,” मुझे तुरंत वो घटना याद आ गई जो कुछ हफ़्तों से चर्चा में थी। उनकी एक छात्रा ने, जो एक नेत्रहीन लड़की के लिए विशेष अंग्रेजी कक्षा लेती थी, उन पर आरोप लगाया था कि उन्होंने उसे गलत तरीके से छुआ था। लड़की ने समय रहते रिपोर्ट कर दी, इससे पहले कि वो उसके करीब आते या उसे नुकसान पहुंचा पाते, लेकिन इस मामले ने उनकी प्रतिष्ठा को धूमिल कर दिया था। “मैं इसे आपके लिए खत्म करवा सकता हूँ।”
और अगर मैं पूरी गोपनीयता के साथ पूछूं, तो आप इसे कैसे करने का इरादा रखते हैं?
मैं अपने रास्ते खुद ढूंढ लेता हूँ।
वह सोच-विचार करते हुए अपने होंठ सिकोड़ता है। “आज बारह तारीख है। मैं चौदह तारीख को सारंग राजपूत को कॉलेज से निष्कासित कर दूंगा, जिससे आपको एक दिन का समय मिल जाएगा। तब तक मेरा फैसला अटल रहेगा।”
उस आदमी ने मुझे मेरे बेटे की शिक्षा बचाने के लिए एक समय सीमा दी है।

अध्याय अट्ठाईस

स्वाति कौशिक काम पर एक उबाऊ दिन बिताने के बाद घर लौटी और अभी-अभी सिगरेट जलाई थी। काफी रात हो चुकी थी। उसने अपने लिविंग रूम में कुछ अगरबत्तियाँ जलाईं, अपने लिए स्कॉच डाली, शॉर्ट्स पहने, सोफे पर कूद पड़ी और एक किताब हाथ में उठा ली। उसके होंठों से एक जली हुई सिगरेट लटक रही थी, जिसे उसने खींचकर कश लिया और खुद को आराम महसूस किया।

खिड़की के शीशे में उसे अपना प्रतिबिंब दिखाई दिया, उसके कंधे तक लंबे छोटे बाल, काजल से सजी आंखें और उसके स्वाभाविक रूप से गुलाबी और भरे हुए होंठ। वह हमेशा खुद को सुंदर समझती थी, लेकिन उसे कभी यह एहसास नहीं हुआ कि इस देश में सुंदरता की भी कीमत चुकानी पड़ती है। शुरुआत से ही वह बहुत सारी मुश्किलों से गुज़र रही थी और अगर उसमें हिम्मत और हौसला न होता, तो वह बहुत पहले ही बेबसी के आगे हार मान चुकी होती। और किस्मत ने उसे उसके मालिक के हाथों में सौंप दिया था, जो उसे नियंत्रित करता था। लेकिन ज़्यादा देर तक नहीं। बिलकुल भी नहीं।

उसे कल सुबह आई कॉल याद आ गई।

"नमस्कार, श्रीमती वर्मा।"

“जो भी हो, मुझे उस नाम से बुलाना बंद करो। मुझे नहीं पता कि तुम्हें यह कैसे पता चला, लेकिन अब मैं स्वाति कौशिक हूँ।”

“तुम कभी थे।” उसने गुस्से से कहा। “लेकिन मैं यहाँ तुम्हारे कानूनी नामों पर चर्चा करने नहीं आया हूँ। तुम समझ गए होगे कि मैं तुम्हें क्यों बुला रहा हूँ?”

"एक और हत्या हुई है, है ना?"

"एक ऐसा शव जिसके बारे में कोई नहीं जानता और सच कहें तो कोई जानेगा भी नहीं।"

“तुम कौन हो?” उसने अपनी आवाज़ को अपने छोटे से कमरे से बाहर जाने से रोकने के लिए बगल में देखा। “तुम कौन हो? क्या तुम उनकी हत्या कर रहे हो? मैंने देखा कि पुलिस की मौजूदगी में भी दक्ष गलगोटिया के साथ क्या हुआ। मैंने देखा कि तुमने उसके साथ क्या किया।”

और आपको ऐसा क्यों लगता है कि मैंने उनके साथ कुछ किया है?

"आपका क्या मतलब है?"
"शायद मैं सिर्फ एक दर्शक था और असली हत्यारा कोई और है।"
"क्या यह एक मज़ाक है?"
“यही तो आपकी ज़िंदगी है। मैं आपको ये इसलिए दे रहा हूँ क्योंकि मैं आप पर मोहित हूँ। आप मुश्किल में हैं, श्रीमती वर्मा। आपकी नौकरी आपके हाथ से फिसल रही है। आपके बॉस को आपकी मेहनत और लगन की कोई परवाह नहीं है। वो आपको गैर-ज़रूरी समझते हैं। बल्कि, आप बेहद ज़रूरी हैं, लेकिन वो आपको ये एहसास दिलाते हैं कि आप ज़रूरी नहीं हैं, ताकि वो आपसे थोड़ा सा मज़ा ले सकें। ओह, मुझे पता है आप अपनी नौकरी बचाने के लिए क्या-क्या करती हैं, श्रीमती वर्मा। आप कितनी शरारती हैं!”
उस पल वह बेहद दुखी महसूस कर रही थी। इसके बारे में किसी को पता नहीं था। फिर भी इस पागल को पता था।
“महिलाओं को दफ्तरों में हर रोज यौन उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है और अगर आप इसके आगे झुक जाती हैं तो मैं आपको दोष नहीं देती। आखिर, जो सबसे मजबूत होता है वही बचता है, है ना? लेकिन अब आपको ऐसा करने की जरूरत नहीं है। मैं आपको एक मौका दे रही हूं। मैं आपकी मदद कर सकती हूं ताकि आप उस खास समूह में शामिल हो सकें। कल्पना कीजिए कि आप अपराध स्थल पर सबसे पहले पहुंचने वाली अकेली महिला हैं, जो एक शव की खबर दे रही हैं। सोचिए कितने न्यूज़ चैनल आपको अपने साथ जोड़ने के लिए बेताब होंगे और फिर आप अपने बॉस को करारा जवाब देकर न्यूज़ आज से विदा ले सकती हैं।”
यह विचार मनोरंजक लगा था और वह मूर्ख की तरह मुस्कुराई थी।
“तो अब क्या है?” उसने पूछा।
“संजावन जंगल के अंदर जाओ और अपने साथ एक अधिकारी को ले जाओ। खुद ढूंढकर शक पैदा नहीं करना चाहते, है ना? उन्हें बताना कि यह तुम्हें जेएनयू में पढ़ने वाले एक जॉगर से मिला है, जो हर दिन जंगल में थोड़ी देर दौड़ता है।” उसकी आवाज़ में एक भयानक भय और डर था। “उम्मीद है कि अब तुम्हें टीवी पर देखने का मौका मिलेगा। अच्छे से रहना और कुछ काला पहनना, ठीक है?” और उसने फोन काट दिया।

और उसने यही किया। हालांकि, उसने गहरे रंग के कपड़े नहीं पहने। ऐसा करना तो सीधे-सीधे किसी पागल की बात मानना होता। वह वहाँ गई, शूटिंग की, अपने न्यूज़ चैनल के लिए एक एक्सक्लूसिव टेप हासिल किया और उसे फिर से बधाई मिली। उसे एक इंस्पेक्टर ने बुलाया, उससे पूछा कि उसे यह कैसे मिला और उसने वही बात बताई जो उस आदमी ने उसे कहने को कहा था। इंस्पेक्टर ने आसानी से उसकी बात मान ली।

और यहाँ वो बैठी थी, स्कॉच की चुस्कियाँ ले रही थी, सिगरेट पी रही थी और एक किताब को उल्टा पढ़ रही थी, जब तक कि उसे एहसास नहीं हुआ कि ये गलत तरीका है और उसने उसे सीधा कर लिया। वो कई विचारों में खोई हुई थी, खासकर अपने पति सुरोहित के बारे में। वो एक अच्छे इंसान थे। उसे आज भी याद था कि सुहागरात पर उन्होंने उसे छुआ तक नहीं था। उससे पहले उनकी कभी मुलाकात नहीं हुई थी। ये एक अरेंज मैरिज थी और उसने अपनी ग्रेजुएशन भी पूरी नहीं की थी कि उसे एक अजनबी से शादी करने के लिए मजबूर किया गया। उसने हाँ कर दी और पाया कि वो आदमी बहुत प्यारा था। वो उससे उम्र में बड़ा था, शायद दस साल या उससे भी ज्यादा, और वो इस नई जिंदगी में उसके अकेलेपन को समझता था। उसने उसे अपनी पढ़ाई पूरी करने दी और पत्रकारिता में डिप्लोमा करने दिया। उसने उसे तभी छुआ था जब उसने इजाज़त दी थी।

सुरोहित एक नेक इंसान थे। और उन्होंने उन्हें बेहद मुश्किल हालातों में खो दिया। भले ही वह उनके लिए रोती नहीं थीं, फिर भी उन्हें उनकी याद सताती थी। उनके बैठक कक्ष में एक फ्रेम में उनकी तस्वीर लगी थी, जिसे वह कोमल भावनाओं से देखती रहती थीं और महसूस करती थीं कि वह उनकी जान-पहचान के सबसे खुले विचारों वाले इंसान थे।

और फिर दरवाजा जोर से बंद हो गया।

वह उठी और दरवाजा खोला तो उसे अपने अतीत का एक भूत दिखाई दिया—एक ऐसा आदमी जिसके बारे में उसने कभी सोचा भी नहीं था कि वह शाम के इस समय उसके दरवाजे पर आएगा।

“हाय,” इरावन राजपूत ने हल्की मुस्कान के साथ कहा।

अध्याय उनतीस

"आप क्या चाहते हैं?"

मैं अंदर भी नहीं गई थी कि उसने मुझसे सबसे पहले यही पूछा। मैं बुरी तरह घबराई हुई लग रही थी, यह सच है। मैं कुछ ऐसी मुश्किलों से गुज़र रही थी जिन्हें वह समझ नहीं सकती थी और वह मेरी ज़िंदगी में आखिरी इंसान होती जिससे मैं मिलना चाहती। लेकिन मुझे उसकी मदद की ज़रूरत थी। उसके पास संपर्क और मीडिया की जानकारी थी जिससे मुझे प्रिंसिपल उदय पृथ्वी के बारे में कुछ पता चल सकता था। मुझे अपने बेटे को बचाने के लिए उसे बचाना ज़रूरी था। मुझे आज भी याद है कि राजौरी गार्डन लौटते समय कार में मेरे बेटे से मेरी क्या बातचीत हुई थी।

मैंने उससे पूछा, "तुमने ऐसा क्यों किया?" मैं इस बात का ध्यान रखता हूँ कि मैं अपने बच्चे पर बेकाबू होकर गुस्सा न करूँ। यह सही तरीका नहीं है।

मैंने कुछ नहीं किया।

“सर ने कहा कि आपने ऐसा किया।”

"वह एक जर्क है।"

सच है।

लेकिन वह लड़का ऐसा नहीं था।

उसने अपनी बाहें मोड़ीं और खिड़की से बाहर देखने लगा, साथ ही अपनी सीट पर पीछे की ओर झुक गया। मैंने गौर किया कि हम दोनों में कितनी अजीब समानता थी, सिवाय उसके घने बालों और मुंडे हुए चेहरे के। हमारी आँखों का रंग एक जैसा भूरा था, उसकी नाक मेरी तरह लंबी और नुकीली थी, और हमारे जबड़े भी बिल्कुल एक जैसे थे।

“तुमने ऐसा क्यों किया? तुमने उसे क्यों परेशान किया?”

"बस यूं ही," उसने मेरी तरफ देखे बिना ही कहा।

मुझे याद है कि अब हम कभी बात नहीं करते, क्योंकि ज़्यादातर समय वो अपने फ़ोन में व्यस्त रहता है और मैं अपने काम में। अब हम पहले की तरह सैर पर नहीं जाते, जब वो छोटा था तो मैं उसे हर वीकेंड पर घुमाने ले जाता था। मैं उसके लिए एक्शन फिगर खरीदता, उसे मैकडॉनल्ड्स में हैप्पी मील खिलाता और उसका हाथ पकड़कर घूमता था। अब हमारे बीच एक ऐसा खालीपन आ गया था जिसे मैं समझ नहीं पा रहा था। एक

छोटे लड़के के रूप में, मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि वो बड़ा होकर आज जैसा बदमाश बन जाएगा।
“तुम्हें बताना होगा, तुम्हें पता है ना? तुम्हें उसे मारने की प्रेरणा कहाँ से मिली? क्या वह कक्षा में कोई हारा हुआ छात्र था या कोई ऐसा अनाड़ी लड़का जिसे तुम परेशान करना पसंद करते थे? क्या बात थी?”
उसने अपनी उंगलियाँ अपने बालों में फिराईं। "मैं...उह...उसे पता चल गया।"
"क्या आपको पता है?"
“उसे पता चल गया था और वह इसका मज़ा ले रहा था, कह रहा था कि वह गपशप करेगा,” सारंग बिना मेरी मौजूदगी का एहसास किए लगातार कहता रहा। “मुझे गुस्सा आ गया, मेरा आपा टूट गया और मैं उसे मुक्का मारने ही वाला था कि तभी टीचर आ गईं।”
उसे क्या पता था?
आपको वादा करना होगा कि आप घबराएंगे नहीं।
क्या मैंने कभी ऐसा किया है?
आप एक रूढ़िवादी पिता हैं।
लेकिन अब मैं पहले से ज्यादा खुले विचारों वाला हो गया हूँ, इसलिए मुझे बताओ।
“अच्छा,” उसने आह भरी और मेरी आँखों में आँखें मिलाईं। “मेरी प्रेम संबंधी रुचियाँ लड़कों की ओर अधिक हैं।”

अध्याय तीस

जैसे ही मैं उसके घर में दाखिल हुआ, उसने मुझसे पानी मांगने तक मुझे पानी तक नहीं दिया। मुझे अपने बेटे से हुई बातचीत याद आ गई। उसने मुझे बताया कि वह दूसरों को परेशान इसलिए करता था क्योंकि उसे लगता था कि उसकी समलैंगिक भावनाएं उसकी मर्दानगी की कमी के कारण हैं, इसलिए खुद को ज़्यादा मर्दाना महसूस कराने के लिए वह कठिन काम करता था और गुंडों जैसा व्यवहार करता था। लेकिन फिर उसे एहसास हुआ कि यह कोई बीमारी नहीं बल्कि उसकी अपनी पसंद है और उसे इससे खुश रहना चाहिए और वह चाहता था कि मैं भी इससे खुश रहूँ।

मैं अपने बेटे के समलैंगिक होने से खुश कैसे हो सकता हूँ?

जब हम सेना में थे, तब हम थोड़े समलैंगिक किस्म के लड़कों का मज़ाक उड़ाते थे। समलैंगिक होना कोई स्वीकार नहीं करता था, लेकिन जिन पर शक होता था, उन्हें परेशान किया जाता था और उनका मज़ाक उड़ाया जाता था।

और मैं यहाँ अपने जीवन की सबसे बड़ी विडंबना में फँस गई थी। मेरा अपना बेटा उसी नस्ल का है जिसकी मैं कभी निंदा करती थी। उस समय तो मैंने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी, लेकिन रुत्वी से बात की, जो सामान्य अवस्था में थी, और उसने कहा कि उसे पहले से ही पता था, जो मेरे लिए और भी बड़ा आश्चर्य था। मैंने अपने बेटे से बात नहीं की। मैं उसकी कल्पना भी नहीं कर पा रही थी कि वह दूसरे लड़कों के साथ हाथ पकड़े हुए और अजीब हरकतें कर रहा है। यह मेरी कल्पना से परे था। क्या मैं समलैंगिक विरोधी हूँ? हाँ, हो सकती हूँ। मैं इसका समर्थन नहीं करती, लेकिन मैं यहाँ फँसी हुई थी और समझ नहीं पा रही थी कि क्या करूँ, इसलिए मैंने इसे फिलहाल के लिए छोड़ दिया क्योंकि मेरे सिर पर पहले से ही एक जानलेवा खतरा मंडरा रहा था। मैं पानी का एक घूंट लेता हूँ और स्वाति को देखते हुए उसे गटक जाता हूँ। जब भी मैं उसे देखता हूँ, मुझे गर्व नहीं होता। हमारा रिश्ता कुछ अजीब था। मेरी पत्नी ने आत्महत्या की दूसरी कोशिश की थी और वह अस्पताल में भर्ती थी। स्वाति शादीशुदा थी। हम दोनों के पास एक केस था। वह एक राजनेता और मुझ पर भी कुछ आरोप लगाना चाहती थी। और हम साथ काम करते थे। एक बात से दूसरी बात निकली और हमने कुछ ऐसे काम किए जिनका हमें बाद में पछतावा हुआ। हालाँकि हमने अपने रिश्ते को आगे नहीं बढ़ाया, फिर भी मैं उसके सपने देखता हूँ।

और तीन साल बाद मैं यहाँ था। बेशक, यह एक लंबा समय था। आखिरी बार मैंने उससे तब बात की थी जब मैंने उसके पति की मृत्यु के बाद अपनी संवेदना व्यक्त की थी।

“तुम क्या चाहते हो?” वह फिर पूछती है।

मुझे डर है कि मुझे आपकी मदद की जरूरत है।

मुझे लगा था कि आपको अकेले ही छानबीन करना पसंद है।

मुझे किसी के बारे में जानना है।

और वह कौन हो सकता है?

"उदय पृथ्वी, मुझे यौन उत्पीड़न मामले के बारे में और आपके पास जो भी जानकारी है, उसके बारे में सब कुछ जानना है।"

मैं तुम्हें वह क्यों देना चाहूंगा?

मैं उसे बताती हूँ कि मेरा बेटा मुसीबत में था, लेकिन मैं उसे उसकी समलैंगिकता के बारे में नहीं बताती। मैं बस इतना कहती हूँ कि मुझे इस मामले के बारे में कुछ जानकारी चाहिए ताकि मैं अपने बेटे को पृथ्वी के प्रकोप से बचा सकूँ।

वह सिर हिलाती है और फाइलों और कागजों का एक बक्सा लाने के लिए अपने कमरे में वापस चली जाती है। “वह एक बेवकूफ है, सोचता है कि वह इस मामले से बच जाएगा। मीडिया के पास उसके खिलाफ बहुत सारी जानकारी है। यह मामला उसके इस्तीफे और बिना जमानत के जेल जाने का कारण बन सकता है।”

“आखिर हुआ क्या था?”

वह मुझे दिव्यांग लड़की स्मृति तनुजा की एफआईआर की कॉपी दिखाती है। “ऐसा लगता है कि प्रिंसिपल कॉलेज में अन्य दिव्यांग बच्चों के साथ विशेष कक्षाएं लेते थे। वह खुद एडवांस्ड इंग्लिश पढ़ाते थे। वह अपने घर पर भी ट्यूटोरियल लेते थे और वहीं उन्होंने स्मृति तनुजा को गलत तरीके से छुआ, फिर माफी मांग ली, लेकिन हर दिन उनके करीब आते गए।”

"फिर क्या हुआ?"

“उस लड़की ने एफआईआर दर्ज कराई, एक एनजीओ की मदद से मुफ्त में वकील मुहैया कराया और उसी वकील की वजह से प्रिंसिपल उदय पृथ्वी मुश्किल में फंसे हैं। वकील हारून मखीजा ने उदय के ऐसे ही कई और घोटाले उजागर किए हैं और वो उन सभी को अदालत में पेश करेंगे। जाहिर तौर पर, और यह सिर्फ मेरी जानकारी में

है, हारून के पास फाइलों का अंबार है जो पृथ्वी को लंबे समय तक जेल भेज सकता है। उन्होंने कुछ अन्य दिव्यांग लड़कियों का भी छात्रवृत्ति का लालच देकर यौन उत्पीड़न किया था। उनका एकमात्र बचाव यही है कि लड़कियां उनसे अच्छे अंक पाने के लिए ऐसा कर रही हैं और यहां पीड़ित वे खुद हैं। प्रिंसिपल और देश के शीर्ष विद्वान के रूप में उनके सम्मान को देखते हुए अदालत ने अभी तक कोई फैसला नहीं लिया है और उन्हें यह विश्वास करना मुश्किल हो रहा है कि वे ऐसा कुछ कर सकते हैं।"
"हारुन..." मैंने एक फाइल उठाई जिसमें उसका चेहरा छपा था। यह एक समाचार लेख था और मैंने देखा कि उसके बाल कितने करीने से संवारे हुए थे, "वह उदय को बर्बाद करना चाहता है।"
"हां, वह उससे नफरत करता है।"
"तो, अगर वह अदालत में वह सबूत पेश नहीं करता है, तो उदय सुरक्षित रहेगा?"
"फिलहाल के लिए।"
"मुझे उम्मीद है कि वह ऐसा करेगा।" मैं फाइल को एक तरफ रख देता हूँ। "तब मेरा बेटा निष्कासन से सुरक्षित रहेगा।"
"हाँ।" वह सारी फाइलें बंद करती है और सिगरेट का कश लेते हुए पीछे झुक जाती है, "क्या आप यहाँ किसी समाधान की तलाश में आए हैं?"
आप ऐसा कह सकते हैं।
सवाल यह है कि किस तरह का समापन?
उस पल मैंने उसकी तरफ देखा और मैं समझ गई कि वह क्या कहना चाहती है। हमारा रिश्ता अचानक टूट गया था और शायद उसके मन में मेरे लिए अभी भी कुछ नफरत थी। आखिर, हमारे बीच अच्छी बॉन्डिंग थी।
"अगली सुनवाई कब है?" मैंने सवाल को नजरअंदाज करते हुए पूछा।
"शुक्रवार, परसों।"
इसीलिए वह कल सारंग को निष्कासित कर रहा है। उसका निष्कासन आदेश वैध होगा क्योंकि यह उसके प्रधानाचार्य रहते हुए ही किया गया है। मैं उसे ऐसा नहीं करने दे सकता। अभी नहीं। वह बहुत चालाक है। इससे मेरे पास केवल एक ही विकल्प बचता है।
अब हारुन मखीजा से मिलने का समय आ गया है।

अध्याय इकत्तीस

मुझे उसके तीन मंजिला साउथ एक्स हाउस तक पहुंचने में ज्यादा समय नहीं लगा। वर्धान ने सोशल सिक्योरिटी कोड हैक करके डेटाबेस में मौजूद आईडी प्रूफिंग के जरिए हारून मखीजा का चेहरा, पता और फोन नंबर ढूंढ निकाला था, लेकिन उससे मुझे हारून मखीजा के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं मिली।

कुछ और संपर्कों से बात करने पर मुझे पता चला कि हारून चालीस साल का कुंवारा, अय्याश और तकनीक में विश्वास रखने वाला आदमी था। स्वाति ने जिन फाइलों की बात की थी, वे उसकी हार्ड ड्राइव में होनी चाहिए। यह सोचकर कि वह बाहर होगा, मैंने अपने मुंह पर कपड़ा बांधा, टोपी और धूप का चश्मा पहना और घर के दूसरी मंजिल पर स्थित उसके अपार्टमेंट की ओर चल पड़ा। मैंने एक पिन निकाली और सामने के दरवाजे के ताले को तब तक ठोका जब तक वह खुल नहीं गया। मैं अंदर घुस गया और अंदर जल रहे पीले बल्ब की रोशनी में कमरे का जायजा लेने लगा। उसके पास दो और कमरे और एक अध्ययन कक्ष है, स्टोर रूम बंद था। उसके बेडरूम में जाने के बजाय, मैं उसके अध्ययन कक्ष में जाता हूँ और दस्ताने पहने हाथों से फाइलों और फोल्डरों की जाँच करता हूँ। मैं फाइलें खोलता हूँ लेकिन मुझे कुछ भी असामान्य नहीं मिलता।

वह कहाँ हो सकता है?

मुझे लगता है वर्धन मुझे फोन करेगा।

मेरे फोन पर उसका नाम चमक उठा और मुझे एहसास हुआ कि मैंने उसे यह नहीं बताया कि मैं कहाँ थी या मुझे हारुन की जानकारी की ज़रूरत क्यों थी। मैंने उसे बताया था कि मुझे कुछ निजी कारणों से इसकी ज़रूरत है। उसने ज़्यादा सवाल नहीं किए, लेकिन मुझे लगता है कि वह इस गोपनीयता के बारे में सोच रहा होगा।

कुछ सुनाई देने पर मैंने कॉल काट दी। एक आवाज़ आई। मैंने बेडरूम का दरवाज़ा थोड़ा सा खोला तो देखा कि हारुन, जैसा कि मुझे शक था, लिविंग रूम में दाखिल हो रहा है। मुझे एहसास हुआ कि मेरे पास जाने के लिए कोई जगह नहीं है। कमरे में न तो कोई खिड़की थी और न ही छिपने की कोई जगह, क्योंकि अलमारियाँ भी कपड़ों से भरी हुई थीं।

फिर मैंने उसे हंसते हुए और लड़की का हाथ पकड़े हुए बेडरूम की ओर जाते देखा।

अध्याय बत्तीस

मैं बिस्तर के नीचे छिप जाता हूँ, बिल्कुल एक बच्चे की तरह महसूस करता हूँ और उन दिनों को याद करता हूँ जब मैं अपने पिता और माता के लगातार झगड़ों से बचने के लिए ऐसा किया करता था।

यहां बहुत कम जगह है और मुझे घुटन महसूस हो रही है क्योंकि मैं उन्हें बिस्तर पर बैठे, अटपटी बातें करते और पैसों के बारे में चर्चा करते सुन रही हूँ। मैं चुपचाप अपनी उंगलियां थपथपा रही हूँ क्योंकि मुझे समझ नहीं आ रहा कि मुझे क्या करना चाहिए। मुझे सुनाई देता है कि हारून उठकर खड़ा हो जाता है, तभी वो लड़की उसके पास आती है, उसके सीने और बांहों को छूती है, आह भरती है और फिर घुटनों के बल बैठ जाती है। ऐसा करते ही, मुझे लगता है कि उसने मुझे अपनी आंखों के कोने से देखा और वो थम सी गई। उसके चेहरे पर हल्की सी मुस्कान आई और फिर उसने सिर हिलाया। वो खड़ी हुई और हारून के कान में कुछ फुसफुसाया।

वह दूसरी तरफ चला जाता है, शायद अलमारी की तरफ। मुझे अलमारी के खुलने की चरमराहट सुनाई देती है। फिर मुझे उसके पास आने की आहट सुनाई देती है। मुझे उसके भूरे जूते दिखाई देते हैं। वे चमकीले और बादामी रंग के हैं। और फिर मुझे आखिरकार समझ आता है कि उसने अलमारी से क्या निकाला।

यह एक चाबुक है।

अध्याय तैंतीस

मेरा खून जम गया।

क्या वह वही है?

लेकिन यही एक सवाल नहीं है जो मुझे परेशान कर रहा है। क्या उस लड़की ने उसे बताया कि मैं वहाँ थी? उसने कुछ फुसफुसाया तो था। मेरे मन में कई सवाल उठ रहे थे और मैं यह तय करने की कोशिश कर रही थी कि क्या मुझे तुरंत बाहर निकलकर उसका सामना करना चाहिए। ऐसा करना बेवकूफी होगी, क्योंकि मेरे पास कोई हथियार नहीं था और उसके पास चाबुक था, लेकिन मुझे कुछ तो करना ही था।

और इससे पहले कि मैं कुछ और कर पाती, उसने लड़की को बिस्तर पर धकेल दिया, उसका चेहरा उसकी ओर था। केवल उसके और उसके ही धूप में तपे हुए पैर दिखाई दे रहे थे, जब उसने उसकी पैंटी को टखनों तक नीचे खींच दिया और फिर उसे अपने चाबुक से पीटना शुरू कर दिया। वह आनंद से कराह उठी।

मुझे लगने लगा है कि वह कोई खूंखार हत्यारा नहीं बल्कि सिर्फ एक सनकी आदमी है।

कुछ देर तक कोड़े पड़ते रहे और कराहने की आवाज़ें आईं, फिर उसने कोड़ा ज़मीन पर फेंक दिया और उसके साथ बिस्तर पर चढ़ गया। यही मेरा मौका था। मैंने ज़मीन से कोड़ा उठाया और बिस्तर के नीचे से निकलकर अपने पैरों पर खड़ी हो गई, इस उम्मीद में कि वे दोनों अपने-अपने काम में व्यस्त होंगे, लेकिन मेरी उम्मीदें चकनाचूर हो गईं जब मैंने देखा कि बंदूक मेरे पेट पर तनी हुई है।

हारुन मुस्कुराता है और वो लड़की भी। उसने मुझे देख लिया होगा और उसे शांत और सहज रहने को कहा होगा। मेरे हाथ में चाबुक है, लेकिन उसके पास बंदूक है। अगर मैंने कुछ किया तो वो मुझे गोली मार देगा।

लानत है।

अध्याय चौंतीस

“चाबुक छोड़ दो,” वह कहता है।

मैं जो कहता हूं वही करता हूं। सेना में मैंने एक बात सीखी है और वो ये है कि बंदूक पकड़ने वाले हाथ का सम्मान करना और उसकी आज्ञा का पालन करना जरूरी है।

"आप कौन हैं?"

मैं विकल्पों की तलाश में इधर-उधर देखता हूँ। उम्मीद है कुछ मिल जाए। साइडबोर्ड पर एक लैंप रखा है और वो बस कुछ इंच दूर है, लेकिन मेरे हाथ ऊपर हैं और फिलहाल मैं फँस चुका हूँ।

"क्या तुम मुझसे कुछ चुराने आए थे?"

मैंने उसका चेहरा देखा। वह शांत और सहज था, उसके चेहरे पर एक हल्की, मनमोहक मुस्कान थी। दूसरी ओर, लड़की ने मेरी तरफ देखा तक नहीं। वह बस नग्न अवस्था में लेटी रही और ऊब गई। उसके हाथ में बंदूक और घर में संभावित लुटेरे की मौजूदगी से भी वह नहीं डरी और मुझे यकीन था कि उसने किसी तरह का नशा किया हुआ था। इन एस्कॉर्ट्स के लिए ग्राहक से मिलने से पहले नशा करना आम बात है; इससे उनकी घबराहट कम होती है और उन्हें सुकून मिलता है।

मैंने अपना गला साफ किया और कर्कश आवाज में कहा, "हां।"

“तुम एक भले लड़के लगते हो। अपना मुखौटा उतारो; मैं तुम्हारी शिकायत करने से पहले तुम्हें जानना चाहता हूँ।”

"क्या तुम मुझे वहीं पर उस नशेड़ी वेश्या के साथ रिपोर्ट करोगे?"

मैं उसे पीला पड़ते हुए देखता हूँ। वह लड़की से कुछ फुसफुसाता है, जो भौंहें चढ़ाकर विरोध करती है, लेकिन फिर वह उस पर चिल्लाता है कि जल्दी से कपड़े पहनो। वह धीरे-धीरे उसकी बात समझती है और कपड़े पहनने लगती है, जिसके बाद वह अपने पैसे माँगती है।

हमने कुछ नहीं किया।

आप इस बारे में शेखर से बात कर सकते हैं।

वह दांत पीसता है और फिर अपने खाली हाथ से अपना बटुआ निकालकर उसे पांच हजार रुपये दे देता है। वह उसे लेती है, बैग में रखती है और चली जाती है, मानो मैं वहां मौजूद ही न हूँ।

उसके जाने के बाद, मैंने आखिरकार कहा, "मैं तुम्हें लूटने नहीं आया था।"
"तब?"
“आप ही वह वकील हैं जो प्रधानाचार्य उदय पृथ्वी के खिलाफ चुनाव लड़ रहे हैं।”
“मैं हूँ। और तुम ज़रूर उसके पक्ष में होगे। तुम्हें पता होना चाहिए कि वह एक बुरा इंसान है, जो लोगों की उम्मीदों और इच्छाओं का मज़ाक उड़ाता है। वह इतने ऊँचे पद पर है, फिर भी एक मूर्ख की तरह व्यवहार करता है। इतना ही नहीं। वह घर तोड़ता है, गरीब बच्चों को लटका देता है और इस प्रक्रिया में उनकी ज़िंदगी बर्बाद कर देता है। वह एक क्रूर व्यक्ति है। उसे जेल में होना चाहिए, फिर भी तुम उस पागल का समर्थन कर रहे हो...”
लेकिन मैं उसे आगे नहीं बढ़ने देता और उस पर झपट पड़ता हूँ। पहले मैं उसके हाथों को पकड़ता हूँ और उसकी नाक पर घूंसा मारता हूँ। जैसे ही बंदूक उसके हाथ से गिरती है, मैं उसे पकड़ लेता हूँ और उसके बट से उसके दांत और जबड़े तोड़ देता हूँ। मैं महसूस करता हूँ कि उसके पैर मेरे पैरों के नीचे छटपटा रहे हैं और मैं उससे पूछता हूँ-
“फाइलें कहाँ हैं?”
उसका हाथ इधर-उधर लहराता है और मैं एक बार फिर जोर से मारता हूँ।
“वो फाइलें कहाँ हैं?”
जैसे ही उसने अपना दाहिना हाथ फिर से हिलाया, मुझे एहसास हुआ कि वह एक तकिए की ओर इशारा कर रहा था और मैं उसे बेवजह इतनी देर से मार रहा था। मैंने उसका सिर छोड़ा और तकिए की ओर बढ़ा, जिसे पलटकर देखा तो उसमें टेप से चिपकी हुई एक हार्ड ड्राइव मिली। मैंने उसे फाड़कर खोला और अपनी जींस के पीछे रख लिया।
मैंने खुद को पुलिस और मुसीबतों से बचा लिया था। वरना बहुत तनाव हो जाता। मैंने सबसे पहले प्रिंसिपल पृथ्वी को हार्ड ड्राइव की तस्वीर के साथ मैसेज किया, जिसका उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया, बल्कि सिर्फ सावधानी बरतने वाला इमोजी भेजा और कहा कि वे मेरे बेटे को स्कूल से निकाले जाने से बचा लेंगे। फिर मैंने हारून को प्राथमिक उपचार दिया और जब यह हो गया, तो मैंने एम्बुलेंस को फोन किया और उसे धमकी दी, "अगर तुमने पुलिस को बताया, तो मैं वापस आ जाऊंगी।"
और इसी के साथ मैं चलता हूँ।

मैं अपनी कार में बैठकर राजौरी गार्डन के लिए रवाना हुआ। घर पहुँचकर मैंने अतिरिक्त चाबी से दरवाजा खोला और अपने कमरे की ओर बढ़ा, तभी लिविंग रूम की मेज पर नाम लिखा एक लिफाफा देखकर मेरे पैर जम गए। मेरे परिवार ने इसे मेरे लिए ही रखा होगा। मैंने उसे काटकर खोला तो उसमें ये सब मिला:
उसके पाप के लिए नरक और उसके नरक के लिए पाप ढूंढो
उदय पृथ्वी
15 घंटे

अध्याय पैंतीस

मैं पूरी रात सो नहीं पाई, पृथ्वी के सारे गुनाहों को लिखने की कोशिश करती रही और हमने जो पोस्टर लगाया था उसे देखती रही। उनमें से कोई भी गुनाह पृथ्वी के गुनाहों से मेल नहीं खाता था। मेरे पास तीन घंटे और बचे थे क्योंकि मैं सात घंटे सो गई थी और बाकी के पांच घंटे मैंने खोजबीन में बिताए, इस उम्मीद में कि मुझे नरक और उसका गुनाह मिल जाए।

उस आदमी ने मुझे दुविधा में डाल दिया था। उसने जानबूझकर ऐसा किया। उसे पता था कि यह मेरे लिए यातना होगी। मैं तब तक दिन-रात काम करता रहा जब तक स्वाति कौशिक का फोन नहीं आया।

मैं कुर्सी पर बैठा हूँ। मैंने अपना सिर हिलाकर दिमाग को तरोताज़ा किया, नौकरानी मीना द्वारा दी गई चाय पी और फोन उठाया।

“क्या बात है?” मैंने झिझकते हुए पूछा। मैंने समय देखा। मुझे लगता है कि वर्धन दस मिनट में आ जाएगा। वह मेरी मदद करेगा।

"मैं आपको इस मामले के बारे में अपडेट देना चाहती थी क्योंकि आप इसमें बहुत रुचि रखते थे," वह कहती हैं।

“क्या हुआ? कहीं सबूत खो तो नहीं गए?”

"आप यह क्यूँ कहोगे?"

मैं अपनी ज़बान पर लगाम लगाता हूँ।

“नहीं, ऐसा नहीं हुआ। उसने आधे सबूत पेश किए, लेकिन ये उसे जेल भेजने के लिए काफी नहीं हैं। हारून का कहना है कि उसे कुछ दिनों की मोहलत और अपने घर के आसपास पुलिस निगरानी चाहिए। पता चला है कि कल किसी ने उसे नुकसान पहुंचाने की कोशिश की थी।”

"रुको, उसके पास सबूत थे?"

"हाँ, थोड़ा बहुत।"

धत् तेरे की! वो धोखेबाज़! उसने मुझे आधी जानकारी ही दी। मैंने फोन रखा तो देखा कि एक मैसेज आया है जिसे मैं देखना भूल गई थी। उदय का एक और इमोजी है और इस बार इमोजी से पता चलता है कि वो खुश नहीं है।

अध्याय छत्तीस

मैं उलझन में हूं।

मेरे पास दो विकल्प हैं। या तो मैं उसे ढूंढूं, उसे बचाऊं और उसे मेरे बच्चे को वादा पूरा न कर पाने के कारण स्कूल से निलंबित करने दूं, या फिर मैं उसे न बचाऊं और वह स्कूल से निष्कासित नहीं हो पाएगा क्योंकि तब तक उसकी मृत्यु हो चुकी होगी। सात बज रहे हैं। उसे दस बजे तक अपना फैसला लेना होगा। मैं फंसी हुई हूं। मैं या तो एक जीवन बचाऊं या उसे मेरे बच्चे का जीवन बर्बाद करने दूं।

लानत है।

मैं उसे मरने दे सकता हूँ। यह आसान है और मेरा अंतरात्मा भी इसकी इजाज़त देता है, क्योंकि सचमुच मुझे नरक दिखाई नहीं देता। लेकिन फिर मुझे एहसास होता है कि अगर मैंने ऐसा किया, तो मैं खुद को कभी माफ नहीं कर पाऊँगा। वह बुरा आदमी हो सकता है, लेकिन मैं किसी की ज़िंदगी बर्बाद करने वाला कोई नहीं हूँ। वह जेल और बहुत सी सजाओं का हकदार था, लेकिन उसे मौत की सजा नहीं मिलनी चाहिए थी, यह तो पक्का है। मैं भगवान नहीं हूँ। मैं यम राज नहीं हूँ। यहाँ कोई फायदे का सौदा नहीं था। मुझे मदद की ज़रूरत थी।

वर्धन अंदर आता है। वह थका हुआ लग रहा है और अंगड़ाई लेता है।

“इतनी जल्दी किस बात की?” वह जम्हाई लेते हुए मुझसे पूछता है।

मैं उसे पत्र दिखाता हूँ।

“वह अब तक के किसी भी यूनिवर्सिटी कॉलेज के सबसे विवादास्पद प्रधानाचार्य रहे हैं। मुझे कभी समझ नहीं आया कि कुलपति ने उन्हें प्रधानाचार्य की कुर्सी पर बैठने की अनुमति क्यों दी है।”

“लगता है वो मेरी नज़रों में अच्छा है। ये चिट्ठी मुझे बारह घंटे पहले मिली थी।”

“आपके पास सिर्फ तीन घंटे हैं?”

और बात यहीं खत्म नहीं होती।

मैंने अपनी झिझक और शर्म को दबाकर उसे सब कुछ बता दिया। वह ध्यान से सुनता रहा, बिना कोई भावना दिखाए, आखिरकार उसने अपना सिर नीचे किया, अपने बालों को छुआ, उन्हें ऊपर खींचा और कहा, "मुझे तो अब पता ही नहीं चल रहा कि यहाँ बुरा

कौन है। तुम्हें लोगों की मदद करनी चाहिए थी, न कि उन्हें पीट-पीटकर मार डालना चाहिए था?"
मेरे पास कोई विकल्प नहीं था।
“हम सबके पास विकल्प होते हैं, चाचा जी। हम बस गलत चुनाव कर लेते हैं।”
“हमें क्या करना चाहिए? क्या हमें उसे बचाना चाहिए या मरने देना चाहिए? अगर हम उसे मरने देते हैं, तो कई लोग खुश हो सकते हैं। लेकिन अगर हम ऐसा नहीं करते हैं, तो मेरा बेटा कॉलेज से बाहर हो जाएगा और पीड़ित, जिन्होंने कथित तौर पर कहा था कि प्रधानाचार्य उन्हें परेशान करते थे, उन्हें न्यायसंगत जीवन जीने का अधिकार मिल जाएगा।”
"लेकिन हम अप्रत्यक्ष रूप से एक जान ले रहे होंगे," उन्होंने आगे कहा।
“यही बात मुझे सता रही है,” मैंने गुस्से में मेज पर मुक्का मारा और आह भरी, “मुझे नहीं पता कि क्या करूं।”
“तुम क्या करना चाहते हो?” वह मुझसे पूछता है। “क्योंकि, स्पष्ट रूप से, इस समय तुम्हें नैतिकता संबंधी समस्याएँ हैं।”
मुझे उसके चेहरे पर दुख दिख रहा है। हमारा कभी भतीजे-भतीजी का रिश्ता नहीं था, हम तो बस दोस्त थे। लेकिन अब जब मैं उसे देखता हूँ, तो मुझे एहसास होता है कि वह मुझसे निराश और दुखी है।
और उसी क्षण मुझे एहसास हुआ कि मुझे क्या करना था।

अध्याय सैंतीस

उदय पृथ्वी जब जागा तो उसने खुद को नग्न अवस्था में पाया, उसके हाथ-पैर दीवार के सिरों से रस्सियों से बंधे हुए थे। उसके शरीर से आ रही बेकन, सॉसेज और मछली के तेल की गंध से उसे मतली महसूस हो रही थी, क्योंकि वह एक कट्टर शाकाहारी था। उसने अपने आस-पास के वातावरण का जायज़ा लिया और पाया कि वह एक घुटन भरे, लगभग नामुमकिन से संसार में है, जहाँ दीवारों पर लकड़ी की मशालें ठोंकी हुई थीं, फिर भी वहाँ रोशनी न के बराबर थी। उसने पलकें झपकाईं तो पाया कि अर्ध-अंधेरे में एक विशालकाय, दुबला-पतला आदमी खड़ा था, जिसकी आँखें अविश्वसनीय रूप से चमकती हुई लाल थीं, मानो ज्वालामुखी फट रहा हो। उसके हेलमेट से शैतान जैसे सींग निकले हुए थे। और उसके चेहरे पर भावों का कोई निशान नहीं था।

“क्यों...क्यों...”

उसे पता नहीं था कि वह यहाँ कैसे पहुँचा। वह अपनी कार से कॉलेज जा रहा था; उसके पिछले ड्राइवर ने एक नए ड्राइवर का सुझाव दिया था, और अचानक उसकी नींद खुल गई और उसने इस भयानक दृश्य को देखा। क्या सींगों वाला यह आदमी भेस बदलकर आया हुआ नया ड्राइवर था?

और तभी एक ज़ोरदार दहाड़ सुनाई दी। उदय तुरंत समझ गया कि यह किसी कुत्ते का भौंकना था—एक डोबरमैन पिन्शर का। उसे अपने बचपन के दिन याद आ गए, जब वह अपने दोस्त के घर जाया करता था, जहाँ वही कुत्ता था। उदय को डोबरमैन से डर लगता था, इसलिए उसका दोस्त उसे हमेशा बंद करके रखता था, लेकिन एक दिन जब वह घर गया तो देखा कि उसका दोस्त बाहर गया हुआ है और कुत्ता घर में खुला घूम रहा है। उदय को देखते ही डोबरमैन ने उसका पीछा किया और तमाम कोशिशों के बावजूद डोबरमैन ने उसकी पैंट फाड़ दी, इससे पहले कि वह पहली मंज़िल से कूद जाए। उस समय उसका पैर टूट गया था और उसे पूरे एक हफ्ते अस्पताल में रहना पड़ा था। उस दिन से उसने खुद से वादा किया था कि वह फिर कभी किसी डोबरमैन पिन्शर के पास नहीं जाएगा।

लेकिन यहाँ उसका सामना उसी कुत्ते से हो रहा था। कुत्ते की चमकदार काली त्वचा और दहकती, घृणा से भरी आँखों को देखकर वह काँप उठा, तभी उसे एक और भौंकने की आवाज़ सुनाई दी और उसे एहसास हुआ कि उसके दोनों ओर एक नहीं

बल्कि दो कुत्ते थे। वह गलत था। वहाँ दो नहीं बल्कि पाँच डोबरमैन कुत्तों का झुंड था, जिन्हें सींग वाले आदमी ने लंबी रस्सी से बाँध रखा था।
मांस की गंध और उसके शरीर पर लगे मछली के तेल की वजह से कुत्ते खुद को छुड़ाने और उस पर हमला करने के लिए बेताब थे। कुत्तों ने उसे मांस का एक बड़ा स्वादिष्ट टुकड़ा समझा होगा।
सींगों वाला आदमी यही चाहता था और यह महज समय की बात थी कि कब पट्टे खोल दिए जाएं और कुत्ते उस पर टूट पड़ें और उसे तब तक नोंचते रहें जब तक उसका कुछ भी बाकी न रह जाए।
मुझे बचाओ।
और फिर सींग वाले आदमी का फोन बज उठा।

अध्याय अड़तीस

उसने फोन उठाया और हरे बटन को दबाया।

“आपने मुझे बेहद मुश्किल समय में फोन किया है। आपके पास पांच मिनट हैं, क्या बात है?”

गहरी आहें सुनाई देती हैं। इरावान ज़रूर खूब मजे कर रहा होगा। "इस बार तुमने मुझे बहुत मुश्किल काम दिया है। तुमने जानबूझकर ऐसा किया है।" उसकी आवाज़ उसके लिए अमृत समान थी, उसके कानों में इतनी मधुरता से घुल गई कि वह बस अपने अंदर पैदा हुए डर का आनंद लेना चाहता था। "तुम मुझे उलझन में डालना चाहते थे।" वह आदमी उदय पृथ्वी को घूर रहा था, जो पसीने से तरबतर था और उसके पूरे शरीर पर चिकन मीट, बेकन फैट और तेल लगा हुआ था, जिससे वह चमक रहा था। "तुम्हारे पास ज्यादा समय नहीं है।" और कुत्ते भौंकने लगे।

“मैं महारौरव और सरमेयादन के बीच उलझन में था। महारौरव पापी के लिए थे, जो दूसरों को पीड़ा पहुँचाते थे। कुछ मायनों में, उदय पृथ्वी ने भी भावनात्मक और शारीरिक पीड़ा पहुँचाई थी। और सरमेयादन पापी के लिए थे, जो अपने धन और अहंकार का दुरुपयोग गलत कामों के लिए करते थे; जैसे, दूसरों को आग और विनाश में झोंकना। अब, महारौरव नरक में पापियों के साथ रुरु नामक भयंकर जानवरों द्वारा खाए जाएँगे और सरमेयादन सात सौ बीस भयंकर कुत्तों के साथ, जो सरमा के पुत्र हैं, उनका मांस खाएँगे।” उनकी आवाज़ काँप उठी और टूट गई। “दोनों ही हो सकते हैं।”

“तुम्हें मुझे नरक और पाप के बारे में बताना होगा। तुम मुझे फैसला करने के लिए विकल्प नहीं दे सकते।” यह कहते हुए वह ज़ोर से हँस पड़ा।

“उफ्फ...” उसने आह भरी।

एक मिनट।

उदय पृथ्वी जोर से चिल्लाया।

“क्या वह वहाँ है?” उत्सुकता बढ़ती गई।

“बेशक, वो है। वैसे, उसका शरीर उतना अच्छा नहीं है।”

उसे मत मारो।

“यह सही जवाब नहीं है।”

“तुम क्या चाहते हो? बेचारे को छोड़ दो।”

“वह बेचारा आदमी नहीं है, मेरे दोस्त। उसने कितने ही घर तबाह किए हैं, लेकिन उससे भी बुरा, उसने बेचारी लड़कियों को परेशान किया है। हाँ। उसने उन्हें चोट पहुँचाई है...” और फिर वह अचानक चुप हो गया, यह महसूस करते हुए कि उसने ज़रूरत से ज़्यादा बोल दिया है।
धत् तेरे की।
फोन के दूसरी तरफ से हल्की हंसी सुनाई दी। उसने अचानक ही जवाब बता दिया, अपनी भावनाओं को अपने व्यवहार पर हावी होने दिया।
सींग वाले आदमी ने कहा, "तुमने मुझे धोखा दिया। चालाक हो।"
“बिल्कुल। इसका उत्तर महारौरव है और उनका पाप यह है कि उन्होंने बहुत सी लड़कियों को परेशान किया है, उन्हें भावनात्मक रूप से पीड़ा पहुंचाई है।”
“सही।” सींगों वाला आदमी नीचे देखने लगा, इस बात से टूट चुका था और हार मानना उसके लिए मुश्किल था। “आज तुमने एक दुष्ट आदमी को बचा लिया। तुमने ऐसा क्यों किया?”
दूसरी तरफ सन्नाटा छा गया, और फिर धीरे-धीरे आवाज साफ होने लगी।
मैं ऐसा नहीं करना चाहता था।
और उसने फोन काट दिया।

अध्याय उनतालीस

खबरों में सब कुछ सामने आ गया। उदय पृथ्वी कथित तौर पर नशे की हालत में अपने आसपास बोतलों के साथ पाया गया। स्वाति कौशिक ने अपने सुरागों के आधार पर उसे ढूंढ निकाला और उदय को अदालत में न्याय के कटघरे में खड़ा किया गया। हारून मखीजा के घर से गायब सबूत मिल गए थे और उन्हें अदालत में पेश किया गया था। उदय पृथ्वी ने न्याय की गुहार लगाते हुए कहा कि सींगों वाले एक आदमी ने उसे गुफा जैसी जगह पर पकड़ा था, जिस पर अदालत ने मान लिया कि वह नशे में बोल रहा था।

उदय पृथ्वी को पचास साल की कैद की सजा मिली।

मैं मुस्कुराई। उदय पृथ्वी आखिरकार जेल में था और उसने आधिकारिक तौर पर निष्कासन के दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर नहीं किए थे, इसलिए मेरा बेटा भी सुरक्षित था। सब कुछ फिर से ठीक हो गया था।

“तुमने इसे नष्ट क्यों नहीं किया?” वर्धन ने मुझसे पूछा, जब हम दोनों साथ में न्यूज़ चैनल देख रहे थे। “हार्ड ड्राइव को।”

"मेरे मन में कहीं यह बात थी कि मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए, इसलिए मैंने इसे बाद में इस्तेमाल करने के लिए रख लिया।"

"आपने सही काम किया।"

“हाँ।” मैंने उसे बचा लिया, अपनी अंतरात्मा को बचा लिया और फिर हार्ड ड्राइव को स्वाति को भेजकर उसे जेल भेज दिया, जिसने उसे हारून को दे दिया।

वह सोच रहा होगा कि मैं किस तरह का बीमार, विकृत चोर था? पहले मैं कुछ चुराता था और फिर उसे लौटा देता था।

“अब हम क्या करें?” वर्धन पूछता है।

"हम उसे ढूंढ निकालेंगे, चाहे वह कोई भी हो, चाहे वह कहीं भी हो।"

वर्धन ने पीछे मुड़कर देखा तो पाया कि सारंग रसोई में खड़ी होकर समाचार देख रही थी, जो बैठक कक्ष से सटी हुई थी।

“आपको पहले अपने परिवार के साथ समय बिताने का इंतजाम करना होगा।” वर्धन ने मेरे कंधों पर थपथपाया और जाने के लिए दरवाजा खोल दिया।

“क्या हालचाल है यार?” मैंने सारंग से पूछा, एकदम शांत दिखने की कोशिश करते हुए।
"अच्छा हुआ कि वह जेल में है।"
“आपके नए प्रधानाचार्य कौन हैं?”
"मुझे कोई जानकारी नहीं है, बोर्ड इस पर फैसला ले रहा है और वे कुलपति के साथ बैठक करेंगे।"
“ठीक है। क्या आप ठीक हैं?”
वह अजीब तरह से अपने कंधों को सहलाता है। "आशा है तुम ठीक हो।"
मैं क्यों नहीं होऊंगा?
"क्योंकि मैंने अपनी पहचान उजागर कर दी,"
“मुझे खुशी है कि आपने ऐसा किया,” मैं मुस्कुराते हुए कहती हूं। “मुझे पहले ही समझ जाना चाहिए था कि समय के साथ चीजें बदलती रहती हैं। मुझे इसकी आदत डालनी होगी... चाहे यह कितना भी मुश्किल हो या कितना भी समय लगे।”
"अगर मैं लड़कों के साथ समय बिताऊं तो क्या आपको कोई समस्या है?"
मैंने अपनी आँखें सिकोड़ीं। “सबसे पहले तो उसे विनम्र और सम्मानजनक होना चाहिए। क्या ऐसा कोई व्यक्ति है?”
वह तुरंत मुस्कुरा उठा। मेरा दिल मानो पिघल गया। इतने लंबे समय बाद मैंने उसके चेहरे पर ऐसी सच्ची मुस्कान देखी थी। मैंने सोचना शुरू कर दिया था कि मैं उसे कभी नहीं देख पाऊँगी। शायद, खुलकर सामने आने और सुरक्षित महसूस करने से उसे एहसास हुआ कि जिस माहौल में वह रहता था, वह अब उसकी पसंद के खिलाफ नहीं था। अगर मैंने अपनी भावनाओं को हावी होने दिया होता, तो मैं कुछ नुकसानदेह कह देती, उसे घृणित समझती या उसे घर से निकाल देती, और वह बदल जाता। मैं ऐसा नहीं चाहती थी। जैसा लोग कहते हैं, वह बदला नहीं है। वह मेरा बेटा है। वह अब भी वैसा ही है।
और मुझे उस पर बहुत गर्व है।

अध्याय चालीस

मुझे आज भी तपस्व गांधी के ऐसे नाम पर तरस आता है। मैं उसी उबाऊ कुर्सी पर बैठा रहता हूँ, उनके गंजे चेहरे और धँसी हुई आँखों को देखता रहता हूँ, जब वे अपनी मरीज़ों की सूची खोलते हैं और मेरा नाम लिखते हैं। उनके पास दर्जनों मरीज़ होंगे, तरह-तरह की बीमारियों और मानसिक विकारों से ग्रसित, जिनके अपने राज़ और मतिभ्रम हैं, और मैं भी उनमें से एक हूँ।

मैं उन पागलों में से एक हूँ।

“आपका सप्ताह कैसा रहा?” वह मुझसे पूछता है।

"आप क्या सोचते हैं?"

वह एक हाथ में कलम और दूसरे हाथ में लकड़ी का लट्ठा लिए आगे झुकता है, जिस पर वह कुछ लिखता है और कहता है, "काफी अच्छा। पता नहीं क्यों तुम काफी ऊर्जावान लग रहे हो।"

क्या मैं ऐसा करती हूँ? खैर, इसके लिए मैं उसे दोष नहीं देती। मेरा एक हफ्ता ऐसे आदमी के साथ बीता है जो खुद को मौत का देवता समझता है और मुझे किसी को बचाने के लिए समय सीमा देता है। वाकई रोमांच की बात है!

“क्या तुम्हें जीवित होने का अहसास होता है?” वह पूछता है।

"ये क्या सवाल हुआ?"

और वो कहते, ‘यह तो एक महत्वपूर्ण सवाल है’, बेशक। लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं कहा। बल्कि, वो मन ही मन मुस्कुराते हुए बोले, “जब तुम पिछली बार आए थे, तो तुम कुछ उदास, निराश और अपने निजी और पेशेवर जीवन से ऊबे हुए लग रहे थे, और यहाँ तक कि जब तुम अपने काम के बारे में बात कर रहे थे, तब भी तुम ऊबे हुए से लग रहे थे। और अब, मैं तुम्हें पूरी तरह से संतुष्ट और जीवंत देख रहा हूँ। तुम्हारे अंदर एक उमंग भरी ऊर्जा दौड़ रही है।”

"हाँ, आप ऐसा कह सकते हैं," मुझे यह स्वीकार करने में बुरा लगता है, लेकिन इस रोमांच ने मुझे तरह-तरह के एड्रेनालाईन रश दिए हैं, और उनमें से कुछ अच्छे थे।

"क्या आपको अच्छे केस मिल रहे हैं?"

“मैं लोगों की जान बचा रहा हूँ,” मैं खाँसी के साथ हल्की हँसी हँसता हूँ।

“मुझे आपसे पूछना ही होगा, श्री राजपूत, क्या आपको लगता है कि आप वास्तव में कार्रवाई से चूक गए थे?”
"आपका क्या मतलब है?"
आपने कहा कि नब्बे के दशक में श्रीनगर में आतंकवादियों के साथ आपकी कई लड़ाइयाँ हुईं। आपने कहा कि अब इसे पचाना बहुत मुश्किल है, लेकिन मुझे पूछना ही होगा, क्या आपको वहाँ रहना वाकई बुरा लगता था या आप उसे याद करते हैं? आप युद्ध को याद करते हैं, है ना?
मैंने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। क्या मैं गलत थी? इस आदमी ने दिमागी खेल खेला और मैंने उसे खेलने दिया। आखिर मैंने इसके लिए उसे पैसे दिए थे। "मुझे नहीं पता। शायद आप ऐसा कह सकते हैं।"
"तो, जिस घटना के बारे में हमने पिछली बार बात की थी, वह आपके सेना के दिनों की थी।"
"हां, अफसोस के साथ।"
“तो उस घटना के बाद क्या हुआ?”
“तुम्हारा क्या मतलब है? मैंने तुम्हें बताया था। मैं नशे में था। मैं सो गया। बात वहीं खत्म हो गई।”
“परिवार का क्या हुआ?” वह पूछता है।
मैंने अपनी जीभ गाल पर फिराई। “जांच पूरी होने तक महिला और बेटी को सुरक्षित स्थान दिया गया था और उसके बाद उग्रवाद कम होने तक उन्हें गवाह संरक्षण में रखा जाना था।”
“‘सुरक्षित’ शब्द सुनते ही आप बेचैन हो गए।”
धत् तेरे की। उसने मुझे फिर पकड़ लिया। अब मुझे इतना हैरान होना बंद कर देना चाहिए।
"तथाकथित क्वार्टर एक छोटा सा कमरा था, जो दो लोगों के लिए काफी बड़ा था और जिसकी सुरक्षा कमांडो द्वारा की जाती थी, जो वहां भी रहते थे और चौबीसों घंटे निगरानी रखते थे।"
"और?"
उनमें शराब पीकर मौज-मस्ती करने की प्रवृत्ति थी।
"वे कौन थे?"

“वे दो लोग थे और मैं—मैं कभी-कभार ही जाता था। मैं ज्यादातर फील्ड में काम करता था।”
“फिर क्या हुआ?” वह हाथ से इशारा करते हैं।
मैं असमंजस में पड़कर ऊपर-नीचे देखती हूँ। क्या मुझे यह कहना चाहिए या नहीं? लेकिन मरीज और डॉक्टर के बीच गोपनीयता का नियम है।
“आप जानते ही हैं कि भारतीय सेना के फौजी कैसे होते हैं, है ना? उन्हें लड़कियाँ मिलती ही नहीं, पता नहीं कितने दिन। मैं उस समय खुशनसीब था। मेरी नई-नई शादी हुई थी और मैं रुत्वी को अपने साथ श्रीनगर ले गया। यह असुरक्षित ज़रूर था, लेकिन हमारा एक कैंप था और वह वहाँ सुरक्षित थी। खैर, मैं उस क्वार्टर में था। माँ-बेटी की रक्षा करते हुए अब कुछ साल बीत चुके थे। बेटी अब वह छोटी बच्ची नहीं थी जिसके पिता को मैंने मार डाला था। वह मुझसे नफरत करती थी। यह उसकी आँखों में साफ दिखता था। यही एक कारण था कि मैं उनकी रक्षा करने से बचता था। मैं वहाँ खड़ा सिगरेट पी रहा था। मैं तब सिगरेट पीता था, अब छोड़ दिया है। कैंसर के डर के बाद से मैंने सिगरेट पीना छोड़ दिया है। मैं वहाँ एक स्टूल पर बैठा था, उन दो लड़कों से बात कर रहा था जो बहुत ज़्यादा नशे में थे। हम हँस रहे थे, मज़ाक कर रहे थे और तभी एक लड़का क्वार्टर का दरवाज़ा ज़ोर से खटखटाता है। बेटी दरवाज़ा खोलती है और वह उसे पीटता है।”
"क्या इसकी अनुमति थी?"
“नहीं, लेकिन उस समय सेना ने ऐसा ही किया था, लोगों को बेरहमी से नुकसान पहुंचाया था। मुझे नहीं पता हमने ऐसा क्यों किया—शायद हम अपनी शक्ति का प्रयोग कर रहे थे, मुझे नहीं पता।”
"फिर क्या हुआ?"
क्या हुआ? मैं आँखें बंद करके उस लड़की के चेहरे पर खौफ देख सकता था। सिपाही ने उसे थप्पड़ मारकर उसके पास गया। माँ बेटी को बचाने आई, लेकिन दूसरे सिपाही ने उसे रोक दिया। मुझे याद है कि मैं उस घटना को देख रहा था और सिगरेट पी रहा था। मैं भी थोड़ा नशे में था और अगर मेरी पत्नी की चिंता मेरे मन में न होती तो मैं बीच में आ जाता। उस समय मैं इतना समझदार नहीं था। मैंने देखा कि उन्होंने उसे मारने के बाद क्या किया। उन्होंने अपनी पैंट ढीली की, उनके कपड़े ऊपर उठाए और दोनों का बलात्कार किया। और जब यह हो गया, तो उन्होंने उन्हें ज़मीन पर धकेल दिया

और धमकी दी कि अगर उन्होंने कमांडिंग ऑफिसर को बताया तो उनकी जान को खतरा होगा। और फिर उन्होंने दरवाज़ा बंद कर दिया। मुझे बाद में पता चला कि यह परिवार के साथ पहली बार नहीं हुआ था। जब तक उन्हें क्वार्टर से नहीं भेजा गया, तब तक उनके साथ रोज़ाना बलात्कार होते रहे। मैंने उनमें से कुछ ही देखे थे—सैनिक शराब पीकर मौज-मस्ती कर रहे थे, लेकिन उन्हें कभी चोट नहीं पहुँची। सैनिक यह सुनिश्चित करते थे कि वे इसे जितना हो सके साफ-सुथरे तरीके से करें, कभी-कभी अगर वे अपने तरीके का इस्तेमाल नहीं करते तो उनके मुंह में बंदूक रखकर धमकी देते थे।

तपस्व आह भरता है। वह निराश लग रहा था और मैं उसे दोष नहीं दे सकता। मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ और मुझे पछतावे का सागर दिखाई देता है। मुझे कुछ करना चाहिए था। मुझे उस महिला और बच्चे की मदद करनी चाहिए थी।

“हे भगवान,” मैं रो पड़ी। “वह लड़की मुश्किल से चौदह साल की थी, तुम्हें पता है।”

आपने कुछ क्यों नहीं किया?

"उस समय मुझे सिर्फ हिंसा के बारे में ही पता था।"

“उस लड़की और उसकी माँ का क्या हुआ?”

“मुझे लगता है कि उन्हें एक नई पहचान दी गई और कहीं और ले जाया गया, शायद जम्मू या राजधानी। इसके बाद उनके साथ क्या हुआ, मुझे नहीं पता।”

"क्या यह सब के साथ हो रहा था?"

“आपका मतलब सभी कश्मीरियों से है?”

"हाँ,"

“मैं जानना ही नहीं चाहती थी। मैंने उस समय बहरा रहना चुना था। लेकिन वहाँ बहुत भेदभाव और समस्याएँ थीं।”

“और वे पार हो गए?”

मानवाधिकार आयोग द्वारा की गई कार्रवाई के बाद, निश्चित रूप से।

"क्या आप उस रात के लिए खुद को दोषी मानते हैं?"

“कभी-कभी मैं ऐसा करता हूँ। लेकिन उस समय मैं अपरिपक्व था।”

वह कुछ लिखता है। "क्या अब भी तुम वही आदमी हो?"

मैं उस एक व्यक्ति के बारे में सोचता हूँ जिसे मैंने बचाया और उन दो लोगों के बारे में जो मर गए थे। अगर पिछले कुछ सप्ताह न होते तो मेरे पास कोई और जवाब होता,

लेकिन फिलहाल मैं कहता हूँ-
"एक तरह से, मैं हूँ।"

अध्याय इकतालीस

मेरी निजी जिंदगी की एक अजीब और दुखद बात यह है कि कश्मीर में मैंने जो नाम कबीर चुना था, वह मेरी बेटी के प्रेमी कबीर के नाम से मिलता-जुलता है, हालांकि हम दोनों बिल्कुल अलग स्वभाव के थे। इस कबीर के नाम में दो 'ई' हैं, जबकि मेरे नाम में एक 'ई' है। वह गठीला और पांच फुट पांच इंच लंबा था, लगभग मेरी बेटी की लंबाई का। उसका चेहरा चुस्त और तेज था, और दिखने में भी आकर्षक था। उसके बाल छोटे और सलीकेदार थे और वह हमेशा कमीज पहनता था। वह मुस्कुराता, हंसता और ऐसे व्यवहार करता जैसे वह दुनिया का सबसे अच्छा इंसान हो, लेकिन मैं लोगों को समझ सकती हूँ। सेना में मैंने यही सबसे ज्यादा सीखा है। आपको लोगों को अंदर तक समझना होता है और मैं समझती थी। और उसके व्यक्तित्व में एक अजीब सी खामोशी झलकती थी। वह गुड़गांव की एक प्रॉपर्टी कंपनी, IREO में काम करता था और अपने माता-पिता द्वारा उपहार में दी गई स्विफ्ट डिजायर में हर दिन पश्चिम दिल्ली से गुड़गांव आता-जाता था।

और उसे मेरी बेटी से प्यार हो गया था।

“क्या तुम घबराए हुए हो?” वह पूछती है।

मैंने मुड़कर देखा तो मेरी बेटी तारा मुझे घूर रही थी। अपने पिता से प्यार करने के मामले में वो कुछ खास अच्छी नहीं थी—हमेशा विद्रोही स्वभाव की, वो मुझे परेशान करने में माहिर थी। पर क्या करूँ... वो मेरी बेटी थी, चाहे मैं उसे कितना भी चिढ़ाने वाला क्यों न समझूँ। सच कहूँ तो, जैसे-जैसे वो बड़ी हुई, वो नारीवादी बन गई, जो कि एक अजीब बात है क्योंकि उसे कबीर जैसा कोई मिल गया, जो एक दब्बू सूअर था और हमेशा उसकी बात सुनता था। मैंने पारिवारिक पार्टियों में देखा है कि वो उसकी हर ज़रूरत पूरी करता है, नैपकिन में नाश्ता लाता है या उसके लिए ड्रिंक्स बनाता है। वो उसके लिए कुत्ते जैसा था, लेकिन मुझे ऐसे व्यक्ति के लिए कोई सम्मान नहीं था जो झुककर मेरी बेटी को अपनी पिटाई करने देता था। किसी भी रिश्ते में किसी को भी नियंत्रण नहीं करना चाहिए। सम्मान का स्तर बराबर होना चाहिए। रुतवी और मेरे रिश्ते में 'सम्मान' जैसा शब्द ही खो गया, जब उसे सिज़ोफ्रेनिया का पता चला। तब सब कुछ बस जीने की जद्दोजहद रह गया।

“मैं ऐसा क्यों होऊँगा?” मैंने जवाब दिया।

मुझे नहीं पता। आप इसमें उतने अच्छे नहीं हैं।
"आपका क्या मतलब है?"
“याद है वो ग्रेजुएशन का साल जब तुम्हें मम्मी के साथ आना पड़ा था?” उसने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं।
बिल्कुल, मैंने देखा था। वह नीले गाउन और ग्रेजुएशन की टोपी पहने मुस्कुरा रही थी और सबके साथ तस्वीरें खिंचवा रही थी। फिर वह अपने उस समय के बॉयफ्रेंड को भी साथ ले आई, पता नहीं वो क्या था। मुझे उसका नाम भी याद नहीं है। पता नहीं तारा को क्या हुआ था, पर कुछ तो गड़बड़ थी। वो हिप्पी वाले दौर से गुज़र रही थी और वो लड़का ही उसकी वजह था। उसके बाल घुंघराले और बिखरे हुए थे, जिनमें मोतियों की माला लगी थी, उसकी आँखें गहरी और तीखी थीं और उससे गांजे की महक आ रही थी।
मैंने उसकी गर्दन पकड़कर उसे मेरी बेटी को छोड़ने के लिए मजबूर किया। वह रोने लगा और उसने अपनी पैंट में पेशाब कर दिया।
“उसने अपने बाल बदल लिए हैं पापा।” वह उसकी व्हाट्सएप डिस्प्ले पिक्चर दिखाती है। वहाँ एक और लड़का है, जिसने बटन वाली शर्ट, चश्मा और लगभग क्रू कट हेयरस्टाइल बना रखा है। “आपने उसे बर्बाद कर दिया।”
“मैंने उसे काबू में कर लिया।” मैं स्टीयरिंग व्हील घुमाता हूँ।
“हम उन्हें माँ के बारे में क्या बहाना देंगे?” वह फोन नीचे रखती है।
“मुझे बुखार है,” मैं आह भरते हुए कहती हूँ। “तुम उन्हें कब बताओगी? ये कोई शर्मनाक बात नहीं है।” ज़्यादातर लोग सिज़ोफ्रेनिया को इसी तरह देखते थे, मानो ये कोई वायरस हो जो किसी को भी हो सकता है। भूत-प्रेत वाली फ़िल्में देखने के बाद, हर कोई इसे मानसिक विकार से जोड़ देता था।
"शादी के बाद," वह धीमी आवाज़ में जवाब देती है।
मैंने गाड़ी को भूतल पर बने एक फ्लैट के सामने रोका, जहाँ एक छोटा सा बरामदा था और एक छोटा सा बगीचा था जिसमें ट्यूलिप के फूल खिले हुए थे। मैंने दरवाजा बंद किया, गाड़ी लॉक करने का बटन दबाया और दरवाजे की ओर बढ़ा। मैंने दरवाजा खटखटाया और देखा कि तारा घबराकर अपनी उंगलियां आपस में फंसाए खड़ी थी और उम्मीद कर रही थी कि आज मैं पागल न हो जाऊं।

उन्होंने दरवाजा खोला और मैंने देखा कि कबीर खड़ा होकर मेरी तरफ मुस्कुरा रहा था। उसके दांत एकदम सही नहीं थे। बल्कि वे टेढ़े-मेढ़े और अजीब थे।
वह मेरा अंदर स्वागत करता है। और मैं अपनी बेटी के साथ उसके माता-पिता, त्रिवेदी परिवार से मिलने के लिए अंदर जाती हूँ।

अध्याय बयालीस

मैं खुद को एक छोटे से फ्लैट में पाती हूँ। वैसे तो मुझे इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि फ्लैट छोटा है या बड़ा, लेकिन एक आदमी को इस बात का एहसास होता है कि शादी के बाद उसकी बेटी किस घर में रहने वाली है। मुझे पता चलता है कि फ्लैट में तीन कमरे हैं, लेकिन उन तक जाने वाला गलियारा सिर्फ एक ही है। बैठक और भोजन कक्ष आपस में जुड़े हुए हैं। फ्लैट में कालीन नहीं है। दीवारें चिकनी और दागदार हैं, जबकि फर्श पर अलग-अलग तरह की टाइलें लगी हैं।

कबीर त्रिवेदी मुझे सोफे पर बिठाते हैं, तभी उनकी मां ठंडे पानी के गिलासों से भरी ट्रे लेकर आती हैं। मैं पानी पीकर गिलास को लकड़ी की मेज पर रख देता हूं।

“आप कैसे हैं चाचा?” वह मुझसे पूछता है।

मैं ठीक हूँ। IREO कैसा चल रहा है?

"वही रोज़ की परेशानी। वे मुझसे लगातार कड़ी मेहनत करवाते रहते हैं।"

“ठीक है, आप सहायक प्रबंधक हैं; आप प्रबंधक भी बनेंगे।” मैं एक और घूंट लेता हूँ क्योंकि मुझे एहसास होता है कि मैं ऐसा इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि मैं खुद को आश्वस्त कर रहा हूँ।

माता-पिता उसके साथ सोफे पर बैठे हैं और मुझे अजीबोगरीब ढंग से देख रहे हैं, मानो मेरे बोलने का इंतज़ार कर रहे हों। पिता एक आम कुर्ता पहने हुए व्यक्ति हैं और माँ सलवार कमीज़ पहने, गंदे हाथों और गुंथी हुई बालों वाली गृहिणी हैं।

“तो, श्री राजपूत, मुझे पता चला है कि आपकी बेटी को हमारा बेटा पसंद आ गया है,” श्री त्रिवेदी ने बात शुरू की। “मुझे उम्मीद है कि आपको इससे कोई आपत्ति नहीं होगी।”

मैं बस यही चाहती हूं कि मेरी बेटी खुश रहे।

“तो फिर बहुत बढ़िया! हम सब इस पर सहमत हो गए हैं, इसलिए मुझे लगता है कि काम हो गया है। क्या श्रीमती राजपूत इससे सहमत हैं?”

“बिल्कुल।” मैंने सिर हिलाया। “वह मान गई है।”

"क्या मैं पूछ सकती हूँ कि आपकी बेटी क्या काम करती है?" श्रीमती त्रिवेदी पूछती हैं और श्री त्रिवेदी तुरंत उन्हें कोहनी मार देते हैं।

“मैं उसकी अज्ञानता के लिए माफी मांगता हूं,” वह कहता है।

कोई बात नहीं। यह एक सामान्य प्रश्न है। वह...”
“मैं फिलहाल एक प्रकाशन कंपनी में सहायक संपादक हूँ, आंटी,” वह कहती हैं। और मुझे उन पर गर्व है, चाहे उन्होंने जीवन भर कितनी भी संघर्षशील भूमिका निभाई हो, उन्होंने अपने लिए एक अच्छा जीवन बनाया है।
“ओह, यह तो बहुत बढ़िया है। मैं दरअसल एक लघु कहानी लिख रहा हूँ।”
मुझे ईमेल करें। हम प्रविष्टियों की प्रतीक्षा कर रहे हैं।
मैंने बीच में टोकते हुए कहा, "अच्छा, हम पहले से ही सहज महसूस कर रहे हैं। यह अच्छी बात है। मैं तो बस हमारे बीच के मामलों को औपचारिक रूप देने के लिए यहाँ आया हूँ।"
“जी हां, हम समझते हैं कि आप बहुत व्यस्त हैं।” श्री त्रिवेदी विनम्रता से मुस्कुराते हैं।
“मुझे लगता है कि हमें ज्योतिषी से बात करके शादी की तारीख तय करना शुरू कर देना चाहिए।” मुझे इस बात पर यकीन नहीं था, लेकिन मुझे इसकी ज़्यादा परवाह भी नहीं थी।
“ज़रूर। मुझे कोई आपत्ति नहीं है। एक बात और है,” मैंने कहा। “आप कितने पैसे मांग रहे हैं? मतलब, मैं अपनी बेटी के लिए आपको एक कार और शायद दस लाख रुपये दे सकता हूँ, बस इतना ही।”
यह सुनकर उनकी आँखें चौड़ी हो गईं, और यह हैरानी से नहीं बल्कि शर्मिंदगी और सदमे से चौड़ी हुई थीं, क्योंकि मैंने ऐसा कह दिया था। मैंने तारा की तरफ देखा, जो मुझे घूर रही थी कि मैं इतना बदतमीज़ी करना बंद करूँ।
क्या मैंने अभी-अभी यह कहा कि मैं उन्हें दहेज देने की योजना बना रही हूँ?

अध्याय तैंतालीस

"यह सब क्या था?" कार में बैठे-बैठे वह मुझ पर चिल्लाई।
“क्या हुआ था?” मैंने कांपती हुई आवाज में जवाब दिया।
"क्या आपने स्वेच्छा से उन्हें दहेज दिया?"
"लेकिन मुझे लगा कि आप यही चाहते थे कि मैं यहां आकर इस बारे में बात करूं।"
“क्या आपको सच में लगता है कि मैं किसी ऐसे परिवार में शादी करूंगी जहाँ दहेज मांगा जाता है? आप जानते हैं, मैं इन सभी बेवकूफी भरी बातों के खिलाफ हूँ।”
“मैं गलत था, ठीक है। मुझे लगा कि आप मुझसे ऐसा करवाना चाहते हैं, इसलिए मैं ईमानदार था...”
“और हमेशा की तरह अज्ञानी,” वह रुकती है। “अब वे मेरे बारे में क्या सोचेंगे? कि मेरी माँ मुझसे दूर रहती है और मेरे पिता असभ्य हैं।”
"अरे, शांत हो जाओ। सब ठीक हो जाएगा। मैं माफी मांग लूंगा।"
“कुछ मत कहो। नहीं तो उन्हें फिर से दुल्हन की कीमत चुकानी पड़ेगी।”
हम अजीब सी खामोशी में घर पहुँचे और वो मुझे नज़रअंदाज़ करते हुए सीढ़ियों की तरफ चली गई। वाह—फिर से मुझसे नाराज़ है। मैं कार से बाहर निकला ही था कि अचानक मुझे अपने पीछे किसी की परछाई दिखी। मैंने मुड़कर देखा तो एक औरत कुर्ती और पजामा पहने खड़ी थी, जिसका आधा चेहरा दुपट्टे से ढका हुआ था। उसकी उंगलियों में कई अंगूठियां थीं और उसके झुमके चमक रहे थे। उसने छोटी चप्पलें पहनी हुई थीं, उसका शरीर दुबला-पतला था और उसके दांत टूटे हुए थे।
“हैलो मैम,” मैंने कहा। “क्या मैं आपकी मदद कर सकता हूँ?”
“क्या आप श्री इरावण राजपूत हैं?”
“हाँ।” मैंने अपनी आँखें सिकोड़ लीं।
“मैं गुलाबो हूँ।” वह अपने चेहरे से दुपट्टा हटाकर अपने चेहरे पर पड़े निशान और बैंगनी व काले रंग के नीले-काले धब्बे दिखाती है। “मुझे आपकी मदद चाहिए।”

अध्याय चौवालीस

मैं उसे आराम देने की पूरी कोशिश करती हूँ क्योंकि वह पहले से ही दुखी और टूटी हुई लग रही है। वह बैठक में बैठी है और ध्यान से चारों ओर देखती है कि वह कहाँ है, फिर मुस्कुराती है। और मैं उस मुस्कान को जानती हूँ। मुझे ज़िंदगी में कभी ऐसा घर नहीं मिलेगा। वह सच में गरीब और अधमरी लग रही थी। क्या यह पति की समस्या थी? ज़रूर होगी, या फिर प्रेमी की परेशानी, या कोई अनजान आदमी उसे परेशान कर रहा होगा। आजकल छेड़छाड़ के कई मामले सामने आ रहे हैं।

वर्धन अपनी डायरी लिए खड़ा है और उसके बोलने का इंतजार कर रहा है।

“आप सोच रहे होंगे कि मुझे आपका पता कैसे मिला?” वह मुस्कुराती है। “क्या आपने पिंकी के बारे में सुना है?”

पिंकी...पिंकी...

यह नाम जाना-पहचाना सा लगा। जी हाँ। ये उस समय की बात है जब मैंने बेहतर भविष्य की तलाश में सेना से आधिकारिक तौर पर इस्तीफा देने के बाद अरबपति विनोद बच्चन की सुरक्षा टीम में काम किया था। उन्हें सुरक्षा की ज़रूरत थी और मैं सुरक्षा का मुखिया था, दिन-रात काम करता था। ज़ाहिर है, वो भी कई तरह की चोरी-छिपे हरकतें करते थे, जिसका नतीजा उनके लिए बुरा ही हुआ। वो शादीशुदा थे और उन्हें जवान लड़कियाँ पसंद थीं। जब भी वो किसी व्यापारिक यात्रा पर जाते, तो अक्सर उन्हें अपने सुइट में बुला लेते थे। दिल्ली में रहते हुए उन्होंने एक हैप्पी एंडिंग स्पा से सबसे बेहतरीन एस्कॉर्ट्स को बुलाया था, जिनमें से एक पिंकी थी।

जब उनका काम पूरा हो गया, तो उन्हें वापस छोड़ने की ज़िम्मेदारी हमारी थी, और उसी दौरान मेरी उनसे बातचीत हुई। वह उत्तर-पूर्वी क्षेत्र की रहने वाली थीं और उन्होंने मुझे बताया कि वह इस व्यवसाय में कैसे आईं।

“यह सब पैसों की कमी के कारण हुआ। मेरे पास कुछ भी नहीं था।”

और वह बड़बड़ाती रहती थी कि उसे अपनी रोजी-रोटी कमाने के लिए अमीर मोटे आदमियों के साथ सोना पड़ता है। "मुझे यह पसंद नहीं है। लेकिन मजबूरी में करना पड़ता है।"

और अब, यहाँ उसकी दोस्त थी।

"पिंकी को कैसे पता चला कि मैं यहाँ हूँ?"

“अब उसका अपना स्पा है,” महिला ने जवाब दिया। “और गगन उसका नियम ित ग्राहक है।”
लेकिन क्या गगन शादीशुदा नहीं थे? धिक्कार है इन सभी अमीर लोगों पर जो वेश्याओं के बारे में तरह-तरह की कल्पनाएं करते रहते हैं।
“ओह,” मैंने इशारे से कहा। “तो, क्या हुआ? क्या आप स्पा का हिस्सा हैं?”
“नहीं। लेकिन जब हम जीबी रोड में साथ थे, तब पिंकी एक ठीक-ठाक दोस्त थी। वह भाग गई और अमीर बन गई, लेकिन मैं वहीं रह गई। दरअसल, मेरी एक बेटी है और हमारी दल्लाह (दादी) कोई बहुत अच्छी इंसान नहीं है।”
"मैं समझता हूँ।"
मुझे ऐसा लग रहा था कि वर्धन अदालत में रिकॉर्डर की तरह उसकी कही हर बात को लिख रहा था।
क्या आपको उससे परेशानी है?
“नहीं,” वह सिर हिलाती है। “खान एक नेक इंसान है। वह सिर्फ ग्राहकों के साथ ही बेरहमी बरतता है। असल में, यह ग्राहकों में से ही एक की गलती है।”
"उसकी क्या खबर है?"
“वह खान का करीबी दोस्त है और उस पर उसका कुछ हद तक नियंत्रण है,” वह जवाब देती है। “मैं खान को दोष नहीं देती। बड़े लोगों के सामने, खासकर पैसों के मामले में, वह कमजोर पड़ जाता है। अगर ग्राहक बड़ी रकम देता है, तो वह उसे हमारे साथ कुछ भी करने देता है।”
और वह ग्राहक खान को बड़ी रकम देता है?
“बड़ी रकम है साहब,” वह कहती है। “वह हर सप्ताहांत आता है, एक लड़की की मांग करता है और फिर उसे चोटों के साथ छोड़कर चला जाता है। खान को उन चोटों को ठीक करने के लिए स्थानीय डॉक्टर को बुलाना पड़ता है।”
और इस घटना का नवीनतम शिकार आप थे?
“हां।” वह सिर हिलाती है। “कल ही वह आया था और उसने मेरे साथ ऐसा किया।”
"वह क्या करता है?"
“वह थोड़ा डरावना दिखता है। वह मुझे अपनी बेल्ट से मारता है...”
“कोड़े मारने जैसा?” मैंने उससे पूछा, और तुरंत ही मेरी नज़र वर्धन से मिल गई।
“बड़े-बड़े शब्दों का मतलब मत समझो, साहब।”

“कोड़े मारना?”
“हां। वह कोड़े मारता है।”
वर्धन कुछ लिख रहा है। यह तो जैकपॉट है।
"क्या आप उनके बारे में और अधिक बता सकते हैं?"
“वह इस बात का पूरा ध्यान रखता है कि हमें उसका नाम पता न चले। वह पीछे से ऐसा करता है क्योंकि वह नहीं चाहता कि हम उसका चेहरा देखें। और फिर, वह चाकू से हमारे चेहरे काट देता है।”
“आप मुझसे इस बारे में क्या करवाना चाहते हैं?”
“मैं चाहती हूँ कि तुम उसे ढूंढो और उसके खिलाफ शिकायत दर्ज कराओ। पुलिस हम जैसे लोगों की नहीं सुनती।” वह निराशा से सिर हिलाती है, “वे सोचते हैं कि हम सबसे निचले दर्जे के लोग हैं और हमारे साथ ऐसा बर्ताव होना चाहिए, लेकिन अगर तुम उन्हें सबूत दोगे तो वे तुम्हारी बात सुनेंगे। तुम एक इज्जतदार आदमी हो।”
"मैं समझता हूँ।"
वह अपनी ब्लाउज से पैसों का एक बंडल निकालती है। “मेरे पास सिर्फ पाँच हज़ार हैं, साहब। मुझे हर ग्राहक से दो सौ मिलते हैं। यह मेरा और बाकी लड़कियों का पैसा है, जो इसमें अपना योगदान दे रही हैं।”
मुझे यह नहीं चाहिए।
और मैं इसे दो कारणों से नहीं चाहती थी—पहला, मुझे उस औरत के लिए बुरा लग रहा था। दिल्ली में वेश्या होना बहुत भयानक है। वहाँ औरतों को बहुत सारी यातनाएँ झेलनी पड़ती हैं। और दूसरा, क्योंकि मुझे लगता है कि यही हमारा आदमी है, यम । यही होना चाहिए। वह बिल्कुल फिट बैठता है। ज़्यादातर मनोरोगी मारपीट करते हैं। उन्हें वेश्याओं में दिलचस्पी होती है।
“मैं उस आदमी से मिलने वहाँ आऊँगी। अगली बार जब वह आए, तो मुझे फ़ोन कर लेना।” मैंने उसे पैंथर्स का आधिकारिक कार्ड दिया और उसके पीछे अपना व्यक्तिगत नंबर भी लिख दिया।
"मैं देर नहीं करना चाहता, इसलिए आपको यह सुनिश्चित करना होगा कि मुझे पहले से ही जानकारी मिल जाए और मैं वहां पहुंचने की पूरी कोशिश करूंगा।"
धन्यवाद, साहब।

वह खड़ी होती है, झुककर प्रणाम करती है, मीना को देखती है और फिर चली जाती है। मैं कुछ देर तक दरवाजे को देखता रहता हूँ, फिर वर्धन बोलता है।
मुझे नहीं लगता कि यह वही है।
"आपका क्या मतलब है?"
"यम न्याय कर रहा है और एक लड़की को पीटकर वह अपने ही विश्वासों का खंडन कर रहा है।"
“वो कातिल है, मनोरोगी है। वो खुद को अच्छा आदमी समझता है, शायद बॉलीवुड से प्रभावित होकर गलत कामों को सुधारने और न्याय से बचने वालों को मारने की कोशिश करता है, लेकिन असल में वो एक बेरहम हत्यारा है और अपने कामों को जायज़ ठहराने के लिए धार्मिक ग्रंथों का सहारा लेता है। मैं तुम्हें बता रहा हूँ, यही हमारा आदमी है।” मैं क्रूरता से मुस्कुराता हूँ।
मैंने तुम्हें पकड़ लिया, यम ।

अध्याय पैंतालीस

यम हमेशा की तरह दर्पण के सामने बैठ गया। उसने अपने सींगों और अपने बनाए हुए खोपड़ी के हेलमेट को देखा। उसने उसे उतार दिया और माथे से सारा पसीना पोंछ लिया। फिर उसने दर्पण में खुद को देखा। उसे अपनी ही परछाई पसंद आई। अपने काले हाथों से उसने दर्पण को छुआ, मानो उसमें अपना उल्टा हाथ देख रहा हो। उसे कभी-कभी खुद को रंगना और यम की तरह कपड़े पहनना अच्छा लगता था। उसे इससे तसल्ली और सुकून मिलता था। फिर उसने अपने लाल चश्मे निकाले और उन्हें एक सफेद डिब्बे में रख दिया और पानी की बाल्टी और तौलिए की मदद से खुद को धोने लगा। बार-बार ऐसा करने के बाद, उसने आखिरी बार खुद को देखा और यम को धुंधलाते हुए और अपनी असली छवि, जिसे सब देखते हैं, को दर्पण के सामने प्रकट होते हुए देखा।

वह शॉवर में गया और धीरे-धीरे पानी को बहने दिया, साथ ही साबुन लगे स्पंज से अपने शरीर से पेंट साफ करने लगा। पानी धीरे-धीरे काला होता गया और नाली में बह गया, और अंत में वह अपने असली रूप में लौट आया।

फिर घंटी बजी।

अध्याय छियालीस

यम द्वार की ओर बढ़ा। तब तक वह तैयार हो चुका था। उसने दरवाजा खोला तो देखा कि बृजेश खन्ना हमेशा की तरह शांत चेहरे के साथ अपनी छड़ी और मैरून चश्मे के साथ अपने दो सांवले रंग के अंगरक्षकों के साथ अंदर आ रहा है।

मैंने तुमसे कहा था कि मेरे पास कुछ नहीं है।

“और इसीलिए मैं यहाँ आता हूँ।” वह सोफे की ओर बढ़ा और शालीनता से बैठ गया। “आप भूल गए होंगे कि मुझे अपना व्यवसाय भी संभालना है। बाहर मेरे ग्राहकों को और भी चाहिए।”

मुझे यह जरूर मिल जाएगा।

“तुमने कहा था।” वह हमेशा की तरह रुका। “तुमने कहा था कि तुम मेरे डीलर बनोगे, मेरे इकलौते डीलर। तुमने मुझे दौलत, उम्मीदें और ख्वाहिशें देने का वादा किया था। मैंने लोगों को चोट पहुँचाना छोड़ दिया था।” उसने पीछे मुड़कर देखा और उसके चेहरे पर एक ठंडी मुस्कान थी। “वो दिन कितने सरल थे। लेकिन अब तुम यहाँ हो, और एक हफ्ता बीत चुका है। मुझे एक किडनी चाहिए, मेरे दोस्त, वरना मैं तुम्हारी किडनी इस्तेमाल करूँगा।”

मेरा वाला उपयोग करो?

“मैं तो सिर्फ एक ही लूंगा, ताकि आप दूसरे से काम चला सकें।” बृजेश ने अपनी छड़ी थपथपाई।

जब यम ा छटपटाने लगा तो दोनों अंगरक्षकों ने उसे पीछे से पकड़ लिया। "रुको... रुको..."

बृजेश हंसते हुए सिर हिलाने लगा। “तुमने वादा किया था। मुझे वादा तोड़ने वाले पसंद नहीं। वे झूठे हैं।” जैसे ही यम को भोजन की मेज पर लाया गया, वह खड़ा हो गया। उसने विरोध करने और संघर्ष करने की कोशिश की, लेकिन वे आदमी उससे दोगुने बड़े और कहीं अधिक बलवान थे।

वह डाइनिंग टेबल पर पीठ के बल लेटा हुआ था और उसे छत दिखाई दे रही थी, साथ ही बृजेश का बिना दांत वाला मुस्कुराता हुआ चेहरा भी।

बृजेश ने कहा, “तुम अच्छा काम कर रहे हो। चिंता मत करो, तुम सुरक्षित हाथों में हो। मैं सबसे अच्छा डॉक्टर हूँ। मैं तुम्हें मॉर्फिन की अच्छी खुराक दूंगा।”

“मुझे...उह...मुझे दो दिन चाहिए, ठीक है?” यम अपने आँसू रोकने की कोशिश कर रहा था।
“आपको यह दो दिन में मिल जाएगा?”
“हां, मैं करूंगा।” उसने बृजेश की ओर देखा और महसूस किया कि उस आदमी की आत्मा काली और कुटिल है।
"वाह, यह तो एक वादे जैसा लगता है।"
“हाँ, ऐसा ही है।” उसने गले में अटकी बात को मुश्किल से निगला। “प्लीज़, मैं...मैं वादा करता हूँ, ठीक है?”
“फिर से वादे ही कर रहे हो, मेरे दोस्त।” उसने आंखें घुमाते हुए कहा, “तो मैं तुम्हें दो दिन का समय देता हूं।”
"धन्यवाद।"
यम ा ने कहा, "मुझे आपके लिए एक जोड़ी लाने के लिए किसी चीज़ की ज़रूरत होगी।"
उसने आंखें सिकोड़ते हुए पूछा, "अब तुम क्या चाहते हो?"
"ब्लूप्रिंट मेरे अध्ययन कक्ष में हैं—अगर आपके आदमी मुझे अकेला छोड़ दें तो मैं आपको दिखा सकता हूँ।"
उसने सिर हिलाया और अपनी छड़ी को फिर से थपथपाया। यम उठा, अपना सिर दाएं से बाएं घुमाया और अध्ययन कक्ष की ओर चल पड़ा जहाँ वह अपने सभी न्याय-निर्णयों की योजना बनाता था। उसकी नाड़ी तेज़ थी और उसे अपने कानों में खून के फड़कने की आवाज़ सुनाई दे रही थी। शरीर की ठंडक ने उसे कुछ समय के लिए लकवाग्रस्त कर दिया था, लेकिन उसने यह सुनिश्चित किया कि वह सामान्य व्यवहार करे और इस बेहद चुनौतीपूर्ण स्थिति के अनुकूल ढल जाए। वह अध्ययन कक्ष में गया, एक पाठ्यपुस्तक से एक कागज़ निकाला और उसे बृजेश को सौंप दिया।
मैं चाहता हूं कि यह बनाया जाए।
बृजेश कुछ देर तक उसे घूरता रहा। "मेरे दोस्त," उसने उपहास उड़ाते हुए कहा, "क्या तुम यातना देने वाले हो? तुम मुझसे जो मांग रहे हो, वह बहुत महंगा है। मुझे इसके बदले एकदम ताज़ी किडनी चाहिए होंगी।"
"आपको ये दो दिन में मिल जाएंगे, लेकिन मुझे ये भी चाहिए।"

“दो दिन में मुझे एक जोड़ी ला दो और मैं इसे खुद बना लूंगा।” उसने आँख मारी। “तुम्हें इसकी ज़रूरत किसलिए है?”
मुझे लगा था कि हम अपनी निजी जिंदगी के बारे में बात नहीं करते।
वह हँस पड़ा। "और बिस्तर पर तुम ऐसा कुछ अजीबोगरीब काम करते हो?"
"बिल्कुल।"
“बहुत बढ़िया, तो मैं आपके फोन का इंतजार करूंगा। और हां, मैं यह चीज़...” उसने कागज को दोबारा देखते हुए भौंहें चढ़ाईं, “किसी इंजीनियर को दे दूंगा ताकि वह इसे आपके लिए बना दे।”
"धन्यवाद।"
बृजेश ने अपनी छड़ी थपथपाई और फिर अपने दो अंगरक्षकों के साथ चले गए। दरवाजा बंद करने से पहले उन्होंने कहा, "फिर मिलेंगे।" फिर उन्होंने झुककर अभिवादन किया और चले गए।
यम ने सोफे को पकड़ा और गहरी सांसें लेते हुए समझ गए कि उनके साथ क्या होने वाला है। उनकी किडनी निकालकर कहीं रखी जाने वाली थी। हे भगवान! मैंने खुद को बचा लिया। गलत लोगों से पंगा लेने का यही नतीजा होता है। उन्होंने आह भरी और महसूस किया कि उनके पास समय नहीं है। उन्हें एक और न्याय करना था। उन्होंने सोचा कि अगला काम उसी हथियार का होगा, लेकिन नहीं। उन्हें किडनी दान करनी थी, लेकिन वे किसी निर्दोष को नहीं मार सकते थे। नहीं, उन्हें यह किसी ऐसे व्यक्ति को करना था जो वास्तव में इसके लायक था, लेकिन दूसरों जितना नहीं। वे फिर से अपने अध्ययन कक्ष में गए, दरवाजा बंद किया और दीवार पर लगे पीले पोस्ट-इट नोटों को देखा। उन पर दक्ष गलगोटिया, रोहन खान और उदय पृथ्वी जैसे नाम लिखे थे और उनके नीचे उनके पाप लिखे थे। उन्होंने खोजा और आखिरकार एक नाम ढूंढ निकाला।
कबीर त्रिवेदी।

अध्याय सैंतालीस

मेरी बेटी लापरवाह स्वभाव की है और अब उससे बात करने का समय आ गया था। मैंने उसके दरवाजे पर दस्तक दी और उसके जवाब का इंतजार करने लगा। शनिवार की दोपहर थी और उसने दोपहर के भोजन के लिए न आने का फैसला किया था। रुत्वी ने मुझसे कहा कि वह उससे बात करेगी, लेकिन मैंने सोचा कि अब पिता-बेटी का समय है। मैंने सारंग से सुलह कर ली थी और मुझे उम्मीद है कि तारा से भी ऐसा ही हो जाएगा।

मैंने दरवाजे पर दो बार दस्तक दी, तभी दूसरी तरफ से चीख सुनाई दी- "क्या!"

यह कोई सवाल नहीं है, बल्कि एक साधारण सा शब्द है जो मुझ पर थूका जा रहा है।

"क्या मुझे बोलने की इजाज़त है?"

नहीं, आप ऐसा नहीं कर सकते।

"बस एक मिनट के लिए, मैं वादा करता हूँ कि मैं आपको नाराज नहीं करूँगा।"

वह टी-शर्ट और पायजामा पहने हुए दरवाजा खोलती है।

"क्या मैं आ सकता हूँ?"

वह दरवाजे से हटकर अपने बिस्तर पर कूद जाती है। कामकाजी महिला होने के बावजूद, उसका व्यवहार किशोरियों जैसा है। मुझे याद है जब वह गांजे के पैकेट के साथ पकड़ी गई थी और माफी मांगने के बजाय, वह बहुत गुस्सा हो गई थी क्योंकि उसकी निजता का उल्लंघन हुआ था। तारा राजपूत हमेशा से ऐसी ही थी। लेकिन मुझे लगता है कि ये सब उसे मुझसे ही मिला है—गुस्सा, निर्दयता।

वह टीवी देखने का नाटक करती है और मैं उसके कमरे को देखकर अपना सिर हिलाता हूँ। कमरा सादा है, जिसमें एक बिस्तर है, एक रंगीन दीवार है जिस पर उसकी तस्वीरें चिपकी हुई हैं और एक घूमने वाला पंखा है।

“अब क्या समस्या है?” मैं सप्ताहांत में अक्सर की तरह बॉक्सर पहने रहता हूँ, लेकिन मैंने पत्र आने और कार्रवाई शुरू होने के लिए सूट पैक करके रखा है, जिससे यह सवाल उठता है कि मैं कब तक उसके पीछे भागता रहूँगा? मुझे उसे जल्द से जल्द ढूंढना है, लेकिन उससे पहले मुझे अपने परिवार को भी बचाना है। “क्या हुआ?”

वह अब मुझसे शादी नहीं करना चाहता।

“क्या?” मैंने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं।

“कबीर,” वह आह भरते हुए कहती है। “उसने मुझे फोन किया और कहा कि घर में कुछ आर्थिक समस्याओं के कारण वह इसे टालना चाहता है। आपने उन्हें डरा दिया, पिताजी। आपने उन्हें बेवजह ही नीचा दिखाया। आपको कैसा लग रहा है?”
दरअसल, काफी अच्छा है।
"क्या अब वह आपसे दूरी बनाए हुए है?"
“अरे हाँ, बिलकुल। दहेज के बारे में उसके परिवार से पूछने के बाद तुम उससे क्या उम्मीद करती हो? और देखते ही देखते वो मुझसे भी रिश्ता तोड़ देगा।” लेकिन ये कहते हुए वो रोई नहीं, जैसा मैंने सोचा था। पर मुझे पता है, जब मैं कमरे से बाहर जाऊँगी, तो वो फूट-फूट कर रोने लगेगी। वो चुपचाप रोने वाली थी, ऐसी जो अपने आँसू छुपाती थी।
"अगर वह तुमसे सच्चा प्यार करता है, तो वह ऐसा नहीं करेगा।"
“लेकिन वह अपने परिवार से ज़्यादा प्यार करता है,” उसने मेरी तरफ देखे बिना ही कहा। “मेरे बारे में ऐसा नहीं कहा जा सकता।”
मैंने आह भरी। मैं बिस्तर पर गया और बैठ गया, और बड़ी असहजता से उसे देखने लगा। मुझे शर्म क्यों आ रही थी? क्या मुझे यह भी पता था कि मैं एक अच्छा पिता नहीं हूँ?
“मुझे माफ़ करना,” मैं कहती हूँ और मुझे एहसास होता है कि मैं उससे पहली बार ये कह रही हूँ। और मैं सचमुच दिल से कह रही हूँ। “मैं उनसे भी माफ़ी माँग सकती हूँ। मैं नहीं चाहती कि तुम्हें पापा से जुड़ी समस्याओं का सामना करना पड़े,” मैं मज़ाक करती हूँ।
आपको कुछ भी करने की जरूरत नहीं है। आप मुझे कभी समझ ही नहीं पाए।
मैंने जवाब दिया, "तुम मुझे कभी ऐसा करने नहीं देते।"
वह टीवी बंद करती है और रिमोट फेंक देती है। "याद है जब मैं स्कूल में थी, प्राथमिक कक्षाओं में, और मेरी पढ़ाई के अंकों और कक्षा में मेरे व्यवहार पर चर्चा करने के लिए एक मीटिंग हुई थी।"
"हाँ?"
"क्या तुम्हें याद भी है कि तुम इसके लिए गए थे?"
मैंने अपनी ज़बान पर लगाम लगाई क्योंकि मुझे एहसास हुआ कि मैं ऐसा नहीं कर सकता। उसे मेरी बदतमीज़ी से नहीं, बल्कि मेरे न होने से बहुत बुरा लग रहा था। मैं

और भी बहुत कुछ कहना चाहता था, लेकिन तभी मुझे एक कॉल आ गया।
“साहिब राजपूत?”
मैंने तुरंत आवाज पहचान ली। "गुलाबो?"
“वह आज रात आ रहा है...” वह फुसफुसाती है।
मैं अभी शुरू ही करने वाला था कि उसे बता दूं कि मैं आ रहा हूं, तभी मैंने मीना को हाथों में एक लिफाफा लिए देखा।

अध्याय अड़तालीस

मुझे तैयार होने और सीपी के लिए निकलने में लगभग एक घंटा लग जाता है। मैं अपना सूट पहनता हूँ, पता नहीं क्यों एक पिस्तौल उठा लेता हूँ और कार में बैठे-बैठे वर्धन को फोन करता हूँ।

“मैं भी आ रहा हूँ,” वह कहता है। “मुझे झंडेवालन मेट्रो स्टेशन से ले जाना।”

मैंने सोचा कि उसे खतरे से दूर रहने के लिए मना लूँ, लेकिन वह कॉलेज में था और मुझे वहाँ एक समझदार बच्चे की ज़रूरत थी। मैं क्या करती? शायद तस्वीरें खींचती। मुझे नहीं पता। बस इतना पता था कि मुझे उसका चेहरा देखना था, नाम जानना था, उससे पूछताछ करके उसके बारे में और जानना था और फिर वो करना था जो मुझे करना था —एक बेचारी औरत की जान बचाना। वो आज एक लड़की को पकड़कर कोड़े मारने आने वाला था और मैं अपने ज़मीर को उसे ऐसा करने नहीं दे सकती थी। साथ ही, मैं ये भी देखना चाहती थी कि वो यम राज है या नहीं। मुझे उसके करीब जाना ही था, भले ही मुझे महसूस हो रहा था कि वही वो है। ज़्यादातर सीरियल किलर क्रूर, दयनीय और सबसे बुरी बात, साधारण होते हैं।

मैं भीड़भाड़ वाले झंडेवालन से वर्धन को लेकर जीबी रोड की ओर चला। मैंने वर्धन को लिफाफा दिया, जिसे पढ़कर वह खुशी से चिल्ला उठा-

“क्या ऐसा नहीं है...”

“तारा का बॉयफ्रेंड, 10 घंटे, वो हर पीड़ित के साथ समय सीमा कम कर रहा है,” मैंने सिर हिलाया। “हाँ। अब हमारे पास दोगुनी चिंताएँ हैं।”

"क्या इसका मतलब यह है कि उसने कुछ क्रूरतापूर्ण काम किया होगा?" वह पूछता है।

मैं अपना सिर हिलाता हूँ। “मैंने उस बच्चे, वर्धन को देखा है। मैं जानता हूँ कि वह कैसा है। वह सबसे बदसूरत कुत्ता है जिसे कोई पाल सकता है, और दुख की बात है कि वह इंसान मेरी बेटी है। मैं उससे यह नहीं कह सकता और मुझे पता है कि आप भी नहीं कहेंगे।”

"तो फिर वह एक निर्दोष व्यक्ति की हत्या क्यों कर रहा है?"

"क्योंकि उसे किसी चीज़ की ज़रूरत तो होगी ही, शायद अपनी किसी लालसा को पूरा करने की, चाहे जो भी हो, मुझे पूरा यकीन है कि कबीर एक सीधा-सादा इंसान है।

बेशक, उसके आस-पास एक रहस्यम य आभा है, लेकिन ऐसा सिर्फ इसलिए है क्योंकि वह बहुत ही सामान्य और साफ-सुथरा है।"
"तो हमें इस मामले की जांच करनी चाहिए, क्या आपको ऐसा नहीं लगता?"
“हम यहाँ थोड़ा समय बिताएंगे और फिर इस पर गौर करेंगे। हमारे पास पंद्रह घंटे हैं, है ना? हमें अपनी प्राथमिकताएँ तय करनी होंगी।”
“तुम सचमुच चाहते हो कि वह मर जाए, है ना?” वह हंसता है।
मुझे उसकी कमी महसूस नहीं होगी, यह मुझे पूरा यकीन है।
मैंने कार रोकी और उस गंदे, अंधेरे गड्ढे को देखा जिसमें हम प्रवेश करने वाले थे।
"अगर तुम्हारी मां को पता चल गया कि मैं तुम्हें यहां लेकर आया हूं, तो वो मुझे जान से मार देगी।"
कोई बात नहीं, मैं पहले भी यहाँ आ चुका हूँ।
मेरी आंखें चौड़ी हो गईं। "क्या तुम मुझसे मजाक कर रहे हो?"
“काश मैं कर पाता, लेकिन मैं यहाँ आया था और मैंने कुछ नहीं किया। बस चीज़ों का अनुभव किया। मेरे दोस्तों ने यहाँ खूब मज़ा किया। मैं बस बाहर खड़ा रहा और मेरा बटुआ चोरी हो गया।” वह अपनी आँखें घुमाता है।
“ठीक है, तुम मेरे साथ हो,” मैंने सोचा कि छह फुट तीन इंच का आदमी वाकई कुछ फर्क लाएगा। “तो चलिए अंदर चलते हैं।”
हम गाड़ी को लॉक करके बाहर छांव में छोड़ देते हैं और कुछ कदम चलकर गली में प्रवेश करते हैं। जीबी रोड पर मरे हुए चूहे इधर-उधर भागते नज़र आते हैं, और चूहों से मेरा मतलब है, आदमी। यह हर कद, रंग और उम्र के चिकने-चुपड़े आदमियों से भरी पड़ी है। और ये चूहे उन औरतों का पीछा करते हैं, जो लोहे की जाली वाली खिड़कियों से झाँककर अपने सपनों के राजकुमार से उन्हें यहाँ से ले जाने की गुहार लगा रही हैं। पान और गोबर की दुर्गंध हवा में फैली हुई है और हर जगह गंदगी दिखाई देती है। यह जगह छोटी नहीं है और मुझे हैरानी होती है कि इसे सड़क क्यों कहते हैं। यहाँ कई पाँच मंज़िला इमारतें हैं, जिन पर नंबर लिखे हैं और उन्हें कोठा नंबर 1, कोठा नंबर 2 आदि कहा जाता है।
मैं लोगों को घूरते हुए देखती हूँ, लेकिन मैं उन्हें नज़रअंदाज़ कर देती हूँ। वर्धन, जिसके हाथ जेब में हैं ताकि कुछ चोरी न हो, वह भी ऐसा ही करता है। हम गुलाबो के बताए अनुसार कोठा नंबर 10 में प्रवेश करते हैं और अंदर जाते ही हमें ऊपर जाती हुई

घुमावदार लकड़ी की सीढ़ियाँ दिखाई देती हैं। हर मंज़िल पर तीन कमरे हैं, लेकिन इन कमरों में दरवाज़े नहीं हैं। अंदर का नज़ारा छिपाने के लिए इनमें चुन्नीदार लगे हैं। टाइलें गंदी हैं और जगह बदबूदार है। मुझे उन भद्दे चमकीले गुलाबी कमरों से पुरुषों और महिलाओं की आहें सुनाई देती हैं। मैं एक लड़की को अपनी टूटी हुई खिलौना कार के साथ भागते हुए देखती हूँ और वह ऐसे नाटक कर रही है जैसे कार असली हो और वह उसे चला रही हो। मुझे यह देखकर दुख होता है कि वह लड़की बड़ी होकर इसी कोठे का हिस्सा बनेगी और दूसरी महिलाओं की तरह काम करेगी। यह एक निराशाजनक दृश्य है, लेकिन इन बेचारी महिलाओं के पास कोई विकल्प नहीं है। इनमें से ज़्यादातर नेपाली प्रवासी हैं और कुछ पश्चिम बंगाल, झारखंड और भारत के अन्य हिस्सों से हैं। यह गुलामी का जीवन है।

मैंने गुलाबो को फोन किया और उसे बताया कि हम वहां पहुंच गए हैं।

“और वो भी यहीं है,” वो फुसफुसाते हुए बोली, “मैं नीचे आ रही हूँ।”

हम थोड़ी देर इंतजार करते हैं, तभी हमें एक आवाज सुनाई देती है।

“सलाम अलैकुम।”

हमने मुड़कर देखा तो एक आदमी घनी दाढ़ी, छोटे बाल और काजल लगी आंखों के साथ चमकदार ग्रे कुर्ते में खड़ा था।

“मैं खान हूँ,” वह कहता है और थोड़ा झुकता है। “मैं आप दोनों की क्या मदद कर सकता हूँ?”

हमने एक-दूसरे को देखा। इस समय हम उससे मिलना बिल्कुल नहीं चाहते थे। मैं बोलने ही वाला था कि तभी हमें एक और आवाज़ सुनाई दी।

“खान साहब,” गुलाबो सीढ़ियों से नीचे कूदते हुए कहती है, उसका चेहरा दुपट्टे से ढका हुआ है, “ये मेरे ग्राहक हैं।”

“क्या आप इन्हें जानते हैं?” वह आंखें सिकोड़कर हमें ध्यान से देखने लगा। “मैंने इन दोनों को यहां पहले कभी नहीं देखा।”

"वे पिछले महीने यहीं थे, उसी समय जब आप मस्जिद के लिए रवाना हुए थे।"

“क्या? और ये दोनों तुम्हारे साथ?” उसने थूकते हुए कहा। “कभी नहीं!”

लेकिन वे हमेशा ऐसा करते हैं।

“अरे चिकनी,” वो चिल्लाता है, “मुझे दो लड़के और एक लड़की में कोई दिलचस्पी नहीं है। सिर्फ़ एक और एक,” वो उंगलियों से इशारा करता है। “समझी?”

मैं वर्धन की ओर देखता हूँ, जो तुरंत ही तेवर चढ़ाकर वहाँ से चला जाता है।
मैं उसे एक और माल दे सकता था, रे।
“उसे सिर्फ गुलाबो पसंद है,” मैंने जवाब दिया।
खान मेरे पास आकर फुसफुसाते हुए कहता है, "क्यों, रे? उसे देखो। वह बूढ़ी और चोटिल है। अब, मुझसे यह मत पूछो कि कैसे। आजकल ग्राहक बहुत सारी अश्लील चीजें देख रहे हैं और नई चीजें चाहते हैं। वे इसके लिए ज़्यादा पैसे देते हैं। क्या तुम यही चीज़ किसी जवान, साफ़-सुथरी लड़की से चाहते हो?"
मैं दांत पीसती हूँ। मेरा मन करता है कि उसे घूंसे मारकर उसके दांत तोड़ दूं, फिर उसके दांत काटकर चांदनी चौक के बाजार में मुफ्त में बेच दूं। लेकिन मैं ऐसा नहीं करती। गुलाबो मेरा हाथ पकड़कर मुझे ऊपर अपने कमरे में ले जाती है और मैं खान को मेरी तरफ क्रूर मुस्कान के साथ देखती हूँ। मैं वर्धन के बारे में सोचती हूँ कि वह क्या कर रहा होगा, लेकिन अगर मुझे यम राज को अपनी आँखों से देखना है तो मुझे मजबूत रहना होगा।
मैं गलियारों से गुज़रती हूँ, पसीने से लथपथ, उभरे हुए अंगों वाले पुरुषों को खुली ब्लाउज़ वाली महिलाओं को चूमते हुए देखती हूँ। मैं यह सब देखने से बचती हूँ क्योंकि यह बहुत गंदा और घिनौना है। और मैं लड़कियों की बात नहीं कर रही हूँ। मैं उन घिनौने पुरुषों की बात कर रही हूँ। आखिरकार मैं उसके कमरे में पहुँचती हूँ। कमरा हल्के नीले रंग का है, जिसमें एक तरफ छोटी सी मेज़ है और एक छोटा सा पलंग है जहाँ एक युवती शांति से सो रही है।
"जब कोई ग्राहक आता है तो वह चली जाती है," वह मुझे बताती है और मुझे उसी क्षण एहसास होता है कि इस चादर में किस तरह के भौतिक अवशेष छिपे होंगे, लेकिन मैं इसके बारे में ज्यादा सोचना नहीं चाहती।
क्या उसे पता है?
“वह बेवकूफ नहीं है।” गुलाबो ने सिर हिलाया।
मुझे बगल में वर्णमाला और अंग्रेजी की कुछ किताबें दिख रही हैं। लगता है वह घर पर ही पढ़ रही है। "वह कहाँ है?"
मैंने खान को उससे फोन पर बात करते सुना। वो उसे पता नहीं क्यों चाचा कहकर बुलाता है।
"अगली लड़की कौन है?"

वह परदे को थोड़ा सा हटाती है और मुझे सामने वाले कमरे में ले जाती है जहाँ कुर्ती पहने एक लड़की बैठी दीवार को घूर रही है। अगर मेरा अनुमान सही है, तो उसकी उम्र अठारह साल से ज़्यादा नहीं होगी। मैं उस भूरे और थके हुए चेहरे के भाव को समझ सकती हूँ। यह क्रूर अनिवार्यता का भाव है।
"उसका नाम टिन्नी है," गुलाबो कहती हैं।
"खान के कहे अनुसार चाचा आज उसके पास आने वाले हैं।"
“आज कब?” मैंने अपनी घड़ी देखी। सात बज चुके थे।
इससे पहले कि वह कुछ कह पाती, मुझे कदमों की आहट सुनाई दी। टिन्नी तुरंत उठ खड़ी हुई और इधर-उधर देखने लगी। गलियारे से कौन आ रहा है, यह तो मैं देख नहीं पाई, लेकिन टिन्नी के चेहरे पर उदासी और निराशा साफ झलक रही थी। उसने आह भरी, आंखें बंद कीं और शायद एक-दो प्रार्थनाएं कीं, फिर बिस्तर पर वापस बैठ गई। परछाई दिखने लगती है और जल्द ही उस परछाई में शरीर झलकने लगता है—एक कमीज़ और एक पैंट, जैसे ही मुझे चाचा की पीठ दिखाई देती है। मुझे उनका चेहरा नहीं दिखता। मैं अपनी बंदूक निकालता हूँ। मुझे नहीं पता मैं ऐसा क्यों करता हूँ क्योंकि अगर मैं उन्हें गोली मार दूँगा तो मैं मुसीबत में पड़ जाऊँगा, लेकिन मैं सच में उन्हें गोली मारना चाहता हूँ क्योंकि मैं सोचता हूँ कि वह कमरे में उस बेचारी लड़की के साथ क्या करेंगे। वह टिन्नी के कमरे में घुसते हैं, और एक पल के लिए मैं उनका चेहरा देख पाता हूँ, इससे पहले कि वह मुड़कर पर्दे खींच दें, और खुद को मेरे सामने प्रकट कर देते हैं।
और मैं उसका चेहरा देखती हूँ। मैं उसे जानती हूँ। मैं उसे बहुत अच्छी तरह जानती हूँ क्योंकि वह कबीर त्रिवेदी है, वही आदमी जिससे मेरी बेटी को प्यार हो गया था।

अध्याय उनतालीस

वर्धन ने उसे सिर्फ तस्वीरों में देखा था, लेकिन असलियत में वह थोड़ा अलग दिख रहा था। कबीर वहाँ आया और इमारत में दाखिल हो गया, उसने वर्धन को बिल्कुल भी नहीं देखा। वह उसे जानता नहीं था। अगर शादी हुई होती तो वह उसे पहचान लेता, लेकिन कबीर को यहाँ देखकर उसे समझ आ गया कि वह सही जीवनसाथी क्यों नहीं था। उसकी अंतरात्मा ने उसे बताया कि कुछ गड़बड़ है। वर्धन खुद को रोक नहीं पाया और उसने अंदर जाकर खुद देखने का फैसला किया।

लेकिन इससे पहले कि वह कुछ कर पाता, उसे अचानक एक बात सूझी। लिफाफे पर कबीर का नाम! क्या इसका मतलब यह हो सकता है कि वेश्याओं को पीटना पाप माना जाता है? उसने अपनी आँखें सिकोड़ते हुए अपना मोबाइल फोन ढूंढने की कोशिश की, लेकिन उसे एहसास हुआ कि वह उसे कार में ही छोड़ आया है।

धत् तेरे की।

उसे डर था कि उसका फोन फिर से चोरी हो जाएगा, क्योंकि उसने उसे डैशबोर्ड पर रखा था। उसके फोन में उसके द्वारा बनाए गए नरक के चार्ट की तस्वीर थी। उसने नरक या पाप, लड़कियों को पीटने से संबंधित किसी भी बात को याद करने की कोशिश की, लेकिन फिर उसे एहसास हुआ कि अगर कबीर का नाम लिफाफे पर है, तो वह यम नहीं हो सकता; वह पापियों में से एक था।

अब इरावान क्या करेगा? क्या वह उस आदमी को नुकसान पहुंचाएगा जिसे उसे कुछ ही घंटों में बचाना है? लेकिन फिर, वह उसकी बेटी का प्रेमी है। अब क्या होगा?

ओह नहीं।

अध्याय पचास

मैं पर्दे हटाकर कमरे की ओर चल पड़ी। गुलाबो ने मुझे रोकने की कोशिश की, लेकिन मैंने बस उसके हाथ झटक दिए और चलती रही, तभी मेरी नज़र बैंगनी पर्दों पर पड़ी, जो मुझसे कुछ ही इंच दूर थे। मैंने उन्हें हटाया और खुद को एक अजीब से सपने में खोया हुआ पाया, जिसमें एक आदमी की छवि थी। वह वहाँ पूरी तरह से कपड़े पहने खड़ा था और उसके हाथ में एक जेब में रखा चाकू था। वह टिन्नी को धमका रहा था कि वह उसका पैर का अंगूठा चूसे और टिन्नी एक पिल्ले की तरह घुटनों के बल बैठी थी, जबकि वह उसके सिर पर थप्पड़ मार रहा था।

वह मुझे देखता है और उस पल, मैं उन दोनों को देखती हूँ—वह आदमी जो वह तारा को दिखाता है और वह आदमी जो वह अब है। दोनों की झलक मुझमें है। मैं उसकी घबराहट महसूस कर सकती हूँ, मेरे अंदर गुस्सा फूट रहा है और मैं उसके कंधे पकड़कर उसे बाहर फेंक देती हूँ।

“अंकल...” वह अपने हाथ जोड़ते हुए कहता है, “मैं...मुझे...माफ़ कर दीजिए।”

मैंने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। मैं गुस्से से फट पड़ा। मैं उसके पास गया और उड़ती हुई लात से उसके चेहरे पर वार किया। फिर उसे उठाकर दूसरी लड़की के कमरे में फेंक दिया, जहाँ वह एक मोटे और मूंछों वाले आदमी के पेट से टकरा गया। वह आदमी चिल्लाया और खुद को ढककर नग्न लड़की को लेकर बाहर भाग गया।

मैंने अपनी पिस्तौल के बट से उसके माथे पर मारा। "यहाँ तुम्हें चाचा कहते हैं ना?"

मुझे...उह...माफ़ करना,”

"क्या तुम्हें लगा कि तुम मेरी बेटी से शादी कर सकते हो?"

"वह..."

“तुम ऐसा क्यों करते हो?” मैंने उसे पकड़ लिया और कसकर थाम लिया। “क्या तुम्हें पता भी है कि तुम्हारी इन हरकतों की वजह से एक आदमी तुम्हें मारना चाहता है?”

और मेरा मतलब खुद से नहीं था। मैं अभी भी कानून से बंधी थी, लेकिन यम से नहीं। और एक पतली सी रेखा थी जहाँ मैं उसे देखना चाहती थी, यातना देना या बचाना।

“और तुमने तारा को यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि यह मेरी गलती थी?”

"कृपया, चाचा जी।"

मैंने उसके माथे पर फिर से एक थप्पड़ मारा और वह बेहोश हो गया। उसी क्षण मुझे एहसास हुआ कि वेश्याएं और उनके ग्राहक मुझे घूर रहे हैं। वेश्याओं के होठों पर एक पतली, धूर्त मुस्कान थी जिसे वे छिपा नहीं पा रही थीं। मैंने गुलाबो को देखा, जिसकी आँखों में आँसू थे। क्या मैंने उसे थप्पड़ मारकर सही किया?
मैं उसका खून से सना कॉलर वहीं छोड़ देता हूँ और उसे खांसते-खांसते अपने ही खून में दम घुटते हुए मरने देता हूँ, जो अब टाइलों पर बहने लगा है। मैं उसका चेहरा देखता हूँ और मुझे अच्छा लगता है। इसलिए नहीं कि मैंने उसे मारा, बल्कि इसलिए कि ये सारी औरतें चुपचाप मेरी तारीफ कर रही हैं, जबकि उनके ग्राहक तनाव भरे चेहरों के साथ जमे खड़े हैं। उस पल, मैं सोचता हूँ कि क्या यम ने भी ऐसा ही सोचा होगा? क्या उन्होंने सोचा होगा कि इन सभी पापी लोगों को मारकर दुनिया चुपचाप उनकी तारीफ कर रही है और उन्हें बधाई दे रही है?
तब मुझे एहसास हुआ कि यम अपने ही विकृत तरीके से खुद को नायक मानता था और आश्चर्यजनक बात यह है कि मैं भी धीरे-धीरे इस बात पर विश्वास करने लगा हूँ।

अध्याय इक्यावन

सब कुछ एक अच्छे तरीके से खत्म हुआ, जैसे किसी तोहफे में लाल रिबन लपेटकर रखा गया हो। खान को पता चल गया और उसने मुझे घर से निकाल दिया, जो मुझे ठीक लगा। हम वापस घर गए और उस शाम मैंने खूब शराब पी ली। बहुत लंबे समय बाद मैंने किसी को इतनी बेरहमी से मारा था। मैंने तारा को यह नहीं बताया कि उसका असली बॉयफ्रेंड कौन है, लेकिन इसके बाद मुझे पूरा यकीन था कि वह उससे कभी संपर्क नहीं करेगा। मैंने उसका फोन ले लिया जिसमें वेश्याओं की तस्वीरें थीं। मुझे हैरानी हुई कि तारा ने उसका फोन कभी चेक नहीं किया था। वह अश्लील तस्वीरों से भरा हुआ था। मैंने वे सभी तस्वीरें उसके फोन से तारा को भेज दीं और फिर फोन उसकी बेहोश छाती पर फेंक दिया। तारा शायद अब ब्रेकअप कर ले, भले ही वह सोचती रहे कि कोई जानबूझकर ऐसी तस्वीरें कैसे भेज सकता है। उसे सोचने दो। उसे अपने इस फरिश्ते के बारे में नहीं पता होना चाहिए।

अगली सुबह मैंने उसे फोन करने का फैसला किया।

“क्या आपको मेरी याद आ रही है, श्री राजपूत?” यम ने धूर्तता से कहा।

मैं कमरे में बैठा चार्ट देख रहा हूं और मेरे पीछे वर्धन आत्मविश्वास से बैठा है।

मुझे पता है कि तुम उसे क्यों चोट पहुंचाना चाहते थे।

“तुम बहुत तेज़ हो रहे हो,” वह कर्कश स्वर में कहता है, “अगली बार मैं समय सीमा थोड़ी कम कर दूं ताकि तुम्हें थोड़ी असुविधा हो।”

“यह पुयोदा है, नरक। उसका गुनाह एक वेश्या के साथ नाजायज संबंध रखना था, न कि वेश्या को पीटना जैसा कि मैंने सोचा था। अगर मुझे यह नहीं मिलता, तो तुम उसे मवाद, वीर्य और दुनिया की सारी घिनौनी चीजों से भरे पानी के पात्र में बंद कर देते।”

“मैं गीता में कही गई बातों से कहीं अधिक नवोन्मेषी होऊंगा,” वह उपहास उड़ाते हुए कहते हैं।

मैंने आह भरी। "तुमने गलत आदमी को चुना है, तुम्हें पता है।"

"आपका क्या मतलब है?"

“वह मेरा होने वाला दामाद था।”

एक असहज सन्नाटा छा जाता है। "और आपको ऐसा क्यों लगता है कि मैंने गलत आदमी को चुना?"

“तुम्हें पता था?”
“बिल्कुल, मैंने किया,” वह कहते हैं। “वह कभी भी योजना का हिस्सा नहीं था।”
और आपकी क्या योजना थी?
वह बेतहाशा हंसता है। उसकी आवाज़ धातु जैसी कर्कश हो जाती है। “तुमने कभी सोचा ही नहीं कि मैंने तुम्हें अपना मोबाइल नंबर क्यों दिया। ज़रा सोचो। अब मैं कितना उबाऊ खलनायक बन गया हूँ? मैं तुमसे सिर्फ़ चिट्ठियों के ज़रिए भी बात कर सकता था, लेकिन फिर भी मैंने तुम्हें अपना फ़ोन नंबर दिया। मैं तुम्हारी भावनाओं को महसूस करना चाहता था, तुम्हें पता है ना, इसीलिए मैंने ऐसा किया। मुझे तुम्हारी थकी हुई आवाज़ का धीरे-धीरे तुम्हारे शरीर से निकलना अच्छा लगता था, जब तुम मुझे नरक और पाप के बारे में बताती थी। यह इतना थका देने वाला है कि मज़ाकिया लगने लगता है।”
मैं नाक फुलाते हुए खड़ा हो गया। "तुम्हारी क्या योजना थी?"
"मैंने अभी जो शब्द तुमसे कहे हैं, उन्हें ध्यान में रखते हुए पत्र को फिर से पढ़ो।"
मैंने फोन काट दिया और वर्धान पर चिल्लाकर कहा कि जल्दी से चिट्ठी लाओ। वह मेज पर इधर-उधर हाथ फेरने लगा, एक-एक करके सारे फोल्डर खंगालता रहा और चार चिट्ठियाँ उठा लीं। फिर उन्हें पलटते हुए, आखिर में उसे आखिरी चिट्ठी मिली और उसने बाकी सब फेंक दीं। उसने चिट्ठियाँ खोलीं और मुझे दे दीं। मैंने सुलेख में लिखे शब्दों को देखा और उन्हें छूकर देखा, शायद कोई समानता या कोई दूसरा नाम मिल जाए।
उसका मतलब क्या था? कबीर त्रिवेदी के अलावा और कोई नाम नहीं है।
क्या तुम्हें मेरी कही हुई बातें याद हैं?
उसने क्या कहा? उसने बताया कि उसने मुझे अपना फ़ोन नंबर क्यों दिया। यह तो... इंतज़ार।
नींबू, पानी, और इन सबको मिलाना... उसने फिर वही किया। और इस बार उसने बड़ी चालाकी से किया। इसीलिए उसने मुझे उस नंबर की याद दिलाई। वह छुपी हुई स्याही से लिखा था, ठीक वैसे ही जैसे उसका दूसरा संदेश। मैंने स्टैंडिंग लैंप जलाया और कागज़ को उसके नीचे रख दिया। धुंधली लिखावट में मुझे उसकी घिनौनी योजना दिखाई दी।
पाप के लिए नरक और नरक के लिए पाप को खोजो

फरीक अब्दुल्ला
10 घंटे।
मैं फरीक अब्दुल्ला के बारे में कुछ नहीं जानता, मैंने उसका नाम कभी नहीं सुना। मैंने उस कमीने से कुछ सवाल पूछने के लिए उसे दोबारा फोन करने का फैसला किया।
“तूने मुझे बेवकूफ बनाया, कमीने?” मैं चिल्लाई, उम्मीद कर रही थी कि मेरा परिवार मुझे इस तरह गुस्से में चिल्लाते हुए न सुन ले। मैंने देखा कि वर्धन पूरी तरह से तनाव और हैरानी से मुझे घूर रहा था।
“मैंने बस तुम्हारा ध्यान भटकाया। मैं चाहती थी कि तुम्हें अपने दामाद के बारे में भी पता चले। अफसोस की बात है कि तुम्हें उसके बारे में मुझसे नहीं, बल्कि किसी औरत से पता चला। तुम्हें पता है, तुमने अपनी बेटी को एक भयानक शादी से बचाया। उसे चोट लग सकती थी, इसलिए एक तरह से मुझे खुशी है कि अब मैं उसे पुयोडा जेल में डाल रही हूँ। उसने तुम्हारे हाथों बहुत दुख झेला है। हाँ, मैंने उसे अस्पताल में देखा था। तुमने उसका चेहरा बिगाड़ दिया और बेचारा कहता है कि यह एक हादसा था क्योंकि वह नहीं चाहता कि उसके माता-पिता को पता चले कि उसने क्या किया। अब मेरी जगह होने पर कैसा लगता है?”
“बात यही थी, है ना? तुम चाहते थे कि मैं तुम्हारे जैसा बन जाऊं।”
“ओह, मैं धीरे-धीरे तुम्हें अपने जैसा बना रहा हूँ,” वह शरारती हंसी हंसते हुए कहता है। “बस कुछ ही समय की बात है जब तुम यह खेल किसी और के साथ खेलोगे।”
“फरीक अब्दुल्ला कौन हैं?”
“यही तो तुम्हारी चिंता है,” मैंने अपनी जीभ को उसके गाल के अंदरूनी हिस्से पर जोर से झटका दिया। “तुम्हारे पास दस घंटे हैं। तुम्हारा समय अभी से शुरू होता है।”

अध्याय बावन

मुझे दोबारा तैयार होने का समय नहीं मिला। सप्ताहांत ही एकमात्र ऐसा समय था जब मुझे अपने परिवार के साथ समय बिताने का मौका मिलता था और मुझे इस बात का दुख हो रहा था कि मैं ऐसा नहीं कर पा रही थी। मैंने वर्धन को चाबियाँ दे दीं ताकि वह पार्किंग में जाकर कार निकाल ले, इस बीच मैं अपना चेहरा धो लूँ।

मैं गीले चेहरे और हाथ में तौलिया लिए सूट पहने बाहर आया, तभी मैंने देखा कि तारा दरवाजे पर चुपचाप खड़ी है।

"क्या हुआ?"

"आप कहां जा रहे हैं?"

"आज एक अत्यावश्यक जांच का काम है।"

“क्या तुमने कबीर के बारे में सुना?” वह पूछती है।

मेरे पास इसके लिए समय नहीं था, लेकिन फिर मुझे एहसास हुआ कि मेरे पास कभी समय होता ही नहीं, इसलिए मैंने उसे कसकर गले लगा लिया। वह एकदम शांत हो गई और मुझे महसूस हुआ कि उसका शरीर अकड़ गया है, फिर वह ढीली पड़ गई और अपनी बाहों को मेरी पीठ पर लपेटकर मुझे कसकर पकड़ लिया।

“लोग कहते हैं कि वो जीबी रोड पर था और कुछ बदमाशों ने उसे पीट दिया। मेरे पास तस्वीरें भी हैं। मुझे लगता है कि वो लोग चाहते थे कि मैं ये देखूँ। सच में मेरे कुछ अजीब से रक्षक देवदूत हैं।”

उसके माता-पिता क्या कहते हैं?

“मुझे उससे नफरत तो जरूर है, लेकिन वो बुरी तरह घायल है, इसलिए उसकी देखभाल की जा रही है। मुझे उसकी चिंता है,” वो कहती है। “भले ही वो बुरा आदमी था, फिर भी मुझे उसकी चिंता है। पता नहीं क्यों।”

"आप एक अच्छे व्यक्ति हैं।"

लेकिन अब मैं उससे नहीं मिलूंगी। क्या तुम खुश हो?

"विशेष रूप से नही।"

वह पीछे हटती है और मुस्कुराती है। "चिंता मत करो, मैं जल्दबाजी कर रही थी। मैं कुछ समय का अवकाश लूंगी और तब तक सिर्फ काम करूंगी जब तक मुझे अपने जीवन में कोई बेहतर साथी नहीं मिल जाता।"

“तुम ऐसा करो।” मैं मुस्कुराया।
जब मैंने कहा, "अरे सुनो, रुको," तो उसने सिर हिलाया और हिलने लगी।
“क्या हुआ पापा?” वह बहुत दिनों बाद यह शब्द बोलती है।
मैं बस इतना चाहता हूं कि आप यह जान लें कि भले ही मैं हमेशा आपके साथ नहीं हूं, लेकिन मैं हमेशा आपके पास हूं और आपकी रक्षा कर रहा हूं, भले ही आपको इसका एहसास न हो।"
“बैटमैन की तरह?” वह अपनी भौंहें उठाती है।
"बैटमैन की तरह," मैंने मुस्कुराते हुए कहा।
और ऐसा लंबे समय बाद पहली बार हो रहा है। मुझे अपनी बेटी से फिर से जुड़ाव महसूस हो रहा है और किसी कारणवश, मुझे लगता है कि अब मुझे जीवन में कम पछतावा है।

अध्याय तिरपन

अपनी गलती का एहसास होते ही यम ने फोन पटक दिया। उसे पता नहीं था कि कबीर त्रिवेदी, इरावन राजपूत का दामाद है। उसे बिना सोचे-समझे पापियों को चुनने के बजाय बेहतर तरीके से जांच-पड़ताल कर लेनी चाहिए थी। सौभाग्य से उसने स्याही से छिपाकर दूसरा नाम लिख दिया था। इस बार तो वह भाग्यशाली रहा, लेकिन हमेशा नहीं।

उसने अपनी घड़ी देखी और महसूस किया कि उसके पास ज्यादा समय नहीं है। बृजेश रात में आ सकता है और अगर उसे वे गुर्दे चाहिए तो उसे जल्दी काम करना होगा, नहीं तो उसकी जान खतरे में पड़ जाएगी।

अध्याय चौवन

मुझे फरीक अब्दुल्ला के बारे में कुछ नहीं पता, क्योंकि वो रोहन खान और दक्ष गलगोटिया जैसे मशहूर शख्सियत नहीं थे। उनका गुनाह क्या हो सकता है?

"फेसबुक पर कई फरीक अब्दुल्ला हैं," वर्धन ने मुझे बताया।

"दिल्ली वाले को ढूंढो।"

फ़रीक़ अब्दुल्ला एक आम नाम था, खासकर दुबई, पाकिस्तान और कश्मीर में, लेकिन दिल्ली में, जामा मस्जिद जैसे कुछ खास इलाकों में ही इस नाम का कोई व्यक्ति मिल सकता था। बारह बज चुके थे और हमारे पास दस बजने तक का समय था। मैंने टाइमर नौ बजे का सेट कर दिया, ताकि अगर किसी वजह से हमें देर हो जाए तो मुझे एक घंटे की बढ़त मिल सके।

"दिल्ली में तीन फरीक अब्दुल्ला हैं।"

“कोई पता है?” मैंने पूछा।

"पता सिर्फ एक के पास है।"

"नीचे लिखें।"

वह इसे अपनी डायरी में लिखता है और पूछता है- "बाकी दो के बारे में क्या?"

तुम अपना काम करो।

वह सिर हिलाता है और फिर लैपटॉप स्क्रीन पर नज़र गड़ाए टाइप करने लगता है। मैं जानता हूँ कि वह क्या कर रहा है। वह फ़ायरवॉल तोड़कर दोनों फ़ारूक़ अब्दुल्लाओं का आईपी एड्रेस खोजने की कोशिश कर रहा है। इसी बीच, मैं उसके दिए पते को देखता हूँ। यह पास ही में, नारायणा में, पीवीआर कॉम्प्लेक्स के सामने है।

"क्या होगा अगर फरीक अब्दुल्ला यम ा जिसे हमें ढूंढने के लिए कह रहा है, वह फेसबुक पर न हो?" वर्धन अपने लैपटॉप के कीपैड पर टाइप करते हुए पूछता है।

तो फिर हमें जल्दी करनी चाहिए।

मैं नारायणा की भीतरी सड़कों और गलियों से तेज़ी से भागता हुआ लोगों से ए-ब्लॉक नंबर 14 का रास्ता पूछता हूँ। जैसे ही हम उस पते पर पहुँचते हैं, मैं वर्धन से मेरे साथ चलने को कहता हूँ, लेकिन वह अपने गैजेट में व्यस्त है। मैं पत्थर की बनी इमारतों की सीढ़ियाँ चढ़ता हूँ और घंटी बजाता हूँ, और कुछ कोशिशों के बाद मुझे एहसास होता है कि घंटी बज नहीं रही है। मैं दरवाज़े पर दस्तक देता हूँ, अपने हाथ पैंट की जेबों में

डालता हूँ और इंतज़ार करता हूँ। दरवाज़ा खुलता है और मुझे एक छोटा लड़का, शायद वर्धन की उम्र का, मेरे सामने खड़ा मिलता है।
"नमस्कार, मैं श्री अब्दुल्ला को ढूंढ रहा हूँ।"
वह अपनी भौंहें ऊपर उठाता है। "माफ़ कीजिए, आप कौन हैं?" वह विनम्रता से पूछता है।
“मुझे श्री अब्दुल्ला से कुछ सवाल पूछने हैं।” मैंने अपना पैंथर्स कार्ड निकाला। “मैं एक फर्म में काम करता हूँ।”
वह उसे देखता है। "उम, मुझे माफ करना, लेकिन मेरे दादाजी का निधन हो गया है।"

अध्याय पचपन

मैं वापस आकर कार में बैठ जाता हूँ।
"क्या हुआ?"
"गलत आदमी।"
"गलत आदमी?"
“यह फरीक अब्दुल्ला कुछ महीने पहले ही गुजर गए। उनकी उम्र चौरासी साल थी। हमारा दूसरा आदमी कौन है?”
वह कुछ बटन दबाता है और फिर मुझे दिखाता है। नीली स्क्रीन पर कुछ कोडिंग है, जो मेरी समझ से परे है। वह मेरी तकनीकी अज्ञानता पर आंखें घुमाता है और सिर हिलाता है और मुझसे कहता है-
"एक फरीक स्कूल शिक्षक हैं और एक फरीक सेवानिवृत्त लेखक हैं।"
क्या लेखक सेवानिवृत्त होते हैं?
“रस्किन बॉन्ड की तरह।” वह इशारा करते हुए कहता है।
“क्या रस्किन बॉन्ड सेवानिवृत्त हो गए?”
मुझे कभी-कभी लगता है कि उसने ऐसा किया है।
मैंने इंजन स्टार्ट किया और गैस पेडल दबाते हुए गाड़ी चलाई। "हमें यह तय करना होगा कि हम कौन हैं," मैंने मजाक में कहा।
"आपका क्या मतलब है?"
"हमारी जोड़ी में जॉन वॉटसन और शर्लक होम्स कौन हैं?"
वह उपहास उड़ाते हुए कहता है, "हम तो चाचा चौधरी और साबू जैसे ज्यादा हैं।"
उस टिप्पणी पर हम दोनों एक-दूसरे की ओर देखते हैं और लगभग एक ही समय पर कहते हैं- "चलो इसे इरावन और वर्धन ही रहने देते हैं, है ना?"
हम फरीक अब्दुल्ला के अगले घर के लिए रवाना हुए। वे नॉर्थ कैंपस में रहते हैं और सेवानिवृत्त लेखक के मुखर्जी नगर स्थित आवास तक पहुंचने में हमें एक घंटा लगा।
“वह हिंदू कॉलेज में लेक्चरर थे,” वर्धन ने उस व्यक्ति की फेसबुक प्रोफाइल देखते हुए कहा। “लगता तो अच्छा आदमी है।”
"मैंने अब तक जो कुछ भी देखा है और जो कुछ भी हुआ है, उससे मुझे यही सीख मिली है कि कोई भी अच्छा इंसान नहीं होता।"

क्या आपने कुछ देखा है?
"क्या?"
"उसके कामों में एक पैटर्न है," वर्धन कहते हैं। "अगर आप ध्यान दें तो वह हमेशा पुरुषों को ही मारता है।"
"कुंआ..."
“वह पुरुष-विरोधी है,” वह कहता है। “वह दूसरे लिंग के किसी भी पापी को चुन सकता था, लेकिन उसने ऐसा नहीं किया।”
"आप क्या कहने की कोशिश कर रहे हैं?"
"क्या होगा अगर यम एक महिला हो?"
मुझे पूरा यकीन है कि हमने फोन पर एक आदमी की आवाज सुनी है।
“पता है, जब मैंने यह सिद्धांत सोचा, तो मैंने इसे गूगल पर खोजा। पता चला कि बहुत सी महिलाओं का गला इतना मजबूत होता है कि वे अलग-अलग आवाज़ों में बोल सकती हैं, कर्कश, लड़कियों जैसी, और भी बहुत कुछ। हमने हमेशा यम को धातु जैसी आवाज़ में बोलते सुना है। क्या पता वह यह बात छिपाने की कोशिश कर रहा हो कि वह स्त्री है?”
"एक महिला उन सभी को क्यों मारना चाहेगी?"
“क्या तुम्हें समझ नहीं आ रहा,” वह आह भरते हुए कहता है। “2012 के सामूहिक बलात्कार मामले के बाद, हर कोई कानून अपने हाथ में लेना चाहता है। नारीवाद भी जोर पकड़ रहा है और औरतें न्याय चाहती हैं। क्या पता वो कोई विकृत मानसिकता वाली औरत हो, जो मर्दों से भी न्याय चाहती हो और उन्हें इसलिए मार रही हो ताकि उसे लगे कि वो दूसरी औरतों पर एहसान कर रही है? ज़रा सोचो।”
यह बात तर्कसंगत लगती है।
गलियों से गुज़रते हुए वह रुकता है और आह भरता है। ज़ोरदार बारिश शुरू हो चुकी है और हमें मदर डेयरी के स्टॉल के नीचे बारिश से बचने के लिए शरण लेनी पड़ती है। हम देखते हैं कि कुछ और लोग भी पास ही एक शेड के नीचे बारिश से बचने के लिए खड़े हैं और वर्धन दौड़कर हमारे आदमी के बारे में कुछ सवाल पूछता है। थोड़ी देर बाद वह भीगकर लौटता है और मुझे बताता है कि उसने सुना है कि फरीक अब्दुल्ला बेफिक्री से ज़िंदगी जीता है। वह किसी से मिलता-जुलता या बात नहीं करता और जब भी घर से बाहर निकलता है, तो उससे हमेशा शराब की बदबू आती है।

"क्या उन्होंने बताया कि वह ठीक कहाँ है?" मैंने पूछा क्योंकि उसने जो आईपी एड्रेस खोजा है उसमें केवल इलाके का नाम है, मकान नंबर नहीं।
वर्धन सिर हिलाता है और एक दिशा की ओर इशारा करता है। हम एक गली में रुकते हैं और ऊपर की ओर बढ़ते हुए एक दरवाजे पर दस्तक देते हैं। लोहे की जाली वाले दरवाजे के खुलने का इंतज़ार करते हुए मैं अपनी घड़ी देखता हूँ। पाँच बज चुके हैं। मेरे पास पाँच घंटे और हैं और फिर एक और जान दांव पर लग जाएगी। मैं समझता हूँ कि भले ही मैं दो लोगों को बचाने में कामयाब रहा, मैं यम से बेहतर नहीं था। मुझमें और उसमें बस यही फर्क था कि वह यातना देता और मारता था, जबकि मैंने उन्हें कैद करने और पीटने के लिए चालाकी भरे तरीके अपनाए, जैसे पृथ्वी और कबीर के मामले में।
मैं श्री अब्दुल्ला के प्रकट होने का इंतजार कर रहा हूँ; मुझे उम्मीद है कि वह कोई और मृत व्यक्ति नहीं होंगे। और वह नहीं हैं।
उसने दरवाजा खोला और मैंने देखा कि मेरे सामने एक छोटा कद का आदमी खड़ा है, जिसका पेट निकला हुआ है और उससे शराब और तंबाकू की बदबू आ रही है।
“क्या?” वह जहां खड़ा है वहीं फर्श पर थूकता है।
हम पीछे हट जाते हैं।
मैं उसका थका हुआ चेहरा और शर्मिंदा भाव देखता हूं और जानता हूं कि मैं एक ऐसे व्यक्ति को देख रहा हूं जो अपनी समस्याओं के बोझ तले दबा हुआ है।
“मैं पैंथर्स का सदस्य हूँ।” मैंने उसे अपना कार्ड दिया। उसने कुछ देर तक उसे देखा और फिर फाड़ दिया।
“तुम एक जांचकर्ता हो,” वह मेरा मजाक उड़ाते हुए कहता है। “अंदर आओ।”
मुझे मुझमें उसकी अचानक दिलचस्पी देखकर थोड़ी हैरानी हुई है और इसका कारण फिल्मों और उपन्यासों में हमारी नस्ल का महिमामंडन है, लेकिन मैं दिल से जानती हूं कि हम न तो नायक हैं और न ही मानव जाति के महान रक्षक, बल्कि हम सिर्फ बहुत ही साधारण लोग हैं जो अपना जीवन यापन करने की कोशिश कर रहे हैं।
मुझे उसके घर में शराब और गांजे की तेज़ गंध आ रही थी। मैं सोफे पर लेटी एक महिला को घूर रहा था। महिला ने हमें देखा तक नहीं और सोती रही। फ्लैट में अंधेरा था, भारी पर्दों के हल्के से छेद से बस थोड़ी सी रोशनी अंदर आ रही थी।

"अगर आपकी पत्नी को कोई आपत्ति न हो तो हमें आपसे कुछ सवाल पूछने हैं," मैंने उस महिला की ओर दोबारा देखते हुए कहा, जो मुझे लगता है कि उसकी पत्नी है।
“उसे क्या हुआ है?” वर्धन पूछता है।
“हमने लड़ाई लड़ी।”
क्या वह मर चुकी है? मैं उसे ध्यान से देखती हूँ और उसके चेहरे और मुँह पर हल्के-हल्के नीले निशान देखती हूँ। खून भी है, लेकिन बहुत कम। वह सो नहीं रही थी; वह बेहोश थी।
“क्या आप उसे अक्सर पीटते हैं, श्री अब्दुल्ला?”
इससे तुम्हें क्या लेना-देना है?
मुझे खुद को शांत करना पड़ा। वर्धन समझ गया कि मैं अंदर ही अंदर गुस्से से उबल रहा हूँ और उसने मेरा हाथ पकड़कर धीरे से दबाया ताकि मैं अपने काम पर ध्यान दूं और बूढ़े आदमी को पीट न दूं। मुझे एहसास हुआ कि यम की सूची में लगभग हर दूसरा पापी किसी न किसी तरह से मारपीट करने वाला है। या तो वह वेश्याओं को पीटता है या अपनी पत्नी को।
"आपके आरडब्ल्यूए ने यहां रहने वाले हर व्यक्ति की पृष्ठभूमि की जांच करवाना चाहा था, इसलिए हमारे पास आपसे कुछ ही प्रश्न हैं।"
“अच्छा? ठीक है, आरडब्ल्यूए को खरी-खोटी सुना दो और तुम दोनों निकल जाओ। मुझे लगा था कि तुम लोग अपने मुकदमों के बारे में बताकर मेरी जिंदगी में कुछ मसाला डालोगे, लेकिन तुम यहाँ उबाऊ काम करने आए हो, इसलिए निकल जाओ वरना मैं पुलिस को बुला लूँगा।”
"सोफे पर पिटी हुई महिलाओं को देखना उन्हें पसंद नहीं आएगा।"
वह अपने मुंह में कुछ चबा रहा है; यह एक पान है जिसे उसने व्हिस्की का आनंद लेते समय अपने मुंह के कोने में रखा हुआ था।
“क्या बड़े ही शानदार आदमी हैं आप?” वह फिर मुस्कुराया और मैंने उसके सामने के दांतों पर पान के लाल दाग देखे। “औरतों को पीटने में आपकी क्या दिलचस्पी है? क्या आपको नहीं लगता कि वे इसके लायक हैं?”
"यह पुरुषों को कोड़े मारने से ज्यादा नहीं है।"
“क्या मैं आपका बाथरूम इस्तेमाल कर सकता हूँ?” वर्धन ने अचानक पूछा।

फरीक ने अपनी भौंहें उठाईं, सिर हिलाया और फिर उसे वॉशरूम की ओर इशारा किया। वह हमारी बातचीत में लौट आया और मुझसे बोला- "मैं बुरा आदमी नहीं हूँ, आप जो भी हों, महोदय।"
मैंने दांत पीसते हुए कहा, "जिस व्यक्ति ने किसी महिला को मारा है, वह बुरा आदमी है।"
“उसने दुर्व्यवहार किया, गुरुजी।”
मैंने आंखें घुमाईं। "तुम लेखक थे ना?"
“हां, मैं था।”
"क्या हुआ?"
“मेरी प्रेरणा खत्म हो गई।”
क्या मैंने आपकी कोई किताब पढ़ी है?
“मैं ज्यादातर पत्रिकाओं के लिए लघु कहानियां लिखता था; इससे अच्छी कमाई भी करता था।”
मैंने पूरे घर पर एक नज़र डाली और मुझे समझ आ गया कि वह कितनी अच्छी ज़िंदगी की बात कर रहा था। "क्या आपके नाम पर कोई आपराधिक रिकॉर्ड है, क्या आपके रिकॉर्ड में ऐसा कुछ है?"
मैंने कहा कि मैं बात नहीं करूंगा। मुझे परवाह नहीं कि आरडब्ल्यूए क्या कहता है। यह मेरा घर है, चाहे वे कुछ भी कहें। अगर वे चाहें तो पुलिस को बुला सकते हैं।
“तो मैं आपसे कुछ नहीं पूछूंगा। आप अच्छे इंसान लगते हैं।” तभी वर्धन वापस आ जाता है और मैं गुस्से में मुस्कुराने लगता हूं।
हम अलविदा कहते हैं और चले जाते हैं। जैसे ही वह दरवाज़े ज़ोर से बंद करता है, मैं मन ही मन बहुत सारी गालियाँ देती हूँ। मैं कार में बैठती हूँ और स्टीयरिंग व्हील पर हाथ मारती हूँ। "धिक्कार है उस आदमी पर! बेचारी औरत, पता नहीं उसे उसके साथ क्या झेलना पड़ रहा होगा। मैं पुलिस को बुला रही हूँ।"
“वह हमारा आदमी हो सकता है। आपको वास्तव में उसे चुन लेना चाहिए।”
मैंने ज़ोरावर को फोन किया। एसएचओ ने फोन उठाया और मैंने उन्हें सब कुछ बता दिया। उन्होंने कहा कि मुझे पहले एफआईआर लिखनी होगी।
अरे यार, बस किसी को इसके बारे में पता लगाने के लिए कह दो।
वह आह भरता है। "यह आसान काम नहीं है, इरावान।"

“कुछ तो करो। मैं उसे वहाँ से बाहर निकालना चाहता हूँ।”
“ठीक है, ठीक है,” वह हंसता है। “तुम कब से औरतों के प्रति इतने सुरक्षात्मक हो गए हो? मुझे याद है...” वह रुक जाता है। “उह...मैं पता लगाऊंगा, चिंता मत करो। मैं किसी दूसरे थाने के अधिकारी को बता दूंगा। तुमने किस जगह होने की बात कही थी, मुखर्जी नगर, है ना? मैं फोन करूंगा।” और वह फोन काट देता है।
मैं जानता हूँ कि वह क्या कहना चाहता था। पुरानी यादें मेरे मन में उमड़ आती हैं जब मुझे एहसास होता है कि मैं वैसा आदर्श पति नहीं था जैसा मैं होने का दावा करता था। लोग मुझे ऐसे व्यक्ति के रूप में देखते हैं जो अपनी पत्नी के दुख और बीमारी के समय में भी उसका साथ देता है, लेकिन असल में मैं खुद एक हिंसक पति था।
लेकिन यह बात 2004 की है।
यह 2015 है। मैं बदल गया हूँ।
“मैं अंदर जाकर उसका सामान देख रहा था, और यकीन मानिए, बाहर कुछ भी नहीं मिला। मतलब, वो आदमी पूरी तरह साफ-सुथरा तो नहीं है, लेकिन अपराध की दुनिया से बिल्कुल बाहर है।” वर्धन अपने मोबाइल फोन पर नरक का नक्शा खोलता है और उसे घूरता है। “इसमें किसी महिला को अट्ठाईस नरकों में मारने का कोई जिक्र नहीं है। हां, किसी दूसरे व्यक्ति के प्रति दुर्भावना का इरादा जरूर हो सकता है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि यह वही मामला है।”
"उसने हमें एक ऐसे मोड़ पर ला खड़ा किया है जहाँ से आगे कोई रास्ता नहीं है और मैं उसके अगले शिकार के बारे में झूठ भी नहीं बोल सकती क्योंकि उसे पता चल जाएगा कि मैं झूठ बोल रही हूँ।"
"वह हमारा फरीक अब्दुल्ला नहीं हो सकता," वर्धन कहते हैं। "मेरा मतलब है, बेशक वह गंदा और घिनौना लगता है, लेकिन वह उस आदर्श से बिल्कुल अलग है। बाकी सभी लोग नेक नागरिक थे।"
मैंने आगे कहा, "मुझे लगता है कि हमें तीसरे फरीक अब्दुल्ला पर विचार करना चाहिए।"
“हाँ।” वह सिर हिलाता है।
मैंने दोबारा कार स्टार्ट की। मेरे पास बस कुछ ही घंटे बचे थे और मुझे नहीं पता था कि क्या होगा, लेकिन मुझे पता था कि मुझे किसी न किसी तरह से उसे सज़ा देनी ही

पड़ेगी, वरना वो किसी और को मार सकता है। मैं तीसरे गंतव्य के आधे रास्ते में ही था कि मुझे ज़ोरावर का फोन आया।
"क्या चल रहा है?"
“आपने कहा फारिक अब्दुल्ला मुखर्जी नगर में, ठीक है?”
"हाँ।"
"खैर, थाने के अधिकारी ने अपने सब इंस्पेक्टर को वहां भेजा था और उन्हें बेहोश पत्नी तो मिल गई लेकिन फरीक नहीं मिला।"
"आपका क्या मतलब है?"
“लगता है जबरदस्ती घर में घुसने की कोशिश हुई है। मुझे जानकारी देने के लिए धन्यवाद, दोस्त। इससे शायद विभाग को कुछ सम्मान मिल सके। तुमने उससे कैसे संपर्क किया?”
मुझे तुरंत एहसास हुआ कि जबरन प्रवेश शायद यम द्वारा अपने पापी को पकड़ने का प्रयास हो सकता है। "मेरे मुवक्किल ने उसकी जांच करवाना चाहा था।"
“अच्छा, आपका ग्राहक एक मजाकिया इंसान है। हमारी तरफ से उसे धन्यवाद कहिएगा,” वह हंसते हुए कहता है। “और एक बात और। मुझे नहीं पता कि आप इस पर कैसी प्रतिक्रिया देंगे, लेकिन क्या आप उस आदमी के घर में गए थे?”
"खैर, उन्होंने हमें अनुमति दे दी।"
“और आपने उसकी पत्नी को देखा?”
“हाँ।” मैंने मन ही मन सिर हिलाया और उसे स्पीकर पर डाल दिया ताकि वर्धन भी सुन सके।
“भगवान जी, वह तो एक विकृत मानसिकता वाला व्यक्ति है,” वह गुस्से में बोला, “क्या आपने यह जांचा कि वह सांस ले रही थी या नहीं?”
मैं इसकी जाँच क्यों करूँ?
वह ज़ोर से आह भरता है, मानो जानबूझकर नाटकीय अंदाज़ में कह रहा हो। "यह... उह... सब इंस्पेक्टर को पता चला कि वह बेहोश थी क्योंकि उसे चाकू मारा गया था, संभवतः उसके पति ने ही मारा था। वह अस्पताल में ज़िंदगी और मौत से जूझ रही है। मुझे माफ़ करना, लेकिन आपने हमें सुराग तक पहुँचाने में मदद की, इसके लिए धन्यवाद।"
और धीरे-धीरे मुझे समझ में आया कि उसके एप्रन पर लगा हुआ ग्रीस क्या था।

अध्याय छप्पन

मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या महसूस करूं—एक पति अपनी पत्नी को इतनी बुरी तरह चोट पहुंचाए और फिर हमें भी अंदर बुला ले। वो यह सुनिश्चित करना चाहता था कि किसी को इसके बारे में पता न चले। खून की कोई गंध नहीं थी क्योंकि हवा गांजे के धुएं से प्रदूषित थी। लेकिन एक बात पक्की थी; यही वो आदमी है जिसे यम चाहता था। हमारे जाने के बाद वो अंदर आया, दरवाजे तोड़ दिए और उसे पकड़ लिया। यम शायद अब उसे अपने पास ले जा चुका था और मेरे पास मदद करने के लिए सिर्फ दो घंटे बचे थे।

लेकिन अच्छी बात यह थी कि हम तैयार थे; हम पाप को जानते थे। सब कुछ हमारे सामने था, बस हमें उसे पकड़ने की ज़रूरत थी और हमने पकड़ लिया।

नरक के बारे में विस्तार से चर्चा करने के बाद, वर्धन उंगलियां क्रॉस करके इंतज़ार करता है, जबकि मैं नंबर डायल करके फोन को स्पीकर पर छोड़ देता हूं। फोन थोड़ी देर बजता है, फिर यम की पतली, कर्कश आवाज मेरे कानों में गूंजती है।

“हेलो, श्री राजपूत,” वह कहते हैं, “आप देर से नहीं आए हैं। बहुत दिलचस्प।”

"तुम ऐसा क्यों करते हो?" मैं उससे पूछता हूँ क्योंकि मेरे पास समय है और उसकी मानसिकता के बारे में और अधिक जानने के लिए मैं बातचीत को टालने की आजादी रखता हूँ।

क्या आपको नरक का नाम पता है?

"आप ऐसा क्यों करते हैं?"

मैं ऐसा क्यों करता हूँ?

“इन लोगों को चोट पहुँचाओ। मैं यह नहीं कह रहा कि यह गलत है, क्योंकि जैसे-जैसे तुम मुझे नैतिकता के इस भंवर में घसीटते जा रहे हो, मैं अपने समाज की बुराइयों पर ही सवाल उठा रहा हूँ। लेकिन मैं तुमसे यह पूछता हूँ: अगर तुम खुद को कानून अपने हाथ में लेने वाला और नेक काम करने वाला मानते हो, तो उन्हें पुलिस के हवाले करने के बजाय यातना क्यों देते हो और मार क्यों डालते हो? उन्हें जेल होगी और वे हमेशा के लिए चले जाएँगे।”

“क्या आपको भारतीय इतिहास के बारे में कुछ पता है, श्री राजपूत?”

मुझे काफी कुछ पता है।

“तो फिर आपने समझ ही लिया होगा कि मेरी यातना देने की विधियाँ तो बस अतीत की नकल हैं। कई राजा ऐसे थे जो पवित्र ग्रंथों में वर्णित तरीके से ही नीच लोगों पर ऐसी यातनाएँ देते थे। उनमें से कई तो स्वयं को न्याय का साधन भी समझते थे।”
"क्या आप वही करते हैं जो अतीत कहता है?"
“नहीं, ऐसा नहीं है। मैं तो बस आपसे तर्कसंगत तरीके से बात कर रहा हूँ। मैं ये इसलिए करता हूँ क्योंकि इसमें मज़ा आता है।” और दूसरी तरफ से ज़ोरदार, चीखती हुई हंसी सुनाई देती है, मानो धातु के दो टुकड़े आपस में रगड़े जा रहे हों।
भारत में सत्ताधारी लोग लात खाने के लिए झुके हुए गधे के समान हैं। वे चाहते हैं कि हम उन पर विश्वास करें, लेकिन वे खुद पर विश्वास नहीं करते। वे भ्रष्ट संगठनों की तरह काम करते हैं जिन्हें जनता के मेहनत से कमाए गए धन से चलाया जाता है। हम पापियों और आतंक से भरी दुनिया में जी रहे हैं। आदर्श समाज अब बस एक दूर का सपना बनकर रह गया है। अगर मैं आपकी बात मानकर लोगों को सरकार के हवाले कर दूं, तो वे पल भर में आज़ाद हो जाएंगे। उनकी सज़ा और भी कड़ी और भयावह होनी चाहिए। उन्हें अपने अपराधों के अनुसार ही मरना चाहिए। श्री राजपूत, एक पुरानी कहावत है कि हर अपराध की एक उचित सज़ा होती है। अपराध करो, सज़ा पाओ। मैं वही करता हूं जो मुझे करना है। मैं वही करता हूं जो यह समाज मुझसे चाहता है। क्या आपको सच में लगता है कि वे दक्ष गलगोटिया, रोहन खान, उदय पृथ्वी जैसे लोगों को अपनी दुनिया में चाहते हैं? नहीं, वे एक सुरक्षित जगह चाहते हैं। वे एक ऐसी दुनिया चाहते हैं जहां उनकी अठारह साल की बेटियां रात बारह बजे बिना किसी डर के बाहर जा सकें। वे अपने दस साल के बच्चों को भी सुरक्षित दुनिया में देखना चाहते हैं। अब तो बेटे बिना किसी डर के बाहर जा सकते हैं कि कोई आदमी उन्हें टॉफियां देकर उनका बलात्कार करेगा और उन्हें बेच देगा। हमारा समाज बिखर चुका है और यह लोगों के पापों पर बना है। हर दिन ये पाप और भी बड़े होते जा रहे हैं। और मुझ जैसा एक व्यक्ति बस इसे होने से रोकने की कोशिश कर रहा है।
"तुम खुद को सुपरहीरो समझते हो, है ना?"
“मैं यम हूं,” वह कहता है। “मैं कोई सुपरहीरो नहीं हूं, मैं एक देवता हूं। और मैं प्रकाश का दाता हूं।”
मैंने आह भरी। “यह अंधकुपा है और फरीक़ का गुनाह यह है कि उसने जानबूझकर अपनी पत्नी पर अत्याचार करने की कोशिश की है। अंधकुपा वह नरक है जहाँ ऐसे

लोगों पर पक्षियों, कीड़ों और तरह-तरह के सरीसृपों द्वारा हमला किया जाता है।”
"दिलचस्प।"
"क्या?"
मुझे लगा था कि आप कुछ हटकर सोचेंगे, लेकिन आपने मुझे निराश किया है।
"आपका क्या मतलब है?"
"आप गलत बोल रही हे।"
मैं पलकें झपकाता हूँ। "लेकिन...लेकिन...नहीं, मैं सही हूँ।"
“अयाहपना,” वह सहजता से कहता है, “अयाहपना एक नरक है जहाँ शराबी जाते हैं, वे लोग जो नशे के लिए सब कुछ त्याग देते हैं।”
लेकिन...लेकिन...”
कोई बात नहीं। अगली बार मौका जरूर मिलेगा।
उसने फोन रख दिया। मैंने अयाहपाना के बारे में पढ़ा और मुझे एहसास हुआ कि फरीक अब्दुल्ला पिघले हुए लोहे में भीग जाएगा।

अध्याय सत्तावन

स्वाति कौशिक ने यह सब सुना था। उदय पृथ्वी के समय से ही वह यह सब सुनती आ रही थी। जब वह इरावन से मिली, तो उसे लगा कि कुछ गड़बड़ है, इसलिए उसने इंटरनेट से खरीदा हुआ एक जीएसएम ऑडियो बग उसके मोबाइल फोन पर लगा दिया, जिससे वह इरावन की लोगों से बातचीत सुन सकती थी। यह सब उसके फोन पर आता था। और वह सही थी। इरावन उस आदमी से जुड़ा हुआ था, जो उसे फोन करता था और उस आदमी का नाम था—यम ।

लेकिन वह अधिकारियों के पास नहीं जाना चाहती थी। यम राज की एक बात सही थी — सरकार भ्रष्ट थी।

उसने ठान लिया कि उसे इस आदमी को ढूंढना ही होगा। इरावन एक मूर्ख आदमी था जो खुद को बेवकूफ बनने दे रहा था। वह आसानी से अपने परिवार को सुरक्षित स्थान पर ले जा सकता था और पुलिस को बता सकता था, लेकिन ऐसा लगता था कि उसे मरने की इच्छा थी। उसे शार्क से भरे पानी में तैरना पसंद था।

लेकिन उसका निशाना इरावान नहीं था। उसका निशाना यम था, क्योंकि यह उसके लिए एक शानदार कहानी हो सकती थी—एक ऐसे सतर्कतावादी को ढूंढना जो पापियों पर जघन्य अत्याचार करता हो; वह अपने नाम के साथ टैगलाइन और अपने काम के लिए प्रशंसा प्राप्त करने की कल्पना भी कर सकती थी। यह खबर और प्रिंट मीडिया में हर जगह छाई रहेगी। वह प्रसिद्धि और उस नरक से मुक्ति पाने की कल्पना भी कर सकती थी जिसमें वह वर्तमान में काम कर रही थी।

उन्हें उनके दोस्त अर्जुन का फोन आया, जो द भारत टाइम्स में काम करते थे।

"क्या तुम्हें वो मिल गया जो मैंने मांगा था?"

“न तो तुमने हेलो कहा, न ही हालचाल पूछा?” उसने चिढ़कर कहा। “थोड़ा प्यार से पेश आ सकती हो।”

"क्या आपके पास है?"

दूसरी तरफ सन्नाटा पसरा हुआ था और वह जानती थी कि यह किस तरह का सन्नाटा है—वह उस फाइल को ढूंढने की कोशिश कर रहा था जिसकी उसे तलाश थी। “हाँ, मैंने ढूंढ लिया, और पता चला कि आप सही हैं। रोहन खान, उदय पृथ्वी, फरीक अब्दुल्ला और दक्ष गलगोटिया में एक बात समान है।”

"वह क्या है?"
उन्होंने लगभग आह भरते हुए कहा, "एक अस्पताल। वे अलग-अलग समय पर वहां गए हैं, वहां पंजीकरण फॉर्म भरे हैं।"
"यह महज़ एक संयोग हो सकता है, है ना?"
"ऐसा हो सकता है, लेकिन इन लोगों के बीच सिर्फ यही एक चीज समान है।"
“अस्पताल का नाम क्या है?” उसने अपना फोन निकाला और नोटपैड खोला।
उसने उसे बताया कि यह प्रसाद नगर में स्थित बीएलजी अस्पताल है।
"तुमने कैसे पता लगाया?"
"मैंने उन लोगों को फोन किया जो उन पर शोध कर रहे थे, वे कुछ सहयोगी थे और जैसा कि पता चला, आप अकेले ऐसे व्यक्ति नहीं हैं जो उनकी मृत्यु में रुचि रखते हैं।"
“यह मेरी खबर है, अर्जुन।”
वह हँसा और उसे उसकी हँसी बिल्कुल पसंद नहीं थी। “चिंता मत करो। मैंने उन्हें टाल दिया। मुझसे जानकारी में गड़बड़ी हो गई थी। तुम्हें पता है, मैं तुम्हारे लिए सब कुछ कर सकता हूँ।” फिर से वही भावुकता झलक रही थी। “लगभग सब कुछ,” वह खाँसते हुए अपनी बात पर आ गया। “क्या तुम मेरे साथ डिनर पर चलोगी?”
उसकी मदद करने के पीछे उसका अपना स्वार्थ ज़रूर था, लेकिन उसने उसकी मदद तो की ही। उसे थोड़ी सराहना मिलनी ही चाहिए थी। "सीधी बात पर आओ।"
"आपका क्या मतलब है?"
“अगर तुम मेरे साथ सोना चाहते हो, तो बस मुझे बता दो। मेरे पास डिनर और रोमांटिक होने की सारी औपचारिकताओं में पड़ने का समय नहीं है। अगर तुम मेरे साथ सोना चाहते हो, तो आज रात आ जाओ, लेकिन उसके बाद मैं तुम्हें दोबारा डिनर डेट पर नहीं बुलाना चाहती। यह बस एक बार की बात है।” दूसरी तरफ से एकदम सन्नाटा छा गया। यह उसके लिए काफी मजेदार था, लेकिन वह जानती थी कि अर्जुन बुरा लड़का नहीं था। वह दिखने में अच्छा था, उसकी खुशबू भी अच्छी थी, लेकिन उसकी समस्या यह थी कि वह एक नाकाम इंसान था।
उसने फोन रख दिया और इंटरनेट पर बीएलजी अस्पताल के बारे में जानकारी जुटाते हुए उसका इंतज़ार करने लगी। उसने वहाँ के कर्मचारियों और फैकल्टी को देखकर यह जानने की कोशिश की कि कहीं कुछ गड़बड़ तो नहीं है, लेकिन उसे कुछ भी नहीं मिला। तभी अर्जुन आ गया। वह अपने साथ शराब और पनीर लाया था, जिसे देखकर

उसने बस तेवर चढ़ाए और उसे अपने साथ बिस्तर पर ले गई। बाद में, शराब से उसका दर्द कुछ हद तक कम हो गया।
“यह बहुत बढ़िया था।” वह टेढ़ी हंसी हंसा।
“अह...हम्म,” उसने बिना कॉलर आईडी देखे, वाइब्रेशन मोड पर चल रहे अपने फोन को उठाते हुए कहा। जैसे ही उसने फोन कान से लगाया, उसे दूसरी तरफ से कर्कश हंसी सुनाई दी।
"नमस्कार, श्रीमती वर्मा।"

अध्याय अट्ठावन

स्वाति ने कभी सोचा भी नहीं था कि वह रात में दिल्ली रिज में प्रवेश करेगी, लेकिन यही एकमात्र विकल्प था। उसे जाना ही पड़ा। उसने अर्जुन से बहाना बनाकर उसे जल्दी सोने के लिए कहा क्योंकि उसे सुबह जल्दी एक कार्यक्रम में जाना था, और उसके जाने के बाद उसने कपड़े बदले। उसने एक बैग भी लिया जिसमें उसने टॉर्च, मोबाइल फोन, पेपर स्प्रे और .22 पिस्टल रखी।

फिर, वह अपनी नैनो कार से नॉर्थ कैंपस के दिल्ली रिज की ओर चली गई, इस उम्मीद में कि उसे कुछ मिल जाएगा, शायद कोई और शव। जब वह वहाँ पहुँची, तो उसे एहसास हुआ कि तब तक बैरिकेड पर खड़ी जीपों में बैठे पुलिसकर्मी भी ऊंघ रहे थे। यम ने उसे दिल्ली रिज पर एक निगरानी मीनार ढूंढने के लिए कहा। यह एक और बड़ी खबर बनेगी। वह हमेशा कह सकती थी कि वह वहाँ से गुज़र रही थी, हालाँकि वह जानती थी कि पुलिस को अब तक उस पर शक हो गया होगा और यह भी कि उसे हत्याओं के बारे में सबसे पहले कैसे पता चला।

दिल्ली रिज पर कई रास्ते खुले थे, लेकिन उसने सेंट स्टीफंस कॉलेज के सामने वाला रास्ता चुना। उसके सामने एक पुरानी, जर्जर इमारत, वॉचटावर थी। उसे अपने कॉलेज के दिनों की याद आ गई, जब वह और उसकी सहेलियाँ यहाँ गांजा पीने आती थीं। वह धीरे-धीरे सीढ़ियाँ चढ़ने लगी और आखिरकार ऊपर पहुँच गई। रास्ते में उसे कबूतरों की गुटरगू और उल्लू की आवाजें सुनाई दीं, लेकिन इससे वह डरी नहीं। उसके बैग में रखी पिस्तौल ने उसे आश्वस्त कर दिया।

वहाँ, अंधेरे और गंदे पहरेदार बुर्ज की रेतीली दीवारों में से एक से टिककर, ज़मीन पर एक शव पड़ा था जिसका चेहरा पिघल चुका था। मांस जल चुका था और केवल हड्डियाँ ही बची थीं। उसे उल्टी आने जैसा महसूस हुआ, लेकिन उसने किसी तरह उल्टी के दौरे को काबू में किया। शांत होने पर उसने पुलिस को फोन करने के लिए अपना फोन निकाला, लेकिन जैसे ही वह मुड़ी, उसे अंधेरे में अपने पीछे एक आकृति दिखाई दी।

“हैलो, श्रीमती वर्मा,” सींग वाले आदमी ने कहा।

अध्याय उनसठ

स्वाति ने जो देखा, उसे देखकर वह लगभग लड़खड़ाकर गिर पड़ी। उसने किसी तरह अपने हाथ में रिवाल्वर निकाली और खुद को संभाला। उसने जली हुई चमड़ी और गहरी लाल आँखों वाले उस आदमी पर रिवाल्वर तान दी। वह कमर से ऊपर नंगा था, उसकी छाती और बाँहें गठीली थीं, लेकिन उसे बॉडीबिल्डर नहीं कहा जा सकता था। उसके एक हाथ में फंदा था और उसने हिरण के सींगों से बना खोपड़ी का मुकुट पहन रखा था। पहाड़ी की अंधेरी छाया में उसकी मौजूदगी ने एक भयानक और डरावनी जीवंतता पैदा कर दी थी।

“तुम सचमुच यम राज बन गए हो,” उसने हाथ में बंदूक लिए उस पर ताना मारा। “ये तो पागलपन है, या यूँ कहूँ, नया प्रयोग है। तुम्हें पता है ना कि यम राज मोटे थे? मतलब बहुत मोटे।” वह घबराई हुई थी और जानती थी कि घबराहट में वह बड़बड़ाने लगती है।

“मैं अपनी छवि खराब नहीं करना चाहता था,” यम ा ने कहा। लाल आँखों और चमकते सफेद दाँतों के अलावा उसका चेहरा दिखाई नहीं दे रहा था।

उन्होंने कहा, "तुम जल्दी आ गए हो।"

"आपका क्या मतलब है?"

मुझे लगा था कि तुम सुबह आओगे, लेकिन तुम इस समय आए और अब हम यहां एक साथ खड़े हैं।

"क्या मतलब, आपको यहां मुझसे मिलने की उम्मीद नहीं थी?"

“मैं ज्यादा लोगों से नहीं मिलता। मुझे अकेले रहना पसंद है। बहुत समय हो गया है जब मैंने किसी से बात की है, खासकर ऐसे व्यक्ति से जिसे मैं बाद में जान से नहीं मारूंगा।”

उसे वहीं पर यह आश्वासन मिल गया। उसे थोड़ा बेहतर महसूस हुआ और उसने हिम्मत जुटाकर रिवॉल्वर नीचे कर ली, लेकिन साथ ही उसे किसी भी अचानक हमले के लिए नज़र में भी रखा। लेकिन किसी कारणवश, उसे उसके साथ सुरक्षित महसूस हो रहा था।

“तुमने उसके साथ क्या किया?”

यम हंस पड़ी। उसकी हंसी गहरी और गहरी थी, और उसे एहसास हुआ कि अगर वह अपना यह हास्यास्पद, बेहद डरावना पहनावा उतार दे तो वह एक सुंदर और सुरीली

आवाज वाला आदमी हो सकता है।
“उसे शराब बहुत पसंद थी। मैंने उसे लोहा दिया।”
तुमने उसका चेहरा जला दिया।
वह इसके लायक ही था।
"तो, तुम उन्हीं को मारते हो जो मरने के लायक हैं? इसका मतलब है कि तुम भी मरने के लायक हो क्योंकि तुम लोगों को मार रहे हो।"
वह रुका। “मैं बुरा आदमी नहीं हूँ, आपको यह समझना होगा। मैं बस एक ऐसा व्यक्ति हूँ जो अच्छे कर्म करने का प्रयास करता है।”
“अगर तुम्हें लगता है कि इससे लड़कियाँ प्रभावित होंगी, तो यकीन मानो, तुम्हें लड़कियों के स्वभाव का ज़रा भी अंदाज़ा नहीं है,” उसने हमेशा की तरह मज़ाक करते हुए कहा, जब वह किसी बात को लेकर परेशान होती थी। “तुमने ये कपड़े कहाँ से लिए हैं?”
"मैंने इसे खुद बनाया है।"
क्या यह किसी इंसान की खोपड़ी है?
उन्होंने कहा, "एक प्रतिकृति।"
"तो, आपका मतलब है कि आप आनंद के लिए हत्या नहीं करते?"
उसे इतनी ज़ोर से खांसी आई कि उसने ज़मीन पर खून थूक दिया। क्या वह बीमार था?
उसने आह भरी और कहा, "मेरी सेहत ठीक नहीं है।"
“क्यों? फेफड़ों की समस्या है क्या?”
“हां,” उसने कहा। “और तुम्हें लगा कि मैं मजे के लिए हत्या करता हूँ?”
"हाँ, ऐसा ही लगता है। मेरा मतलब है, तुम अपनी यातना देने की विधियों से, और अपने पीड़ितों की आत्माओं में भय पैदा करने की कोशिश करते हो, बिना उन्हें यह बताए कि तुम ही यम हो।"
“ओह,” उसने इशारे से कहा। “क्या आपने श्री राजपूत के साथ मेरी बातचीत सुनी?”
“बिल्कुल, मैंने किया।” उस पल उसे जीत का एहसास हुआ। “और मैं आपसे सहमत हूँ। इस समाज को बदलाव की ज़रूरत है।”
“और फिर आप मुझसे पूछते हैं, मैंने इतने सारे अन्य पत्रकारों में से आपको ही क्यों चुना?” अंधेरे में उनके चेहरे पर एक हल्की, रहस्यम यी मुस्कान दिखाई दी।

“आप बदलाव लाना चाहते हैं, लेकिन आप सिर्फ एक प्रतीक बनकर नहीं रहना चाहते। अगर आप चाहते हैं कि यह समाज बदले, तो उन्हें एक उम्मीद और आप जैसे किसी ऐसे व्यक्ति की ज़रूरत है जिसे वे अपना आदर्श मान सकें। क्या आपको ऐसा नहीं लगता?”
उसने सिर हिलाया। “वे तैयार नहीं हैं। तुम्हारी तरह, वे सब सोचते हैं कि मैं एक हत्यारा हूँ जबकि मैं नहीं हूँ।”
“आपको एक मिसाल बनना होगा। ऐसे लोग जरूर होंगे जो आपका साथ देंगे और आपको अपना आदर्श मानेंगे। कम से कम मैं तो मानूंगा ही।”
"तुम मुझ पर विश्वास करो?"
“मेरा मानना है कि इन पुरुषों को मरना ही चाहिए था।” उसने सिर हिलाया। “और जो पुरुष महिलाओं का बलात्कार करते हैं, या उनकी हत्या करते हैं—वे सभी मरने के लायक हैं।”
“मुझे तुम्हारा जज्बा पसंद है। लेकिन मैं बलात्कारियों का पीछा करने वाला हीरो नहीं हूँ।” वह हिलने लगा।
"लेकिन आप हो सकते हैं, क्या आपको नहीं लगता?"
उस कथन को सुनकर वह स्तब्ध रह गया। उसकी झुलसी हुई काली त्वचा स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी।
"अगर आप सच में हीरो बनना चाहते हैं तो आप बन सकते हैं।"
"कुछ समय बाद, आप कहेंगे कि मुझे एक लबादा और अंडरवियर की जरूरत है।"
“मैं तुम्हारी कहानी लिखना चाहती हूँ,” उसने आखिरकार मुद्दे पर आते हुए कहा। “मैं चाहती हूँ कि लोग तुम्हें जानें, बजाय इसके कि तुम अंधेरे में छिपे रहो। तुम शायद इन लोगों को, इन बदमाशों को, जिन्हें तुम यातना देते हो और मार डालते हो, रोक पाओगे, लेकिन जो मैं तुम्हें दे रही हूँ, उससे तुम इस शहर के हर अपराधी के दिल में डर पैदा कर पाओगे, ताकि अपराध करने से पहले वे यह देखें कि यम वहाँ है या नहीं। उन्हें डरना ज़रूरी है और मैं तुम्हारे नाम का इस्तेमाल करके उनमें डर पैदा कर सकती हूँ।”
वह अब भी स्थिर था। फिर वह थोड़ा हिला, और अंत में उसका चेहरा दिखाई दिया जो काला पड़ चुका था। उसके हाव-भाव और चेहरे के भाव समझना मुश्किल था, लेकिन

वह समझना नहीं चाहती थी। उसे कहानी चाहिए थी, और वह उसे किसी भी तरह हासिल करके रहेगी।
"क्या आप मेरा नाम सार्वजनिक करना चाहते हैं?"
समाज के लिए।
वह सीधा खड़ा हो गया और उसके सामने डट गया। एक पल के लिए उसे लगा कि वह उस पर हमला कर सकता है, लेकिन फिर उसने सिर हिलाया और कहा-
"आप क्या जानना चाहते हैं?"

अध्याय साठ

मुझे दो दिन बाद इंटरव्यू के बारे में पता चला। मैं फरीक अब्दुल्ला के निधन का शोक मना रहा था, लेकिन उनकी मृत्यु से मुझे उतना दुख नहीं हुआ था। उनकी पत्नी की भी मृत्यु हो गई और इससे मुझे और भी गुस्सा आया। उनका चेहरा पूरी तरह जला हुआ और क्षत-विक्षत था, उनका मुंह और जीभ गर्म लोहे से गल चुके थे। मुझे नहीं लगता कि उन्हें इतनी भयानक मौत मिलनी चाहिए थी, लेकिन उन्होंने जो किया था उसके लिए उन्हें मौत तो मिलनी ही चाहिए थी। उनकी कहानी में और भी बहुत कुछ था। पता चला कि उन्होंने पांच बार शादी की थी। मुसलमान होने के कारण वे ऐसा कर पाए और उन्होंने अपनी सभी पत्नियों को मारकर दफना दिया था। उन्होंने अपने सारे कबूलनामे एक डायरी में लिखे थे, जिससे पता चला कि यह एकांतप्रिय लेखक असल में महिलाओं का सीरियल किलर था। किसी को भी उनके बारे में कुछ पता नहीं चला क्योंकि ज्यादातर लड़कियां गरीब और अनाथ थीं, इसलिए किसी ने एफआईआर भी दर्ज नहीं कराई। उनकी मृत्यु के बारे में एक अजीब बात यह थी कि शव एक बार फिर बिना गुर्दे के मिला था, जिससे हत्याओं में साइको यादव की संलिप्तता का संकेत मिलता है। जब वर्धन ने मुझे वह लेख दिखाया तो मैं बुरी तरह हिल गया।

जिस स्वाति कौशिक को मैं जानती थी, वो उसे कैसे ढूंढ पाई? क्या रहस्यम य और सर्वशक्तिमान यम ने उसे ऐसा करने के लिए उकसाया था? क्या अब वो अपनी पहचान उजागर करना चाहता था?

मुझे पूरा यकीन था कि स्वाति से पुलिस उस व्यक्ति की असली पहचान के बारे में पूछताछ कर रही होगी, जो भगवान के वेश में इन भयानक हत्याओं को अंजाम दे रहा था। क्या हम उसे सीरियल किलर, मनोरोगी या हीरो कहें? यही लेख का मुख्य विषय था।

"पता चला कि इस इंटरव्यू को उनके चैनल ने अस्वीकार कर दिया था, इसलिए उन्होंने इसे इंटरनेट पर पोस्ट कर दिया क्योंकि इंटरनेट पर सब कुछ स्वीकार्य है," वर्धन ने अपने चेहरे पर मासूम सी मुस्कान के साथ मुझे बताया।

“प्रतिक्रिया क्या है?”

वह व्यंग्य करते हुए कहते हैं, “मंत्री पागल हो रहे हैं। गृह मंत्रालय चाहता है कि यह मामला जल्द से जल्द सुलझ जाए। मुझे लगता है कि अब सीबीआई इसमें शामिल होने

वाली है। साथ ही, दिल्ली पुलिस ने एसीपी सूर्या को मुख्य जांच अधिकारी बनाकर तलाशी अभियान शुरू कर दिया है। हालात बेकाबू होते जा रहे हैं। मुझे लगता है कि मुसीबत में पड़ने से पहले पुलिस से संपर्क करने का यही सही समय है, क्योंकि हत्याओं के बारे में जानते हुए भी उनकी सूचना न देना भी एक अपराध है।"
"नहीं, अभी नहीं। वह चाहता था कि ऐसा हो। इसीलिए उसने ऐसा किया। उसने लोकप्रियता के लिए ऐसा नहीं किया। उसने उम्मीद जगाने के लिए ऐसा किया।"
"तुम उसके दिमाग में कुछ ज्यादा ही घुसने की कोशिश कर रहे हो, है ना?" वर्धन कहते हैं। "अब मुझे चिंता होने लगी है। मुझे लगा था कि मैं यहाँ कॉमिक बुक का दीवाना हूँ।"
लोग इस पर कैसी प्रतिक्रिया दे रहे हैं?
"मैंने इसे पहले ही खोल रखा था।" वह अपनी पैंट से अपना फोन निकालता है और मुझे एक यूट्यूब क्लिप दिखाता है। "स्वाति ने जब बताया कि उसने पौराणिक यम के समान पोशाक पहनी थी, तो लोग थोड़े पागल हो गए हैं।" फिर वह मुझे वह धुंधला वीडियो दिखाता है जिसमें मैं लोगों को अंधेरे में इंडिया गेट की ओर मार्च करते हुए देखता हूँ, जिनके हाथों में तख्तियाँ हैं जिन पर लिखा है- हम यम का समर्थन करते हैं। हालांकि, चिंताजनक बात यह थी कि वे सभी काले कपड़े पहने हुए थे, अपने चेहरे पर काला रंग लगाए हुए थे और नकली कागज के सींगों वाले धातु के हेलमेट पहने हुए थे।
"प्रिय भगवान।"
"वह हीरो हैं, चाचा," वर्धन कहते हैं। "या कम से कम लोग उन्हें हीरो ही समझते हैं।"
"वो यही तो चाहता था, है ना?"
"अपराधियों के बारे में क्या?"
"उनमें से कई लोग मौत के फंदे से पकड़े जाने से पहले ही आत्मसमर्पण कर रहे हैं। वे इस बात से ही डरे हुए हैं कि कोई व्यक्ति इतने अजीब कपड़े पहनकर दिल्ली की सड़कों पर घूम रहा है। मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं किसी कॉमिक बुक की दुनिया में जी रहा हूँ," वह हंसते हुए कहते हैं।
"इससे तथ्य नहीं बदलता।"
"क्या? वह हमें बेवकूफ बना रहा है। वह पूरी दुनिया को बेवकूफ बना रहा है और उन्हें यह विश्वास दिला रहा है कि वह एक हीरो है।"
"क्या आपको लगता है कि वह नहीं है?"

"मुझे अब भी विश्वास है कि वह एक हत्यारा है और संभवतः मानसिक रूप से अस्थिर है।"
"तो फिर हम जाकर पुलिस से संपर्क क्यों नहीं करते?"
“और हम क्या कहेंगे? कि हमने उससे बात की थी और हमें सब कुछ पता था, लेकिन हमने दो लोगों, दक्ष गलगोटिया और रोहन खान को मरने दिया क्योंकि हमें लगा कि ये सब मज़ाक था। नहीं।” मैं सिर हिलाते हुए उसे फोन वापस दे देता हूँ। “हमें उसे खुद ढूंढना होगा।”
आप ऐसा करने की योजना कैसे बना रहे हैं?
“हम अगली बार जब वह अपने शिकार को पकड़ने की कोशिश करेगा, तब उसका इंतजार करेंगे। हम इंतजार करेंगे। और फिर जब वह उन्हें पकड़ लेगा, तब हम हमला करेंगे।”

अध्याय इकसठ

स्वाति कौशिक का सब्र टूट चुका था। लेख प्रकाशित होने और वायरल होने के बाद, उन्हें कई बार पुलिस स्टेशन बुलाया गया और अनगिनत बयान देने पड़े। उनका चेहरा हर अखबार, पत्रिका और न्यूज़ चैनल पर छाया हुआ था। उनके बॉस ने उनकी बात न मानने के लिए उन्हें निलंबन पत्र थमा दिया था, लेकिन उन्हें कोई परवाह नहीं थी क्योंकि लगभग सभी मीडिया संस्थान उन्हें लेने के लिए तैयार थे। और यही तो वह चाहती थीं, है ना? उन्होंने खुद को यही कहकर तसल्ली दी, लेकिन यम के अतीत को जानने की जिज्ञासा उनके मन में अभी भी थी। साक्षात्कार के दौरान, उन्हें यम के बारे में उनके मकसद और हत्या के कारणों के अलावा कुछ भी पता नहीं चला था। यह बात उन्हें पहले ही स्पष्ट हो चुकी थी और उन्होंने औपचारिक रूप से यही संदेश दुनिया को दे दिया था।

अतीत महत्वपूर्ण था और उसे जानना आवश्यक था। यम ने ऐसा क्यों किया? उस मुखौटे के पीछे एक इंसान है। और उस इंसान के पीछे एक कारण है। वह हर हाल में इन दोनों का पता लगाना चाहती थी। यही जीवन भर की कहानी होगी—यम ऐसा क्यों है? लोग अब उसका सम्मान करते हैं। उसकी महिमा में मोमबत्ती जुलूस निकाले जा रहे हैं। क्या वह इस बारे में कुछ सोच रहा है? शायद नहीं। अगर वह लगातार कोशिश न करती, तो उसे लोगों को बताने की परवाह भी नहीं होती। लेकिन वह यम जैसे सतर्कतावादियों को चाहती थी, जो आज़ादी से घूमते और उन लोगों में डर पैदा करते जिनसे वह डरती थी। उसके पास कोई कारण नहीं था। वह ऐसा इसलिए कर रही थी क्योंकि उसे इस पर विश्वास था। और यही बात उसे डरा रही थी। क्या उसकी नैतिकता इतनी विकृत थी?

आखिरकार उसने वह दरवाजा खोला जो काफी देर से दस्तक दे रहा था और खुद को मूंछों वाले और तोंद निकले हुए एसीपी सूर्या को घूरते हुए पाया, जो च्युइंग गम चबाते हुए उसे घूर रहा था।

"आप क्या चाहते हैं?"

मैं कुछ सवाल पूछना चाहता हूँ।

वह अपने दो कांस्टेबलों के साथ था। उसने कोई विरोध नहीं किया और उसे अंदर आने दिया। वह आराम से सोफे पर बैठ गया जबकि बाकी लोग काउच पर बैठ गए।

“तुम्हें क्या चाहिए?” उसने खड़े-खड़े ही दोबारा पूछा।
आप बैठ सकती हैं, महोदया।
"नहीं, मुझे लगता है कि जब मैंने कहा था कि सभी प्रश्न मेरे वकील के माध्यम से पूछे जाने चाहिए, तो यह बात स्पष्ट थी।"
“हम तो बस पुरानी बातों को दोहरा रहे हैं, महोदया।” उसने शरारती अंदाज़ में च्युइंग गम चबाते हुए कहा। “हम बस आपके प्रिय मित्र के बारे में कुछ बातें जानना चाहते हैं।”
वह मेरा दोस्त नहीं है।
"वह आपको विशेष जानकारी देता है।"
“अच्छा...आप क्या कहना चाह रहे हैं?”
"क्या उसने आपको शवों के बारे में बताया?"
"हां, वह मुझे फोन करता था।"
"और आपने यह बात पुलिस को क्यों नहीं बताई?"
“क्योंकि मैं पूरी तरह से आश्वस्त होना चाहती थी। मुझे लगा कि यह कोई मज़ाक या संयोग था,” उसने झूठ बोला। “मुझे लगा कि मैंने रिपोर्ट में यह बात स्पष्ट कर दी थी।”
“जी हां, आपने किया। हमें बस इस बात की बहुत चिंता है कि आपके इस छोटे से साक्षात्कार ने राजनीतिक जगत में क्या असर डाला है। आप समझ रही हैं ना, उन्हें यह पागलपन पसंद नहीं आ रहा है।”
मुझे परवाह नहीं है। यह कहानी सामने आनी ही थी।
“बिल्कुल, बिल्कुल। आप पत्रकार खुद को इस देश का सबसे बड़ा अधिकारी समझते हैं और हम सब यहाँ बाबा जी के ताने हैं, है ना?”
आप यहां क्यों आए हैं?
मैं बस यह जानना चाहता था कि क्या आपके पास उस व्यक्ति के बारे में कोई जानकारी है जो खुद को भगवान होने का दावा करता है?
मैंने अधिकारियों को बताया कि वह अंधेरे में था और भेस बदले हुए था।
“काली चमड़ी में?” उसने तिरस्कारपूर्ण स्वभाव दर्शाते हुए चेहरे से पूछा।
"हाँ।"
"और आपने जो नंबर दिया है वह ब्लॉक है, और आपको यह पता है?"
“वह मुझे फोन करता है, मैं नहीं। हर बार अलग नंबर होता है।”

"आप विधवा हैं, क्या मैं सही कह रहा हूँ?"
“इसका इससे क्या लेना-देना है?” उसने गुस्से से जवाब दिया।
नहीं, बस एक सवाल था।
“आप बड़ी मुसीबत में हैं, एसीपी। मुझसे अपमानजनक सवाल पूछने के लिए मैं आप पर मुकदमा कर सकता हूँ।”
“मैडम, यहाँ दोषी सिर्फ आप हैं, जो एक अपराधी और हत्यारे का समर्थन कर रही हैं। दिल्ली में इस समय दो सीरियल किलर आज़ाद घूम रहे हैं।”
उसने तेवर चढ़ाए।
“ठीक है फिर,” उसने टेढ़ी मुस्कान के साथ आह भरी। “क्या आप मुझसे झूठ बोल रही हैं, सुश्री कौशिक?”
उसने अपनी आंखें चौड़ी कर लीं और घबराहट को शांत करने के लिए हांफते हुए सांस ली।
"क्या आप कृपया बाहर जा सकते हैं?"
वह कुछ देर तक चबाता रहा, और कुछ सवाल पूछना चाहता था, लेकिन स्वाति ने उसे ऐसा करने नहीं दिया, इसलिए वह कांस्टेबलों के साथ चला गया। स्वाति जानती थी कि वह यहाँ सिर्फ़ मौज-मस्ती करने आया था। वह इलाके में कुछ सवाल पूछने आया होगा और सोचा होगा कि यहाँ आना अच्छा रहेगा। उसे ऐसे मर्द बिल्कुल पसंद नहीं थे।
जैसे ही वह शांत हुई, उसने अपने हैंडबैग में रोज़मर्रा की चीज़ें और नोट्स लिखने के लिए एक पीला पैड पैक किया। अगर वह परेशान करने वाला एसीपी सूर्या उसकी पीठ पर न चढ़ रहा होता, तो वह कुछ मिनट पहले ही निकल चुकी होती। उसने दरवाज़ा बंद किया और बीएलजी अस्पताल के लिए निकल पड़ी।

अध्याय बासठ

यम नीचे अपनी गुफा में गए। वे अपने विश्राम स्थल से गुज़रे और धीरे-धीरे अपने विश्राम स्थल में प्रवेश किया। उन्होंने गुफा की दीवारों को देखा और सोचा कि इस स्थान को बनाने में उन्हें कितना समय लगा होगा। उन्होंने इसे शुरू से ही अकेले बनाया था। गुफा से पानी रिस रहा था और पथरीले फर्श सूखे खून से सने हुए थे। उन्होंने दीवारों को तेल के रंगों से रंगा था और भगवत गीता के उन चित्रों से बनी आकृतियाँ चिपकाई थीं जिनमें यातनाओं का वर्णन था। प्रत्येक दीवार पर यातना भोगते हुए व्यक्ति की आकृति को एक अनोखे और रचनात्मक तरीके से स्थापित किया गया था।

उसने समाचार देखा था और अपने बारे में छपा लेख भी पढ़ा था। उसे यह पसंद नहीं आया। उसे एक सुपरहीरो और एक बेहतर समाज के लिए आशा और सपने रखने वाले व्यक्ति के रूप में देखा जा रहा था। वह वास्तव में एक बेहतर समाज देखना चाहता था, लेकिन उसका उद्देश्य नरक के योग्य लोगों को नुकसान पहुंचाना और उन्हें शास्त्रों में वर्णित तरीके से दंडित करना था। और वह तब तक ऐसा करता रहेगा जब तक वह थक न जाए। वह खुद को सतर्कतावादी नहीं कहता था और उसे अच्छा लगा कि आयुक्त ने अपने भाषण में उसे एक पागल व्यक्ति के रूप में पेश किया था। वह ऐसा नहीं था। वह मनुष्यों के बीच एक देवता था। वह यह जानता था। सही न्याय करने के लिए वही एकमात्र योग्य व्यक्ति था। उसे स्वाति पसंद थी। उसके पास शक्ति और दृढ़ इच्छाशक्ति थी, लेकिन उसने एक गलत व्यक्ति में नायक देखा, यह जाने बिना कि उसने उससे झूठ बोला था।

उसे यह अच्छा लगता था। उसे अच्छा लगता था जब वे लोग उसकी यातनाएँ सहते थे। हर चीख एक खास लय में गूंजती थी जो उसकी नसों को शांत करने और दिमाग को सुकून देने में मदद करती थी।

गुफा के उस हिस्से में, जहाँ वह अक्सर लोगों को फाँसी देता था, उसने अब एक कृत्रिम पेड़ लगवा लिया था। पेड़ छोटा था, लेकिन चौड़ा था। उस पर पत्तियाँ नहीं थीं, केवल शाखाएँ थीं और तने में कांटे और नुकीले शंकु के आकार के नुकीले हिस्से थे, ताकि अगर किसी व्यक्ति को तने से सटाकर बलि दी जाए, तो वह तुरंत न मरे, बल्कि असहनीय पीड़ा से तड़पता रहे। यह नया उपकरण उसने बृजेश द्वारा उपलब्ध कराए

गए इंजीनियर से बनवाया था। इसका इस्तेमाल जल्द ही किया जाएगा और किसी व्यक्ति को पेड़ से सटाकर रोते, सिसकते और मरने की भीख माँगते देखना मज़ेदार होगा। वह पेड़ को देखते हुए मुस्कुराता है। इंजीनियर ने कमाल का काम किया था। लेकिन अब, उसके अगले शिकार का समय आ गया था।

अध्याय तिरसठ

स्वाति बीएलजी अस्पताल के मुख्य चिकित्सक के सामने बैठी थी। वह चश्मा पहने और हल्की दाढ़ी वाले व्यक्ति थे।

“आप वही महिला हैं जिन्होंने उस व्यक्ति का साक्षात्कार लिया था? आप क्या जानना चाहती हैं, महोदया?” उसने शरारती मुस्कान के साथ पूछा।

“मैं उन हत्याओं पर शोध कर रहा था जिनके बारे में आपने जरूर सुना होगा। रिज हत्याकांड, रोहन खान हत्याकांड...”

"हां, हां, यह अपराध उसी व्यक्ति ने किया है जो खुद को यम राज होने का दावा करता है।"

"बिल्कुल।"

“जब मैंने यह सुना तो मुझे हंसी आई। क्या इसमें कुछ सच है? क्या आप उस आदमी से मिले हैं?”

"वास्तविक रूप में।"

वह कैसा था?

उसने आह भरी। "वह बहुत उत्साहित था।"

उसके पास उसके बारे में कहने के लिए और कुछ नहीं था, न ही उसे अलग तरीके से बताने के लिए। "खैर, मुद्दे पर वापस आते हैं। मैंने पीड़ित के निजी विवरण देखे और पता चला कि वह कई बार अस्पताल में थेरेपी के लिए गया है। क्या आपने थेरेपी करवाई थी?"

“यम के शिकार?” उसने भौंहें चढ़ाते हुए कहा। “रोहन खान, दक्ष गलगोटिया...”

“हाँ।”

"वास्तव में नहीं। ये कार्य 2000 के दशक की शुरुआत में पहले मनोचिकित्सक द्वारा किए गए थे।"

“ओह,” उसने अपने साथ लाए पीले पैड पर लिखते हुए कहा। “क्या मैं नाम जान सकती हूँ?”

“हिश्मा राशिद,” उसने उसका कश्मीरी नाम बताते हुए कहा। यह नाम उसे जाना-पहचाना सा लगा, मानो वह उसे जानती हो।

क्या आप उनसे मिले हैं?

"उसके जाने से ठीक पहले, हमारी थोड़ी बातचीत हुई थी, लेकिन वह बहुत संक्षिप्त थी।"
"वह कैसी थी?"
"क्या आप सुश्री राशिद का मनोचिकित्सीय मूल्यांकन करवाना चाहते हैं?"
"आप कह सकते हैं।"
वह टूटी हुई लग रही थी। इतनी टूटी हुई कि वह दूसरे टूटे हुए लोगों को समझ सके।
उन्होंने कितने मरीजों का इलाज किया?
“जब हमने बात की, तो उसने बताया कि वहाँ सौ से ज़्यादा मरीज़ थे, और उनमें से कुछ उसे अधिकारियों द्वारा सौंपे गए थे। यह अस्पताल एक पागलखाने जैसा है जहाँ मनोरोग विभाग इस शहर के सबसे ज़्यादा मानसिक रूप से बीमार लोगों का इलाज करता है। उसे सबसे बुरे मरीज़ मिले। अब, मेरे आने के बाद से यहाँ थोड़ी शांति है। जिन मरीज़ों का उसने इलाज किया था, वे उसके निजी मरीज़ थे, वे मरीज़ जो विशेष रूप से अपॉइंटमेंट लेकर इलाज करवाते हैं।”
क्या आप बता सकते हैं कि वह इस समय कहां है?
उसने सिर हिलाया। “मुझे ऐसा नहीं लगता। मैंने तुम्हें बताया था, मैं उसे सिर्फ चेहरे से और थोड़ी बातचीत से जानता था। वह कोई बहुत दिलचस्प शख्सियत नहीं थी, बल्कि कहूँ तो असामाजिक थी, लेकिन मैं उसे दोष नहीं देता। अब, जब मैं इन मरीजों को देखता हूँ और उनके द्वारा किए गए भयानक अपराधों को देखता हूँ, तो मैं समझ सकता हूँ कि वह ऐसी क्यों बन गई।”
लेकिन क्या गोपनीयता खंड में ऐसा कोई नियम नहीं है कि यदि मरीज ने कुछ हिंसक किया है, तो मनोचिकित्सक को अधिकारियों को सूचित करने का अधिकार है?
"ऐसा होता है, लेकिन यह मनोचिकित्सक पर निर्भर करता है।"
उन्होंने सीधे तौर पर तो नहीं कहा, लेकिन उनका मतलब स्पष्ट था। हिश्मा राशिद ने जो कुछ भी साझा किया गया था, उसे न बताने का फैसला किया। क्या हिश्मा का यम से कोई संबंध था?
“क्या वह जीवित है?” उसने पूछा।
मुझे तो यह भी नहीं पता कि वह कहाँ है।
उसके मन में एक सिद्धांत था। क्या होगा अगर यम , हिश्मा के पति थे? क्या होगा अगर हिश्मा के साथ कोई ऐसी दुर्भाग्यपूर्ण घटना घटी हो जिसके कारण कोई यम बन गया

हो?
लेकिन फिर, यह बात कुछ ज़्यादा ही खींची जा रही थी। क्या पता इस अस्पताल से जुड़े ये सारे पीड़ित महज़ एक बड़ा संयोग हों? हो सकता है। और यह भी हो सकता है कि यम केवल अपनी सनक में ही ये सब कर रहा हो, तर्क से नहीं।
“क्या उनका कोई मरीज अभी भी अस्पताल में है?” उसने पूछा, “जिससे मैं सवाल पूछ सकूं।”
उसने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। वह इस बात से बिल्कुल भी उत्साहित नहीं था। "आप क्या कर रही हैं, सुश्री कौशिक?" उसने पूछा।
“मैं बस जवाब ढूंढ रही हूँ,” उसने यथासंभव ईमानदारी से जवाब दिया। “तो क्या आप मुझे ले जाएंगे?”
तपस्व गांधी ने सिर हिलाया।

अध्याय चौंसठ

स्वाति को गंजे तपस्व बिल्कुल पसंद नहीं थे। वह बेशक लंबे और आकर्षक थे, लेकिन उनका स्वभाव स्वाति के लिए कुछ ज्यादा ही गंभीर था। उनके चेहरे पर भावहीनता थी और उनकी नाक बहुत लंबी थी।

"क्या आप कुछ समय से इस अस्पताल का हिस्सा हैं?"

"बीएलजी को एक सामान्य अस्पताल और एक पुनर्वास केंद्र में विभाजित किया गया है, जिसमें दिल्ली का सबसे बड़ा मनोरोग वार्ड है।"

तो, यह आधा पागलखाना है?

“मुझे नहीं लगता कि यह मुहावरा यहाँ ज़्यादा पसंद किया जाता है।” चलते हुए उन्होंने अपने कंधे सीधे किए और अलग-अलग दरवाज़े खोलते हुए कहा, “लेकिन नहीं, मैं सिर्फ़ यहीं काम नहीं करता। राजिंदर नगर में मेरा एक निजी क्लिनिक भी है।”

स्वाति उसके पीछे-पीछे चली और सफेद कोट पहने पुरुषों और महिलाओं को इधर-उधर भागते हुए देखा।

“ये लोग—इन्हें सबसे ज़्यादा किस चीज़ से तकलीफ़ होती है?” उसने सफ़ेद, खाली कमरों में घूरकर देखा जहाँ उसे उनमें से कुछ लोग बैठे हुए, टीवी देखते हुए या किताब पढ़ते हुए नज़र आए। उन सबकी आँखें बेजान थीं।

“स्किज़ोफ्रेनिया, बाइपोलर डिसऑर्डर, डिप्रेशन, आम तरह की बीमारियाँ,” उसने जवाब दिया।

क्या वे कभी ठीक हो पाते हैं?

“इन समस्याओं का कोई इलाज नहीं है, सुश्री कौशिक।” वह थोड़ा मुस्कुराया। उसकी मुस्कान वाकई बहुत प्यारी और चौड़ी थी, जिसे उसने तुरंत छुपा लिया। “इन्हें कुछ समय के लिए टाला जा सकता है, लेकिन ठीक नहीं किया जा सकता। और यही सबसे दुखद बात है जब मैं इन सभी को देखता हूँ।”

"क्या यहां कोई बलात्कार पीड़िता है?"

"हर तरह की महिलाएं—वे महिलाएं जिन्होंने हर तरह के आघात का सामना किया।"

"क्या उनकी कहानियां सुनकर आपको गुस्सा नहीं आता?"

वह लगभग हंस पड़ा। "मैं कोई ऐसा सतर्कतावादी नहीं हूँ जो खुद को रंगता हो और कांटों का ताज पहनता हो, श्रीमती वर्मा। आपको यह समझना होगा।"

“आप सही कह रहे हैं,” वह मुस्कुराई।
“मैं अपने मरीजों के साथ निष्पक्ष व्यवहार करता हूँ। देखिए, उनके पास सुनने वाला सिर्फ मैं ही हूँ। और वे ज्यादा बात करना पसंद नहीं करते, इसलिए हमें उन्हें बोलने के लिए तरह-तरह के तरीके अपनाने पड़ते हैं। एक आदमी था, मेरा एक मरीज, जिसे लगता था कि शिव ने उसे बताया है कि गुड़गांव के एक खेत के नीचे खजाना है। उसने लगभग सौ गड्ढे खोदे लेकिन उसे सोना कभी नहीं मिला। मेरे मरीज इतने अजीब होते हैं।”
“क्या उन्हें आवाजें सुनाई देती हैं?”
"सभी प्रकार।"
आखिरकार वह एक सफेद दरवाजे के सामने रुका और उसे खोला। स्वाति उसके पीछे-पीछे अंदर गई तो उसे एक छोटा सा कमरा मिला जिसमें एक छोटा सा टेलीविजन लगा था और एक आदमी अपने कटोरे में से अनाज खा रहा था।
“ये समर आनंद हैं,” उन्होंने कहा। “ये अवसाद से पीड़ित हैं, हालांकि अब इनकी हालत में सुधार हो रहा है।” वे रुके और फिर ज़ोर से बोले, “आप कैसे हैं, श्रीमान आनंद?”
समर ने अपना सिर घुमाया और सहमति में सिर हिलाया।
“आप उनसे बात कर सकते हैं। वे हिश्मा के समय से ही यहां हैं।”
"आखिर उसे क्या समस्या है?"
“गुजरात दंगों में उन्होंने अपना परिवार खो दिया। वे दिल्ली चले गए। तब तक वे मानसिक रूप से स्वस्थ थे, लेकिन फिर उन्हें अपने परिवार के दृश्य दिखने लगे। हमें लगता है कि उन्हें भ्रमपूर्ण सिज़ोफ्रेनिया है। हिश्मा उनसे बातें करती थी। हालांकि, मुझे नहीं पता कि वे किस बारे में बात करती थी। उन्होंने हमें बीमा की सारी रकम दे दी है ताकि जब तक वे पूरी तरह से ठीक न हो जाएं, तब तक हम यहीं रह सकें।”
"क्या मैं उससे अकेले में बात कर सकता हूँ?"
उन्होंने सिर हिलाया। "ठीक है, तब तक मैं बाकी मरीजों को देख लूंगा।"
उसने एक स्टूल लिया और उस पर बैठ गई। फिर उसने हाथ जोड़कर पूछा, "हे समर... तुम्हें कैसा लग रहा है?"
समर ने टेलीविजन से नज़रें हटाईं और सिर हिलाया। फिर दोबारा उसे घूरने लगी।
मैं आपसे हिश्मा राशिद के बारे में कुछ सवाल पूछना चाहूंगा।

धारावाहिक चबाते हुए उसका मुंह रुक गया। धीरे-धीरे उसने अपना चेहरा उसकी ओर घुमाया और भारी, सलीकेदार आवाज़ में कहा- "तुम क्या जानना चाहती हो?"
“मैंने सुना है कि आप उनकी मरीज़ थीं। क्या आप मुझे उनके बारे में कुछ बता सकती हैं जो उन्होंने आपको बताया था?”
“वह मेरी मनोचिकित्सक थीं,” उन्होंने खाना खाते हुए कहा। “मुझे उनसे नफरत है क्योंकि उन्होंने मुझे छोड़ दिया। मैं चाहता हूं कि वह वापस आ जाएं।”
"वह कब चली गई?"
उन्होंने दोहराया, “वह मेरी मनोचिकित्सक थीं। उन्होंने सवाल पूछे, मैंने नहीं।”
“लेकिन तुम तो उसके चहेते थे,” स्वाति ने झूठ बोला, क्योंकि उसे पता चल गया था कि उसके पास उसके साथ ऐसा व्यवहार करने के अलावा कोई चारा नहीं था। “उसने दूसरे डॉक्टरों से भी यही कहा था।”
उसका चेहरा चमक उठा। "वह मुझे बहुत पसंद करती थी।"
"क्या वह सुंदर थी?"
“मेरी पत्नी की तरह,” वह मुस्कुराया। उसकी आँखों में उदासी छिपी थी। “वह मेरी पत्नी जैसी दिखती थी।”
"बहुत बढ़िया, तो क्या आपको कोई अंदाजा है कि वह कहां हो सकती है?"
"उन्होंने अपने आखिरी सेशन में मुझे यह नहीं बताया कि वह कहां जा रही हैं।"
"क्या आपने उससे पूछा कि उसने क्यों छोड़ा?"
“उसने कहा कि उसे अपने लिए कुछ निजी समय चाहिए। वह एक बदली हुई इंसान बनना चाहती है, नए अनुभव लेना चाहती है और एक अलग इंसान बनना चाहती है,” उसने गुस्से से चबाते हुए कहा। “क्यों पूछ रही हो, औरत?”
क्या आपके पास उसके साथ कोई तस्वीर है?
“वह मेरी मनोचिकित्सक थीं। हम तस्वीरें नहीं खींचते।”
धिक्कार है! इससे उसे कोई फायदा नहीं हो रहा था। उसे इस आदमी से और कुछ चाहिए था, कुछ ठोस जो उसकी मदद कर सके। वह इस समय एक बेहद खतरनाक और डरावने जाल में फंसी हुई थी। वह इस दुनिया द्वारा बनाए गए भूलभुलैया में उलझी हुई थी। वह यम के बारे में जानना चाहती थी और हिष्मा का अचानक गायब होना शायद उसे यम के साथ अपने संबंध को समझने में मदद कर सके। लेकिन फिर, शायद वह गलत रास्ते पर चल रही हो।

"क्या उन सत्रों के दौरान आपने ऐसा कुछ देखा जिससे आपको उसके सामान्य व्यक्तित्व के बारे में कुछ अजीब लगा?"
उन्होंने कुछ देर तक छत की ओर देखा। “नोएडा,” उन्होंने कहा। “डॉ. आर.एस. मिश्रा का क्लिनिक।”
उसने तुरंत गूगल पर नाम टाइप किया।
"वह आपको कहां मिला?"
"पिछली क्लास में मैंने उनकी मेज पर क्लिनिक के विज्ञापन की एक कतरन देखी। यह उनकी फाइल में छिपी हुई थी, लेकिन जब वह बाहर गई हुई थीं, तब मैंने इसे देखा।"
वह प्रभावित हुई। "और तुम्हें अब भी याद है?"
“मेरी याददाश्त अच्छी है,” उसने मूर्खतापूर्ण मुस्कान के साथ कहा।
स्वाति ने अपने मोबाइल फोन की स्क्रीन पर डॉ. आर.एस. मिश्रा क्लिनिक का नाम देखने के लिए नजर डाली, तो उसे पता चला कि यह कोई साधारण क्लिनिक नहीं था, बल्कि यह सर्जरी में विशेषज्ञता रखता था।
लिंग परिवर्तन सर्जरी केंद्र।

अध्याय छियासठ

उसके पाप का दंड और उसके पाप का दंड ढूंढो।

जगदीश तौरानी

7 गंटे

मैं कागज को लगातार घूरता रहता हूं।

सात घंटे।

हर हत्या के साथ समय का कम होते जाना मुझे पागल कर रहा है। मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या करूँ। मैं बस हार मानकर आगे बढ़ना चाहता था, शायद किसी कोने में बैठकर हत्याओं को होते देखना चाहता था, यम के तर्क को पूरी तरह से नकारते हुए। लेकिन फिर, मेरा अंतरात्मा इसकी इजाज़त नहीं देता। इसीलिए वह इसे मुझे भेजता है। वह जानता है कि मैं इसे देखूंगा और काम पर लग जाऊंगा, अपनी सेहत या दिल की परवाह किए बिना।

लेकिन हाल ही में मेरा ब्लड प्रेशर कम हो गया था। मेरे फेफड़ों में दर्द था। मैं खुद को आराम देने के लिए खूब पानी पीता था क्योंकि मैं इतना तनाव में था कि मैंने कुछ समय के लिए पैंथर्स से छुट्टी ले ली थी और गगन से आने वाली सभी सलाहें रद्द कर दी थीं। मैंने वर्धन से भी कहा कि वह इंटर्नशिप करे, कॉलेज का आनंद ले और इन सब बातों की चिंता न करे। लेकिन वह नहीं गया। वह वहीं रुका रहा, इस सनकी को पकड़ने के लिए दृढ़ संकल्पित।

"अब क्या करें?"

“हम हमेशा की तरह यही करते हैं,” मैं कहता हूँ। “जाँच करते हैं और पता लगाते हैं कि उसके पाप क्या हैं।”

“मैं जानता हूँ कि यह क्या है।” उनके होठों पर एक शरारती मुस्कान थी, जब वे हमारे द्वारा तैयार किए गए चार्ट की ओर बढ़े और एक शब्द की ओर इशारा करते हुए उसे ज़ोर से बोला। “असिपत्रवन वह नरक है जो वेदों की धार्मिक शिक्षाओं से भटकने और विधर्म का अभ्यास करने वाले व्यक्ति के लिए आरक्षित है।”

"आप यह कैसे जानते हैं?"

“जगदीश तौरानी...” वह सहज भाव से कहते हैं, फिर अपना फोन निकालकर मुझे गूगल पर मौजूद सभी लिंक दिखाते हैं, “...जिन्हें गुरु शिव भी कहा जाता है, कुख्यात

आध्यात्मिक गुरु, जो उपवास वगैरह करते हैं, खुद को धर्मगुरुओं में से एक बताते हैं, सभी प्राचीन देवताओं का प्रतिनिधि मानते हैं और तरह-तरह के जादू के करतब दिखाते हैं। सैकड़ों लोग उनसे मिलने आते हैं और उनका आशीर्वाद चाहते हैं।"
मैंने गुरु शिव के बारे में तो सुना ही था। वे काफी समय से विवादों में घिरे रहे थे क्योंकि वे खुद को भगवान मानते थे। लेकिन यम राज के विपरीत, वे इस बारे में अधिक खुले और अहिंसक थे। वे अपने मंदिर के निर्माण के नाम पर खूब लूटपाट करते थे। वे प्रकृति, वायु, पृथ्वी और ऐसी ही कुछ बेतुकी बातों का उपदेश देते थे, फिर भी दुनिया भर से लोग उनसे मार्गदर्शन लेने आते थे। एक वेबसाइट थी, जिसके बीच में एक बड़ा सा 'दान करें' बटन था।
यह सब एक जादू-टोना था, लेकिन फिर भी बहुत से लोग उस पर विश्वास करते थे।
"यह सच हो सकता है, गुरु शिव को असिपत्रवन में नियुक्त किया जा सकता है, लेकिन हम निश्चित नहीं कह सकते। फरीक के साथ जो हुआ उसके बाद, मुझे लगभग यकीन हो गया है कि वह हमें गुमराह कर रहा है। यह बहुत स्पष्ट है, बहुत बड़ा संकेत है। इसके पीछे उसकी कोई और साजिश होगी। हमें इसके बारे में तभी पता चलेगा जब हम उससे बात करेंगे। आपके पास जितनी भी गुप्त जानकारी है, वह सब ले आओ और हम अब चलते हैं।"
"बुआ के बारे में क्या?" वह पूछता है।
यह सच था। रुत्वी आज अकेली थी। मीना दिन भर के लिए बाहर गई थी और शाम तक नहीं लौटी। मेरे बच्चे कॉलेज और ऑफिस में थे। रुत्वी आज ठीक थी और उसे काफी समय से मतिभ्रम नहीं हो रहा था, लेकिन...
मैं उसे कुछ देर के लिए अकेला छोड़ सकता हूँ। मीना जल्द ही आ जाएगी।
वह शुरू में थोड़ा असमंजस में दिखता है, लेकिन फिर मान जाता है और लैपटॉप पर काम करने लगता है। मैं तैयार होकर लिविंग रूम में जाती हूँ, जहाँ वह अपनी सास-बहू सीरियल देख रही होती है। मैं उसके पास बैठ जाती हूँ और उसका खिलखिलाता चेहरा देखती हूँ। जब उसे दौरे नहीं पड़ते, तो वह इतनी शांत, सुंदर और स्वस्थ होती है, बिल्कुल वैसी ही जैसी शादी के समय थी।
मैं कुछ समय के लिए बाहर जा रहा हूँ।
वह टेलीविजन से अपनी निगाहें नहीं हटाती। "तुम कहाँ जा रही हो?"
"काम।"

“तुम तो बहुत ज्यादा काम कर रहे हो,” वह कहती है। “क्या तुम्हें मुझे अकेला छोड़ने से डर नहीं लगता?” उसके चेहरे पर एक हल्की सी मुस्कान आ जाती है।
मैंने भी मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "मुझे उम्मीद है कि तुम पिछली बार जैसी गलती दोबारा नहीं करोगे।"
वह कंधे उचकाती है। "क्या मैं आपको नींद की गोलियों की अधिक मात्रा से चौंका दूँ? ऐसा नहीं करने वाली, चिंता मत करो। मैं ठीक हूँ।"
मैंने उसके हाथ पकड़ लिए। उसने तुरंत मेरी तरफ देखा और हमारी आँखें मिल गईं।
“क्या आप पक्का हैं? मैं रद्द कर सकता हूँ।” सच कहूँ तो, वह उस नीच इंसान को बचाने के बजाय उसके साथ रहना चाहता था जो जीने के लायक भी नहीं है।
“हाँ।” वह अपना हाथ मेरे गालों पर रखती है और एक कमजोर, थकी हुई मुस्कान देती है। “मैं अभी एकदम ठीक हूँ, प्यारे। तुम अपना काम करो और रात को हम सब डिनर के लिए बाहर चलेंगे।”
"पक्का।"
मुझे खुशी है कि आपने अपने बेटे और बेटी के साथ अपने रिश्ते को फिर से मजबूत कर लिया है।
मैं भी खुश हूँ।
"यह कैसी लगता है?"
"क्या लग रहा है?"
"उन्हें अब जानना।"
और हम दोनों इस पर हंसते हैं। "वे अजीब और विचित्र हैं, लेकिन कोई बात नहीं। उन्हें यह आपसे ही मिला है।"
वह बेपरवाही का भाव दिखाते हुए अपनी भौहें उठाती है। मैं देख सकता हूँ कि वह इस समय कितनी शांत और बेफिक्र दिख रही है, मानो उसे इस बात का बिल्कुल भी अंदाजा न हो कि जब उसे ये दौरे पड़ते हैं तो वह किस भयानक पीड़ा से गुज़रती है। और उन्हें यह रवैया आपसे ही मिलता है।
"तुम उस रवैये के झांसे में आ गए।"
मुझे इसके अनुरूप ढलना पड़ा।
मैंने तुरंत उसे कसकर गले लगा लिया। मैंने उसे अपने करीब रखा और उसके गाल पर चुंबन किया। मैं जाना नहीं चाहता था। मुझे लगता है मैंने फैसला कर लिया है। यह

आखिरी बकवास इंसान है जिसे मैं बचाने की कोशिश करूंगा। इसके बाद, आज के लिए मेरा काम खत्म। अब और सुपरमैन बनने की जरूरत नहीं।
अब मैं सिर्फ एक पति बनना चाहता हूँ।

अध्याय सड़सठ

गुरु शिव की वेबसाइट के अनुसार, उनका आश्रम गुड़गांव के सोहना रोड पर था और उनके अनुयायी उनके साथ वहीं रहकर ध्यान करते थे, प्रार्थना सुनते थे आदि। गुरु शिव के पास तो रक्षक भी थे जो उन्हें नास्तिक लोगों से बचाते थे, जैसा कि वे खुद कहा करते थे।

मुझे वहां पहुंचने में लगभग एक घंटा लगता है और रास्ते भर मैं रुत्वी के बारे में सोचती रहती हूं और यह सोचती रहती हूं कि मैंने उसे घर पर अकेला क्यों छोड़ दिया था।

वर्धन कहता है, "मुझे आपके साथ काम करना अच्छा लगता है, अंकल।"

"वास्तव में?"

“हां। जब मैं किसी हीरो के बारे में सोचता हूं, तो आप ही वह व्यक्ति हैं जिनके बारे में मैं सोचता हूं।”

“वरधान, इन दिनों कोई हीरो नहीं है,” मैंने जवाब दिया।

आप करीब आ गए।

“कैसे?” मैंने उत्सुकतावश पूछा कि मेरे बारे में उनके क्या विचार हैं।

“तुम कभी अपने बारे में नहीं सोचते। तुम ये सब तब भी करते हो जब वे बुरे लोग होते हैं। जान लेना आसान है, पर माफ़ करना मुश्किल। और तुम उन्हें माफ़ कर देते हो। यम कुछ लोगों के लिए हीरो हो सकते हैं, लेकिन वो न्याय के चरम रूप के तौर पर हत्या का सहारा लेते हैं। न्याय का मतलब विकट समय में हिंसा करना नहीं है। न्याय का मतलब निष्पक्ष होना है।”

"आपको कैसे पता कि मैंने उन्हें माफ कर दिया है?"

"तुम कबीर को मार सकते थे, लेकिन तुमने नहीं मारा।"

"मैंने उसे पूरी तरह से तोड़ दिया था।"

वह हँस पड़ा। “वैसे, मैं फिर से प्रितिका के साथ डेट पर जा रहा हूँ।”

क्या तुम उससे नफरत नहीं करते थे?

"उसका मासूम सा चेहरा मुझे धीरे-धीरे पसंद आने लगा।"

मुझे आश्चर्य होता है कि तुम कितने चंचल हो।

“मैं तो बस एक बेचारा और निराशावादी रोमांटिक हूँ,” वह शरारती मुस्कान के साथ कहता है। “अगर और हत्याएँ नहीं हुईं तो हम इस वीकेंड फिल्म देखने जाएंगे। फिर

भी मुझे समझ नहीं आता...” उसका लहजा तुरंत बदल जाता है। “मुझे समझ नहीं आता कि हम हत्याओं को लेकर इतने शांत कैसे हैं। दो सीरियल किलर, साइको यादव और यम खुलेआम घूम रहे हैं और हम घबरा नहीं रहे? अजीब है ना?”
“मुझे लगता है कि हम ऐसे समाज के अनुकूल ढल चुके हैं।” गुरु शिव के निवास स्थान माने जाने वाले उस बड़े फार्महाउस-सह-आश्रम को देखकर मैं मुस्कुराने की कोशिश करता हूँ। मैं कार को एक चौड़े खेत के पास पीपल के पेड़ के नीचे रोक देता हूँ, जो बंजर तो है लेकिन आश्रम का शानदार पिछला दृश्य दिखाता है। “उनके बारे में पता लगाओ, कोई भी जानकारी जो उपयोगी हो सकती है।”
आप क्या करने का इरादा रखते हैं?
“मुझे नहीं पता,” मैंने कहा और सच में मुझे नहीं पता था। “लेकिन अगर हम अंदर जा रहे हैं, तो हमें तैयार रहना होगा। मुझे याद है गुरु शिव कुछ मामलों में उलझे हुए थे। मैं चाहता हूँ कि आप अखबारों से उन्हें ढूंढ निकालें। इंटरनेट पर कहीं न कहीं तो वह जानकारी छिपी होगी।”
वह सिर हिलाता है। वह अपने टाटा फोटॉन डोंगल से इंटरनेट कनेक्ट करता है, जबकि मैं रुत्वी का हालचाल पूछती हूँ। वह अभी भी वहीं है, पूरी तरह जाग रही है और मेरा इंतज़ार कर रही है। फोन रखने के बाद, मैं कार से बाहर निकलती हूँ और गहरी साँस लेती हूँ। मैं सफेद कुर्ते और धोती पहने पुरुषों और महिलाओं को इधर-उधर घूमते हुए, आपस में बातें करते हुए देखती हूँ। आश्रम में लोहे की जालीदार बाड़ से एक खुला स्थान दिखाई देता था, जिससे मुझे झाँककर यह देखना आसान हो गया कि उस धर्मगुरु के धार्मिक घर में क्या चल रहा है।
“मुझे मिल गया!” वर्धन चिल्लाकर मुझसे कहता है।
"क्या?"
“यह उस समय का एक पुराना लेख है जब उन्होंने अपना अभ्यास शुरू ही किया था। पता चला कि वे षड्यंत्र के मामलों में फंस गए थे। उनके प्रवचनों में आने वाले अमेरिकी और फिरंगी लोग गायब होने लगे। अधिकारियों ने उन पर आरोप लगाया लेकिन उनके पास सबूत नहीं थे और वे बच गए।”
"जनता द्वारा गढ़े गए सिद्धांत क्या हैं?"
"कि उसने उनके साथ बलात्कार किया या उन्हें बेच दिया, वही आम बातें, आप जानते हैं।"

“उसके पास कुछ न कुछ जरूर होगा। यह जानकारी बहुत कम है।”
“मुझे बस इतना ही मिल सका। और कुछ नहीं है...” वह रुक जाता है और उसका चेहरा बिगड़ जाता है। “देखो!”
मेरी निगाहें उस ओर जाती हैं जहाँ वह इशारा करते हैं। पीछे के गेट से एक वाहन निकलता है और जाने लगता है। यह एक जीप है और पीछे से देखकर मैं अनुमान लगा सकता था कि सफेद दाढ़ी और झुर्रियों वाले गंजे सिर वाले गुरु शिव इसमें यात्रा कर रहे थे।
वह इस जगह को छोड़कर जा रहा है।
मैं कार में बैठ गया, इंजन स्टार्ट किया, एक्सीलरेटर दबाया और जितनी तेज़ी से हो सके गाड़ी चलाई। “हमारी किस्मत अच्छी है। शायद हम उसे पकड़ लें। वह कहाँ जा रहा है?”
वर्धन कंप्यूटर स्क्रीन की ओर देखते हुए कहता है, "मुझे गुरु शिव के एक अनुयायी का ब्लॉग भी मिला।"
"यह क्या कहता है?"
“वह सर्वर अंदर दबा हुआ था और उसे निकालना मुश्किल था, लेकिन मैं उसे ढूंढने में कामयाब रहा। पता चला कि वह जो कुछ हुआ था और अपने अनुभव के बारे में बता रही थी। वह एक रूसी महिला थी और गुरु शिव द्वारा बंदूक की नोक पर बंधक बनाए जाने के बाद उसे वेश्या के रूप में बेचा जाना था, लेकिन वह किसी तरह भाग निकलने में सफल रही।”
"क्या उसने बताया कि उसे कहाँ बंधक बनाया गया था?"
एक छोटी सी फैक्ट्री में जीप को प्रवेश करते देख मैंने आखिरकार कार रोक दी। फैक्ट्री के बाहर लगे बोर्ड पर मेहता स्टील्स लिखा था।
“अच्छा...” उसने कारखाने की ओर इशारा करते हुए कहा, “...वहीं पर वह कहती है कि उसे जबरन रखा गया था और बेचे जाने तक भूखा रखा गया था।”

अध्याय अड़सठ

स्वाति अपने घर में स्कॉच का गिलास लिए बैठी थी। उसने हाथ में पकड़ी सिगरेट बुझाई और अर्जुन को फोन किया।

“तुम्हें मिल गया?” उसने घबराकर पूछा।

“मैं इस पर काम कर रहा हूँ; मैं इस पर काम कर रहा हूँ, शांत रहो,” अर्जुन ने अपनी सहज और थोड़ी अटपटी आवाज़ में कहा। “वैसे, आप कैसे हैं?”

स्वाति ने आंखें घुमाईं और उसके सवाल का जवाब नहीं दिया। "क्या आप सीधे मुद्दे पर आकर बता सकते हैं कि आपको डॉ. आर.एस. मिश्रा के क्लिनिक के बारे में क्या जानकारी मिली?"

“खैर, मुझे पता है पता,” वह आह भरते हुए कहता है।

"अरे यार, ये तो वेबसाइट पर है।"

उसकी आवाज़ में नाराज़गी झलक रही थी—जैसे कि उसे परवाह हो।

“यह एक जेंडर रीअसाइनमेंट क्लिनिक है, जहाँ मुख्य रूप से पुरुषों से महिलाओं और महिलाओं से पुरुषों के लिए सर्जरी की जाती है। यह एक छोटा क्लिनिक है।”

"क्या वे मूलतः ट्रांसजेंडरों का निर्माण कर रहे हैं?" उसने गुस्से से कहा।

“वाह, स्वाति! क्या तुम इससे भी ज्यादा निर्दयी हो सकती हो? वे भी तो इंसान हैं, तुम्हें पता है ना?”

“मुझे बस चिंता हो रही है,” उसने आह भरी। उसे कल जाना था। “आपने और क्या सीखा?”

“क्लिनिक को लेकर विवाद हुआ था। आप जानते ही हैं कि जब आप अपना लिंग बदलते हैं, तो आपको नई पहचान की ज़रूरत पड़ती है—पासपोर्ट, पैन कार्ड, पहचान पत्र, नया ड्राइविंग लाइसेंस। खैर, कहा जाता था कि डॉ. आर.एस. मिश्रा का क्लिनिक ये सब भी मुहैया कराता था, लेकिन एक स्टिंग ऑपरेशन में पकड़ा गया और लंबी कानूनी लड़ाई के बाद ही रिहा हुआ। मुझे लगता है कि अब वह ऐसा नहीं करते।”

यह बात समझ में आती थी। उसके चेहरे पर जीत की मुस्कान थी।

“स्वाति, तुम क्या सोच रही हो? क्या तुम्हें लगता है कि यम , हिश्मा राशिद हैं?”

“और कौन हो सकता है?” उसने कहा और जैसे-जैसे उसके दिमाग में सारी बातें स्पष्ट होती गईं, वह समझाने लगी। “हिश्मा राशिद अपनी यौन पहचान को लेकर असुरक्षित

थी, इसलिए उसने मनोरोग केंद्र छोड़कर इस क्लिनिक में शरण ली। वह पुरुष के रूप में परिवर्तित हो गई और महीनों तक गायब रही, मेरी तरह ही पीड़ितों के बारे में जानकारी इकट्ठा करती रही। और अब, वह पुरुष शरीर के साथ लौटी है। इसीलिए मैं हमेशा सोचती थी कि वह अपनी आवाज़ को जानबूझकर कर्कश क्यों बनाता था। यम ा वास्तव में एक स्त्री है।"
"यह तो हद से ज्यादा बेतुकी बात है। आप बस मनगढ़ंत बातें बना रहे हैं क्योंकि आपको कोई दूसरा विकल्प नजर नहीं आ रहा है।"
"मुझे यही करना है। यही मेरा एकमात्र सुराग है।" उसने कहा। "मैं कल नोएडा के लिए रवाना हो रही हूँ।"
मैं तुम्हारे साथ आ रहा हूँ।
उफ़! उसे उसकी ज़रूरत नहीं थी। "तुम्हें ज़रूरत नहीं है।"
"कृपया?"
अर्जुन एक चिढ़ाने वाला इंसान था। लेकिन सच कहूँ तो, लंबी यात्राओं के दौरान जब उसके पास रेडियो के अलावा कोई और नहीं होता था, तो उसे अपने साथ किसी की ज़रूरत तो थी ही। "ठीक है। बस उस रात की बात मत करना।"
"क्यों? यह तो अद्भुत था।"
तुम्हारे लिए। "ज़रूर, लेकिन नहीं, तुम इस बारे में बात नहीं करोगे।"
"हम सामान्य डेट पर क्यों नहीं जा सकते...?"
मैं ऐसा नहीं करता।
और उसने फोन काट दिया। उसने ऐसा क्यों नहीं किया? उसे खुद नहीं पता था। लेकिन उसे एक बात पता थी। उसकी अंतरात्मा उसे बता रही थी कि हिश्मा राशिद शायद यम राज ही है। उसने ज़रूर कोई भयानक घटना झेली होगी, कुछ ऐसा जिसने उसे पुरुषों से नफरत करना सिखाया और फिर वह इस तरह की न्यायप्रिय महिला बन गई, लेकिन इसके लिए उसे पुरुष होना पड़ा होगा या फिर वह वास्तव में स्त्री होने से नाखुश थी। वह कई ऐसी महिलाओं से मिली थी जो पुरुष बनना चाहती थीं क्योंकि इससे उन्हें पूर्णता का एहसास होता था। क्या हिश्मा के साथ भी ऐसा ही था? उसे अपनी त्वचा से नफरत थी। यह सच हो सकता है।
कल उसे जवाब मिल जाएंगे।

अध्याय उनसठ

“उसे अपना टाइमटेबल पता था।” वर्धन हांफते हुए कहता है।

"आपका क्या मतलब है?"

“इसीलिए हम यहाँ हैं। वह चाहते थे कि हम इस समय यहाँ रहें। उन्हें पता था कि गुरु शिव आज इस समय परिक्रमा करेंगे और हम उनके पीछे-पीछे उस ठिकाने को ढूँढने के लिए जाएँगे जहाँ उन्होंने लड़कियों को रखा है। वह चाहते थे कि हम यहाँ रहें।”

“लेकिन क्यों?” मैंने पूछा।

“बात सीधी सी है। वह चाहता है कि हम देखें कि वह किस तरह के लोगों को मारता है। वह चाहता है कि हम यह मान लें कि वह जो करता है वह वास्तव में ईश्वरीय और सही है।”

"इसका मतलब है कि वह चाहता है कि हम चुपके से अंदर जाएं और स्थिति का जायजा लें?"

“बिल्कुल।” वह सिर हिलाता है।

मैंने ऐसा करने के बारे में सोचा, लेकिन वर्धन को अकेला छोड़ने से मुझे घबराहट होने लगी। वह बड़ा, समझदार और बुद्धिमान लड़का था, लेकिन वह शार्क के झुंड में था। मुझे अपनी जान की कोई परवाह नहीं थी। मैं यह करते हुए मर भी सकती थी, लेकिन मैं नहीं चाहती कि मेरी बहन को पछतावा हो कि उसने वर्धन को मेरे पास क्यों भेजा।

“यह लेख कब प्रकाशित हुआ था, क्या पुलिस ने इस पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी?”

“उन्होंने ऐसा किया। वे गोदाम गए, लेकिन उन्हें कुछ नहीं मिला। गुरु शिव के पुलिस में ज़रूर संपर्क रहे होंगे, जिन्होंने उन्हें छापे के बारे में बताया होगा और छापेमारी दल के आने से पहले लड़कियों को सुरक्षित स्थान पर ले जाने का समय दिया होगा। इसके तुरंत बाद, वह लेख दबा दिया गया और एन्क्रिप्ट कर दिया गया। मैंने उसे ऑनलाइन डिक्रिप्ट किया।”

“तुम बहुत तेज हो।” मैंने उसकी पीठ थपथपाई।

वह लगभग शरमा गया। "तुम्हारा दिल कैसा है?"

"मेरे फेफड़ों में दर्द हो रहा है और मेरा दिल धीरे-धीरे खून पंप कर रहा है, लेकिन मैं ठीक हूँ," मैं मुस्कुराते हुए कहता हूँ।

"क्या हमें अंदर जाना चाहिए?"

“और क्या करें?” मैं मेहता स्टील्स और उसके आसपास के सुनसान इलाके को देखते हुए हंसता हूं।
उन्हें जो भी करने को कहें, रोकें और पुलिस को बुलाएं।
"हम ऐसा कर सकते हैं या हम यम ा के ऐसा करने का इंतजार कर सकते हैं।"
“रुको। तुम उसे एक्शन में देखना चाहते हो?”
मैं उससे मिलना चाहती हूँ। मैंने दांत पीसते हुए कहा।
और मेरी उससे मुलाकात हुई। मुझे लगता है लगभग दो घंटे बाद मैंने एक परछाई को आते देखा। वर्धन सो गया था, लेकिन मैंने सींगों वाली एक तेज़ परछाई को चुपके से कारखाने में घुसते देखा।

अध्याय सत्तर

मैंने अपनी .33 रिवॉल्वर निकाली और कार से बाहर निकल गया। वर्धन मेरे पीछे आया, तभी मैंने तुरंत हाथ उठाकर उसे रुकने का आदेश दिया।

“पुलिस को बुलाओ, लेकिन हिलने की हिम्मत मत करना। अभी बुलाओ।”

उसने गुड़गांव पुलिस को वहां तक पहुंचने के लिए निर्देशांक देने के लिए अपने जीपीएस पर ऑनलाइन देखना शुरू किया। हमारे लिए भी मुसीबत खड़ी हो सकती थी और हमसे कई सवाल पूछे जा सकते थे, लेकिन मेरा रिकॉर्ड साफ-सुथरा था, साथ ही मेरा सेना का बैकग्राउंड भी था जो शायद हमारी मदद कर सकता था। लेकिन मुझे यम को पकड़कर उसका गला पकड़ना था और उससे कुछ सवाल पूछने थे जो मुझे उससे बहुत पहले पूछ लेने चाहिए थे।

मैं इमारत की बनावट और उसकी बड़ी दीवारों की जाँच करता हूँ ताकि देख सकूँ कि मैं कहाँ से अंदर घुस सकता हूँ।

सौभाग्य से, वहाँ एक द्वार तो है, लेकिन वह ताला लगा हुआ है और उस पर जंजीर कसकर बंधी है। शोर के कारण मैं ताला तोड़ नहीं सकता, इसलिए मैंने ताला तोड़ने के लिए एक बड़ा पत्थर उठाया। ऐसा करते हुए मैं सोच रहा था कि यम राज अंदर कैसे आए होंगे।

पत्थर से खड़खड़ाहट की आवाज़ आई और ताला ज़मीन पर गिर गया। मैंने चेन खोली और अंदर चला गया, चारों ओर घना अंधेरा था। मैंने अपने आस-पास का जायज़ा लिया और खुद को एक ढके हुए हॉल में पाया, जहाँ कई घुमावदार सीढ़ियाँ धातु के भूलभुलैया की तरह अलग-अलग मंजिलों तक जाती थीं। मंजिलें खाली थीं, लेकिन एक बड़ी लकड़ी की छत तक जाती थीं, जहाँ से सूरज की रोशनी अंदर आ रही थी। मेहता स्टील्स कभी बहुत ही मेहनती जगह रही होगी, लेकिन अब वहाँ मरे हुए चूहों और खून की बदबू आ रही थी। और मैं जानता था कि खून कहाँ से आया था।

मैं छाया में छिपकर बैठा हूँ जहाँ से मुझे सामने की ज़मीन दिखाई दे रही है। मैं गुरु शिव को अपने सफेद कुर्ते पहने अंगरक्षकों के साथ खड़ा देखता हूँ। गुरु शिव स्वयं पीले कुर्ते में हैं, जिसके ऊपर उन्होंने एक लंबा चोगा जैसा वस्त्र पहना हुआ है और उनकी पतली कमर पर एक सफेद कमरबंद कसकर बंधी हुई है। मैं उन्हें अपने अंगरक्षकों से बात करते हुए सुन सकता हूँ।

“उन्हें बुलाओ,” वह गार्डों में से एक पर चिल्लाता है।
अपने पायजामे के पीछे पिस्तौल लगाए पहरेदार एक कोने में चले जाते हैं, तभी एक दरवाजा खुलता है और अंदर से पांच विदेशी लड़कियां दिखाई देती हैं, जिनकी त्वचा सफ़ेद, आंखें पीली और बाल सुनहरे और बिखरे हुए हैं। वे सभी बंधी हुई हैं और ऐसा लग रहा है जैसे उनका मनोबल टूट चुका है। उनके कुपोषित शरीर पर जगह-जगह चोट के निशान और खून के धब्बे हैं।
“यह क्या है?” गुरु शिव ने चेहरे पर शिकन के साथ कहा। “ये गंदे क्यों हैं?”
"हम इन्हें धो देंगे, महोदय।"
“राजेश बालाजी उन्हें इस हालत में देखकर खुश नहीं होंगे।”
राजेश बालाजी? मैं तो उन्हें जानता था। वो दिल्ली के कमिश्नर थे। धिक्कार है! पता नहीं गुरु शिव के अधीन कितने और बड़े-बड़े नेता और राजनेता थे। अब समझ में आया कि वो हमेशा कानून और न्याय से कैसे बचे रहते थे। इन लड़कियों के ज़रिए तो वो कानून और न्याय को अपने वश में रखते थे।
“नमस्कार, मेरी प्यारी बच्चियों,” गुरु शिव डरी हुई लड़कियों के पास जाते हैं, जो किसी भीड़भाड़ वाले पिंजरे में बंधी हुई घबराई हुई मुर्गियों की तरह सिसक रही थीं। “चिंता मत करो। तुम बड़े लोगों की सेवा करोगी। वे अच्छे हैं। वे तुम्हें धन और शक्ति देंगे। चिंता मत करो। तुम्हें अभी मुझसे नफरत हो रही होगी, लेकिन असल में मैं तुम्हारी मदद कर रहा हूँ। प्रकृति का यही नियम है।”
मैंने ऊपर देखा और दूसरी मंजिल पर एक गार्ड आगे बढ़ा, वही गार्ड जिसे मैंने पहले नहीं देखा था। उसके हाथ में एके-47 थी, जिसने मुझे उस समय की याद दिला दी जब मैंने खुद इसका इस्तेमाल किया था। फिर, मैंने हर मंजिल पर दूसरे गार्डों को देखा। मुझे और सावधान रहना चाहिए था। गुरु शिव मूर्ख नहीं हैं। जाहिर है, उन्होंने यहाँ अच्छी सुरक्षा व्यवस्था की है।
मैंने जिस परछाई को देखा, वह ऊपरी मंजिल पर तैनात एक गार्ड की ओर बढ़ती है और उसका सिर मरोड़ देती है, जिससे वह चटक जाता है। फिर वह परछाई तीसरी मंजिल से दूसरी मंजिल पर छलांग लगाती है, जिससे कुछ आवाज़ होती है, लेकिन इतनी नहीं कि किसी को डर लगे। वह दूसरे गार्ड का सिर मरोड़ती है और चुपचाप दूसरे गार्ड की ओर बढ़ती है, जिसकी पीठ उसकी ओर है, और उसके घुटने पर वार

करती है। जैसे ही गार्ड चिल्लाने वाला होता है, वह उसका मुंह पकड़ लेती है और उसकी पैंट से सुई जैसी कोई चीज़ निकालकर उसके गले में चुभो देती है।
फिर दूसरी मंजिल से उसकी नजर मुझ पर पड़ती है। और मैं उन चमकदार, धधकते लाल रत्नों को देखती हूँ।

अध्याय इकहत्तर

यम ने वहां इरावण राजपूत को देखा और उनके चेहरे पर मुस्कान फैल गई। जैसे ही उन्होंने अपना चेहरा घुमाया, उन्होंने देखा कि काले कुर्ते में एक गार्ड उन्हें घूर रहा है, जो अपनी आँखों के सामने अचंभित था। यम ने व्यंग्यपूर्वक अपने होठों को छूते हुए गार्ड को चुप कराया, जिससे गार्ड कांपने लगा और जोर से चिल्लाने लगा। गार्ड ने गोली चलाना शुरू कर दिया, लेकिन यम फुर्ती से बच गए। शोर इतना भयानक था कि यम ने बंदूक छीन ली, उसे घुमाया और गार्ड की छाती में गोली मार दी।

घबराए हुए पहरेदार उसकी ओर बढ़ने लगे, तभी उसने नीचे देखा तो गुरु शिव द्वार की ओर बढ़ते हुए बाहर निकल रहे थे। यम ने तुरंत मुख्य द्वार पर एक तीर चलाया। गुरु शिव पीछे गिर पड़े।

यम ा ने एक और गार्ड को आते देखा और यम ा ने उसके सिर में गोली मार दी और गार्ड की एके-47 राइफल अपने साथ ले गया।

उसने एक और छलांग लगाकर पहली मंजिल पर छलांग लगाई। खुद को स्थिर करने के बाद, वह फर्श पर लुढ़का और एक अन्य गार्ड को गोली मार दी, जो उसके गिरने से चौंक गया था। अब तक वह तीन लोगों को मार चुका था।

वह सीढ़ियों से नीचे उतरने लगा, उसकी निगाहें गुरु शिव पर टिकी थीं, जो पराजित होकर हाथ ऊपर उठाए घुटनों के बल बैठे थे और उनके रक्षक उनके चारों ओर घेरा बनाकर खड़े थे। किसी ने भी उन व्याकुल लड़कियों पर ध्यान नहीं दिया।

“तुम कौन हो?” गुरु शिव चिल्लाए। “कृपया मुझे अकेला छोड़ दो।”

यम मुस्कुराया और गुरु शिव के निजी अंगरक्षकों पर बंदूक ताने हुए एक बार फिर फर्श पर कूद पड़ा। बाकी दो अंगरक्षक सीढ़ियों से नीचे भाग रहे थे।

“तुम चारों तरफ से घिरे हुए हो, सनकी,” गार्ड ने मुस्कुराते हुए कहा। “तुम कहीं नहीं जा सकते।”

और फिर दो तेज गोलियां चलीं। गुरु शिव के चारों ओर तैनात दोनों गार्ड वहीं गिर पड़े। ठीक उसी क्षण, पिछले दरवाजे की आड़ से, हाथ में धुआं उगलती रिवाल्वर लिए इरावण राजपूत अंदर दाखिल हुआ।

अध्याय बहत्तर

मैंने उसकी जान बचा ली, लेकिन मुझे नहीं पता मैंने ऐसा क्यों किया।

लेकिन मेरे पास इस बारे में सोचने का समय नहीं था। मैं आगे बढ़ गया और देखा कि यम मेरी ओर मुस्कुरा रहा है। उसकी त्वचा और सींग रंगे हुए थे, सब चमक रहे थे। वह यम जैसा ही दिखता था, बस फर्क इतना था कि उसका शरीर गठीला और मांसल था।

“उस पर नजर रखो,” उसने मुझे आदेश दिया।

मुझे विरोध करने का समय नहीं मिला क्योंकि वह दौड़कर उस तरफ गया जहाँ से गार्ड नीचे उतर रहे थे और उन पर गोलियाँ चलाना शुरू कर दिया। एक गार्ड सीढ़ियों से गिर गया जबकि दूसरा वहीं पड़ा रहा।

गुरु शिव के सिर पर बंदूक ताने हुए मेरे हाथ कांप रहे हैं। सचमुच। बहुत दिनों से मैंने किसी को नहीं मारा है और जब मैं दोनों गार्डों के बेजान शरीरों को घूरता हूँ, तो मुझे एहसास होता है कि उनके भी परिवार और बच्चे होंगे, जिनसे मैंने अभी-अभी एक पिता को छीन लिया है। धिक्कार है। और मैंने यह सब एक अश्वेत अजनबी को बचाने के लिए किया, जिसे मैं जानता भी नहीं।

गुरु शिव मेरी ओर देखते हैं। वे घुटनों के बल बैठकर अपनी जान की भीख मांग रहे हैं। मैं बंधी हुई लड़कियों पर एक नज़र डालती हूँ, लेकिन उनके चेहरे आँसुओं के बीच भी चमक रहे हैं।

उन्हें उम्मीद दिखती है। उन्हें मुझमें और यम में उम्मीद दिखती है।

ये लोग उन गुंडों से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण हैं जिन्हें मैंने मार गिराया है।

यम आगे बढ़कर तब तक लगातार गोलियां चलाते हैं जब तक कि उनकी एके-47 राइफल की सारी गोलियां खत्म नहीं हो जातीं और आखिरी गार्ड भी मारा नहीं जाता। वे मुड़कर बंदूक एक तरफ फेंक देते हैं और गुरु शिव की ओर बढ़ते हैं, लेकिन मुझे देखकर रुक जाते हैं।

मैंने अपनी बंदूक पकड़ रखी है और वह उस पर निशाना साधे हुए है।

अध्याय तिहत्तर

“तुम इसी का इंतजार कर रहे थे, है ना?” उसने कहा।

यम ने आह भरी। उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था कि जिस व्यक्ति ने अभी-अभी उनकी मदद की थी, वह उन्हें मार सकता है। डरने के बजाय, उन्होंने शांत रहने का फैसला किया। वे लड़कियों के पास गए और हाथ में चाकू लेकर, उन्हें बांधने वाली रस्सियों और बंधनों को काटने लगे। काम पूरा होने के बाद, उन्होंने इरावण की ओर देखा और पाया कि उसके हाथ कांप रहे थे और उसकी आँखों में अनिश्चितता थी।

“जाओ,” इरावान ने कहा। “पुलिस किसी भी क्षण बाहर आ सकती है।”

लड़कियाँ सिर हिलाकर झुंड की तरह तेज़ी से बाहर भागीं, मानो वे अपने घोंसले से निकल रही हों। उन्होंने दरवाज़ा खोला और गायब हो गईं, जबकि गुरु शिव यम और इरावण के बीच खड़े रह गए।

“तुम पकड़े गए। आखिरकार तुम पकड़े गए,” इरावान ने कहा। “अब तुम बच नहीं सकते।”

“मुझे उसके साथ जाने दीजिए,” यम ने गुरु शिव को इशारा करते हुए कहा। “मैं आपको चोट नहीं पहुंचाना चाहता।”

“तुम दुष्ट हो, तुम्हें पता है। तुम वीर की तरह दिखते हो लेकिन तुम नहीं हो। तुम इस समाज के अन्य अपराधियों की तरह ही हो।”

“अगर तुम्हें सच में लगता कि मैं बुरा हूँ, तो अब तक मुझे गोली मार चुके होते। तुमने ऐसा क्यों नहीं किया? हम एक ऐसी दुनिया में रहते हैं जहाँ बुराई और कम बुराई होती है। और मैं कम बुराई की श्रेणी में आता हूँ।”

“उसे जेल में होना चाहिए,” इरावन ने गुरु शिव की ओर इशारा करते हुए कहा। “तुम्हारे यातना कक्ष में नहीं।”

“उसे जेल से रिहा कर दिया जाएगा। वह पागलपन और जबरन कबूलनामे का बहाना बनाएगा। वह सारा दोष हम पर डालेगा और बाहर आकर वही काम बार-बार दोहराएगा। क्या आपको पता है कि उसकी वजह से कितनी लड़कियाँ वेश्यावृत्ति में धकेल दी गई हैं? क्या आपको इस बात का कोई अंदाज़ा है कि उसकी संतुष्टि के लिए कितनी लड़कियों का बलात्कार और हत्या की गई है? वह दर्द और तकलीफ के सिवा किसी और चीज़ का हकदार नहीं है। मैं अधिकारियों को दोष नहीं देता। एक दिन ऐसा

आएगा जब हमारे अधिकारी अपराधियों को रिहा करने के बजाय उन्हें सज़ा देने के लिए पर्याप्त रूप से न्यायसंगत होंगे। लेकिन अभी के लिए, मेरा अधिकार सर्वोच्च अधिकार है।"
नहीं, मैं ऐसा नहीं करूंगा।
"तुमने मुझे कोई विकल्प नहीं छोड़ा।" यम ने अपना सिर हिलाते हुए गुरु शिव के सिर पर अपना चाकू चलाया।

अध्याय चौहत्तर

गुरु शिव गिर पड़ते हैं और उनकी मृत्यु हो जाती है, उनके सिर से खून बहकर फर्श पर फैल जाता है।

एक पल के लिए मुझे लगा कि वह मेरे पीछे आएगा, लेकिन वह नहीं आया। मैं वहीं खड़ा रहा, मेरी बंदूक यम की ओर तनी हुई थी, लेकिन मैंने ट्रिगर नहीं दबाया क्योंकि मैं हैरान और संतुष्ट था। मैं संतुष्ट क्यों था?

"पुलिस को बता देना कि मैंने तुमसे संपर्क किया था। तुम सुरक्षित रहोगे। मैं तुमसे फिर संपर्क करूंगा," यम ा ने पीछे के दरवाजे की ओर बढ़ते हुए मुझसे कहा।

“कब तक तुम ये सब करते रहोगे, मुझे बार-बार फोन करते रहोगे और मुझे इधर-उधर दौड़ाते रहोगे? ये सब जल्द खत्म होना चाहिए।” मैंने अपनी उंगलियों पर ढीली-ढाली रिवॉल्वर लटकाए हुए कहा। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं उसे क्यों नहीं रोक पा रही थी।

क्या इसका कारण यह है कि अवचेतन रूप से मैं ऐसा नहीं करना चाहता?

“यह सब खत्म हो जाएगा। मैं आपसे वादा करता हूँ,” वह अपनी झुलसी हुई पीठ दिखाते हुए कहता है। “मुझे आप पसंद हैं, श्री राजपूत। आज आपकी सहायता के लिए मैं आभारी हूँ।”

"मैं ही क्यों?" मैं उससे आखिरी सवाल पूछता हूं, वह सवाल जो मुझे सबसे ज्यादा परेशान करता है।

आपको जल्द ही पता चल जाएगा।

और इतना कहकर वह चला जाता है।

अध्याय पचहत्तर

स्वाति नारायणा से अर्जुन को लेकर नोएडा जा रही थी, तभी अर्जुन ने उसे गुड़गांव में हुए बड़े घटनाक्रम के बारे में बताया, जहाँ गुरु शिव को यम ने रंगे हाथों पकड़कर मार डाला था और केवल वर्धन और इरावण राजपूत ही गवाह थे। यह सुनकर स्वाति स्तब्ध रह गई और सोचने लगी कि क्या यम ने ही उन्हें वहाँ बुलाया था।

"फिर क्या हुआ?"

“वे अभी भी हिरासत में हैं, लेकिन उनका कहना है कि उनका इससे कोई लेना-देना नहीं है और लड़कियों की गवाही से पता चलता है कि ये सब काम यम ा नाम के एक गुंडे ने किए हैं, जिससे मामला स्पष्ट हो गया है। उनका कहना है कि यम ा ने उन्हें एक छोटे से सरप्राइज के लिए इस जगह पर बुलाया था।”

"लानत है।"

"हाँ मुझे पता हे।"

"और क्या?"

“खैर, वह अभी भी बाहर है, इसलिए आपके पास उसकी कहानी बताने का मौका है। लेकिन आप लोगों को कहानी से क्या बताना चाहती हैं?” उसने गर्दन घुमाकर उससे पूछा। उसने चश्मा पहना हुआ था और उसका चेहरा चूहे की तरह जिज्ञासु था।

"उसका अतीत।"

"और आपको लगता है कि हिश्मा राशिद उसका अतीत है?" जब वह साफ सड़क पर गाड़ी की रफ्तार बढ़ा रही थी, तो वह यात्री सीट पर बेचैनी से हिलने लगा।

"आपकी आवाज़ से तो ऐसा नहीं लग रहा कि आप इस बारे में निश्चित हैं?"

“मुझे अब भी इस बात पर यकीन नहीं होता, आप जानते हैं। एक ट्रांसजेंडर सतर्कतावादी, यह तो नई बात है।” उन्होंने अपनी भौंहें चढ़ाते हुए कहा। “आजकल मैं रूढ़ियों को ज्यादा मानता हूँ।”

वह हंस पड़ी। उसे सचमुच एक पल के लिए लगा कि अर्जुन जब चाहे तब सच्चा हो सकता है।

“और आप यह सब सिर्फ इसलिए कर रहे हैं क्योंकि समर नाम के उस लड़के ने कहा कि उसने अखबार से कोई पोस्टर या कागज की कतरन देखी थी? यह भी निश्चित नहीं है कि वह वहां गई थी।”

“हमारे पास इसकी जांच करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। यही हमारा आखिरी सुराग है, वरना सब खत्म हो जाएगा। मैं अब इस मामले में और आगे नहीं देखूंगी,” स्वाति ने जवाब दिया।
उसने आह भरी. “जय भगवान जी।”
“यह कितनी दूर है?” स्वाति ने पूछा।
"आधे घंटे,"
उसने स्टीयरिंग व्हील को थपथपाया। सुबह बहुत सुहाना और चमकदार थी और इतनी देर गाड़ी चलाने के बावजूद उसे थकान महसूस नहीं हो रही थी। उसे लग रहा था कि वह उस व्यक्ति के अतीत के करीब पहुँच रही है जो शायद रहस्य को सुलझाकर उसे मानसिक रूप से मुक्त कर दे। वह चाहती थी कि उसे चाहा जाए, वह महत्वपूर्ण और वीर महसूस करे और ऐसा करके वह उस पौराणिक प्राणी के मूल का पता लगाने वाली पहली व्यक्ति बन जाएगी, जो इन गलियों में घूमकर अपने तरीके से न्याय करता था।
मैं अब तुम्हें देख सकता हूँ, यम ।

अध्याय छिहत्तर

हम बैठक कक्ष में थे तभी वर्धन ने असहज ढंग से अपने कंधे खुजलाए। उसके पास दो थैले थे जिनमें भंडारगृह में रखा सारा सामान भरा हुआ था।

“तो बस यही है, है ना?” वर्धन कहता है।

"अगर मेरी बहन इस मुद्दे पर इतनी पागल न हो जाती तो ऐसा नहीं होता।"

मेरे भतीजे ने कहा, "मैं उसे दोष नहीं देता। उसका बेटा युद्ध के मैदान के बीच में था और वह इसके लिए आपको दोषी ठहराती है।"

मुझे पता है। मैं सबसे अच्छा मामा तो नहीं बन पाया, लेकिन सबसे अच्छा मामा कौन होता है? मेरा परिवार सुरक्षित है और उन्हें लगता है कि मैं भी अब सुरक्षित हूँ। उन्होंने कहा कि यम की बात न सुनूँ, वहीं दूसरी ओर एसीपी सूरज चाहते हैं कि मैं उनकी टास्क फोर्स का हिस्सा बनूँ और अगर यम मुझसे दोबारा संपर्क करे, तो मैं उनके साथ मिल जाऊँ, जबकि वे उसका पीछा करके उसे पकड़ लेंगे। उन्होंने मेरी सेना की पृष्ठभूमि की वजह से मुझ पर भरोसा किया, जो ऐसी स्थितियों में हमेशा काम आती है। उन्हें नहीं पता कि मैंने यम को जाने दिया और मैंने उसकी रक्षा की और उन गुंडों को मारने में उसकी मदद की।

लेकिन यम अपने अत्याचारों का अभ्यास नहीं कर सका। वह कुछ भयानक कर बैठता और उससे गंभीर समस्याएं पैदा हो जातीं। एक तरह से, मुझे लगा कि मैं जीत गया क्योंकि मैंने उसे वह करने से रोक दिया जो वह हमेशा करता था।

मेरे विचार से, नुकसान पहुँचाकर और यातना देकर न्याय करना कोई समाधान नहीं है। अगर मैं यम होता या मुझे कोई गंभीर मानसिक बीमारी होती, जो मुझे लगता है कि उसे नहीं है, तो मैं उस व्यक्ति को इतना कष्ट देता कि वह दोबारा अपराध करने से पहले तीन बार सोचता। मैं उसके शरीर को नहीं, बल्कि उसकी आत्मा को तोड़ देता। मैं उसके शरीर को नहीं, बल्कि उसके मन को यातना देता।

लेकिन मैं यम राज नहीं था। और मैं उसके जैसा हत्यारा भी नहीं था। या क्या वह सच में हत्यारा है? मुझे अब भी यह समझ नहीं आ रहा है।

लेकिन आपको प्रितिका के साथ मजा आता है।

“मैं ऐसा ही करूँगा। आज रात मैं वेव सिनेमा में फिल्म देखने जा रहा हूँ। मैंने अपनी माँ को रात में बाहर जाने की अनुमति देने के लिए मना लिया है। मैंने कहा कि मैं एक

ज़िम्मेदार लड़की के साथ जा रहा हूँ, इसलिए कोई समस्या नहीं होगी।”
मैं मुस्कुराया। "तुम्हारी कमी मुझे खलेगी। मैं तुम्हें तुम्हारा सर्टिफिकेट ईमेल कर दूंगा।"
“इसमें कोई चिंता की बात नहीं है। मैंने आपसे बहुत कुछ सीखा है।”
"मुझे यकीन है कि इसमें सुरक्षा और जांच से संबंधित कुछ भी नहीं है?"
वह अपना सिर हिलाता है। "कुछ ऐसी चीजों के बारे में जो कहीं अधिक महत्वपूर्ण हैं।"
मैं उसे गले लगाने लगती हूँ, लेकिन वह खुद को ढक लेता है, इसलिए मैं पीछे हट जाती हूँ। और जब वह मुझे गले लगाने लगता है, तो मैं अपना आपा खो बैठती हूँ और समझ नहीं पाती कि आखिर है क्या। मैं उलझन में हूँ। हम दोनों उलझन में हैं। हम लगभग एक साथ अपने बालों को सहलाते हैं, जैसे सिर खुजा रहे हों, और एक-दूसरे से हाई फाइव करते हैं।
“जब वो तुम्हें दोबारा चिट्ठी भेजे तो मुझे बताना। मैं तुम्हारे साथ नहीं आ पाऊँगी, लेकिन मैं अपने मोबाइल फोन के ज़रिए तुमसे जुड़ी रहूँगी।”
“ज़रूर।” मैं मुस्कुराता हूँ।
वह आखिरी बार हाथ हिलाकर अलविदा कहता है और कहता है कि अगली बार किसी पारिवारिक पार्टी या ऐसे ही किसी मौके पर मिलेंगे, और फिर चला जाता है। मैं कुछ देर वहीं खड़ी रहती हूँ, एक अचानक खालीपन का एहसास होता है। मुझे पता है कि मैं उससे जल्द ही मिलूंगी। आखिर वह परिवार का ही हिस्सा था। और वह भी पश्चिम दिल्ली में ही रहता था। लेकिन फिर भी, मेरे अंदर एक अजीब सी निराशा थी। मुझे उसकी संगति अच्छी लगती थी। मैं उसे बहुत पसंद करती थी। मैं उसे याद करूंगी, उसकी मासूमियत, उसकी हाजिरजवाबी, उसकी तेज टाइपिंग और उसकी बेमिसाल हैकिंग को याद करूंगी।
जब तक हम दोबारा नहीं मिलते।

अध्याय अठहत्तर

यम प्रतीक्षा करता रहा।

उसने वही किया जो वह हमेशा करता था। वह दरवाजे को घूरता रहा। उसका बंगला बड़ा था, जिसमें यातना के औजारों और अभ्यासों के लिए एक भूमिगत गुफा थी। पहली मंजिल तक एक लकड़ी की सीढ़ी जाती थी और वहाँ से दूसरी सीढ़ी दूसरी मंजिल और छत तक जाती थी जहाँ एक और कमरा था। बैठक कक्ष रसोई से सटा हुआ था, एक स्लाइडिंग दरवाजे से अलग किया गया था जहाँ वह अक्सर सब्जियां पकाया करता था। एक लंबी खाने की मेज थी जिस पर फल रखे थे और बीच में एक मोमबत्ती स्टैंड था, जिसमें वह सुगंध के लिए सुगंधित मोमबत्तियाँ जलाता था। मेज के ठीक सामने दो सोफे और बीच में एक मेज थी। दीवार पर एक एलसीडी मॉनिटर लगा था और खिड़की पर लंबे मैरून रंग के पर्दे थे।

यम ा मेज पर बैठा था और उसकी निगाहें मुख्य द्वार पर टिकी हुई थीं। वह मेज पर उंगलियां थपथपा रहा था। उसने बाहर गाड़ी रुकने और मुख्य द्वार खुलने की आवाज सुनी थी। दरवाजा बंद नहीं था क्योंकि वह उसे बंद नहीं करना चाहता था। दरवाजा खुला और उसने उस इकलौते व्यक्ति को अंदर आते देखा, जिससे उसकी कभी-कभार बातचीत होती थी।

अपनी छड़ी और चोटी के साथ बृजेश खन्ना आकर्षक तो लग रहे थे, लेकिन थोड़े चिढ़े हुए भी। उनके चेहरे पर तनाव और तनाव साफ दिख रहा था। अपने गार्डों के स्थिर खड़े रहने के दौरान, वे सोफे की ओर चलते हुए अपनी छड़ी थपथपा रहे थे।

"गुर्दे कहाँ हैं?"

यम ने जोर से खांसा। "मेरे पास वह नहीं है।" वह ऐसा करने में असफल रहे क्योंकि इरावण ने उन्हें गुरु शिव को अपनी हिरासत में लेने की अनुमति नहीं दी थी और यही इस असहज मुलाकात का कारण था।

“तुम मुझे निराश कर रहे हो, मेरे दोस्त। ये क्या है?” उसने सिर हिलाया। “अरे बाप रे... जब तुम मेरे पास गठबंधन करने आए थे, तब तो तुम बहुत अच्छे इंसान थे, दूरदर्शी थे, मैं कहूँ। और अब, खुद को देखो। तुम पीले और कमजोर हो गए हो, मानो किसी ने तुम्हारी जान ले ली हो। तुम्हें कब एहसास होगा कि जब तुम मेरे पास आए, तो तुमने अपनी आत्मा बेच दी?”

“मुझे कोई आपत्ति नहीं थी,” यम ने फिर से खांसते हुए कहा। “मुझे आपकी संगति और आपके साथ का आनंद मिला, लेकिन मैं इससे अलग होना चाहता हूँ। स्पष्ट रूप से आप देख सकते हैं कि मैं बीमार हूँ।”
“तुम्हारी बीमारी से मुझे कोई लेना-देना नहीं है,” उसने उसकी ओर देखे बिना ही कहा। “मेरा काम ही मेरा काम है। जैसा मैंने वादा किया था, मैं तुम्हारी किडनी निकाल लूंगा और फिर तुम्हें छोटे-छोटे टुकड़ों में काट दूंगा।” इतना कहकर उसने अपना सिर घुमाया और उसके चेहरे पर बनावटी मुस्कान आ गई। “क्या तुम्हें यह ठीक लगेगा?”

अध्याय उनहत्तर

वर्धन काफी देर से अपना हाथ प्रीतिका के हाथ पर रखे हुए था, कभी उसे नीचे दबाता, कभी ऊपर उठाकर चूमता। उसने कभी सोचा भी नहीं था कि इसका अंत ऐसा होगा। उसने सोचा, किसी के साथ जो भी होता है, किसी न किसी कारण से होता है। उसने यम के बारे में जितना जानना चाहता था, उतना जान लिया था और अब वह प्रीतिका और अपनी माँ के लिए सुरक्षित महसूस करना चाहता था। वह सुरक्षित रहेगा। फिलहाल के लिए।
फिल्म देखने के बाद, वे राजौरी गार्डन स्थित वेव्स मॉल कॉम्प्लेक्स के बाहर, तारों भरी रात में, खाली पार्किंग में खड़ी अपनी कार की ओर चल रहे थे। उन्होंने कार को अंडरग्राउंड पार्किंग में पार्क नहीं किया था क्योंकि वहाँ किराया बहुत ज़्यादा था। उन्होंने कार को किसी सुनसान जगह पर, एक पुराने, टूटे हुए पेड़ की छाँव में पार्क करने का फैसला किया। जब वह अपनी सैंट्रो का लॉक खोल रहे थे, तभी प्रितिका ने उनसे कहा-
"मुझे उम्मीद है कि तुम ऐसा दोबारा नहीं करोगे, वर्धन।"
वर्धन ने उसकी ओर मुड़कर देखा। उसके बाल खुले हुए थे और उसने सलवार कमीज़ पहनी हुई थी, आँखों पर हल्का सा काजल लगा हुआ था। उसे अच्छा लगता था जब वह उसके सामने पारंपरिक अंदाज़ में पेश आती थी।
“मैं वादा करता हूँ, मैं ऐसा नहीं करूँगा, ठीक है?” उसने झूठ बोला।
“जब मैंने सुना कि तुम मेहता स्टील हत्याकांड में मौजूद थे, तो मैं बहुत चिंतित हो गया था। धिक्कार है, वह कितना भयानक था। मेरे बॉस को मारने वाला मृत्यु का देवता यम ऐसा करने में कैसे सक्षम हुआ?”

मुझे नहीं पता। उसमें वाकई कुछ प्रतिभा थी।
"वह एक बुरा आदमी है जो बुरे लोगों को नुकसान पहुंचा रहा है," उसने हंसते हुए कहा।
वर्धन मुस्कुराया। रात काफी हो चुकी थी, फिर भी कौवे कांव-कांव कर रहे थे। सड़क के दूसरी ओर उसे तंदूरी पैलेस दिखाई दिया, जो आधा बंद था लेकिन बत्ती जल रही थी। उसने प्रीतिका के लिए कार का दरवाजा खोलना शुरू ही किया था कि तभी उसकी नजर किसी चीज पर पड़ी; प्रीतिका के चश्मे में एक परछाई दिखी। वह अचानक मुड़ा और कुछ ही सेकंड में हथौड़े के हमले से बाल-बाल बच गया। उसने पीछे मुड़कर देखा। एक मूंछों वाला आदमी, जिसके बाल बिखरे हुए थे, रंग सांवला था और कपड़े गंदे थे, भूखी निगाहों से उसे घूर रहा था। उसने उसका चेहरा कहीं देखा था। सचमुच देखा था। और फिर उसे याद आया कि बचपन में उसने टीवी पर उसकी तस्वीर देखी थी। वह ऐसा चेहरा था जिसे वह कभी नहीं भूल सकता था। साइको यादव।

अध्याय अस्सी

स्वाति नोएडा स्थित क्लिनिक-सह-आवास पर पहुंचीं।
नौ बज रहे थे।
स्वाति ने लिफ्ट खराब होने के कारण चार मंजिल चढ़ने के बाद दरवाजा खटखटाया। एक महिला ने दरवाजा खोला और अंदर जाते ही उसे पृष्ठभूमि में चल रहे किसी टीवी सीरियल की आवाज सुनाई दी। उसने महिला को देखकर मुस्कुराते हुए कहा, "नमस्ते, मैं स्वाति कौशिक हूँ। मैं डॉ. आर.एस. मिश्रा के क्लिनिक में आई हूँ। क्या मैं सही जगह पर हूँ?"
वह महिला उत्साह से भर उठी और बोली, "अंदर आइए, अंदर आइए। मैं उन्हें बुलाती हूँ।"
वह डॉक्टर के भड़कीले फ्लैट में दाखिल हुई, जो धार्मिक कलाकृतियों से सजा हुआ था। उसने देखा कि एक छोटा बच्चा लिविंग रूम में अपने पावर रेंजर्स खिलौनों से खेल रहा था।
डॉ. आर.एस. मिश्रा ने प्रवेश किया और चेहरे पर हल्की सी मुस्कान लिए कहा- "मैं राकेश हूं, कृपया बैठ जाइए।"
"इस समय आपके यहाँ अचानक आने के लिए हमें खेद है।"
“अरे नहीं, नहीं, कोई बात नहीं,” उन्होंने सोफे पर बैठते हुए कहा। उन्होंने अपने बेटे ‘चिंटू’ को कहीं और जाकर खेलने का आदेश दिया और पूछा कि क्या हम कॉफी या चाय पीना चाहेंगे। स्वाति ने उन्हें धन्यवाद दिया लेकिन प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया।
स्वाति ने सोचा कि आरएस मिश्रा क्लिनिक पूरी तरह से बर्बाद हो गया। अदालती मामले के बाद ही इसकी हालत बिगड़ी होगी, जिसके चलते वे दिवालिया हो गए। राकेश की आँखों में घोर निराशा झलक रही थी और वह फिलहाल पैसे या काम के लिए कुछ भी करने को तैयार दिख रहा था।
"हम यहां सर्जरी के लिए नहीं आए हैं, डॉक्टर," उसने सीधे-सीधे कहा।
“ओह?” उसका उत्साह फीका पड़ गया। “तो फिर क्या बात है?”
"हम आपसे एक पूर्व मरीज के बारे में बात करना चाहेंगे।"
मैं उनके बारे में कोई जानकारी नहीं दे सकता। यह गोपनीयता का नियम है।

स्वाति ने पांच हजार रुपये का एक बंडल निकाला और उसे मेज पर रख दिया।
मुझे उम्मीद है कि आपके नियम ों में थोड़ा बहुत बदलाव किया जा सकता है।

अध्याय इक्यासी

यम अपने मौके का इंतज़ार कर रहे थे। उन्हें एहसास हुआ कि उन्हें कुछ ज़ोरदार कहना होगा, कुछ ऐसा... कुछ ऐसा जिसके बारे में बृजेश के सबसे करीबी लोगों को भी पता न हो।

"आप मेरी किडनी निकाल सकते हैं और मुझे जला सकते हैं, लेकिन मुझे यह पूछना ही होगा - कॉस्मो कैसा है?"

बृजेश हमेशा शांत और संयम ित रहता था, और धमकी देते समय भी उसमें सम्मान की भावना झलकती थी। लेकिन अब, सदमे से उसकी आँखें एक पल के लिए चौड़ी हो गईं, फिर उसने खुद को संभाला। "तुम्हें उसके बारे में कैसे पता?"

"आपका कुत्ता कैसा है, श्री खन्ना?"

तुम मेरी जासूसी कर रहे हो।

मैं अपने सभी सहयोगियों पर जासूसी करता हूँ। इससे मुझे संघर्षों के दौरान बढ़त मिलती है।

“तुम गए काम से, मेरे दोस्त।” उसने दांत पीसते हुए कहा। “तुम गए काम से। मैं तुम्हें बुरी तरह मारूंगा। मैं तुम्हें वहीं लिटाकर तुम्हारी गांड में बहुत दर्द करूंगा।”

“क्या तुम कॉस्मो के साथ पहले से ही ऐसा नहीं करते?” यम ने अपनी भौंहें चढ़ाते हुए ऊँची आवाज़ में पूछा। “बेचारा लैब्राडोर—पता नहीं तुम उसके साथ क्या-क्या करते हो।”

“मैं कुछ नहीं करता।” उसने अपनी नाक के नथुने फुला लिए।

“आपका अपने कुत्ते के साथ एक खास रिश्ता है, श्री खन्ना। इसे पशुप्रेम कहते हैं।” वह मुस्कुराया।

और तुम सबसे भयानक नरक के हकदार हो।

अध्याय बयासी

अगली बार जब साइको यादव ने हमला किया तो वर्धन के पास उसका हाथ पकड़ने का समय था, लेकिन उसकी भुजाएँ बहुत मजबूत थीं। वे कठोर और शक्तिशाली थीं। प्रीतिका की चीख ने उसका ध्यान भटका दिया और उसी क्षण यादव ने उसकी छाती पर जोरदार प्रहार किया। वह कार से टकराकर पीछे गिर पड़ा, तभी साइको यादव ने अपने हथौड़े से उसके गालों पर एक और जोरदार प्रहार किया और वर्धन को लगा जैसे उसके दांत टूट रहे हों और मुंह से खून बह रहा हो।

“नहीं!” प्रीतिका चिल्लाई। वर्धन अचंभित होकर देख रहा था कि प्रीतिका को उसके बालों से खींचकर उसके ठीक बगल में जमीन पर धकेल दिया गया।

उसके सामने धुंधली सी तस्वीरें थीं, जो उसने उसके साथ की थीं। हर बार जब वह पलक झपकाता और आंखें खोलता, तो एक अलग स्थिर छवि दिखाई देती। पहली छवि में उसने प्रितिका की खोपड़ी को कुचला था। फिर उसके चेहरे पर खून के छींटे दिखाई दिए। फिर वो दर्द भरी चीखें सुनाई देना बंद हो गईं, लेकिन उसने देखा कि मनो यादव उसके पास बैठा है और एक पतला सा चाकू निकाल रहा है। उसने प्रितिका की चमड़ी को चीरना और नोचना शुरू कर दिया, और हर टुकड़े को खाने लगा। उसने उसकी किडनी पर भी हमला किया। वह सिर को चीरकर खोपड़ी खाना चाहता था, लेकिन छोटे चाकू से ऐसा करना मुश्किल था, इसलिए उसने उसके कान काट दिए, उसकी आंखें हर समय गुस्से से लाल थीं।

फिर वह उसकी ओर बढ़ा।

अध्याय तिरासी

आप किसके बारे में जानना चाहते हैं?

“हिश्मा राशिद,” उसने कहा।

उसने अपने होंठ चाटे। “मुझे वह याद है। वह उस सब घटना से पहले मेरी आखिरी मरीज़ थी।” उसने माथे पर शिकन डाली।

स्वाति ने हमेशा की तरह अपना पीला पैड निकाल रखा था, जबकि अर्जुन अपनी भौंहें कसकर दबाए और अपनी निगाहें डॉक्टर मिश्रा पर टिकाए शांति से उनकी बात सुन रहा था।

"क्या आपको वह कारण समझ आया जिसके चलते उसने ऐसा किया?"

दरअसल, उसने वजह बताई थी। उस समय मेरा अपना क्लिनिक था, मैं अपने अपार्टमेंट से सर्जरी नहीं करती थी। हर जेंडर रीअसाइनमेंट सर्जरी से पहले, हम मनोवैज्ञानिक और मानसिक मूल्यांकन करते थे ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि प्रक्रिया से गुजरने वाला व्यक्ति मानसिक रूप से स्वस्थ है। इसलिए, हमने उससे कुछ सवाल पूछे ताकि यह पक्का हो सके कि उसका दिमाग पूरी तरह ठीक है और उसने हमें बताया कि वह ऐसा क्यों करवाना चाहती थी। उसके साथ बलात्कार हुआ था, लेकिन वह उससे उबर चुकी थी। यह बहुत पहले की बात है, किशोरावस्था में, लेकिन अब वह ठीक थी। वह खुद एक डॉक्टर थी और एक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय से स्नातक थी। उसका करियर अच्छा चल रहा था। लेकिन बलात्कार की घटना उसके दिमाग में बैठ गई थी और सड़क पर चलते समय उसे डर लगता था। और इसीलिए वह पुरुष बनना चाहती थी।

“वह पुरुष बनना चाहती थी क्योंकि उसे एक महिला के रूप में असुरक्षित महसूस होता था?”

"उसका यही मतलब था, लेकिन उसने कहा नहीं। फिर भी हम उसके साथ आगे बढ़े, क्योंकि हमें पैसों की जरूरत थी और उसने हमें काफी पैसे दिए।"

"तो, जब वह पुरुष थी, तो उसे कैसा महसूस हुआ?"

“वह बार-बार हमारे पास आती रही, सवाल पूछती रही वगैरह। माफ कीजिएगा, मेरा मतलब था, ‘वह’,” वह हँसते हुए बोला। “उसे कुछ दर्द की समस्या थी जिसे हमने ठीक कर दिया और वह जाने के लिए तैयार था।”

क्या आपके पास उसकी तस्वीर है?
"मुझे खेद है कि अदालती मामले के बाद मैंने सब कुछ जला दिया। मैं नहीं चाहता था कि पुरानी यादें फिर से लौट आएं।"
“आपके अदालती मामले के बारे में,” उसने अपने पैड पर एक नज़र डालते हुए बात शुरू की। “सर्जरी के बाद फर्जी पहचान देने के आरोप में आप पर मुकदमा चला था। क्या आपने हिश्मा के मामले में भी ऐसा ही किया था? मेरा मतलब है, पुरुष होने के बाद उसे नई पहचान की ज़रूरत तो पड़ी ही होगी, है ना? क्या आपके पास इस बारे में कोई जानकारी है?”
उनकी आंखें उस पल बंद हो गईं। “मुझे सोचने दीजिए। मैं नोएडा में ही एक आदमी के साथ काम करता था, जो मेरी मदद करता था। उसने मुझे हिश्मा की नई पहचान की जानकारी भेजी थी और वह अभी भी मेरे याहू ईमेल में होगी। मैं अब इसका इस्तेमाल नहीं करता, लेकिन उस समय करता था जब यह काफी लोकप्रिय था। अब जीमेल है। मेरे उसमें आठ हजार से ज़्यादा ईमेल हैं और वे सब अतीत की बात हैं। आपके पास ईमेल पता और पासवर्ड है और आप उन्हें बेझिझक देख सकते हैं। मुझे कोई दिक्कत नहीं है। अब यह सब बीती बात है और पुलिस ने इसकी दो बार जांच भी कर ली है।”
स्वाति यह सुनकर मुस्कुराई। डॉ. मिश्रा ने पैड पर आवश्यक जानकारी लिख ली। जब स्वाति और अर्जुन फ्लैट से निकले, तो उसने ईमेल आईडी देखी। उसमें लिखा था: myloveismyself।
बदसूरत लोग कभी-कभी बहुत आत्ममुग्ध हो सकते हैं।

अध्याय चौरासी

यम ा ने देखा कि अंगरक्षक उसकी ओर बढ़ रहे हैं, लेकिन वह पहले से ही तैयार था, पिछली बार की तरह नहीं जब उन्होंने उसे अचानक पकड़ लिया था। उसने क्राव मागा सीख ली थी और कोई उसे धमका नहीं सकता था। उसने अच्छी तरह से निशाना लगाना भी सीख लिया था। उसे सब कुछ सीखना पड़ा था ताकि वह आज जैसा व्यक्ति बन सके।

जैसे ही पहला गार्ड आगे बढ़ा, यम ने घुटने टेक दिए और उसके घुटनों पर वार किया, जिससे जोड़ों में चोट लगी। उसने झट से गार्ड की कलाई की नस काट दी और फिर उसके गले पर भी वार किया। गार्ड गिर पड़ा, जिससे दूसरा गार्ड चौंक गया। उसने बंदूक निकाली, लेकिन यम इसके लिए भी तैयार था। उसने उससे पहले ही अपनी बंदूक निकाली और सीधे उसके सिर में गोली मार दी।

फिर उसकी बंदूक बृजेश की ओर तान दी गई।

“हे भगवान!” बृजेश रो पड़ा।

मुझे वह छड़ी हमेशा से नापसंद थी। उसे फेंक दो।

बृजेश ने तुरंत ऐसा किया और अपनी बाहें ऊपर उठा लीं। "मेरे दोस्त," वह हंसते हुए खांसा। "मेरा इरादा तुम्हें चोट पहुंचाने का नहीं था, तुम्हें पता है। मैं तो बस मजाक कर रहा था।"

“बिल्कुल, अब कृपया आगे बढ़ें।”

"कृपया मुझे मत मारो।"

“मैं तुम्हें नहीं मारूंगा।” उसने उसे आश्वासन दिया।

बृजेश अपने हाथ ऊपर उठाए यम राज के घर के गलियारों से होते हुए अंततः एक भंडारगृह में पहुँचा। उसने दरवाजे खोले जहाँ से सीढ़ियाँ तहखाने की ओर जाती थीं।

“आप मुझे कहाँ ले जा रहे हैं?” उसने पूछा।

“तुम्हें पता चल जाएगा, आगे बढ़ो!” उसने आदेश दिया।

बृजेश सीढ़ियों से नीचे उतरा और यम उसके पीछे-पीछे उस अंधेरी गुफा में चले गए जिसे उन्होंने खुद बनाया था। बृजेश धीरे-धीरे आगे बढ़े, मानो उस जगह का जायज़ा ले रहे हों। यम ने उन्हें प्रकाश की दिशा में चलने का आदेश दिया, जबकि बृजेश गुफा

की दीवारों पर बने चित्रों को निहार रहे थे। अंत में यम ने बृजेश को उस कमरे की ओर जाने दिया जहाँ काँटों वाला कृत्रिम पेड़ लगाया गया था।
“क्या यह वही नहीं है जो मेरे इंजीनियर ने आपके लिए बनाया था?” बृजेश ने पूछा।
यम मुस्कुराए। उन्होंने इरावण को फिर से भगाने के लिए पत्र भेजने के बारे में सोचा, लेकिन फिर उन्होंने अपना सिर हिला दिया। उन्हें अब इरावण की कोई परवाह नहीं थी। वे चाहते थे कि बृजेश को उसके किए की सज़ा मिले, भले ही उसमें यम भी शामिल थे।
"हां यह है।"

अध्याय पचासी

अगले दिन मुझे सबसे पहले वर्धन की मौत की खबर मिली। वह पूरी रात लापता था और मेरी बहन पुलिस के साथ मिलकर उसे ढूंढने की पुरजोर कोशिश कर रही थी। उसका क्षत-विक्षत शव वेव्स सिनेमा से एक किलोमीटर दूर एक पेड़ के नीचे मिला, जिसके पास ही मृत प्रीतिका पड़ी थी। उसके चेहरे पर चाकू से निशान थे, दिल निकाल लिया गया था और उसके अंग टुकड़े-टुकड़े कर दिए गए थे।
पुलिस का दावा था कि यह काम साइको यादव नाम के उस पागल नरभक्षी का था, जो पहले अपने शिकारों को पीट-पीटकर मार डालता था और फिर उन्हें खा जाता था। उसके पास ऐसा करने का कोई कारण नहीं था। उसे बस इंसानी मांस पसंद था। जाहिर है, कुछ लोग जन्म से ही क्रूर होते हैं।
पुलिस ने हमेशा की तरह कहा कि वे साइको यादव को ढूंढ निकालेंगे और उसी क्षण मुझे एहसास हुआ कि वे कितने लाचार थे। उनके पास कोई शक्ति नहीं थी। उन्हें कोई चिंता नहीं थी। उन्होंने बस वही कहा जो उन्हें कहना था। नुकसान का एहसास सिर्फ हमें ही हुआ। मैंने तो ज़ोरावर को भी इस मामले की व्यक्तिगत रूप से जांच करने, इसे डीसीपी के पास ले जाने और इस शहर पर मंडरा रहे खतरे के बारे में सबको बताने के लिए मजबूर किया।
हम सब श्मशान घाट पर थे। मेरी बहन फूट-फूटकर रो रही थी, मेरा बेटा और बेटी एक-दूसरे का हाथ पकड़े सिसक रहे थे। बस मेरी पत्नी रुत्वी को देखकर हैरानी हुई, जिसने अपने सारे आँसू रोक लिए थे। वैसे तो वह अक्सर तनाव में आकर रोती थी,

लेकिन अब वह खुद पर काबू पा रही थी और मुझे इस बात की खुशी थी। मुझे एहसास हुआ कि अब उसके लिए आगे बढ़ने का समय आ गया है।
मैं पूरी तरह से टूट गया था और अपने प्रिय भतीजे वर्धन के खोने से क्रोध, पश्चाताप और दुख से ग्रस्त था।
मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या करूं। और जब मुझे आगे बढ़ने का रास्ता नहीं सूझता, तो मैं तपस्व गांधी के पास जाता हूं, उन्हें अपनी कहानियां, अपने विचार और अपनी भावनाएं बताता हूं।
मैं अपनी हमेशा वाली कुर्सी पर बैठा रहता हूँ, मेरी पीठ में दर्द हो रहा होता है और मैं उस गंजे, चश्मा पहने हुए आदमी को देखता रहता हूँ जिसके हाथों में हमेशा की तरह मरीजों की सूची होती है।
“तुम्हारे इस नुकसान के लिए मुझे बहुत खेद है, इरावान।” उन्होंने मुझे मेरे पहले नाम से पुकारा। मुझे एहसास हुआ कि उनकी आवाज़ कितनी मधुर है, शहद जैसी। यह किसी मरहम की तरह नसों में समा जाती है।
आज मेरे पास कुछ भी नहीं है।
क्या तुम रोईं?
“नहीं,” मैंने सिर हिलाते हुए कहा। “मैं ऐसा नहीं कर सका।”
"क्या तुम सच्चाई को मानने से इनकार कर रहे हो, इरावान?"
मुझे नहीं पता कि मैं किस स्थिति में हूँ।
वह कंधे उचकाते हुए कहता है, "अगर रघु यादव आपके सामने आ जाए तो आप उसके साथ क्या करेंगे?"
मैं रुक जाता हूँ। "मैं उसे मार डालूँगा।"
क्या आप उसकी हत्या को जायज ठहराते हैं? क्या इससे आपको खुशी मिलेगी?
“खैर, इससे वह रोने लगेगा,” मैंने जवाब दिया।
“यम , जो एक सतर्कतावादी है और जिसे अब मीडिया और जनता द्वारा साइको यादव को ढूंढने के लिए कहा जा रहा है, के बारे में क्या? क्या आपको लगता है कि यम को यह काम करना चाहिए?”
मैंने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। "मुझे नहीं पता। मैं तो बस उसे मार डालूँगी।"
वह अपनी निगाहें झुका लेता है। "इरावन, तुम्हारे काम हिंसक नहीं होने चाहिए।"

“डॉक्टर गांधी, मैं यहाँ सिर्फ इसलिए नहीं आया हूँ क्योंकि आज हमारा नियम ित थेरेपी सेशन है। मैं यहाँ इसलिए आया हूँ क्योंकि मैं इससे बाहर निकलना चाहता हूँ। मुझे अब इसकी ज़रूरत नहीं है। वास्तव में, मुझे इसकी आवश्यकता ही नहीं है।”
वह अपनी आँखें सिकोड़ता है। "ऐसा क्यों?"
मुझे एहसास हुआ कि मुझे अपनी अंतरात्मा को समझने के लिए किसी और की बात सुनने के अलावा कुछ और करना होगा।
“कोई बात नहीं, मैं समझता हूँ। आपको समय चाहिए। हमारी पिछली मुलाकात के तौर पर, अगर बात यही है तो...” वह अपनी मरीज़ों की डायरी टेबल पर रख देते हैं। “मैं आपको सलाह दूंगा कि आप अपनी पत्नी के साथ घूमने जाएं, क्योंकि अब वह ठीक लग रही हैं और मुझे लगता है कि आप उनके साथ आगे बढ़ सकते हैं। अब आपके अपने बच्चों के साथ भी अच्छे संबंध हैं। मेरी नज़र में तो सब कुछ सकारात्मक है।”
मैंने जबरदस्ती मुस्कुराने की कोशिश की। "यह अच्छी बात है; आप चाहते हैं कि मैं क्षितिज देखूं।"
वह अपनी उंगलियां क्रॉस करता है। "क्या हम सबको ऐसा नहीं करना चाहिए?"
“मुझे अब जाना चाहिए,” मैं उठते हुए कहता हूँ। “आपसे परामर्श करके अच्छा लगा।”
“इरावन, आपका यहाँ हमेशा स्वागत है। आप एक बेहतरीन ग्राहक हैं, आम ग्राहकों से बिल्कुल अलग और राहत देने वाले। आपने आखिरकार खुद को एक ऐसे मुकाम पर पहुँचा दिया है जो मुझे कहना होगा कि लगभग एक आध्यात्मिक स्तर है।”
“धन्यवाद,” मैंने जवाब दिया।
“मैं आपको एक प्रमाण पत्र लिखकर दे दूंगा जिसमें लिखा होगा कि आपकी परामर्श प्रक्रिया पूरी हो गई है। यह सिर्फ एक औपचारिक प्रक्रिया है, चिंता की कोई बात नहीं।”
जब वह दूसरे कमरे की ओर चला गया तो मैंने सिर हिलाकर अभिवादन किया। मैंने उसके कमरे में चारों ओर देखा और सोचा कि शायद यह आखिरी बार होगा जब मैं यहाँ आऊँगी। हालाँकि, मैंने उसे एक बात नहीं बताई थी, और वह यह थी कि मैं साइको यादव को हर गली और हर कोने में ढूँढूँगी ताकि पुलिस के पहुँचने से पहले उसे ढूंढ सकूँ और फिर उसके सिर में गोलियाँ दाग दूँगी।
मैं मरीज़ की डायरी देखती हूँ, जिस पर वह हमेशा कुछ न कुछ लिखता रहता है। उसमें क्या है, सिर्फ़ चित्रकारी है या सत्रों का पूरा विवरण, यह जानने की मेरी जिज्ञासा

मुझे मजबूर करती है कि मैं उसे उठाऊँ और खोलूँ। जैसे ही मैं पन्ने पलटती हूँ, मुझे एहसास होता है कि इस डायरी में तस्वीरें हैं। हर पन्ने पर बाईं ओर एक तस्वीर और दाईं ओर उस तस्वीर में मौजूद व्यक्ति के बारे में एक पैराग्राफ है।
जैसे ही मैं तपस्व द्वारा अपने प्रत्येक रोगी के बारे में लिखी गई बातों को देखने के लिए पन्ने पलटता हूँ, मुझे एक पृष्ठ के बाईं ओर दक्ष गलगोटिया की तस्वीर दिखाई देती है।

अध्याय छियासी

अर्जुन वहीं बैठा था जबकि स्वाति उसके बगल में बैठी थी और हिश्मा से संबंधित कुछ भी खोजने के लिए ईमेल खंगाल रही थी। उन्हें तीन दिन लग गए और जब आखिरकार उनका सब्र टूट गया, तब उन्हें हिश्मा राशिद का नाम मिला।

हिश्मा की पहले और बाद की तस्वीरें डाउनलोड करने के बाद, स्वाति ने एक महिला का उज्ज्वल और मुस्कुराता हुआ चेहरा और झुर्रियों वाले, चौड़े जबड़े वाले और मुंडे हुए सिर वाले एक पुरुष की तस्वीर देखी।

उस आदमी की तस्वीर देखते ही उसे एहसास हुआ कि उसने यह चेहरा कहीं देखा है। वह जवान था। उसने ड्राइविंग लाइसेंस, पैन कार्ड, नया पता, नई जन्मतिथि और नया नाम दर्ज करने वाली अन्य डाउनलोड की गई फाइलें खोलीं।

जब उसे एहसास हुआ कि उसने वह नाम देखा था और उस व्यक्ति से बात भी की थी, तो वह चौंक उठी।

तपस्व गांधी।

ध्याय सत्तासी

मैं पन्ने पलटता रहता हूँ, और ऐसा करते हुए मुझे उन सभी के नाम दिखाई देते हैं जो यम के शिकार हुए थे। उनमें रोहन खान, उदय पृथ्वी, कबीर त्रिवेदी और फरीक अब्दुल्ला थे। यहाँ तक कि बृजेश खन्ना नाम का एक व्यक्ति भी था। और जैसे-जैसे मैं अनुच्छेद पढ़ता जाता हूँ, मुझे दिखता है कि वहाँ उनके पापों के अलावा और कुछ नहीं है, और उनके पापों के नीचे उनके लिए उचित दंड लिखा हुआ है। पूरा रोगी वृत्तांत नामों, विभिन्न नरकों और विभिन्न पापों से भरा हुआ है। सैकड़ों पापी थे, जिन्हें अभी तक वश में नहीं किया गया था और यातनाएँ दी जानी थीं।

यह खौफ मेरे दिल को दहला देता है और मुझे निगलने में मुश्किल होती है। मुझे एहसास होता है कि यम हर पल मेरे सामने ही था। सौभाग्य से, अभिलेखों में मेरे बारे में मेरे विचारों और धारणाओं के अलावा कुछ भी दर्ज नहीं है।

“हेलो,” एक कर्कश आवाज सुनाई देती है।

मैं मुड़कर देखता हूँ तो तपस्व सीधा खड़ा है, मेरी तरफ देखकर मुस्कुरा रहा है। “तुम्हें मेरी आवाज़ की प्रतिभा पर आश्चर्य होता होगा?” वह यम की तरह कर्कश आवाज़ में कहता है और फिर उसे स्त्री जैसी आवाज़ में बदल देता है। “मुझे तुम्हारा आश्चर्य भरा चेहरा बहुत पसंद है।”

"तुम चाहते थे कि मैं इसे देखूं, है ना?"

"बिल्कुल।"

वह अपने हाथों को पीठ पर रखकर बड़े ही सलीके से चलता है।

"आप कौन हैं?"

आप मुझे बहुत अच्छी तरह जानते हैं और आप मुझे हर दिन याद करते हैं।

“मैं तुम्हें नहीं जानता।” मैं उसे घूरता हूँ।

“क्या आपको हिश्मा राशिद याद हैं?”

मैंने अपना सिर हिलाया। "नहीं।"

“जिस लड़की के पिता की तुमने हत्या की थी। मैं तब बहुत छोटी थी, लेकिन मुझे कहना पड़ेगा कि तुम्हारी याददाश्त वाकई खराब है।”

मेरी आँखें चौड़ी हो गईं। "ये...तुम...तुम..."

“कोई बात नहीं।” वह बात टाल देता है। “तुमने मेरे पिता को मार डाला, तुमने मुझे बलात्कार होते देखा लेकिन कुछ नहीं किया। मुझे इससे उबरने में समय लगा, लेकिन मैं उबर गया। फिर, मैं ऊब गया और मैंने मर्द बनने का फैसला किया क्योंकि मुझे लगा कि मर्द होने के अपने फायदे हैं क्योंकि तुम लगातार खतरे में नहीं रहते। तुम सुरक्षित रहते हो। तुम शिकारी होते हो। इसलिए, मैं शिकारी बन गया।”
“क्या यही वजह थी कि तुमने मुझे चुना?” मैंने आँखें सिकोड़ लीं। “तुम बदला लेना चाहते थे?”
“क्या तुम्हें सच में ऐसा लगता है?” वह हंसता है। “जब तुम पहली बार अंदर आए, तो मैंने तुम्हें पहचान लिया।” वह खांसता है। “मुझे गुस्सा तो आया ही था, और मैं तुम्हें वहीं गला घोंट देना चाहता था, लेकिन फिर तुमने अपने उन पछतावों के बारे में बात करना शुरू किया, सेना के दिनों के पछतावे और कैसे तुम बदल गए थे। तब मुझे एहसास हुआ कि तुम एक बेहतर इंसान बन गए हो।”
लेकिन आप माफ नहीं करते?
“मैं ऐसा कभी नहीं करता।” वह फिर खांसता है। “लेकिन, देखो, तुमने मुझे गलत समझा है। मैं बदला नहीं लेना चाहता, इरावान, मैं किसी और को ढूंढ रहा हूँ।”
"क्या?"
“मैं अपना मीठा बदला ले सकता हूँ और तुम्हें एक और लाश बना सकता हूँ, लेकिन यह इस शहर के लोगों के साथ अन्याय होगा। वे इससे कहीं अधिक के हकदार हैं। वे बेहतर जीवन के हकदार हैं। मैं स्वार्थी होकर तुम्हें अभी मार सकता हूँ...” वह आत्मविश्वास से सोचता है, “...लेकिन वे एक संभावित यम राज को खो देंगे।”
"अगर तुम मुझे मार दोगे तो वे यम को कैसे खो देंगे?"
वह मेरे पास आता है और अपने दोनों हाथ मेरे कंधों पर रख देता है।
"क्योंकि मैं चाहता हूं कि तुम अभी वही बन जाओ।"

अध्याय अस्सी आठ

यह तो तपस्व गांधी ही थे। सब कुछ समझ में आ गया। इसीलिए उन्होंने स्वाति से कहा था कि उनके बारे में कोई फाइल नहीं है, ऐसा कुछ भी नहीं जिससे स्वाति को हिश्मा राशिद के बारे में और जानकारी मिल सके। वह उसे टालना चाहते थे। स्वाति को याद आया कि अस्पताल में उन्होंने एक बार उन्हें 'श्रीमती वर्मा' कहकर पुकारा था, लेकिन उन्होंने उस पर ध्यान नहीं दिया था।

अब वह अस्पताल की रिसेप्शनिस्ट से अपने आकर्षक व्यक्तित्व का इस्तेमाल करके पता प्राप्त करने के बाद उसके क्लिनिक की ओर जा रही थी।

डॉ. तपस्व गांधी, आपको बहुत से सवालों के जवाब देने हैं।

अध्याय नवासी

मैं गुफा में उतरता हूँ जहाँ वह मुझे अपने पीछे आने के लिए कहता है। मैं चारों ओर घूमता हूँ और इस दौरान मैं उस गुफा को निहारता हूँ जिसकी अपनी अलग ही विशेषताएँ और अपना ही एक अलग सा वातावरण है। तो, यही वह जगह है जहाँ वह उन्हें यातनाएँ देता है। मुझे एक छोर पर एक खून से सना हुआ कृत्रिम पेड़ भी दिखाई देता है, लेकिन मैं उसकी तेज़ दुर्गंध के कारण उसे अनदेखा कर देता हूँ। मैं दूसरे छोर पर जाता हूँ जहाँ मैं एक अलग, खुले मैदान में पहुँच जाता हूँ, जिसकी दीवारों पर चाक से चित्रकारी की गई है। ज़मीन पर प्रकाश की कुछ ही किरणें छनकर आती हैं और भयानक परछाइयों की तरह नाचती हैं।

और बीच में, मुझे साइको यादव बेसुध पड़ा दिखाई देता है। वह बेहोश है, उसके मुंह से लार टपक रही है, और उसके पेट के चारों ओर एक कपड़ा लिपटा हुआ है। अपने भतीजे वर्धन के हत्यारे को अपने सामने देखकर मेरे मन में क्रोध और पश्चाताप का सैलाब उमड़ आता है।

“मैंने उसे फुटपाथ पर सिर पर टोपी ओढ़े शांति से सोते हुए पकड़ा। सच कहूँ तो वह ज़्यादा बुद्धिमान नहीं है। उसका पाप नरभक्षण है,” यम कहते हैं। “रक्षोगना भोजन उसका नरक है। उसकी सज़ा यह है कि उसका शरीर चीर दिया जाएगा और वह वर्धन की तरह दर्द से कराह उठेगा।”

मुझे अब भी समझ नहीं आ रहा। तुम मुझे मारना क्यों नहीं चाहते?

"क्योंकि आप एक अच्छे इंसान हैं, और मेरे नाम को आगे बढ़ाने के लिए सही व्यक्ति हैं।"

“आप जारी क्यों नहीं रख सकते?”

“मुझे फेफड़ों का कैंसर है।” वह सिर हिलाते हुए कहते हैं, “मेरा कीमोथेरेपी चल रहा है, लेकिन इसका कोई असर नहीं हो रहा। यह मुझे कमजोर कर रहा है। मेरे डॉक्टर का कहना है कि अब बस कुछ ही हफ्ते बचे हैं। मैं ऐसे और नहीं जी सकता। मुझे किसी ऐसे व्यक्ति की ज़रूरत है जो इस प्रतीक को आगे ले जाए। मैं चाहता हूँ कि आप यम बनें।”

लेकिन... वो समय सीमा और नाम क्यों? आप मुझे इधर-उधर क्यों दौड़ाना चाहते थे?

“क्योंकि मैं चाहता था कि तुम अनैतिकता, भ्रष्टाचार और भयावहता को देखो और मजबूत बनो। यह सब एक परीक्षा थी, एक प्रशिक्षण सत्र था, अंतिम क्षेत्रीय अभियान के लिए। इन सबने तुम्हें इस क्षण तक पहुँचाया है। संकोच मत करो। इसे थाम लो। अंततः तुम अपने भाग्य को अपने सामने देख रहे हो। इसे स्वीकार करो।”
"आपको इतना यकीन कैसे है कि मैं इसे ले लूंगा?"
"क्योंकि आप सचमुच ऐसा चाहते हैं—और यह आपकी पसंद है।"
“मेरे परिवार का क्या होगा?”
“तुम दोहरी जिंदगी जी सकते हो। हर कोई जीता है। मैंने तुम्हारे घर के खर्चों के लिए बहुत सारा पैसा जमा कर रखा है। मैंने अपनी वसीयत में यह घर भी तुम्हारे नाम कर दिया है। यह तुम्हारा है। तुम अब कानूनी तौर पर इसका इस्तेमाल कर सकते हो, और इस गुफा का भी। स्प्रे पेंट इस गुफा का हिस्सा है, और सींग भी। ये प्रतीक का हिस्सा हैं। और मेरी लॉगबुक में उन सभी लोगों के नाम हैं, जो किसी न किसी कारण से मरने के लायक थे। यह तुम्हारे काम आएगी।”
“मैंने सोचा...मैं...” मैं आह भरती हूँ। मुझे समझ नहीं आ रहा कि असल में क्या हो रहा है—इतनी सारी भावनाएँ, इतनी सारी चिंताएँ और समस्याएँ; मुझे सच में नहीं पता कि मुझे इस समय कैसा महसूस करना चाहिए। “मुझे माफ़ करना कि मैंने तुम्हारे पिता को मार डाला और मैं कुछ नहीं कर सकी...”
“वह तो बहुत पहले की बात है। अब की बात है। मैंने सब कुछ सुना है, उन परामर्शों के दौरान आपने जो भी महसूस किया,” वह बीच में ही रुककर बोलता है। “आपमें बेहतर बदलाव आया है और इसीलिए मैं चाहता हूं कि आप इस पद को संभाले रखें।”
“तो, क्या आपको नहीं लगता कि जब आपने मुझे एक और मौका दिया, तो साइको यादव जैसे लोग...” मैं साइको यादव की ओर गर्दन घुमाकर देखता हूँ, “...एक और मौके के हकदार हैं।”
उसके होठों पर मुस्कान तैर रही थी तभी उसने खांसा। “मैं एक अलग यम था। तुम भी अलग हो सकते हो। कोई नियम नहीं हैं। देखो, तुम बस एक प्रतीक लिए घूम रहे हो, एक काला साया जो दिल्ली के अंधेरे कोनों में मंडराता है।” उसने अपनी जैकेट की जेब से एक खंजर निकाला और मुझे थमा दिया।
“यह तुम्हारी मर्ज़ी है। या तो तुम साइको यादव को उसकी करनी का फल दो या उसे दूसरा मौका दो।” उसका हाथ मेरे कंधे पर पड़ता है। “उस दिन जब तुमने मेरी मदद

की थी, तब मुझे एहसास हुआ कि तुम बिल्कुल मेरे जैसी नहीं हो, लेकिन तुम भी एक मिसाल बनना चाहती थी। मुझे लगता है, मैं कुछ ज़्यादा ही कठोर था और शायद इस शहर को एक ऐसे नायक की ज़रूरत है जो इतना क्रूर न हो।" और इतना कहकर वह चलने लगता है। "अब सब कुछ तुम्हारा है।" उसकी आवाज़ गूंजती है जैसे-जैसे वह मुझसे दूर चला जाता है।
"आप कहां जा रहे हैं?"
"छुट्टियों के लिए। मैं तो मरने ही वाला हूँ, इरावन। बस यही उम्मीद है कि मेरी मौत मौज-मस्ती करते हुए हो," वह हँसता है और गूँज बंद हो जाती है।
और अब, मेरे पास खंजर है, दंड देने वाले की शक्ति है, और मेरे सामने पीड़ित है - मेरे भतीजे वर्धन का हत्यारा, साइको यादव।

अध्याय नब्बे

स्वाति बड़े बंगले तक पहुँची और कुछ देर तक मुख्य द्वार पर ज़ोर-ज़ोर से दस्तक देने के बाद, उसे एहसास हुआ कि दरवाज़ा पहले से ही खुला हुआ है। वह अंदर चली गई और चारों ओर देखने पर उसने बंगले का आलीशान वातावरण देखा जो बिल्कुल खाली था। उसने चारों ओर देखा; दरवाज़े खोले, नाम पुकारे, लेकिन उसे समझ नहीं आ रहा था कि कौन कहाँ है। आखिरकार, वह दफ्तर या दफ्तर जैसे दिखने वाले कमरे में पहुँची जहाँ उसने एक साधारण मेज़ और कुर्सी देखी, जो आमतौर पर मनोचिकित्सा कक्षों में होती है। फिर उसकी नज़र कूड़ेदान पर पड़ी और उसने उसमें पड़े खून से सने नैपकिन को घूर कर देखा।

यम खांस रहा था।

उन्हें कोई बीमारी थी, शायद फेफड़ों से संबंधित या कुछ और। वह मेज के पास गईं और किताबों व पुरस्कारों जैसी चीजों को खंगालने लगीं, मरीज की डायरी ढूंढने की कोशिश कर रही थीं, लेकिन उन्हें कुछ नहीं मिला। हर मनोचिकित्सक के पास मौजूद मरीज का रिकॉर्ड गायब था।

वह जा चुका था। निराश होकर वह वापस घर लौट आई और थोड़ी देर आराम करने के बाद उसने उस नंबर पर कॉल करने की कोशिश की जिससे तपस्व ने उसे कॉल किया था, लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। नंबर पहुंच से बाहर था।

उसने टीवी पर समाचार देखा और पाया कि साइको यादव को पकड़कर जिंदा ही पुलिस स्टेशन के बाहर सौंप दिया गया है। एसएचओ जोरवर पटेल पत्रकारों से बात कर रहे थे, जो उनसे तरह-तरह के सवाल पूछ रहे थे।

“हमने देखा कि यह किसने किया। वह यम राज था, वह सनकी। उसने यादव को सौंप दिया और फिर भाग गया। वह सिर्फ एक परछाई थी, लेकिन उसके सींग साफ दिखाई दे रहे थे।”

“लेकिन वह आमतौर पर अपने पीड़ितों को मार डालता है, तो वह इस मनोरोगी को पुलिस के हवाले क्यों करेगा?” एक पत्रकार ने उससे पूछा।

ज़ोरावर धीरे से कैमरे की ओर देखता है। उसका चेहरा थका हुआ है, लेकिन साथ ही आशा से भी भरा हुआ है।

“कौन जाने? हो सकता है वह बदल गया हो,” वह कहता है।

****** *****

अगर आप फिल्मों के शौकीन हैं या टीवी शो देखना पसंद करते हैं, तो आप अपने पसंदीदा कलाकारों का सामान खरीद सकते हैं।

अभी रियायती कीमत पर मूवी/टीवी सीरीज़ देखें।

बस greenrockstore.com पर लॉग इन करें और 20% तक की छूट पाने के लिए कूपन कोड 'ROCK20' का उपयोग करें।

हाफ बेक्ड बीन्स की अन्य पुस्तकें

अमेज़न और फ्लिपकार्ट पर उपलब्ध है

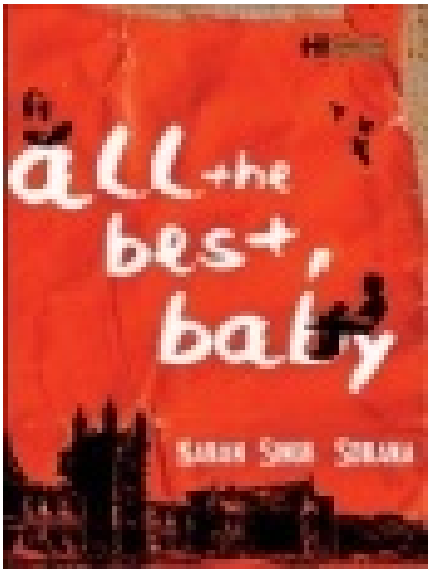
all the best, baby

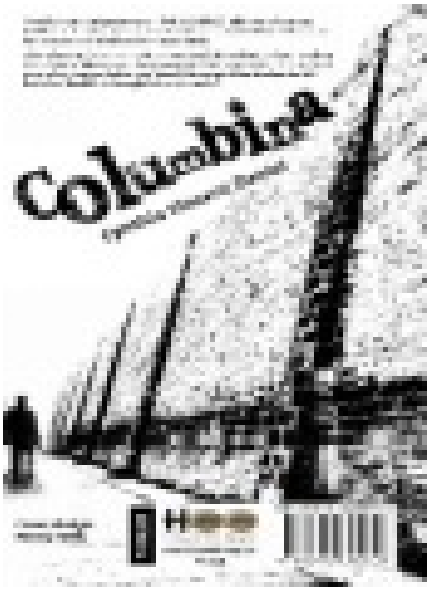
Columbine

FROZEN SUMMER

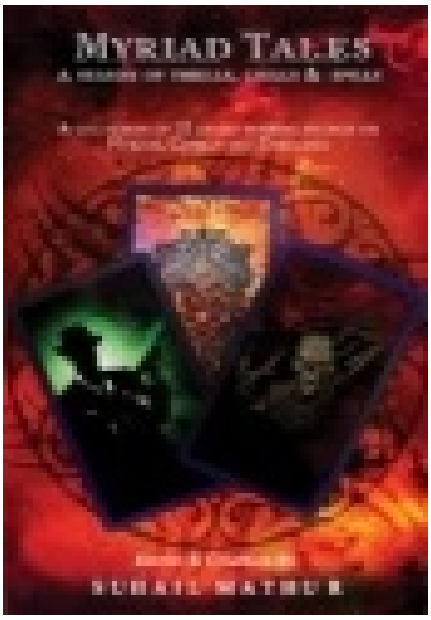
MYRIAD TALES
SUHAIL MATHUR

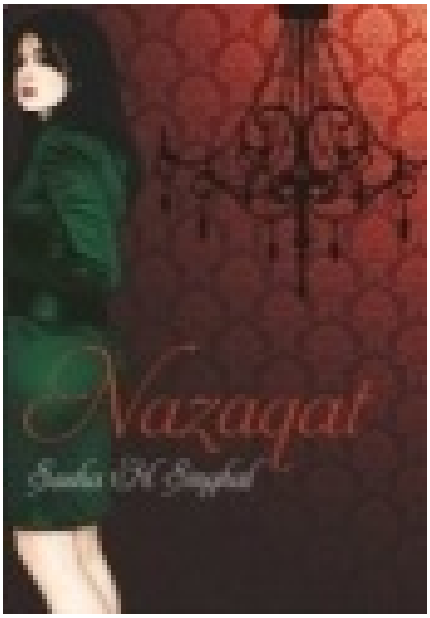
Nazaqat
Sunita Pal Singhal

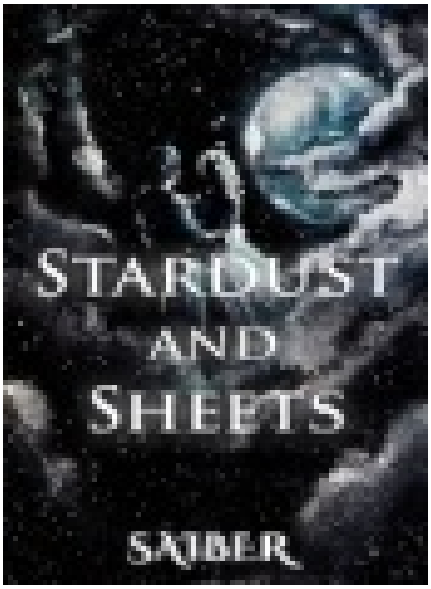
STARDUST
AND
SHEETS
SAIBER

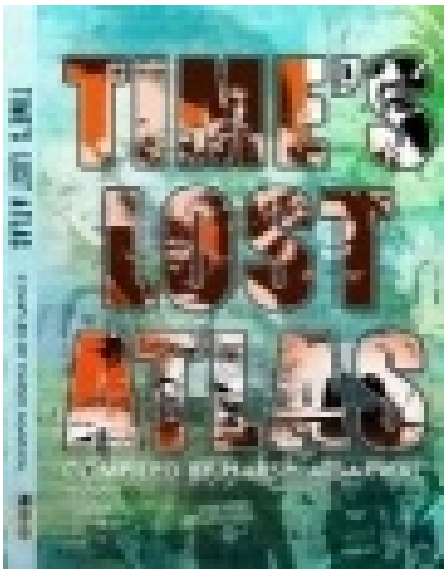
TIME'S
LOST
ATLAS

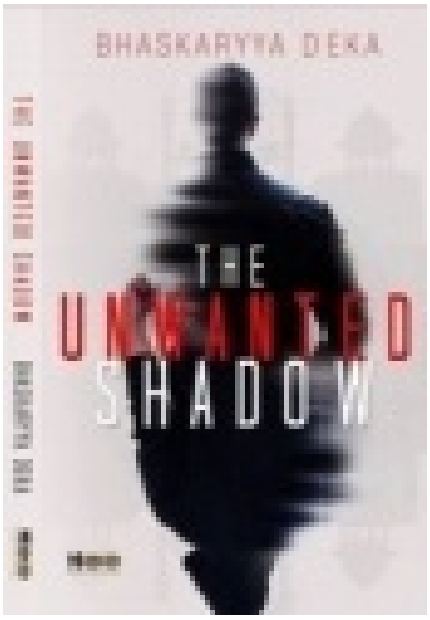
BHASKARYYA DEKA
THE
SHADOW

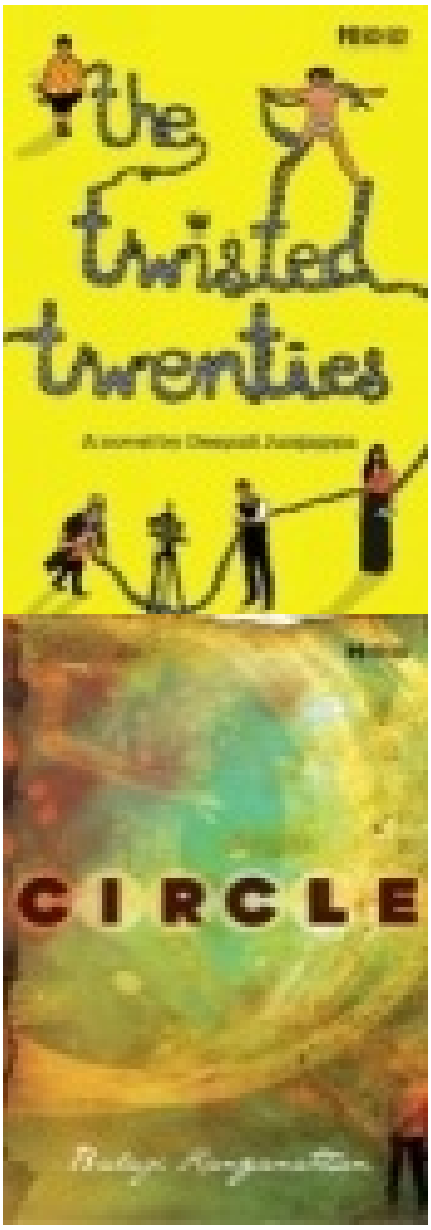
the twisted twenties
CIRCLE

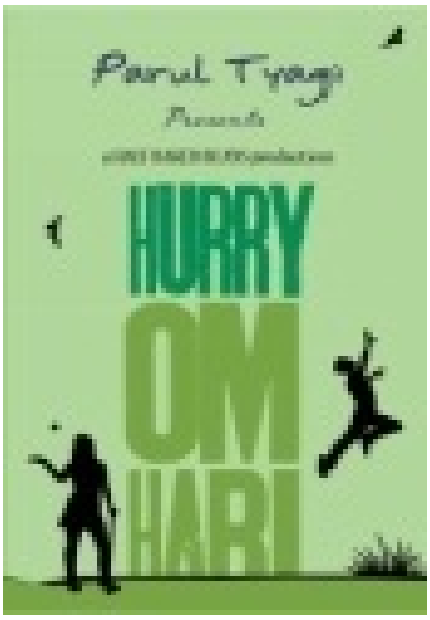
Parul Tyagi
HURRY
OM
HARI

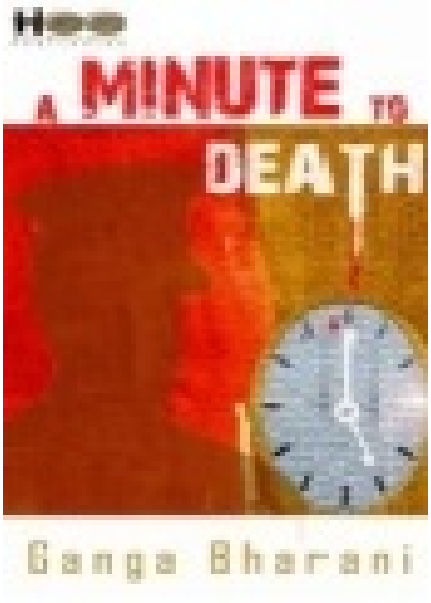
A MINUTE TO
DEATH
Ganga Bharani

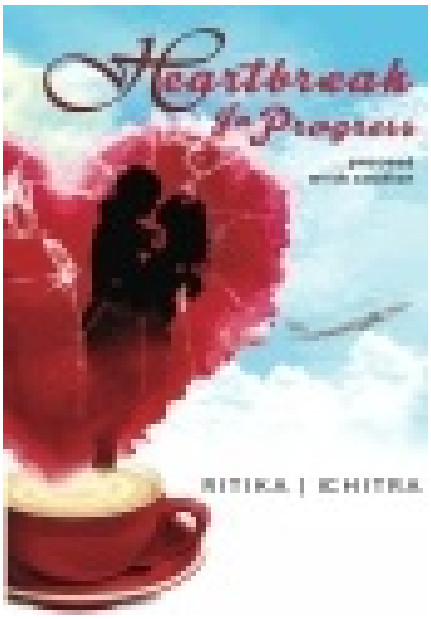
Heartbreak in Progress
RITIKA | ICHITRA

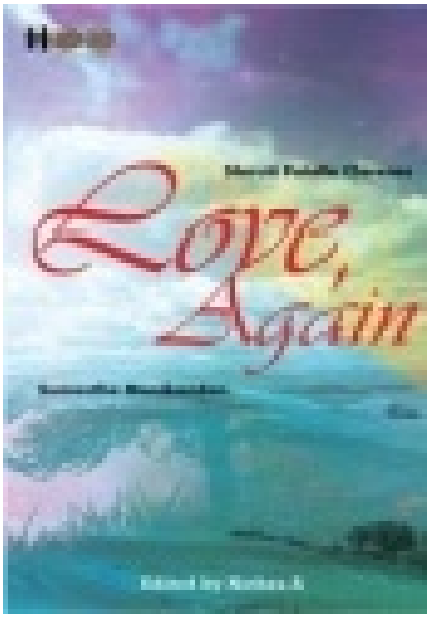
Love, Again

विषयसूची

अध्याय एक
अध्याय दो
अध्याय तीन
चौथा अध्याय
अध्याय पाँच
अध्याय छह
अध्याय सात
अध्याय आठ
अध्याय नौ
अध्याय दस
अध्याय ग्यारह
अध्याय बारह

अध्याय तेरह
अध्याय चौदह
अध्याय पंद्रह
अध्याय सोलह
अध्याय सत्रह
अध्याय अठारह
अध्याय उन्नीस
अध्याय बीस
अध्याय इक्कीस
अध्याय बाईस
अध्याय तेईस
अध्याय चौबीस
अध्याय पच्चीस
अध्याय छब्बीस
अध्याय सत्ताईस
अध्याय अट्ठाईस
अध्याय उनतीस
अध्याय तीस
अध्याय इकत्तीस
अध्याय बत्तीस
अध्याय तैंतीस
अध्याय चौंतीस

अध्याय पैंतीस
अध्याय छत्तीस
अध्याय सैंतीस
अध्याय अड़तीस
अध्याय उनतीस
ध्याय चालीस
अध्याय इकतालीस
अध्याय बयालीस
अध्याय तैंतालीस
अध्याय चौवालीस
अध्याय पैंतालीस
अध्याय छियालीस
अध्याय सैंतालीस
अध्याय अड़तालीस
अध्याय उनतालीस
अध्याय पचास
अध्याय इक्यावन
अध्याय बावन
अध्याय तिरपन
अध्याय चौवन
अध्याय पचपन
अध्याय छप्पन

अध्याय सत्तावन
अध्याय अट्ठावन
अध्याय उनसठ
अध्याय साठ
अध्याय इकसठ
अध्याय बासठ
अध्याय तिरसठ
अध्याय चौंसठ
अध्याय छियासठ
अध्याय सड़सठ
अध्याय अड़सठ
अध्याय उनसठ
अध्याय सत्तर
अध्याय इकहत्तर
अध्याय बहत्तर
अध्याय तिहत्तर
अध्याय चौहत्तर
अध्याय पचहत्तर
अध्याय छिहत्तर
अध्याय अठहत्तर
अध्याय उनहत्तर
अध्याय अस्सी

अध्याय इक्यासी
अध्याय बयासी
अध्याय तिरासी
अध्याय चौरासी
अध्याय पचासी
अध्याय छियासी
अध्याय सत्तासी
अध्याय अठासी
अध्याय नवासी
अध्याय नब्बे